DKK-03

प्रश्नपत्र- 3

षोडश संस्कार एवं मरणोत्तर कर्म

विषय-सूची

खण्ड १ : इकाई १ गर्भाधान संस्कार 4

इकाई 2 सीमन्तोन्नयन संस्कार 20

इकाई 3 नामकरण संस्कार 30

इकाई 4 अन्नप्राशन संस्कार 42

इकाई 5 अक्षरारम्भ संस्कार 63

खण्ड २, इकाई ६ : ॥ यज्ञोपवीत के महत्वपुर्ण बिन्दु ॥ 72

इकाई 7 : ॥ नवग्रह मंण्डल पूजनम् ।। 85

इकाई 8, ॥ वेदारम्भ संस्कार प्रयोग ॥ 108

खण्ड 3 : इकाई 9 : विवाहपद्धतिः- 129

इकाई १० : पित्रादीनामावाहनम् 144

इकाई 11 : कन्यादानम् 166
इकाई 12 : चतुर्थीकर्म 197
इकाई 13 : मलिन षोडशी (दशगात्र) 202
इकाई 14-(एकादशाह) षोडशी मध्यम - 1 216
इकाई 15 - मध्यम षोडशी -(एकादशाह)2 227
इकाई 16- (एकादशाह-वृशोतसर्ग) षोडशी मध्यम - 3 239
इकाई 17-(एकादशाह) षोडशी उत्तम - 2 250
इकाई 18-(एकादशाह) षोडशी उत्तम - 2 258
खण्ड 4 - इकाई 19त्रयोदशाह एवं सपिन्डन : 271
इकाई 20 वार्षिकी एवं श्राद्ध मासिक - 320
इकाई 21 एकोदिष्ठ श्राद्ध 335
इकाई 22 तर्पण पितृ श्राद्ध पार्वण - 349
इकाई 23 तीर्थश्राद्ध गयाश्राद्ध - 382
इकाई 24श्राद्ध त्रिपिन्डी - 403

खण्ड १ : इकाई १ गर्भाधान संस्कार

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व गुं हसः

(शु0 य0 12/89)

विवाह से चौथे दिन अर्थात चतुर्थी के उपरांत पति आचमन प्राणायाम कर (ॐ तत्सत् श्री ब्राह्मणो द्वितीयऽपरार्धे) इत्यादि पूर्वक संकल्प पढ़ें कि 'मेरी पत्नी के प्रथम संस्कार से बीज वा गर्भ सम्बन्धी दोषों की निवृत्ति के लिए गर्भाधान नामक संस्कार कर्म करता हूँ।'

उपरोक्त गर्भाधान संस्कार मंत्रों का उच्चारण स्वयं जानकर सूर्यास्त समय सूर्य नारायण का दर्शन करके संकल्प मात्र करे। पति यदि स्वयं मंत्र प्रयोग न जानता हो तो सूर्य दर्शन के पश्चात् संकल्पादि सब मंत्रों का प्रयोग विद्वान ब्राह्मण द्वारा कराके रात में गर्भाधान विधि सम्पादित करे।

मध्याह्नोपरांत निम्न रीति से कार्य का आरम्भ करें। गणेश पूजन, स्वस्तिपुण्याहवाचन, मातृका पूजन और नांदी-श्राद्ध करें एवं निम्न मंत्र को पढ़ कर पति-पत्नी सूर्य नारायण का दर्शन तथा नमस्कार करें।

ॐ आदित्यं गर्भं पयसामसङ्ग्धि सहस्त्रस्य प्रतिमां विश्वरूपम्। परिवृङ्धि हरसामाऽभिम स्थाः श्तायुषं कृणुहि चीयमाना।

सर्वप्रथम गौर गोबर के गौरी तथा सुपारी या नारियल से गणेश बना लें, सम्मुख रख लें, गौरी तथा गणेश के रखने के पश्चात हाथ में अक्षत पुष्प लेकर निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ आवाहन करें।

आवाहन मन्त्रः-

गणेश-आवाहनम्

(हाथ में अक्षत पुष्प लेकर गणेश गौरी का आवाहन करें)

ॐ गणानान्तवा गणपति ७ हवामहे प्रियाणन्त्वा
प्रियपति गुं निधीनान्त्वा निधिपति गुं हवामहे व्वसो
मम। आहमजानि गर्ब्भधमात्वमजासि गर्ब्भधम्।।
हे हेरम्ब त्वमेह्योहि ह्याम्बिकात्र्यम्बकात्मज!।
सिद्धि-बुद्धिपते त्र्यक्ष लक्ष-लाभपितुः पितः।।1।।
नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्।
भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशांकुश-परश्वधैः।।2।।
आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः।
इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे।।3।।
ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

गौरी-आवाहनम्ः-

ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन्।
ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकांकाम्पील-वासिनीम्।।
हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

(गौरी-गणेश को स्पर्श करके अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करें)

हाथ के अक्षत गणेश जी पर चढ़ा कर पुनः अक्षत लेकर वेद मन्त्र द्वारा प्रतिष्ठा करें।

ॐ मनो जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमं
तनोत्वरिष्ट्टं य्यज्ञ गुं समिमं दधातु। विश्श्वेदेवा स ऽइहमादयन्तामों ॐ प्रतिष्ठ।।
अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।

अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाऽम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

अक्षत गणेश भगवान के ऊपर डाल दें, जल से पाद्य अर्घ आचमनी तीन बार जल चढ़ाएं तथा एक आचमनी जल पुनः निम्न मन्त्र पढ़ते हुए छोड़ें-

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।

पशूँस्ताँश्चक्रे व्वायव्या नारण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।

तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत-स्नानम्:- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।

सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।

शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक-स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धोदक-स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपतये कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्प्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्त्र्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनीयं जलं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्त्स्वः।

व्वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप गुं संव्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचमनीयं जलं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्येम्यस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमानी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः।

त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्द्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत।

अस्तोषत स्वभानवो व्विप्रा नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः।

मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान को अर्पित करें। मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्रसूवरीः।

अश्वा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्णवः।।

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।

मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्बा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्बा - (गणेश जी को कोमल दूर्बा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

दूर्वाड.कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्बा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्बा न चढ़ाएं दूर्बा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्प्रमियः पतयन्ति यह्व्वाः।

घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठ्रा भिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तग्घ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान् पुमा गुं सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्नितम गुं सस्नितमं पप्रितमं जुष्ट्तमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निर्ज्ज्योतिज्जर्योनिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाभ्या ऽआसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ2ऽअकल्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्प्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गुं ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ गुं शुना ते अ गुं शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें। मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत्।

व्वसन्तोऽस्यासीदाज्यंग्रीष्म ऽइध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बोल के पश्चात् भगवान को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाताश्च, क्षोः सूर्यो अजायात्।

श्रोत्राइायुष्चप्राणष्च दग्नि रजायत।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

प्रदक्षिणा मन्त्रः-

प्रदक्षिणा - ("एकाचण्डयाः रवेः सप्त तिस्रो दद्याद् विनायके" - के अनुसार गणेश जी की तीन परिक्रमा की जाती है।

ॐ ये तीर्त्थानि प्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषंगिणः।

तेषा गुं सहस्र-योजनेऽव धन्वानि तन्नमसि।।

पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादि-फलं ददाति।

तां सर्वपापक्षय-हेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोति।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

प्रदक्षिणा के उपरान्त एक पात्र में चन्दन अक्षत जल फल फूल दूर्वा और दक्षिणा लेकर अर्घपात्र को हाथ में लेकर निम्नलिखित मन्त्र बोलते हुए, अपनी तरफ अर्घ डालें-

विशेषार्ध्यम् - (विशेषार्ध्य मात्र गणेश जी को देने की परम्परा प्रचलित है, जबकि गौरी जी को भी दिया जा सकता है। ताम्रपात्र में जल चंदन, गंध, अक्षत, पुष्प, फल, दूब तथा दक्षिणा डालकर अंजलि में अर्ध्यपात्र लेकर मंत्र पढ़ते हुए विशेषार्ध्य प्रदान करें।)

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष! रक्ष त्रैलोक्यरक्षक!।

भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।1।।

द्वैमातुर! कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो!।

वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद!।

अनेन सफलार्ध्येण फलदोऽस्तु सदा मम।।2।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री मन्महागणाधिपतये नमः, विशेषार्ध्यं समर्पयामि।

अर्ध के पश्चात् हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें-

गणेश प्रार्थना - (अक्षत पुष्प लेकर हाथ जोड़कर प्रार्थना करें)

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय,

लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।

नागाननाय श्रुति-यज्ञ-विभूषिताय,

गौरीसुताय गणनाथ! नमो नमस्ते।।1।।

भक्तार्ति-नाशनपराय गणेश्वराय,

सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।

विद्याधराय विकटाय च वामनाय,

भक्त-प्रसन्न-वरदाय नमो नमस्ते।।2।।

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।

नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः।।3।।

विश्वरूप-स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।

भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।4।।

लम्बोदर! नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय!।

निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।।5।।

त्वां विघ्न-शत्रु-दलनेति च सुन्दरेति,

भक्तप्रियेति सुखदेति फलप्रदेति।

विद्या-प्रदेत्येघ-हरेति च ये स्तुवन्ति,

तेभ्यो गणेश! वरदो भव नित्यमेव।।6।।

गौरी प्रार्थना-

याः श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः,

पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।

श्रद्धा सतां कुलजन-प्रभवस्य लज्जा,

तां त्वां नताः स्म परिपालय देवि विश्वम्।।1।।

मेधासि देति विदिताखिल शास्त्रसारा,

दुर्गासि दुर्ग भवसागर नौर संगा।

श्रीः कौटभारि हृदयैक-कृताधिवासा,

गौरी त्वमेव शशिमौलि-कृतप्रतिष्ठा।।2।।

मुखे ते ताम्बूलं नयनयुगले कज्जल-कला,

ललाटे काश्मीरं विलसति गले मौक्तिक-लता।

स्फुरत्कांची शाटी पृथु-कटितटे हाटकमयी,

भजामि त्वां गौरीं नगपति किशोरीमविरतम्।।2।।

(इति कर्मकाण्डप्रबोधे श्रीगणेशाम्बिकापूजनम् समाप्तम्)

तथा भगवान प्रणाम करें।

मंत्रोपरांत सायंकाल का सन्ध्योपासानादि नित्य कर्म करके भोजनोत्तर एक प्रहर रात्रि बीतने पर श्वेत वस्त्र धारण किये पुष्प माला और आभूषणों से शोभायमान दोनों पति पत्नी दीपक आदि से प्रकाश्तिा हो शुद्ध शयन स्थान में अच्छे बिछौने से युक्त शुभ पलंग पर पूर्व को सिर पश्चिम को पगकर सीधी चित्त लेटी पत्नी के नाभि स्थल में दाहिने हाथ से स्पर्श करता हुआ निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

ॐ पूषा गर्भसविता मे ददातु रुद्रः कल्पयतु ललामगुम्।।

ॐ विष्णुर्योनि कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पि--शतु।

आसिञ्चतु प्रजापतिघता गर्भं दधातु ते।

पुनः पूर्वाभिमुख बैठा पति मन्त्र पत्नी की ओर देखता हुआ पढ़े।

ॐ गर्भं देहि सिनीवालि ! गर्भ धेहि पृथुष्टुके ! गर्भं ते अपश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्त्रजौ। तेजो विश्वानरो दद्यादथ ब्रम्हानुमन्त्रयेत। ब्रम्हा गर्भ दधातु ते।।

पुनश्च निम्न मन्त्र पढ़ के आलिंगन करे।

ॐ गायत्रेण त्वा छन्दसा मन्थामि। त्रिष्टुभेन_त्वा छन्दसा मन्थामि। जागतेन त्वा छन्दसा मन्थामि ॥

ॐ रेतो मूत्रं विजहाति योनिं प्रविशदिन्द्रियम्। गर्भो जरायुणावृत उल्वं जहाति जन्मना। ऋतेन त्यमिन्द्रियं विपान ँ शुक्रमन्ध्सऽइन्द्रस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधु।।

ॐ यत्ते सुसीमे हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्। वेदाहं तन्मां तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत ँ श्रृणायाम शरदः शतम्।

ॐ इयमोषधी त्रायमाणा सहमाना सरस्वती।

अस्या अहम् बृहत्याः पुत्र पितुरिव नाम जग्रम्।।

यदि किसी कारणवष गर्भ स्थापित न हो पाये तो श्वेत पुष्पा कष्टकारी (सफेद फूलों वाली कटहली, सामान्यतया कटहली के नील फूल होते है। किन्तु कहीं कहीं सफेद वाली कटहली भी मिल जाया करती है अतः सफेद पुष्पों वाली) को पुष्य नक्षत्र में जड़ सहित उखाड़कर लें आवें। पति उपवास रात्रि को उसे बारीक पीसकर दो तीन बार कपड़ छान कर उसकी एक बूंद अपनी पत्नी के दाये नाल में डाल दें।

२. पुंसवन संस्कार

जीवतो वाक्यकरणात् क्षयाहे भूरिभोजनात्।
गयायां पिंडदानाश्च त्रिभिः पुत्रस्य पुत्रता।।

धर्मसिन्धु के अनुसार गर्भस्थ संस्कार होने के कारण प्रत्येक गर्भावसर पर यह संस्कार करना चाहिए परन्तु आचार्य विज्ञानेश्वर के अनुसार माता-क्षेत्र का संस्कार होने के कारण पुंसवन और सीमंतोन्नयन संस्कार मात्र एक बार करना चाहिए।

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवी द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।1।।

ॐ अद्भ्यः संभृतः पृथिव्यै रसाच्च विश्वकर्मः समवर्त्तताग्रे।
तस्य त्त्वष्टा विदधद्रूपमेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजानमग्रे।।2।।

ॐ सुरर्णोऽसि गरुत्मांस्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्बृहद्रथन्तरे पक्षौ । स्तोम आत्मा छन्दा᠆स्य ङ्गानि यजू गुंषि नाम। साम ते तनूर्वोमिदेव्यं यज्ञा यज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफा। सुपर्णोसि गरुत्मान् दिवं गच्छ स्वः पत।।

इसके बाद सामान्य यज्ञ करे। तत्पश्चात् ब्रह्मभोज का संकल्प लें और ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर उनसे आशीर्वाद लें और निम्न मंत्र से मातृगण का विसर्जन करें-

यान्तु मातृगणाः सर्वे स्वशक्त्या पूजिता मया।

इष्टकाम प्रसिद्धर्थ पुनरागमनाय च।।

इसके बाद **अनेन पुन्सवनाख्ये कर्मणा भगवान् श्रीपरमेश्वरः प्रीयतां** कह कर किये कर्म को प्रभु को निवेदित कर दें।

प्रश्न -

१ .गर्भाधान संस्कार किसे कहते है।

२ .गर्भाधान संस्कार सविस्तार वर्णन कीजिए?

इकाई 2 सीमन्तोन्नयन संस्कार

ऊँ विष्णु र्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीये परार्धे श्री श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथम चरणे भारतवर्षे भरतखण्डे जम्बूद्वीपे अमुकक्षेत्रे बौद्धावतारे अमुकनामसंवत्सरे अमुकायने अमुकर्तौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकराशिस्थिते चन्दे अमुकराशिस्थिते श्रीसूय अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथं राशिस्थानैस्थितषु सत्सु एवं गुणाविशेषणविशिष्टाया शुभपुरण्तिथौ मम आत्मनः श्रुतिस्मृति पुराणक्तफलावाप्तये अस्मिन्पुण्याहे

'अस्याः मम भार्यायाः' सीमन्तोन्तयनारण्यं कर्म करिष्ये। तदङ्गत्वेन कलशस्थापन मातृकपूजनं नान्दीश्राद्धं आचार्यादि वरणानि च करिश्ये। तत्रादौ निर्षिध्नता सिद्धयर्थं गणेशाम्बिकयोंः अर्चनमहं करिष्ये । संकल्प करके गणेशपूजनादि कर्म विधान पूर्वक करें और स्वस्तिपुण्याहवाचन के अन्त में 'महासेनः प्रीयताम्' के स्थान में 'धाता प्रीयताम्' ऐसा उच्चारण करना चाहिये।

ऊँ अद्य कर्त्तव्यसीमन्तोन्नयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणारूप ब्रह्मकर्मकर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभि र्ब्रहलत्वेंन त्वामहं वृणे। ऊँवृतोऽस्मीति प्रतिवचनम्।

'ऊँ प्रजापतये स्वाहा इदं प्रजा. न मम'।

इसके उपरांत घृत से अभिधारित स्थालीपाक द्वारा स्विष्टकृत् आहुति करें । इस प्रकार महाव्याहृतियों की तीन सर्व प्रायश्चित की पांच तथा प्रजापत्य और स्विष्टकृत् की दो सब चौदह आहुति त्यागों सहित देकर संस्त्रण प्राशन कर हाथ धो आचमन करके ब्रह्मा को दक्षिणा दे। निम्न मंत्र पढ़ें-

ऊँ अद्यैतस्मिन् सीमन्तोयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षण

रूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूपात्रं प्रजापतिदैवतममुकगो़त्रयाऽमुकशर्मगो ब्राह्मणाय ब्रह्मणो दक्षिणां तुभ्यमहं सम्प्रददे।

ब्रह्मा **'ऊँ स्वस्तीति प्रतिवचनम्'** कहकर दक्षिणा लें।

इसके उपरान्त पवित्रों द्वारा प्रणीता का जल लेकर

'ऊँ सुमित्रिया न आप औषधयः सन्तु।' मंत्र पढ़ के अपने शिर पर जल सेचन करके **'ऊँ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान्द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः'** मंत्र से प्रणीता के जल को ईशान दिशा में लौटा दें और पवित्रों को बिछाये हुये कुशों में मिला दें। तदनन्तर जिस क्रम से कुश बिछाये थे उसी क्रम से पवित्र सहित उठाकर कुशों में आज्यस्थाली में बचा घी लगा के **'ऊँ देवा गातु विदोगातु वित्त्वा गातुमित मनसस्पत इमं देवयज्ञ-- स्वाहा वातेघ स्वाहा ! इदं वाताय न मम !'** मंत्र द्वारा अग्नि में छोड़ दें।

इसके बाद देवदारु से पट्टे पर कोमल आसन बिछाकर उस पर गर्भिण को बिठायें। दो फल और सर्वा युक्त गूलर वृक्ष की शाखा तेरह तेरह कुशों की तीन पिञजूली तीन स्थान में श्वेत सेही का एक काँटा, पीला सूत लपेटा एक लोहे का तकुआ और तीक्ष्ण अग्रभाग सहित प्रादेशमित पीपल काष्ठ की एक खूण्टी एकत्र किये इन पाँचों से पत्नी के शिर के बालों का विनयन पति करे अर्थात् केशों को दाहिने बांये दोनों और हटाता हुआ **ॐ भूर्विनयामि ! ॐ भुवर्विनयामि! ॐ स्वर्विनयामि!** मंत्र से मांग बनाये। इसके बाद उदुँबर शाखादि उन पाँचों को **ॐ अपयमूर्जावतो वृक्ष उर्जीव फलिनी भव** मंत्र पढ़ कर पत्नी के बालों की चोटी कर दें। वीणा पर गाने वाले पूर्वोक्त दो पुरुष वीणा बजाते हुये **साम एव नो राजेमा मानुषीः प्रजाः, अविमुक्तचऽआसीरंस्तीरे तुभ्यमसो।।** मंत्र का गान करें। मंत्र में कहे 'असौ' पद के स्थान में गंगादि जो बड़ी नदी समीप हो उसका नाम स्त्री बोले। उपरोक्त किये हुये सीमन्त संस्कार की साड्गता के लिये ऐसा संकल्प लें कि दश ब्राह्मणों को भोजन कराऊंगा उससे श्री कर्माङ्ग देवता प्रसन्न हों। पधारे हुए अन्य ब्राह्मणों का केशर चन्दन, ताम्बूल और

दक्षिणादि के द्वारा सत्कार करके उनका आशीर्वाद लेकर अग्नि का विसर्जन करके मातृगणों का निम्न श्लोक द्वारा विर्सजन करें।

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।

यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन।।

यान्तुमातृगणाः सर्वाः पूजामादायपार्थिवीम्।

इष्टकामप्रसिद्धयर्थ पुनरागमनाय च।।

इसके बाद स्रुवा के मूल भाग द्वारा कुण्ड में से भस्म लेकर **त्र्यायुषं जमदग्नेःकश्यपस्य त्र्यायुषम्। यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नो त्र्यस्तु त्र्यायुषम्।। त्र्यायुषं जमदग्नेः** मंत्र से ललाट में, **कश्यपस्य त्र्यायुषम्** से ग्रीवा में, **यद्देवेषु त्र्यायुषं** से दाहिने बाहु के मूल में और **तन्नो त्र्यस्तु त्र्यायुषम्** से हृदय में भस्म लगायें। इसी क्रम से वधू को भी त्र्यायुष करे, परन्तु वधू को भस्म लगाते समय मन्त्र में **तन्नो** के स्थान तत्ते प्रयुक्त करें। इसके बाद पुष्प लेकर हाँथ जोड़कर भगवान् का स्मरण करें तथा अन्त में कहें-

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

जातकर्म संस्कार

जन्म के उपरान्त होने वाला पहला संस्कार जातकर्म संस्कार कहलाता है। यदि किसी भी कारण से गर्भाधान, पुंसवन एवं सीमन्तोन्नयन यथा समय न हुये हों तो जातकर्म का भी समय निकट आने पर प्रत्येक संस्कार छूटने का एक-एक गोदान कर तीनों का अनादिष्ट होम प्रायश्चित करके उन संस्कारों को कर लेने के पश्चात जातकर्म संस्कार करना चाहिये। इसका प्रमुख उद्देश्य गर्भस्थशिशु जो अपने माता के रस से अपना पोषण करता है जिससे आहार आदि का दोष बालक में आ जाता है, वह जातकर्म संस्कार द्वारा दूर हो जाता है।

'गर्भाम्बुजपानजो दोषो जातात् सर्वोऽपि नश्यति ।'

जातकर्म संस्कार केवल पुत्र के उत्पन्न होने पर ही होता है जैसा कि **पारस्कर जी** के **गुह्यसूत्र** के अनुसार **'जातस्य कुमारस्याच्छिन्नायां नाड्यां मेधाजननायुष्ये करोति'** अर्थात उत्पन्न हुए कुमार के नालच्छेदन से पूर्व ही मेधाजनन तथा आयुष्य-कर्म पिता करता है । पुत्रोत्पत्ति के बाद नालच्छेदन से पूर्व ही पिता अपने कुल देवता व बृद्ध पुरुषों को नमस्कार कर पुत्र मुख दर्शन कर शुद्ध जल में स्नान करें। स्नानोपरांत शुद्ध वस्त्र पहन कर केशर तिलक लगाकर शुभासन पर बैठें । आचमन प्राणायाम करके संकल्प करे और गणेश पूजनादि नन्दीश्राद्ध पर्यन्त सब कृत्य क्रम से करे, पुण्याहवाचन के अन्त में **'सविता प्रीयताम्'** ऐसा उच्चारण करें।

इसके उपरान्त नाल काटने से पहिले निम्न रीति से मेधाजनन संस्कार करें। दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्रभाग में सुवर्ण लगा के सुवर्ण सहित अंगुली से शहद और घी को मिलाकर निम्न मन्त्र से बालक को थोड़ा-थोड़ा चार बार मधु घृत चटाये जिसको मेधाजनन संस्कार कहते हैं।

ॐ भूस्त्वयि दधामि। ॐ भुवस्त्वयि दधामि ॐ स्वस्त्वयि दधामि। ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वं त्वयि दधामि।।

ॐ अग्निरायुष्मान्त्स वनस्पतिभिरायुष्मां-स्तेन त्वाऽऽयुष्मन्तं करोमि।।1।।

ॐ सोमआयुष्मान्त्सओषधीभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि।।2।।

ॐ ब्रह्मायुष्मत्तद्ब्राह्मगौरायुष्मत्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि।। 3।।

ॐ देवाआयुष्मन्तस्तेऽमृतेनायुष्मन्तस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ।। 4।।

ॐ ऋषय आयुष्मन्तस्ते व्रतैरायुष्मन्तस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ।। 5।।

ॐ पितर आयुष्मन्तस्ते स्वधामरायुष्मन्तस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ।। 6।।

ॐ यज्ञ आयुष्मान्त्स दक्षिणाभिरायुष्मांस्तेन त्वाऽऽयुषाऽऽयुष्मन्तं करोमि ।। 7।।

ॐ समुद्र आयुष्मान्त्स स्रवन्तीभिरायुष्मांस्तेन त्त्वाऽऽयुषा युष्मन्तं करोमि ।। 8।।

ॐ दिवस्पति प्रथमं जज्ञे अग्निरस्मद् द्वितीयं परि जातवेदाः।। तृतीयमप्सु नृमणा यजस्त्रमिन्धान एनं जरते स्वाधीः।।1।।

ॐ विद्मा ते अग्ने त्रेधा त्रयाणि विद्यमा ते धाम विभृता पुरुत्रा।। विद्मा ते नाम परमं गुहा यद्विद्मा तमुत्सं यत आजगन्थ।।2।।

ॐ समुद्रे त्त्वा नृमणा अप्स्वन्तृचक्षा ईधे दिवो अग्नऊधन्। तृतीये त्वा रजसि तस्थिवा¤समपामुपस्थे महिषा अवर्द्धन्।।3।।

ॐ अक्रन्ददग्निः स्तनययन्न्व द्यौः क्षामा रेरिहद्वीरूधः समञ्जन्। सद्यो जज्ञानो व्विहीमिद्धो अख्यदारोदसी भानुना भात्यन्तः।।4।।

ॐ श्रीणामुदारो धरुणो रयीणां मनीषाणां प्रार्पणाः सोमगोपाः। वसूः सूनुः सहसो अप्सु राजा विभात्तयग्र उषसामिधानः।।5।।

ॐ विश्वस्य केतुर्भुवनस्य गर्भ आ रोदसी अपृणाज्जायमानः। वीड्डुं चिदद्रिमाभिनत्परायन् यदिग्नमयजन्त पंच।।6।।

ॐ उशिक्पावको अरतिः सुमेधा मत्तर्येष्वग्निरमृतो निधायि। इयर्ति धूम मरुषं भरिभ्रदुच्छुक्रेगा शोचिषा द्यामिनक्षन्।।7।।

ॐ दृशा नोरुक्मउर्व्याव्यद्यौद् दुर्मर्षमायु: श्रिये रूचानः। अग्निरमृतो अभवद्वयो योभिर्यदेनः द्यौरजनयत्सुरेताः।।8।।

ॐ यस्ते यद्य कृणवभद्रशोचे पूषन्देव घृतमन्तमग्ने। प्रतन्नय प्रतरं वस्यो अच्छाभिसुम्नं देवभक्तं यविष्ठ।।9।।

ॐ आ तं भज सौश्रवसेष्वग्रउक्थउक्थ आभज शस्यमाने। प्रियः सूर्ये प्रियो

अग्ना भवा त्यु ज्जातेन भिनददुज्जनित्त्वैः।।10।।

ॐ त्वामग्ने यजमाना अनुद्यून विश्वावसु दधिरे वार्याणि। त्त्वया सह द्रविणमिच्छमाना व्रजं गोमन्तमुशिजो विवब्रुः।।11।।

ॐ वेद ते भूमि हृदयं दिवि चन्द्रमसि श्रितम्।

वेदान्हं तन्मा तद्विद्यात्पश्येम शरदः शतं जीवेम

शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतम्।।

तदपरांत निम्न मन्त्र से बच्चे का स्पर्श करें ।

ॐ अस्ममा भव परशुर्भव हिरण्यमत्रुतं भव।

आत्मा वै पुत्रनामासि स जीव शरदः शतम्।।

पुनः बच्चे की माता की ओर देखता हुआ निम्न मंत्र पढ़े।

ॐ इडासि मैत्रावरुणी वीरे वीरमजीजनथाः

सात्त्वं वीरवती भव याऽस्मान्वीरवतोऽकरत्।।

इसके बाद धाय स्त्री के दाहिने स्तन को धोकर निम्न मंत्र के साथ मंत्र से बच्चे के मुख में स्तन दें।

'ॐ इमगुंस्तनमूर्ज्जस्वन्त धयापां प्रपीनम गे्रसरिरस्य मध्ये। उत्त्सं जुषस्व मधुमन्तमव्र्वन्त्स मुद्रिय--सदनमाविशस्व।।'

पुनः बायें स्तन का प्रक्षालन करके

'ॐ इमस्तनमूर्ज्जस्वन्त धयापां प्रपीनम गे्रसरिरस्य मध्ये। उत्त्सं जुषस्व मधुमन्तमव्र्वन्त्स मुद्रिय--सदनमाविशस्व।।'

और

ॐ यस्ते स्तनः शशयो यो मयोभूर्यो रत्नधा वसुविद्यः सुदत्रः। येन विश्वा पुष्यसि वार्याणि सरस्वति तमिह धातवेऽकः।।

से बच्चे के मुख में दें।

इसके बाद सूतिका स्त्री की चारपाई के सिरहाने जल से भर के

एक घड़ा निम्न मंत्र के साथ रखें।

‘ॐ आपो देवेषु जाग्रथ यथा देवेषु जाग्रथ।

एवमस्या सूतिकाया सपुत्रकायां जाग्रथ।।‘

उपरोक्त घट सूतिका स्त्री के उठने पर्यन्त दश दिन तक वहीं रखा रखें। इसके बाद सूतिका घर के द्वार पर पञ्चभूसंस्कार करके किसी कुण्ड वा अंगीठी में अग्नि स्थापना करें। वह अग्नि दश दिन बुझने न पाए। उस अग्नि में सायं प्रातः काल भूसी चावल के कण और सरसों को पिता वा अन्य ब्राह्मण निम्न दो मन्त्रों से दश दिन तक दो आहुति हाथ से नित्य दिया करें।

ॐ शण्डामर्का उपवीरः शौण्डिकेय उलू खलः। मलिम्लुचो द्रोणासश्च्यवनोनश्यतादितः स्वाहा।। इदमग्नये न मम।।

ॐ आखिलत्र निमिषः किंवदन्त उपश्रुतिर्हर्यक्षः कुम्भीशत्रुः पात्रपाग्निर्नृ मणिर्हन्त्रीमुखः सर्षपाऽरुणाश्च्य वनो नश्यतादितः स्वाहा।। इदमग्नये नमम

1. कूर्कुरः सुकूर्कुरः कूर्कुरो बालबन्धनः।

चेच्चेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वर तत्सत्यम्।।

2. यत्ते देवा वरमददुः स त्वं कुमारमेव वा वृणीथाः।

चेच्चेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वर तत्सत्यम्।।

3. यत्ते सरमा माता सीसरः पिता श्यामशबलौ भ्रातरौ ।

चेच्चेच्छुनक सृज नमस्ते अस्तु सीसरो लपेतापह्वर तत्सत्यम्।।

4. न नामयति न रुदति न हृष्यति न ग्लायति यत्र वयं वदामो यत्र चाभिमृशामसि।

षष्ठी महोत्सव एवं राहुवेध

आयाहि वरदे देवि ? **षष्ठीदेवीति विश्रुता।**

शक्तिभिः सह पुत्रं मे रक्ष रक्ष वरानने।।

उपरोक्त मंत्र से आवाहन करें।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनोत्त्वरिष्टं यज्ञ--समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामोउम्प्रतिष्ठ।।

उपरोक्त मंत्र से स्थापना करें।

देवीमज्ञ्जनसकाशां चन्द्रार्द्धकृतशेखराम्।

सिंहारूढ़ां जगद्धात्रींकौमारी भक्तवत्सलाम् ।1।

खड्गखेटं च बिभ्राणामभयां वरदान्तथा।

तारकाहारभूषाढयां चिन्ता यामि नवांशुकाम ।2।

पढ़ कर विघ्नेश्वर को नमस्कार करता हुआ ध्यान करें। **आगच्छ वरदे देवी स्थाने चात्र स्थिरा भव।**

आराध्यामि भक्त्या त्वां रक्ष बालं च सूतिकाम्।।

पढ़ कर प्रणाम पूर्वक आवाहन करें और तत्तद् मंत्रों से षोडशोपचार पूजन करें। इसके बाद निम्न दश मंत्र से षष्ठीदेवी से विशेष कर बालरक्षा की प्रार्थना करें।

षष्ठीदेवी नमस्तुभ्यं सूतिकागृहशालिनी।

पूजिता परया भक्त्या दीर्घमायुः प्रयच्छ मे।।

जननीजन्मसौख्यानां वर्धिनीधनसम्पदाम्।

साधिनीसर्वभूतानां जन्मदे त्वां नता वयम्

गौरीपुत्रो यथा स्कन्दः शिशुत्वे रक्षितः पुरा।

तथाममाप्ययमुं बालं षष्ठि मे रक्ष ते नमः। 3।

यथा दाशरथी रामश्चतुर्मूर्तिर्भवप्रदे।

त्वया संरक्षितस्तद्वद बालं पाहि शुभप्रदे।।4।।

विष्णु नाभिस्थितो ब्रह्मा दैत्येभ्यो रत्क्षितस्त्वया।

तथा मे बालकं रक्ष व्योमनिद्रे नमोस्तु ते।।5।।

रत्क्षितौ पूतनादिभ्यो नन्दगोपसुतौ यथा।

तथा मे बालकं पाहि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।6।

यथा वृत्रासुरादिन्द्रो रत्क्षितोऽदितिबालकः।

त्वया तथा मे बालोऽयंरत्क्षणीयों महेश्वरि।।7।।

यथा त्वयाअ्जनीपुत्रो हनुमात्रत्क्षितः शिशुः।

तथा मे बालकं रत्क्ष दुर्गे दुर्गार्त्तिहारिणि।8।

रुद्रस्वर्गाद्यथादेवि कश्यपादिसुतास्त्वया।

मातस्त्राहि तथा बालं विष्णुमाये नमोऽस्तु ते।9।

सर्वविघ्नानपाकृत्य सर्वसौख्यप्रदायिनि!।

जीवन्तिके जगन्मातः पाहि नः परमेश्वरि।10।

अनया पूजया विघ्नेशो जन्मदाजीवन्त्यपर-नाम्नीषष्ठी देवी शस्त्रगर्भाभगवत्यः प्रीयन्ताम्।

तदोपरांत 'इस षोडशोपचार से विघ्नेश और जन्मदा जीवन्ती नामक षष्ठीदेवी और शस्त्रगर्भा भगवती प्रसन्न हों' ऐसा कहें।

धिषणावृद्धिमाता च तथा गौरी च पूतना।

आयुर्दात्र्यो भवन्त्वेता अद्य बालस्य मे शिवाः।।

धिषणावृद्धिमाता च तथा गौरी च पूतना।

आयुर्दात्र्यो भवन्त्वेता अद्य बालस्य मे शिवाः।

धिषणादिचत मातृभ्यो नमः- गन्धं समर्पयामि।

पुष्पाणि समर्पयामि। धूपं समर्पयामि। दीपं समर्पयामि। नैवैद्यं समर्पयामि।।

इसके उपरान्त सुवासिनियों को खाद्य ताम्बूलादि, तथा आये ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर उनसे आशीर्वाद प्राप्त करें। दशवें दिन षष्ठीदेवी आदि का विसर्जन करें। सूतक सम्बन्धी अशौच में प्रथम, छठे और दशवें दिन

दान देने वा दान-दक्षिणा लेने में कोई दोष नहीं माना जाता परन्तु अन्न का भोजन निषिद्ध है। पाँचवें, छठे दोनों दिवस वा विशेष कर छठे दिवस रात्रि के समय तलवार बर्छा आदि शस्त्र हाथ में रखते हुए पुरुष और गायन एवं नृत्य करने वाली स्त्रियाँ रात्रि भर जागरण करें। धूप सहित अग्नि, दीपक शास्त्र मूसल, जल भरा पात्र और मन्त्रपूत भस्म यह सभी सूतिका के घर के निकट रात्रि भर छठे दिन विशेष कर रखे जायें। सभी ओर सरसों बिखेरी जाए तथा ब्राह्मण लोग शान्ति-पाठ करें। षष्ठीपूजन सम्बन्धी कृत्य जातकर्म का ही अंगरूप है।

प्रश्न -

१ .सीमान्तोन्नयन संस्कार किसे कहते है?

२ .गर्भाधान संस्कार के बारे में बतलायें ।

इकाई 3 नामकरण संस्कार

लोक व्यवहार की सिद्धि बिना नाम के संभव नहीं है क्योंकि यह समस्त चराचर जगत नामरूपात्मक है स्मृति संग्रह के अनुसार व्यवहार की सिद्धि, आयु एवं ओज की वृद्धि के लिए नाम संस्कार किया जाता है वीरमित्रोदय संस्कार प्रकाश के अनुसार-

नामाखिलस्य व्यवहारहेतु: शुभावहं कर्मसु भाग्यहेतु:

नाम्नैव कीर्तिं लभते मनुष्यस्तत: प्रशस्तं खलु नामकर्म

अर्थात नाम अखिल व्यवहार एवं मंगलमय कार्यों का हेतु है नाम से ही मनुष्य कीर्ति प्राप्त करता है, इसी से नामकर्म अत्यंत प्रशस्त है आचार्य पारस्कर के गुह्यसूत्र के अनुसार **'दशम्यामुतत्था ब्रह्मणान् भोजयित्वा पिता नाम करोति'** जिसका तात्पर्य हुआ कि यह संस्कार दसवें दिन की रात्रि बीत जाने अर्थात अशौच की निवृत्ति हो जाने पर ग्यारहवें दिन पर होता है इसमें तीन ब्राह्मणों को भोजन कराकर पिता बालक का नाम रखता है। बालक का नाम समवर्णी तथा बालिका का नाम विषमवर्णी रखना चाहिए।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनोत्त्वरिष्टं यज्ञ-- समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो3म्प्रतिष्ठ।।

ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहो रात्रे पार्श्वे नत्क्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्त्म्। इष्णन्निषाणामुम्मइषाणा सर्वलोकम्मइषाणा।

पुण्याह वाचन कलशा उत्थाप्य दक्षिण मार्ग एकस्मिन् कांस्यपात्र शरावत (दक्षिणभागे संस्थापित पात्रे) शनैः शनैः कलशाद् जलं पातयेत्।)

यजमान:- ॐ शान्तिरस्तु। ॐ पुष्टिरस्तु। ॐ तुष्टिरस्तु। ॐ वृद्धिरस्तु। ॐ अविघ्नमस्तु। ॐ आयुष्ममस्तु। ॐ आरोग्यमस्तु। ॐ शिवमस्तु। ॐ शिवं कर्माऽस्तु। ॐ कर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ धर्मसमृद्धिरस्तु। ॐ वेदसमृद्धिरस्तु। ॐ शास्त्रसमृद्धिरस्तु। ॐ धन-धान्यसमृद्धिरस्तु। ॐ पुत्रपौत्र-समृद्धिरस्तु ॐ इष्टसम्पदस्तु।

तथा अब निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए द्वितीय पात्र में

ॐ अरिष्टनिरसनमस्तु। यत्पापं रोगं अशुभं अकल्याणं तद्दूरे प्रतिहतमस्तु।

पुनः निम्न मन्त्र को पढ़ते हुए प्रथम पात्र में -

ॐ यच्छ्रेयस्तदस्तु। ॐ उत्तरे कर्मणि निर्विघ्नमस्तु। ॐ उत्तरोत्तरमहरहरभि-वृद्धिरस्तु। ॐ उत्तरोत्तराः क्रियाः शुभाः शोभनाः सम्पद्यन्ताम्। ॐ तिथिकरणे सुमुहूर्ते सनक्षत्रे सग्रहे सलग्ने साधिदैवते प्रीयेताम्। ॐ दुर्गा-पांचालयौ प्रीयेताम्। ॐ अग्निपुरोगाः विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्। ॐ इन्द्रपुरोगाः मरुद्गणाः प्रीयन्ताम्। ॐ वसिष्ठपुरोगा ऋषिगणाः प्रीयन्ताम्। ॐ माहेश्वरीपुरोगा उमामातरः प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मपुरोगा सर्वे वेदाः प्रीयन्ताम्। ॐ विष्णु-पुरोगाः सर्वे-देवाः प्रीयन्ताम्। ॐ ऋषयश्छन्दांसि-आचार्या वेदा देवा यज्ञाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ ब्रह्मा ब्राह्मणाश्च प्रीयन्ताम्। ॐ अम्बिका-सरस्वत्यौ प्रीयेताम्। ॐ श्रद्धामेधे प्रीयेताम्। ॐ भगवती कात्यायनी प्रीयताम्।

ॐ भगवती माहेश्वरी प्रीयताम्। ॐ भगवती ऋद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती वृद्धिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती पुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवती तुष्टिकरी प्रीयताम्। ॐ भगवन्तौ विघ्नविनायकौ प्रीयेताम्। ॐ सर्वाः कुलदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वाः ग्रामदेवताः प्रीयन्ताम्। ॐ सर्वा इष्टदेवताः प्रीयतन्ताम्।

तथा द्वितीय पात्र में निम्न मंत्रों द्वारा-

ॐ **हताश्च ब्रह्मद्विषः। हताश्च परिपन्थिनः। ॐ हताश्च विघ्नकर्त्तारः। ॐ शत्रवः पराभवं यान्तु। ॐ शाम्यन्तु घोराणि। ॐ शाम्यन्तु पापानि। ॐ शाम्यन्तु ईतयः। ॐ शाम्य**न्तूपद्रवाः।

पुनः निम्न मन्त्र द्वारा प्रथम पात्र का जल डाला जाए-

पात्रे - ॐ शुभानि वर्धन्ताम्। ॐ शिवा आपः सन्तु। ॐ शिवा ऋतवः सन्तु। ॐ शिवा ओषधयः सन्तु। ॐ शिवा वनस्पतयः सन्तु। ॐ शिवा अग्नयः सन्तु। ॐ शिवा आहुतयः सन्तु। ॐ शिवा

अतिथयः सन्तु। ॐ अहोरात्रे शिवे स्याताम्। ॐ निकामे निकामे नः पर्जन्यो व्वर्षतु फलवत्यो न ऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

ॐ शुक्राऽंगारक-बुध-बृहस्पति-शनैश्चर-राहु-केतु-सोम-सहितादित्यपुरोगाः सर्वे ग्रहाः प्रीयन्ताम्। ॐ भगवान् नारायणः प्रीयताम्। ॐ भगवान पर्जन्यः प्रीयताम। ॐ भगवान स्वामी महासेनः प्रीयताम्। पुरोऽनुवाक्यया यत्पुण्यं तदस्तु। याज्यया यत्पुण्यं तदस्तु। वषट्कारेण यत्पुण्यं तदस्तु। प्रायः सूर्योदये यत्पुण्यं तदस्तु।

इसके बाद कलश बगल रख दें तथा प्रथम पात्र का जल घर तथा परिवार के लोगों के ऊपर छिड़कवा दें तथा द्वितीय पात्र का जल नैत्रिटह या घर के किसी सदस्य द्वारा घर के बाहर एकान्त में डलवा दें पुण्यः वाचन करते समय सावधानी के साथ ही पात्रों में जल डालें प्रथम पात्र का जल इधर उधर गिरजाए तो कोई बात नहीं मगर द्वितीय पात्र का जल बड़ी सावधानी पूर्वक द्वितीय पात्र में ही डालना चाहिए। इधर उधर नहीं गिरना चाहिए और ना हि उसके छीटें कहीं पड़ने चाहिए जल के मार्जन के उपरान्त बताए गए नियमानुसार निम्न वैदिक मन्त्रों द्वारा ब्राह्मण अपना आशीर्वाद प्रदान करें-

यजमान - ॐ एतत्कल्याणयुक्तं पुण्यं पुण्याहं वाचयिष्ये।

ब्राह्मण - वाच्यताम्।

इसके बाद यजमान फिरसे हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-

यजमान - ॐ ब्राह्मं पुण्यमहर्यच्च सृष्ट्युत्पादनकारकम्।

(पहली बार) वेदवृक्षोद्भवं नित्यं तत्पुण्याहं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ कल्याणम।

यजमान - भो ब्राह्मणाः! मम ..... करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः

(दूसरी बार) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ पुण्याहम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम ....करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः

(तीसरी बार) पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ पुण्याहम्।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

यजमान - पृथिव्यामुद्धतायां तु यल्कल्याणं पुरा कृतम्।

(पहली बार) ऋषिभिः सिद्धगन्धर्वैस्तत्कल्याणं ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारर गृहे

करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ कल्यापाम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(दूसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ कल्याणम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः। मम सकुटुम्बस्य सपिरवारस्य गृहे

(तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः कल्याणं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ कल्याणम्।

ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्या शूद्राय चार्याय च स्वाह चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु।

यजमान - ॐ सागरस्य तु या ऋद्धिर्महालक्ष्म्यादिभिः कृता।

(पहली बार) सम्पूर्णा सुप्रभावा च तामृद्धिं प्रब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ ऋद्ध्यताम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(दूसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ ऋद्ध्यताम्।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

(तीसरी बार) करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ ऋद्ध्यताम्।

ॐ सत्रस्य ऋद्धिरस्यगन्म ज्योतिरमृता अभूम। दिवं पृथिव्या अध्याऽरुहामाविदाम दिवान्त्स्वर्ज्योतिः।।

यजमान - ॐ स्वस्तिस्तु याऽविनाशाख्या पुण्यकल्याणवृद्धिदा।

(पहली बार) विनायकप्रिया नित्यं तां च स्वस्तिं ब्रुवन्तु नः।। भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बभ्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणे (दूसरी बार) स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे

करिष्यमाणाय अमुककर्मणे (तीसरी बार) स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।

स्वस्ति नस्ताक्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।।

यजमान - ॐ समुद्रमथज्जाता जगदानन्दकारिका।

(पहली बार) हरिप्रिया च मांगल्या तां श्रियं च ब्रुवन्तु नः।।

भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणाय अमुककर्मणः श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः (दूसरी बार) श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

यजमान - भो ब्राह्मणाः ! मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य गृहे करिष्यमाणस्य अमुककर्मणः (तीसरी बार) श्रीरस्तु इति भवन्तो ब्रुवन्तु।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण।

यजमान - ॐ मृकण्डुसूनोरायुर्यद् धुरवलो मशयोस्तथा।

आयुषा तेन संयुक्ता जीवेम शरदः शतम्।।

ब्राह्मण - ॐ शतं जीवन्तु भवन्तः।

ॐ शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं

तनूनाम्।

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः।।

यजमान - ॐ शिवगौरीविवाहे या या श्रीरामे नृपात्मजे।

धनदस्य गृहे या श्रीरस्माक सास्तु सद्मनि।।

ब्राह्मण - ॐ अस्तु श्रीः।

ॐ मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीय। पशूना रूपमन्नस्य रसो यशः श्रीः श्रयतां मयि स्वाहा।।

यजमान - प्रजापतिर्लोकपालो धाता ब्रह्मा च देवराट्।

भगवांछाश्वतो नित्यं नो वै रक्षन्तु सर्वतः।।

ब्राह्मण - ॐ भगवान् प्रजापतिः प्रीयताम्।

ॐ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा रूपाणि परि ता बभूव।

यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वय स्याम पतयो रयीणाम्।।

प्रण्यः वाचन के उपरान्त प्रथम पात्र का जल लेकर ब्राह्मण यजमान की पत्नी को यजमान के बागल बिठाकर निम्नलिखित मन्त्रों द्वारा तथा सम्भव हो तो पूरे परिवार को पूजा स्थल पर बैठकार प्रथम पात्र के जल से निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ माजन करे-

यजमान - आयुष्मते स्वस्तिमते यजमानाय दाशुषे।

श्रिये दत्ताशिषः सन्तु ऋत्विग्भिर्वेदपारगैः।।

देवेन्द्रस्य यथा स्वस्ति यथा स्वस्ति गुरोर्गृहे।

एकलिंगे यथा स्वस्ति तथा स्वस्ति सदा मम।।

ब्राह्मण - ॐ आयुष्मते स्वस्ति।

ॐ प्रति पन्थामपद्महि स्वस्तिगामनेहसम्।

येन विश्वाः परि द्विषो वृणक्ति विन्दते वसु।।

ॐ पुण्याहवाचनसमृद्धिरस्तु।।

यजमान - अस्मिन् पुण्याहवाचने न्यूनातिरिक्तो यो विधिरुपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्रीमहागणपतिप्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु।

ॐ पयः पृथिव्यांपय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो थाः।

सरस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमा सीद।।

ॐ पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।

पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा।।

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रिये दधामि बृहस्पतेष्ट्वा साम्राज्येनाभि विश्वाम्यसौ। (शु० य० 9/30)

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

सरस्वत्यै वाचो यन्तुर्यन्त्रेणाग्नेः साम्राज्येनाभिषिंचामि।।

(शु० य० 18/3)

ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।

अश्विनोर्भैषज्येन तेजसे ब्रह्मवर्चसायाभि षिंचामि सरस्वत्यै।

भैषज्येन वीर्यायान्नाद्यायाभि षिंचामीन्द्रस्येन्द्रियेण बलाय श्रियै यशसेऽभि षिंचामि।।(शु० य० 20/3)

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव। यद्भद्रंतन्न आ सुव।।

ॐ धामच्छदग्निरिन्द्रो ब्रह्मा देवो बृहस्पतिः।

सचेतसो विश्वे देवा यज्ञं प्रावन्तु नः शुभे।। (शु० य० 20/7)

ॐ त्वं यविष्ठ दाशुषो नॄँ पाहि शृणुधी गिरः।

रक्षा तोकमुत त्मना।(शु० य० 18/77)

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः। प्र प्र दातारं तारिष उर्जं नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे।।

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः।वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्ति सर्व शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।।

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु।

शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः।।

सुशान्तिर्भवतु।

सरितः सागराः शैलास्तीर्थानि जलदा नदाः।

एते त्वामभिषिंचन्तु सर्वकामार्थसिद्धये।।

शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु। अमृताभिषेकोऽस्तु।।

दक्षिणादान- ॐ अद्य...... कृतैतत्पुण्याहवाचनकर्मणः सांगता-सिद्धर्थं तत्सम्पूर्णफलप्राप्त्यर्थं च पुण्याहवाचकेभ्यो ब्राह्मणोभ्यो यथाशक्ति मनसोद्दिष्टां दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।

मंत्र के अन्त में 'नामदेवताभ्यों नमः' कहें। तदोपरांत 'आवाहयामि, आसनं समर्पयामि' इत्यादि वाक्य बोल बोल कर मन्त्रों द्वारा षोडशोपचार पूजन करें। इसके बाद अपने से दक्षिण में बैठी माता की गोद में लिये बालक के दाहिने कान के समीप मुख करके चारों प्रकार के नाम वाले वाक्यों की कहें।

हे कुमार ! त्वममुककुलदेवताया भक्तोऽसि।

हे कुमार ! त्वं मासनाम्ना व्रजेशोऽसि।

हे कुमार ! त्वं नक्षत्रनाम्ना लोकेशोऽसि।

हे कुमार ! त्वं व्यवहारनाम्ना हरीशोऽसि।

वेदोसि ये नत्वं देववेद देवेंभ्यो

वेदो भव स्तेन मह्यं वेदो भूयाः।

इसके बाद सामान्य हवन करें।

तदोपरांत नाम कर्ता देवता और ब्राह्मणों को नमस्कार कर यथेच्छ ब्राह्मणों को भोजन कराकर एवं दक्षिणा देकर उनसे आशीर्वाद लें। निम्न मन्त्र से मातृगणों का विसर्जन करे।

यान्तु मातृगणाः सर्वे स्वशक्त्या पूजितामया।

इष्टकाम प्रसिद्धध्यर्थ पुनरागमनाय च।।

यदि कन्या उत्पन्न हुई हो तो भी वेद मन्त्र छोड़ कर नाम मंत्रों द्वारा उपरोक्त विधि से नामकरण संस्कार करें।

होडाचक्र

नक्षत्र एवं राशि के अनुसार नाम रखने के लिये

आदि-अक्षरों की सूची

राशि		**अक्षर नक्षत्र**
मेष-	चू चे चो ला, ली लू ले लो, अ	अ 4 भ 4 कृ 1
वृष-	ई उ ए, ओ वा वी वु, वे वो कृ	3 रो 4 मृ 2
मिथुन-	का की, कू घ ड. छ, के को हा	मृ 2 आ 4 पुन. 3
कर्क-	ही, हू हे हो डा, डी डू डे डो	पुन. 1 पु. 4 आ 4
सिंह-	मा मी मू मे, मो टा टी टू, टे	मघा 4 पूफा 4उफा1
कन्या-	टो पा पी, पू ष ण ठ, पे पो	उफा 3 हस्त 4 चि2
तुला-	रा री, रू रे रो ता, ती तू ते	चि 2 स्वाती 4 वि 3

वृ0- तो, ना नी नू ने, नो या यी यू, वि 1 अनु 4 ज्ये 4

धन- ये यो भा भी, भू ध फ ढ, भे मू 4 पूषा 5 उषा1

मकर- भो जा जी, खा खी खू खे, ग गी उषा 3 शश्र 4 घ 2

कुम्भ- गू गे, गो सा सी सू, से सो दा ध 2 शत 4 पूभा3

मीन- दी, दू थ भ ञ, दे दो चा ची पूभा 1 उभा 4 रेव4

गण्ड मूल नक्षत्रों अश्विनी, आश्लेषा, मघा, ज्येष्ठा, मूल, रेवती में उत्पन्न होने वाले बालकों की मूल शान्ति की जाती है।

निष्क्रमण संस्कार एवं सूर्यावलोकन

कहीं देशांतर में शीघ्र ले जाने की आवश्यकता हो तो बारहवें दिन (भविष्योत्तर पुराण), अन्यथा चौथे माह में यात्रा मुहूर्त के दिन शुभ समय में निष्क्रमण करें। इस सम्बन्ध में आचार्य पास्कर जी नें दो सूत्र दिये-

'चतुर्थे मासि निष्क्रमणिका' एवं 'सूर्यमुदीक्षयति तच्चक्षुरिति'

बालक सहित पिता मंगल द्रव्यों द्वारा स्नान कर शुभासन पर बैठकर आचमन, प्राणायाम करके देशकाल कथन के अन्त में संकल्प करे कि 'मेरे इस बालक की आयु वृद्धि और व्यवहार सिद्धि द्वारा श्री परमेश्वर की प्रसन्नता के लिये निष्क्रमण संस्कार करूंगा'। निष्क्रमण के दिन से बालक को सदा ही शुद्ध वायु में ले जाया करें। सर्व प्रथम गणेश-पूजन, स्वस्तिपुण्याह-वाचन, मातृका-पूजन और नान्दी-श्राद्ध करके पुण्याहवाचन के अन्त में **'सविता प्रीयताम्'** कहें। पिता आभूषण वस्त्रों से शोभित बालक को शुभ-शकुन के समय माता से लेकर घर से निकलकर निम्न मंत्र द्वारा सूर्यनारायण का दर्शन करायें।

'ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतश्रुणु याम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः सतं भृयश्च शरदः शतात्।

यान्तु मातृगणाः सर्वे स्वशक्त्या पूजितामया।

इष्टकाम प्रसिद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।

चन्द्रार्कयोर्दिगीशानां, दिशां च वरुणस्य च।

निक्षेपार्थमिदं दद्मि, ते त्वां रक्षन्तु सर्वदा।।१

प्रमत्तं वा प्रसुप्तं वा, दिवारात्रमथापि वा।

रक्षन्तु सततं ते त्वां देवाः शक्रपुरोगमाः।।२

।। इति निष्क्रमणं समाप्तम्।।

प्रश्न -

१ .नामकरण संस्कार किसे कहते है।

२ .नामकरण संस्कार का सविस्तार वर्णन करें।

इकाई 4 अन्नप्राशन संस्कार

उत्पन्न हुई संतान को पहली बार सात्विक पवित्र मधुरान्न खिलाना ही अन्नप्राशन संस्कार कहलाता है। व्यास स्मृति के अनुसार **'षष्ठे मास्यन्नमश्नीयात'** जन्म से छठे महीनें ज्योतिष ग्रन्थों में उद्धाषित शुभ दिन में अन्नप्राशन संस्कार करें। सर्व प्रथम यजमान पत्नी और बालक मंडल द्रव्ययुक्त जल से स्नान कर चोरे सहित शुद्ध श्वेत दो वस्त्र धारण करके तिलक लगाकर शुभासन पर बैठें। आचमन-प्राणायाम करके तिलक लगाकर शुभासन पर बैठ देश काल कथनांत में उद्धाषित करें कि 'बालक के गर्भवास और मलिन भक्षण की शुद्ध के लिये अन्नप्राशन से होने वाले इन्द्रिय आयु बल की स्थिरता तथा ब्रह्मवर्चस तेज की सिद्ध और बीजगर्भ सम्बद्ध मलिनता नष्ट करके परमेश्वर की प्रीति के लिये मैं अननप्राशन करूंगा और इस प्रयोजन की निर्विध्नता हेतु गणेश तथा मातृकाओं का पूजन, स्वस्ति पुण्याहवाचन और नांदीश्राद्ध करूंगा'। संकल्प एवं पूजनोपरांत अंत में 'संविता प्रीयताम्' उद्धाषित करें।

'ॐ अद्य कर्तव्यअन्नप्राशनहोमकर्मणि कृता कृतावेक्षणारूपब्रह्मकर्मकर्तुममुकगोत्रममुकशर्मागां ब्राह्मणामेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलवासोभिबह्मत्वेन त्वामहं वृगो।'

पूण्यः वाचन के उपरान्त पूजन क्रम में षोडश मातृका के पूजन का विधान है। सबसे पहले यजमान के दाहिनी ओर किसी चौकी या पाटे पर या वेदी पर ही कपड़ा बिछाकर सोलह चौकोर खानों का निर्माण करें, तथा प्रत्येक खानों में चावल गेहूँ रखकर एक एक देवताओं द्वारा आवाहन करें।

षोडशमातृका-चक्र

पूर्व

आत्मन:कुलदेवता १६	लोकमातर: १२	देवसेना ८	मेधा ४
तुष्टि: १५	मातर: ११	जया ७	शची ३
पुष्टि: १४	स्वाहा १०	विजया ६	पद्मा २
धृति: १३	स्वधा ९	सावित्री ५	गौरी १ गणेश

आ० कु० देवता

16 (लाल)

लोकमाता

12 (पीला)

देवसेना

8 (लाल)

मेधा

4 (पीला)

तृष्टि

15 (पीला)

माता

11 (लाल)

जया

7 (पीला)

शची

3 (लाल)

पुष्टि

14 (लाल)

स्वाहा

10 (पीला)

विजया

6 (लाल)

पद्मा

2 (पीला)

धृति

13 (पीला)

स्वधा

9 (लाल)

सावित्री

5 (पीला)

1 गौरी लाल

गणेश

(धूम्र)

अथ षोडशमातृकाणामावाहनं पूजनंच

(मातृका वेदी के सामने पूर्व या उत्तर की ओर मुंह करके बैठकर अक्षत छोड़कर क्रमशः आवाहन करें।)

गणेश आवाहनम्

ॐ गणानान्त्वा गणपति ঙ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति गुं हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ঙ हवा महे व्वसो मम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्।

समीपे मातृवर्गस्य सर्वविघ्नहरं सदा।

त्रैलोक्यवन्दितं देवं गणेशं स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि।

1. गौरी-आवाहनम्

ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।।

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।

लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि स्थापयामि।

एकतन्त्रेण मातृकाणामावाहनम् -

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया।

देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।।

धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टि आत्मनः कुलदेवताः।

गणेशेनाधिका ह्येता बृद्धौ पूज्यास्तु षोडश।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्याद्याः कुलदेवतान्तमातरो गणपतिसहिताः सुप्रष्ठिताः वरदाः भवन्तु।

2. पद्मा-आवाहनम्

ॐ हिरण्ण्यरूपा ऽउषसो व्विरोक ऽउभाविन्द्राऽउदिथः

सूर्य्यश्च। आरोहतं व्वरुण मित्र्त्र गर्त्तं ततश्चक्षाथामदिर्ति दितिं च मित्र्त्रोऽसि व्वरुणोऽसि।।

पद्माभां पद्मवदनां पद्मनाभोरु-संस्थिताम्।

जगत्प्रियां पद्मवासां पद्मामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पद्मायै नमः, पद्मामावाहयामि स्थापयामि।

3.शची-आवाहनम्

ॐ निवेशनः संगमनो व्वसूनां व्विश्वा रूपाभिचष्टे शचीभिः।

देव ऽइव सविता सत्य-धम्मर्न्द्रो न तस्त्थौ समरे पथीनाम्।।

दिव्यरूपां विशालाक्षीं शुचि-कुण्डल-धारिणीम्।

रक्तमुक्ताद्यलंगकारां शचीमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शच्यै नमः, शचीमावाहयामि स्थापयामि।

4. मेधा-आवाहनम्

ॐ मेधां मे व्वरुणो ददातु मेधामग्निः प्प्रजापतिः।

मेधामिन्द्रश्च व्वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा।

विश्वेऽस्मिन् भूरिवरदां जरां निर्जरसेविताम्।

बुद्धिप्रबोधिनीं सौम्यां मेधामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मेधायै नमः, मेधामावहयामि स्थापयामि।

5. सावित्री-आवाहनम्

ॐ सविता त्वा सवाना गुं सुवतामग्निर्ग्गृहपतीना गुं सोमो व्वनस्प्पतीनाम्। बृहस्प्पति र्व्वाचऽइन्द्रो ज्यैष्ठ्याय रुद्द्रः पशुब्भ्यो मित्र्त्रः सत्यो व्वरुणो धर्म्मपतीनाम्।।

जगत्सृष्टिकरीं धात्रीं देवीं प्रणव-मातृकाम्।

वेदगर्भां यज्ञमयीं सावित्रीं स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाहयामि स्थापयामि।

6. विजया-आवाहनम्

ॐ विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्यो बाणवाँ2उत।
अनेशन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषंगगधिः।।

सर्वास्त्र-धारिणीं देवीं सर्वाभरण-भूषिताम्।
सर्वदेवस्तुतां वन्घां विजयां स्थापयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः विजयायै नमः, विजयावाहयामि स्थापयामि।

7. जया-आवाहनम्

ॐ बह्वीनां पिता बहुरस्य पुत्त्रश्चिश्चाकृणोति समनावगत्य।
इषुधिः संगकाः पृतनाश्च सर्व्वाः पृष्ठे निनद्धो जयति प्प्रसूतः।।

सुरारिमथिनीं देवीं देवानामभय-प्रदाम्।
त्रैलोक्य-वन्दितां शुभ्रां जयामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः जयायै नमः, जयामावाहयामि स्थापयामि।

8. देवसेना-आवाहनम्

ॐ इन्द्द्र ऽआसान्नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणा यज्ञः पुरऽएतु सोमः।
देवसेनानामभि-भंजतीनांजयन्तीनां मरुतो यन्त्वग्ग्रम्।।

मयूर-वाहनां देवीं खड्ग-शक्ति-धनुर्धराम्।
आवाहयेद् देवसेनां तारकासुर-मर्दिनीम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः देवसेनायै नमः, देवसेनामावाहयामि स्थापयामि।

9. स्वधा-आवाहनम्

ॐ पितृब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः पितामहेब्भ्यः

स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः प्रपितामहेब्भ्यः स्वधायिब्भ्यः स्वधा नमः। अक्षन्पितरोऽमीमदन्त पितरोऽतीतृपन्त पितरः पितरः शुन्धद्ध्वम्।।

अग्रजा सर्वदेवानां कव्यार्थं या प्रतिष्ठिता।

पितृणां तृप्तिदां देवीं स्वधामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि स्थापयामि।

10. स्वाहा-आवाहनम्

ॐ स्वाहा प्राणेब्भ्यः साधिपतिकेब्भ्यः। पृथिव्यै स्वाहाग्नये स्वाहान्तरिक्षाय रिक्षाय स्वाहा व्वायवे स्वाहा दिवे स्वाहा सूर्य्याय स्वाहा।

हविर्गृहीत्वा सततं देवेभ्यो या प्रयच्छति।

तां दिव्यरूपां वरदां स्वाहामावाहायाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि स्थापयामि।

11. मातृ-आवाहनम्

ॐ आपो ऽअस्मान्मातरः शुन्धय शुन्धयन्तु घृतेन नो घृतप्प्वः पुनन्तु। व्विश्व गुं हि रिप्प्रं प्रवहन्ति देवीरुदिदाब्भ्यः शुचिरा पूत ऽएमि। दीक्षा-तपसोस्तनूरसि तां त्वा शिवा गुं शग्ग्मां परिदधे भद्द्रं व्वर्णं पुष्ष्यन्।।

आवाहयाम्यहं मातृः सकलाः लोकपूजिताः।

सर्वकल्याण-रूपिण्यो वरदा दिव्यभूषणाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः मातृभ्यो नमः, मातृ आवाहयामि स्थापयामि।

12. लोकमातृ-आवाहनम्

ॐ रयिश्च मे रायश्च मे पुष्ष्टिश्च मे व्विभु च मे प्प्रभु च मे पूर्ण्णंच मे पूर्ण्णतरंच मे कुयवंच मेऽक्षितंच मेऽन्नंच मेऽक्षुच्च मे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्।

आवाहयेल्लोक-मातृर्जयन्ती-प्रमुखाः शुभाः।

नानाऽभीष्टप्रदाः शान्ताः सर्वलोक-हितावहाः।।

ॐ भूर्भुवः स्वः लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातृ आवाहयामि स्थापयामि।

13. धृति-आवाहनम्

ॐ यत्प्रज्ञानमुत चेतो धृतिश्च यज्ज्योतिरन्तरमृतं प्रजासु। यस्मान्न ऽऋते किंचन कर्म्म क्रियते तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु।।

सर्वहर्षकरीं देवीं भक्तानामभयप्रदाम्।

हर्षोत्फुल्लास्य-कमलां धृतिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि स्थापयामि।

14. पुष्टि-आवाहनम्

ॐ अंगात्यात्क्ष्भिषजा तदश्विनात्क्मानमंगैः समधात्सरस्वती। इन्द्रस्य रूप गुं शतमानमायुश्चन्द्रेण ज्योतिरमृतन्दधानाः।।

पोषयन्तीं जगत्सर्वं स्वदेह-प्रभवैर्नवैः।

शाकैः फलैर्जलैरत्नैः पुष्टिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः पुष्ट्यै नमः, पुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

15. तुष्टि-आवाहनम्

ॐ जातवेदसे सुनवाम-सोममरातीयतो निदहाति-वेदः।

सनःपर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव-सिन्धुं दुरितात्यग्निः।।

देवैराराधितां देवीं सदा सन्तोष-कारिणीम्।

प्रसाद-सुमुखीं देवीं तुष्टिमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः तुष्ट्यै नमः, तुष्टिमावाहयामि स्थापयामि।

16. आत्मकुलदेवता-आवाहनम्

ॐ प्राणाय स्वाहाऽपानाय स्वाहा व्यानाय स्वाहा।
चक्षुषे स्वाहा श्रोत्राय स्वाहा व्वाचे स्वाहा मनसे स्वाहा।।
पत्तने नगरे ग्रामे विपिने पर्वते गृहे।
नानाजाति-कुलेशानीं दुर्गामावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः आत्मनः कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि स्थापयामि।

17. मातृणां प्रतिष्ठा

ॐ मनो जूतिर्ज्जूषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं य्यज गुं समिमन्दधातु। व्विश्वे देवास ऽइह मादयन्तामों 3 प्रतिष्ठ।।

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूँस्ताँश्चक्के व्वायव्व्या नाण्ण्या ग्ग्राम्म्याश्च्च ये।।
मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपापहरं शुभम्।
तदिदं कल्पितं देव! स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नानम्:- (पंचामृत से स्नान करावें)

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।।
पंचामृतं मयाऽऽनीतं पयो दधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

पंचामृत स्नाने के उपरान्त गंधोदक स्नान जल में हल्दी तथा

कपूर इत्यादि डालकर गंधोदक बना लें, निम्नलिखित पढ़ते हुए गंधोदक से गौरी गणेश को स्नान करवाएं-

गंधोदक स्नान-

इस स्नान के उपरान्त पुनः भगवान को शुद्ध जल से स्नान करवाएं।

शुद्धादक स्नानम् - (शुद्ध जल से स्नान करावे)

शुद्धवालः सर्व्व शुद्धवालो मणि वालस्त ऽआश्विनाः

श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्द्राय पशुपते कर्ण्णा यामा

ऽअवलिप्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जत्र्याः।।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।

नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधि कुरु।।

स्नान के उपरान्त एक आचमनी जल उपर्युक्त मन्त्र को कहते हुए चढ़ाएं तथा भगवान को वस्त्र निवेदित करें, अगर वस्त्र न हो तो मौली अथवा रूई निम्न मन्त्र पढ़ते हुए

वस्त्रम् - (वस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावें)

ॐ युवा सुवासाः परिवीत ऽआगात्स ऽउश्रेयान्भवति जायमानः।

तं धीरासः कवय ऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

शीत-वातोष्ण-संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्।

देहालंगरणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

वस्त्र के उपरान्त आचमन के लिए जल छोड़ें वस्त्र के उपरान्त भगवान को उपवस्त्र प्रदान करें।

उपवस्त्रम् - (उपवस्त्र या रक्षासूत्र चढ़ावे)

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथमासदत्त्स्वः।

व्वासो ऽअग्गने व्विश्वरूप गुं संव्ययस्व विभावसो।।

श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रं समर्पयामि।

इसके उपरान्त आचमन के लिए पुनः एक आचमनी जल लेकर निम्न वाक्य बोलते हुए भगवान को समर्पित करें-

उपवस्त्रान्ते द्विराचनं समर्पयामि,

उपवस्त्र के बार दो आचमनी जल गिरा दें। आचमन के पश्चात् यज्ञोपवीत निम्न मन्त्र बोलते हुए चढ़ाएं-

यज्ञोपवीतम् - (गणेश जी को जनेऊ चढ़ावे)

ॐ यज्ञो देवानां प्रत्येति सुम्नमादित्यासो भवता मृडयन्तः।

आ वोऽर्वाची सुमतिर्वबृत्याद गुं होश्चिद्या वरिवोवित्तरा सदादित्यीयस्त्वा।।

नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।

उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।।

यज्ञोपवीतान्ते द्विराचमनं समर्पयामि।

जनेऊ के बाद भी दो आचमनी जल गिरावें।

यज्ञोपवीत चढ़ाने के उपरान्त एक आचमनी जल पुनः यह वाक्य कहते हुए चढ़ा दें,

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्।

विलेपनं सुरश्रेष्ठ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, गन्धं समर्पयामि।

चन्दनः- भगवान को चन्दन लगाएं।

चन्दनम् - (चंदन या रोली (कुंकुम चढ़ावें)

ॐ त्वां गन्धर्व्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोपो राजा विद्वावात्र्यक्ष्मादमुच्यत।।

चन्दन के उपरान्त अक्षत निम्न मन्त्र को पढ़ता हुआ चढ़ाएं-

अक्षताः - (धुले हुए, चंदन, कुंकुम युक्त अक्षत चढ़ावें)

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मतीयोजात्रिन्द्रद्र ते हरी।।

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुड्कुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत के उपरान्त पुष्प माला भगवान को अर्पित करें मन्त्र-

पुष्पाणि (माला) - (सुगन्धित फूल तथा माला चढ़ावें)

ॐ ओषधीः प्रतिमोध्वं पुष्पतीः प्रसूवरीः।
अश्वा ऽइव सजित्वरीर्व्वीरुधः पारयिष्ण्वः।।
माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।
मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाला च समर्पयामि।

माला के उपरान्त गणेश जी पर तथा कलश पर दूर्बा चढ़ाएं मन्त्र-

दूर्बा - (गणेश जी को कोमल दूर्बा के इक्कीस अंकुर चढ़ावे। गौरी जी को दूर्वा न चढ़ावें)

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।

एवा नो दूर्व्वे प्रतनु सहस्रोण शतेन च।।

दूर्वाड.्कुरान् सुहरितान्-अमृतान् मंगलप्रदान्।

आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणपतये नमः, दुर्वांकुरान् समर्पयाणि।

सिन्दूरम् - (गणेश गौरी को पीला सिन्दूर चढ़ावे।)

दूर्बा गणेश जी को ही चढ़ती है, देवी जी पर दूर्बा न चढ़ाएं दूर्बा चढ़ाने के उपरान्त सिन्दूर चढ़ाएं मन्त्र-

ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वानप्रमियः पतयंत्रि यह्व्वाः।

घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दत्रूर्म्मिभिः पिन्वमानः।।

सिन्दूर शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्।

शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

सिन्दूर के पश्चात् अबीर, गुलाल भगवान पर चढ़ाएं मन्त्र-

अबीरादि परिमलद्रव्यम् - (अबीर, गुलालादि द्रव्य चढ़ावें)

ॐ अहिरिव भोगैः पर्य्येति बाहु ज्याया हेतिं प्परिबाधमानः।

हस्तघ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान् पुमा गुं सं प्परिपातु व्विश्वतः।।

नाना-परिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्।

अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

सुगन्धित द्रव्य अबीर गुलाल के पश्चात सुगंधित द्रव्य इत्र भगवान को निम्न मन्त्रों द्वारा निवेदित करें-

सुगन्धितद्रव्यम् - (इत्रादि सुगन्ध चढ़ावे)

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।

उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीयमामृतात्।।

नानासुगन्ध-पुष्पेभ्यः साररूपं समाहृतम्।

सुगन्धितमिदं द्रव्यं गृहाण सुरसत्तम।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सुगन्धितद्रव्याणि समर्पयामि।।

तथा सुगंधित द्रव्य के उपरान्त धूप दिखाएं मन्त्र-

धूपम् - (धूपबत्ती अथवा अगरबत्ती से धूप देवे)

ॐ धूरसि धूर्व्व धूर्व्वन्तं धूर्व्व तं य्योऽस्समान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्व्वामः।

देवानामसि व्वह्नितम गुं सस्नितमं पप्प्रितमं जुष्टृतमं देवहूतमम्।।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्धमुत्तमः।

आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

धूप दिखाने के पश्चात भगवान को द्वीप दिखाएं-

दीपम् - (घी का दीपक दिखावे)

ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्य्यर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः

स्वाहा।

अग्निर्व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहह सूर्य्यो व्वर्च्चो ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।

ज्योतिः सूर्य्यो ज्योतिः स्वाहा।।

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वाह्निना योजितं मया।

दीपं गृहाण देवेश! त्रैलोक्यतिमिरापहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। (हस्तप्रक्षालनम्)

द्वीप दिखाने के पश्चात् द्वीप के ऊपर जल घुमाकर कहकर हाथ धुल लें, तत पश्चात् नैवेद्य भगवान को अर्पण करें, नैवेद्य लगाने के पश्चात् जल से मण्डल करते हुए निम्न मन्त्रों को बोलता हुआ ढक लें-

नैवेद्यम् - (अनेक प्रकार के मिष्ठान निवेदित करें)

ॐ नाब्भ्या ऽआसीदन्तरिक्ष गुं शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्तत।

पद्भ्यां भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ2ऽअकल्प्पयन्।।

शर्करा-खण्ड-खाद्यानि दधि-क्षीर-घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा।

ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि। लाचमनीयं समर्पयामि

मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं समर्पयामि।

मन्त्र के पश्चात् चार बार आचमनी से जल गिरा दें तत पश्चात् ऋतु फल भगवान को निवेदित करें, मन्त्र-

ॐ याः फलिनीर्य्या ऽअफला ऽअपुष्प्या याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गुं ह सः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव।

तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ऋतुफलानि समर्पयामि।

फल के उपरान्त एक आचमनी जल तथा भगवान पर चंदन दिड़के अगुलियों के माध्यम से करोधवर्तन मन्त्र-

करोद्वर्त्तनम् - (करोद्वर्त्तन के लिए चंदन छिड़कना चाहिए)

ॐ अ गुं शुना ते अ गुं शुः पृच्यतां परुषा परुः।

गइधस्ते सोममवतु मदाय रसो ऽअच्युतः।।

चन्दनं मलयोद्‌भूतं कस्तूर्यादिसमन्वितम्।

करोद्वर्त्तनकं देव! गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनेन करोद्वर्तनं समर्पयामि।

ऋतुफलानि - (जिस ऋतु में जो फल उपलब्ध हों समर्पित करें)

इसके पश्चात् भगवान को पान, सुपारी, लौंग, कपूर डालकर अर्पण करें मन्त्र-

ताम्बूलम् - (सुपाड़ी, लौंग, इलायची सहित पान चढ़ावें)

ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतंवत्।

व्वसन्तोऽयासीदाज्ज्यंग्रीषम ऽइध्मः शरद्धविः।।

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्लीदलैर्युताम्।

एलादिचु‌ूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थे पूगीफल-ताम्बूलं समर्पयामि।

ताम्बोल के पश्चात् भगवान को दक्षिणा अर्पित करें।

दक्षिणा - (दक्षिणा में प्रचलित मुद्रा यथाशक्ति समर्पित करें)

ॐ हिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक ऽआसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुते मां कस्मै देवाय हविषा व्विधेम।।

हिरण्यगर्भ-गर्भस्थं हेमबीजं विभावसो।

अनन्त-पुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्री गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दक्षिणां समर्पयामि।

दक्षिणा के पश्चात् आरती निम्न मन्त्रों द्वारा की जाए-

चन्द्रमा मनसो जाता, चक्षो सूर्यो अजायत ।

श्रीय द्ववाइद्वच पुष्प मुखा दधर्निजात।।

आरती के पश्चात् जल घुमाकर गिरा दें, हाथ पुष्प लेकर पुष्पाँजलि करें मन्त्र-

पुष्पाँजलि -

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्व्वे साद्धयाः सन्ति देवाः।।

नाना सुगन्धि पुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।

पुष्पांजलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ गणपत्यादि-कुलदेवतान्त-मातृभ्यो नमः।

सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ गणपत्यादि-कुलदेवतान्त-मातृभ्यो नमः:-

ऐसा कहते हुए वैदिक मंत्रों से षोडशोपचार पूजन करके प्रार्थना करें।

आवाहन के उपरान्त पूर्व लिखित विधा द्वारा षोड्शो प्रचार पूजन करना चाहिए ध्यान रहे मातृका यज्ञोपवीत न चढ़ाया जाए तथा विशेष अर्ध का भी विधान माहका के लिए नहीं है बाकि सभी देवताओं के पूजा की अनुरूप इनकी भी पूजा करें तथा निम्न मन्त्रों से प्रार्थना करें-

प्रार्थना

आयुरारोग्यमैश्वर्यं ददध्वं मातरो मम।

निर्विघ्नं सर्वकार्येषु कुरुध्वं सगणाधिपाः।।1।।

बर्द्धन्तां कुलमातरो हि सततं धान्यं वाहनम्।

दीर्घायुंच यशश्च श्रीः समतां ज्ञानं महद् गौरवम्।।

पुत्रं पौत्रमथास्तु मंगलसदा सर्वत्र निर्विघ्नता।

पीडां पापरतिं हरन्तु जाड्यं तन्वन्तु छत्रं सुखम्।।2।।

हाथ में जल लेकर ''अनया पूजया षोडशमातरः प्रीयन्ताम् न मम।'' कहकर सामने जल गिराकर पूजन समर्पित करें।

इसके बाद यजमान ब्रह्मा का वरण करें और ब्रम्हा पुष्पादि को लेकर **'ॐ वृतोऽस्मीति'** कहे तब यजमान **'यथा वि०'** उद्भाषित कहे और ब्रम्हा **'करवाणि'** कहे। तदोपरांत अग्नि से दक्षिण में शुद्ध आसन चौकी आदि बिछाकर उस पर पूर्व की जिसका अग्रभाग हो ऐसे कुश बिछाकर ब्रह्मा को अग्नि की प्रदक्षिणा कराकर यजमान ब्रम्हा को **'अस्मिन कर्मणि त्वं मे ब्रह्मा भव'** अन्नप्राशन कर्म में आप मेरे ब्रह्मा हैं कहें और ब्रह्मा के **'भवानि'** कहने पर उस आसन पर ब्रह्मा को उत्तराभिमुख बैठा कर, प्रणीतापात्र को सामने रख कर, जल से भर

कर, कुशों से आच्छादन कर ब्रह्मा का मुख आलोकन करके अग्नि से उत्तर कुशों पर प्रणीतापात्र को यथा विधि स्थापित करें।

ॐ देवी वाचमजनयन्त देवास्तां विश्वरूपाः पशवो वदन्ति। सा नो मन्द्रेषमूर्ज दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टुतैतु स्वाहा। इदं वाचे न मम।

ॐ वाजो नो अद्य प्रसुवाति दानं वाजो देवा ऋतुभिः कल्पयाति। वाजो हि मा सर्ववीरं जजान विश्वा आशा वाजपतिर्जयेय ँ स्वाहा। इदं वाचे वाजाय न मम।

उपरोक्त दो आहुति ब्रह्मा के अन्वारम्भ किये बिना देकर स्थाली पाक से निम्न मंत्रों द्वारा चार आहुति देवे।

ॐ प्रा..नान्नमशीय स्वाहां। इदं प्राणाय न मम। ॐ अपानेन गन्धानशीय स्वाहा। इदमपानाय न मम। ॐ चक्षुषा रूपागयशीय स्वाहा। इदं चक्षुषे न मम। ॐ श्रोत्रेणा यशोऽशीय स्वाहा। इदं श्रोत्राय न मम।

'ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा

इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

ॐ भूः स्वाहा इदमग्नये न मम।

ॐ भुवः स्वाहा इदं वायवे न मम।

ॐ स्वः स्वाहा इदं सूर्याय न मम।

ॐ त्वनो अग्ने वरुणास्य विद्वान देवस्य हेडोऽअवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वहितमः। शोशु चानो विश्वाद्वेषासि प्रमुमुग्ध्यस्मस्वाहा!!1!!

इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।।1।।

ॐ स त्वन्नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणारराणो वीहि मृडीकसुहवो न एधि स्वाहा।।2।।

इमदग्नीवरूणाभ्यां न मम। ॐ अ याश्चाग्नेऽस्यन भिषस्तिपाश्च सत्त्यमित्त्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यय नो धेहि भेषज

स्वाहा।।3।।

इदमग्नये न मम। ॐ ये ते शतं वरुणा ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभि र्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुंचन्तु मरुतः स्वर्का। स्वाहा।।4।।

इदं वरूणाय सवित्रे विष्णावे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरूद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम। ॐ उदुत्तमं वरूण पाशमस्मदबाधमं विमध्यम¤श्रथाय। अथावयमादित्य व्रते तवानागमो अदितये स्वाम स्वाहा।।5।।

इदं वरुणाय न मम।

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।

तद्परान्त सकंल्प करें जबकि ब्रह्मा स्वस्ति कह कर दक्षिणा लें। इसके बाद पवित्रों द्वारा प्रणीता का जल लेकर पढ़ें **'ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः संतु'** तथा बालक के सिर पर जल छिड़कें और निम्न मन्त्र से प्रणीतापात्र के शेष जल को ईशान दिशा में रख दें।

'ॐ दुर्मित्रिया स्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।

तदोपरान्त पवित्रों को बिछाये हुये कुशों में मिला दें तब जिस क्रम से बिछाये थे उसी क्रम से पवित्रों सहित उठाकर कुशों में आज्यस्थाली में बचा घी लगा कर हाथ से ही कुशों का होम निम्न मंत्र से करें।

ॐ देवा गातु विदोगातुं वित्वागातु मित। मनस्पत इमं देव यज्ञ ¤ स्वाहा वातेधाः स्वाहा।।

इसके बाद मीठा, कडवा, तीखा, कषैला, खट्टा, लवण आदि छः रसों तथा चावल आदि जितने अन्न प्राप्त हों उन सभी को शुद्ध कर पकाकर एक उत्तम पात्र में परोस कर स्नान कराके शुद्ध वस्त्र आभूषण पहनाये बालक को बिना तुष्णी मन्त्र पढ़े और एक बार प्राशन करायें।

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणाः।

प्रप्रदातारं तारिष ऊर्ज्जन्नो धेहि द्विपदे चतुष्पदे

इसके बाद बालक का हाथ मुख धोकर स्वयं आचमन करके फल पुष्पों सहित घी से स्रुवे को भर कर खड़ा होकर 'मूर्धानं'मंत्र से पूर्णाहुति दें। स्रुव मूल के द्वारा भस्म लेकर दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली के अग्र भाग से 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' से ललाट में 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम' से कण्ठ में 'यद्देवपेषु' से दक्षिणा बाहु के मूल में 'ॐ तन्नो अस्तुत्र्यायु षमिति त्र्यायुषं कुर्यात्' से हृदय में भस्म लगायें। इसी प्रकार बालक को भस्म लगाते समय मनस्थ 'तन्नो'के स्थान में 'तत्ते' उच्चारित करें। तदोपरान्त ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर उनसे आशीर्वाद लें और संकल्प-पूर्वक यथा शक्ति ब्राह्मणों को भोजन कराकर मातृगणों और अग्नि का विसर्जन करें।

प्रश्न -

१ .अन्नप्राशन संस्कार किसे कहते है।

२ .अन्नप्राशन संस्कार का सविस्तार वर्णन करें।

इकाई 5 - अक्षरारम्भ संस्कार

यह संस्कार क्षर(जीव) तथा अक्षर(परमात्मा) के योग का संस्कार है। गीता जी में भगवान श्रीकृष्ण नें स्वयं अक्षर की महिमागान करते हुए कहा है कि 'अक्षरों में 'अ' कार हूँ - **अक्षराणामकारोऽस्मि**। वह कहते हैं कि **'अक्षरं ब्रम्ह परमं'** अर्थात अक्षर ही परम ब्रम्ह परमात्मा है जो ओंकार पद से विभोषित है। इस संस्कार में सर्व प्रथम ज्योतिष-शास्त्रोक्त शुभ मुहूर्त में बालक के साथ पितादि यजमान माङ्गल्य स्नान कर चीरेदार दो वस्त्र धारण करें। तत्पश्चात मस्तक पर तिलक लगाकर शुभासन पर बैठकर आचमन-प्राणायाम करके देशकाल कीर्तन के अन्त में विद्यारम्भ संस्कार का संकल्प करें।

'अस्य कुमारस्य लेखन वाचनादि-विपुल विद्या ज्ञान प्राप्तये विद्यारम्भ करिष्ये तादंगत्वेन गणपत्यादिदेवानां यथालब्धो पचारैः पूजनं अहम् करिष्ये'।

सर्वविद्ये त्वमाधारः स्मृतिज्ञानप्रदायिके। प्रसन्ना वरदा भूत्वा देहि विद्यां स्मृतिम् यशः।। अनया पूजया आवाहितदेवताः प्रीयन्तां।

पलाश पत्र से विजन प्रक्रिया में श्राद्ध नान्दी - सर्वप्रथम पलाश पत्र चुन कर इसके के माध्यम से चार पाँच पत्तो को जोड कर एक पत्तल का निर्माण कर लेपत्तल इतना कडा हो कि इसको चार भागों में बाटा जा सके बने हुए पत्तल को क्रमशः 1 2 3 4 खानो में बार कर सावधानी पूर्वक प्रत्येकखानो में पितृ का आवहन करना चाहिए।

आसन

श्राद्ध में पूरी श्रद्धा से पितरों को आसन देना चाहिए। आसन के लिए पहले तो कुश अगर कुश न हो तो दूर्वा का भी आसन दिया जा सकता है आसन संकल्प के साथ प्रत्येक खानो में प्रदान करना चाहिऐ।

दान-: श्राद्ध में पितरो के लिऐ दान का विधान है। वस्त्र जनेऊ, चंदन, फल, पानसुपारी तथा दक्षिणा आदि के साथ भोजन के निमित्त दक्षिणा

देने का विधान है।

संकल्प बिना है महत्व बडा का संकल्प में श्राद्ध -संकल्प के कोई भी कार्य सफल नहीं होता। इसलिए प्रत्येक वस्तु संकल्प के साथ चढानी चाहिए।

पाद्य चाहे देव हो, या पितर हो, पूजा में इनके आगमन (आवाहन) के बाद सबसे पहले पैर धुलने की प्रक्रिया है। पैर धुलने कि प्रक्रिया को हि पाद्य शब्द से सम्बोधित किया गया है। श्राद्ध में आवाहन के बाद संकल्प के साथ प्रत्येक खानो में आवाहित पितरों को पाद्य (पैर धुलने) के निमित्त जल देना चाहिऐ -

अर्घ्याचन लिए के अर्घ्य जल आचमनी एक- एक बाद के धुलने पैर - देनाचाहिए अर्घ्य हाथ धुलने की प्रक्रिया को कहा जाता है

तथा उसके उपरान्त आचमन का विधान है।

स्नान- पाद्य अर्घ्य आचमन के बाद सभी अंगों के शुद्धों के निमित्त स्नान के लिये जल देना चाहिऐ-

पितृ-अवाहन में भागो चार को पत्तल बने से पत्र पलास पहले सबसे - ले बाटफिर संकल्प के साथ पितरों का आवाहन करना चाहिऐ

संकल्पः- हाथ में कुश अक्षत जल पुष्प और द्रव्य लेकर संकल्प करें संकल्पमात्र से ही पितरों का अवाहन माना जाता है।

संकल्प-:

अद्येत्यादिदेशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्राणां मातृपितामही-प्रपितामहीनाम्
अमुकामुकदेवीनां गायत्रीसावित्रीसरस्वती स्वरूपिण्यां नान्दीमुखीनाम्
अमुकगोत्राणां पितृपितामहप्रपितामहानाम् अमुकामुकदेवानाम् वसुरुद्रादित्य
स्वरूपाणां नान्दीमुखानाम् तथा अमुकगोत्राणां प्रमातामहवृद्धप्रमातामहा
अमुकामुकदेवानां सपत्नीकानाम् अग्निवरुणप्रजापति स्वरूपाणां
नान्दीमुखानां प्रीतये अमुककर्मनिमित्तकं सत्यवसुसंज्ञकविश्वेदेवपूर्वकं
संक्षिप्तसङ्कल्पविधिना नान्दीमुखश्राद्धमहं करिष्ये।।

न स्वधाशर्मवर्मेति पितृनाम चोच्चरेत्।

न कर्म पितृतीर्थेन न कुशा द्विगुणीकृताः।।

न तिलैर्नापसव्येन पित्र्यामन्त्रविवर्जितम्।

अस्मच्छब्दं न कुर्वीत श्राद्धे नान्दीमुखे क्वचित्।।

पाद प्रक्षालनम् - बने हुए चार खानो में क्रमशः एक में खानों एक-के संकल्प

बाद संकल्प के साथ, हाथ में जल लेकर छोड़ना चाहिऐ -

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ मातृप्र पितामही-पितामहाः नान्दीमुख्यः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं यः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ पितृ नान्दीमुखाः प्रपितामहाः-पितामह-

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।

आसन - पाद प्रक्षालन के बाद बतलायी गयी पूर्वा क्रियानुसार ही एक-करना प्रदान आसन खानोमें एकचाहिए।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इम आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धेक्षणी क्रियेतां तथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।

ॐ मातृइमें स्वः भूर्भुवः ॐ नान्दीमुख्यः प्रपितामह्यः-पितामही-

आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्त्यो भवन्त्यः तथा प्राप्नुवामः।

ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इमें आसने वो नमो नमः नान्दीश्राद्वेक्षणौ क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।

ॐ मातामह नान्दीमुखाः सपत्नीकाः वृद्धप्रमातामहाः प्रमातामह-

ॐ भूर्भुवः स्वः इमें आसने वो नमो नमः, नान्दीश्राद्धेक्षणं क्रियेतां यथा प्राप्नुवन्तो भवन्तः तथा प्राप्नुवामः।

दूर्वादिपूजन- आसन के बाद विश्वेदेव तथा पित्तरो के लिए पित्तरो मातृ)

पितामही प्रपितामही पितामह प्रपितामह सपतनीक मातामह प्रमातामह वृद्धमातामहजल क्रमसः पर आसन लिए के (, वस्त्र, यज्ञोपवीत, चन्दन, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपनैवेद्य, ऋतुफल, पान-सुपारी चढाना चाहिऐ-

अत्रापः पान्तु। इमें वाससी सुवाससी। इमानि यज्ञोपवीतानि सुयज्ञोपवीतानि। अयं वो गन्धः सुगन्धः। इमें अक्षताः स्वक्षताः। इमानि पुष्पाणि सुपुष्पाणि। अयं वो धूपः सुधूपः। अयं वो दीपः सुदीपः। इदं नैवेद्यं सुनैवेद्यम्। इमानि ऋतुफलानि सुऋतुफलानि। इदं ताम्बूलं सुताम्बूलम्। इदं पूगीफलं सुपूगीफलम्।

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातृ नान्दीमुख्यः प्रपितामह्यः-पितामही-

ॐ भूर्भुवः स्वः इदंगन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

देवार्जन-विधि-प्रबन्धः

ॐ पितृ नान्दीमुखाः प्रपितामहाः पितामह-

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातामहनान्दीमुखाः सपत्नीकाः वृद्धप्रमातामहाः-प्रमातामह-

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं गन्धाद्यर्चनं स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।।

भोजनादिक संकल्प के भोजन निमित्त के पित्तरो उपरान्त के पूजन - निमित्तकुछ न कुछ खाद्य पदार्थ मुनक्का आंवला तथा दक्षिणा लेकर प्रत्येक खानों में छोड़ना चाहिए

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्मब्राह्मणभोजन पर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यम अमृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातृ पितामही प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः

ॐ भूर्भुवः स्वः इदं

युग्म ब्राह्मण भोजन पर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यम अमृत रूपेण स्वाहासम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ पितृपितामहप्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण-स्वाहा रूपेण अमृत द्रव्यं निष्क्रयभूतं पर्याप्ताऽऽमान्न भोजन

सम्पद्यतां वृद्धिः।

ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः इदं युग्म ब्राह्मण भोजनपर्याप्ताऽऽमान्न निष्क्रयभूतं द्रव्यं अमृत रूपेण स्वाहा सम्पद्यताम् वृद्धिः।

सक्षीरयवमुदकदानम्

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः प्रीयन्ताम्।

मातृप्रपितामह्यःनान्दीमुख्यःप्रीयन्ताम्। पितामही-

पितृप्रीयन्ताम्। नान्दीमुखाः प्रपितामहाः पितामह-

नान्दीप्रीयन्ताम्। मुखाः-

मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाःसपत्नीकाः

जलाऽक्षतपुष्पप्रदानम्

जल, पुष्प एवं चावल सभी आसनों पर छोडें

चतुर्थस्थानेषु पुष्पम्। इति सौमनस्यमस्तु जलम्। इति सन्तु आपः शिवा - इत्यक्षताः। चाऽस्तु चाऽरिष्टं अक्षतं

जलधारादानम् पितरों के लिए अंगूठे की ओर से पूर्वाग्र जलधारा दें।

ॐ अघोराः पितरः सन्तु। इति पूर्वाग्रां जलधारां दद्यात्।।

आशीर्वादप्रार्थना हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

यजमानः कृताञ्जलिः प्रार्थयेत्-

ॐ गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नो अस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथीश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु।

ब्राह्मणाः सन्त्वेताः सत्या आशिषः।

दक्षिणादानम्-

मुनक्का, आँवला, यव तथा अदरख मूल आदि लेकर दक्षिणा सहित अलगकरें। अर्पण पूर्वक संकल्प अलग -

ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलकयवमूलनिष्क्रयिणीदक्षिणां दातुं अहम् उत्सृजे।

ॐ मातृपितामहीप्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक यव मूल निष्क्रयिणी दक्षिणां दातुं अहम् उत्सृजे।

ॐ पितृ पितामह प्रपितामहाः नान्दीमुखाः ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फल प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं द्राक्षाऽऽमलक यव मूल निष्क्रयिणी दक्षिणां दातुं अहं उत्सृजे।

ॐ मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः नान्दीमुखाः

विसर्जन विधान - हाथ में जल अक्षत पुष्प लेकर सभी आसनो पर छोड़ा जाता है तथा आशीर्वाद की कामना करना चाहिए

देवार्चनविधिप्रबन्धः

ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नान्दीश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं

द्राक्षाऽऽमलकयवमूल निष्क्रयिणीं दक्षिणां दातुं अहम् उत्सृजे। मन्त्रः - (कहे। स्वयं यजमान) (वदेत् यजमानः)

ॐ उपास्मै गायतां नरः पवमानायेन्दवे। अभि देवाँ २ ऽइयक्षते। ॐ इडामग्ने पुरुदगुं सनिंगोः शश्वत्तम हव मानाय साध। स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्त्वस्मे।। अनेन नान्दीश्राद्धं सम्पन्नम् इति यजमानः।

ब्राह्मणाः-- सुसम्पन्नम्।

विसर्जन- तथा हाथ जोड़कर सभी पित्तरो का अपने-अपने लोक जाने के लिएनि वेदन करना चाहिए

विसर्जनम् - निम्न मंत्र पढ़कर विसर्जन करें।

ॐ व्याजेवाजेऽवत व्वाजिनो नो धनेषुविप्प्राऽअमृताऽऋतज्ञाः।

अस्य मद्ध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः।

अनुव्रजनम्

ॐ आ मा व्याजस्य प्रसवो जगम्यादे में द्यावापृथिवी विश्वरूपे।

आ मा गन्तां पितरो मातश् चा मा सोमोऽअमृतत्वेन गम्म्यात्।।

अस्मिन् नान्दी श्राद्धे न्यूनातिरिक्तो यो विधिः स उपविष्ट ब्राह्मणानां वचनात् श्री गणपति प्रसादाच्च सर्वः परिपूर्णोऽस्तु। अस्तु परिपूर्णः इति विप्राः।

इसके बाद स्थण्डिल रूप वेदिका पर पञ्चभूसंस्कार पूर्वक लौकिक अग्नि को स्थापित कर पूजन करके ब्रह्मा के वरण उपवेशन से लेकर आज्य भागाहुति पर्यन्त मुण्डन संस्कार में लिखे अनुसार विधि करके आवाहन किये एक-एक गणेशादि देवताओं के लिये आहुती दें।

ॐ गणेशाय स्वाहा आदि प्रकार आठ-आठ आहुति देकर महाव्याहृतियों की तीन, सर्व प्रायश्चित की पांच, प्राजापत्य और स्विष्टिकृत् की दो यह दश आहुति घृत की दें। इसके बाद संस्रव प्राशन पवित्रों द्वारा मार्जन परिस्तरण किये कुशों में पवित्रों का प्रवेश, ब्रह्मा को पूर्णापात्र दान और प्रणीता का विमोचन विगत संस्कारों में लिखे के

अनुसार करें। पुनः बालक आवाहन किये देवताओं और गुरू को नमस्कार करके अध्यापक के समीप पश्चिमाभिमुख बैठकर चाँदी आदि की पट्टी पर मंगलार्थ केशरादि का लेपन करके उस पर स्वर्ण की शालाका से निम्न छ: मंत्र लिखें।

श्री गणेशाय नमः। श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीकुलदेवतायै नमः। श्रीगुरुभ्यो नमः। श्रीलक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः। ॐ नमः सिद्धम्।

निम्न मन्त्र से षोडशोपचारों द्वारा सरस्वती पूजन करें अर्थात अध्यापक बालक का हाथ पकड़ कर तीन बार लिखायें-

ॐ पावकानः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टुघया वसुः। ॐ लिखितसरस्वत्यै नमः।

पुनः पढ़ायें और एक बार पूजन करायें। इसके बाद बालक लिखे हुए देवता सम्बन्धी अक्षरों की और अध्यापक की परिक्रमा कर गुरु का पूजन करना चाहिए और उन अध्यापक-गुरु को पगड़ी समर्पण करके नमस्कार करणा चाहिए। पुनः संस्कार कराने वाले आचार्य का गन्धादि द्वारा पूजन कर उनको तथा शिष्ट ब्राह्मणों को दक्षिणा देकर आशीर्वाद लें। अग्नि का विसर्जन करके दर्शनार्थ आये सज्जनों का ताम्बूलादि से सत्कार करना चाहिए।

कर्णवेध संस्कार

व्यास स्मृति के अनुसार **'कृतचूड़े च बाले च कर्णवेधो विधीयते'** अर्थात जिसका चूड़ाकरण हो चुका हो उसका कर्णवेध संस्कार करना चाहिए जिसमें दाहिने एवं बायें कान का छेदन किया जाता है। कर्णवेध संस्कार तीसरे वा पांचवें वर्ष ज्योतिषशास्त्रानुसार शुभ मास में शुक्ल पक्ष में पुष्य, चित्रा, रेवती आदि नक्षत्र युक्त शुभ दिन, शुभ मुहूर्त्त में करना चाहिये। मंगल द्रव्य युक्त जल तिलक लगाकर बालक का पिता वा चाचा आदि शुभासन पर बैठा प्राणायाम करके देशकाल कीर्तनान्त में 'इस कुमार की आयुबृद्धि और व्यवहार सिद्धि द्वारा श्री परमेश्वर की प्रसन्नता के अर्थ में कर्णवेध संस्कार करूंगा' ऐसा संकल्प करें। गणेशजी का पूजन करके गणेश, सरस्वती, ब्रह्मा विष्णु,

शिव, नवग्रह, लोकपाल और विशेष कर कुल देवता तथा ब्राह्मणों को नमस्कार करके वस्त्राभूषणों से सुशोभित बालक को शुभासन पर पूर्वाभिमुख बैठायें।

'ॐ भद्रं कणभिः शणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः।

स्थिरैरग्डैस्तुष्ट वा¤सस्तनू भिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।।

निम्न मंत्र से बायें कान का अभिमन्त्रण करें।

ॐ वक्ष्यन्ती वेदा गनीगन्ति कर्ण प्रिय-सखायं परिषस्वजाना।

योषेव शिड्क्ते विततािधधन्वज्या इय¤समने पारयन्ती।।

सुवर्णा या चांदी की बनवाई हुई मांगलिक सूत्र से युक्त सुई से सौभाग्यवती चतुर स्त्री के द्वारा बालक के बेधने योग्य कान के स्थल को बेधन करायें। बालक का दाहिना और कन्या का बांया कान पहले बेधन करायें। इसके बाद ब्राह्मणों को भोजन कराकर उन्हें दक्षिणा देकर उनसे आशीर्वाद लें। सुहागिनी स्त्री को केशर, पानादि देकर गणेश जी का विसर्जन करें। जातकर्म मुण्डन पर्यन्त द्विज कन्याओं के संस्कारों में होम वेदमन्त्रों से करना चाहिये तथा अन्य कार्यों को अमन्त्रक वा नाम मन्त्रों से अथवा स्मार्त मंत्रों से करें। हाँथ में अक्षत-पुष्प लेकर भगवान् का ध्यान करते हुए समस्त कर्म को उन्हें समर्पित करें।

प्रश्न -

१ .अक्षरारम्भ संस्कार किसे कहते है।

२ .अक्षरारम्भ संस्कार के बारे में बतलायें।

खण्ड २, इकाई ६ :
॥ यज्ञोपवीत के महत्वपुर्ण बिन्दु ॥

- **उपनयन-शब्दार्थ** उप-अर्थात् आचार्य के समीप नयन-अर्थात् बालक को विद्यार्थ ले जाने को 'उपनयन' कहते हैं। अतएव बालक के पिता आदि अपने पुत्रादिकों को विद्याध्ययनार्थ आचार्य के पास ले जायें, यही उपनयन शब्द का अर्थ है।
- **यज्ञोपवीत संस्कार के नाम**उपनयन, व्रतबन्ध और आचार्यकरण ये यज्ञोपवीत संस्कार के नाम हैं।यज्ञ सूत्र, ब्रह्मसूत्र, उपवीत और जनेऊ ये यज्ञोपवीत के नाम हैं।
- **यज्ञोपवीत के नाम**
- **उपनयन के अधिकारी** उपनयन का अधिकार केवल 'द्विजाति (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य) को है। शूद्र तथास्त्री को नहीं।
- मातुर्यदग्रे जायन्ते द्वितीयं मौंजिबन्धनात् । ब्राह्मण-क्षत्रिय-विशस्तस्मादेते द्विजाः स्मृताः ।।
- याज्ञवल्क्यस्मृति - ३१
- ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य इनका प्रथम जन्म माता के गर्भ से और द्वितीय जन्म उपनयन संस्कार से होता है। इसलिये ये द्विजाति कहे जाते हैं।
- जन्मना जायते शुद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते ।
- अत्रिस्मृति - १/१३८
- जन्म से ही जन्मी शुद्र होता है, फिर वह संस्कार से द्विज होता है।
- पितैवोपनयेत् पुत्रं तदभावे पितुः पिता । तदभावे पितुर्भाता तदभावे तु सोदरः ॥

पिता पितामहो भ्राता ज्ञातयो गोत्रजाग्रजाः।

उपायनेऽधिकारी स्यात् पूर्वाभावे परः परः ।।

- पितेति विप्रपरं न क्षत्रिय वैश्ययोः । तयोस्तु पुरोहित एव उपनयनस्य दृष्टार्थत्वात् । तयोस्त्वध्यापने ऽनधिकारात् ।
- पिता, दादा, चाचा, सहोदर भाई, बन्धु-बान्धव, सगोत्री, और ब्राह्मण यज्ञोपवीत कराने के अधिकारी हैं। इनमें पूर्व के प्राप्त न होने पर ही उत्तरवर्ती लोगों को अधिकार है अर्थात् यदि पिता हैं तो पितामह आदि को उपनयन कराने का अधिकार नहीं है। यहाँ यह व्यवस्था ब्राह्मण के लिये है। क्षत्रिय वैश्य बालक का उपनयन तो पुरोहित (आचार्य) को ही कराना चाहिये; क्योंकि उन दोनोंको अध्यापन का शास्त्रतः अधिकार नहीं है।

उपनयन का समय

गर्भाष्टमेऽब्दे कुर्वीत ब्राह्मणस्योपनायनम् । गर्भादिकादशे राजो गर्भात्तु द्वादशे विशः ।।

- ब्राह्मण का उपनयन गर्भ से आठवें वर्ष में।
- क्षत्रिय का उपनयन गर्भ से ग्यारहवें वर्ष में।
- वैश्य का उपनयन गर्भ से बारहवें वर्ष में करना चाहिये।
- आषोडशाद् ब्राह्मणस्य सावित्री नातिवर्तते । आद्वाविंशात् क्षत्रबन्धोराचतुर्विंशतेर्विशः ॥
- सोलह वर्ष तक ब्राह्मण के लिये, बाईस वर्ष तक क्षत्रिय के लिये और चौबीस वर्ष तक वैश्य के लिये सावित्री के काल का अतिक्रमण नहीं होता अर्थात् इस अवस्था तक उन का उपनयन हो सकता है।

उपनयन का मुहूर्त

क्षिप्रध्रुवाहिचरमूलमृदुत्रिपूर्वारौद्रेऽर्कविगुरुसितेन्दुदिने व्रतं सत् । द्वित्रीषुरुद्ररविदिक् प्रमिते तिथौ च कृष्णादिमत्रिलवकेऽपि न चापराले ॥

- **नक्षत्र** - क्षिप्रसंज्ञक, ध्रुवसंज्ञक, आश्लेषा चरसंज्ञक, मूल, मृदुसंज्ञक, तीनों

पूर्वा और आद्रा इन २२ नक्षत्रों में, वार रवि, बुध, वृहस्पति, शुक्र और सोमवार में २,३,५,११,१२,१० तिथियो में, शुक्लपक्ष में, तथा कृष्णपक्ष के प्रथम तृतीयांश (अर्थात कृष्णपक्ष में पंचमी तिथि तक) में उपनयन शुभ होता है। परन्तु उपनयन अपराह्न (दिन के तीसरे भाग) में नहीं होता है।

- ब्राह्मणों के लिये रविवार और क्षत्रियों के लिये मङ्गलवार शुभ हैं। सामवेदियों के लिये मङ्गलवार अत्यन्त प्रशस्त है।
- **यज्ञोपवीत के बिना मनुष्य प्रायश्चित्ती है**
- ब्रह्मसूत्रं विना भुङ्क्ते विण्मूत्रं कुरुते तथा । गायत्र्यष्ट सहस्रेण प्राणायामेन शुद्ध्यति ।।
- जो द्विज यज्ञोपवीत के बिना भोजन करता है, मल-मूत्र का त्याग करता है, वह आठ हजार गायत्री के जप करने से तथा प्राणायाम करने से शुद्ध होता है।
- उपनयन-संस्कार से पहले दिन अथवा उपनयन-संस्कार के दिन उपनयन-संस्कार करनेवाला कुमार का पिता (अथवा उपनयन करने का अधिकारी) सपत्नीक उपवास रखे ।
- प्रात:कालिक शौचादि नित्य-क्रिया सम्पन्न करके अपने आसन पर पूर्वाभि मुख बैठ जाय ।
- अपने दाहिनी ओर पत्नी को बैठा ले और पत्नी के दाहिनी ओर कुमार (बटुक) बैठ जाय ।
- उपनयन संस्कार में गौरी-गणेश पूजन, कलश स्थापन, पुण्याहवाचन, षोडश मातृका पूजन, सप्तघृत-मातृका पूजन, आयुष्यमंत्र, नवग्रह, आभ्युदयिक नांदीमुख श्राद्ध आदि देवताओं का पूजन होता है।

पवित्रकरणम्

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा । यः स्मरेत्

पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

• **आचम्य**आचमन करें हाथ धो लें। ॐ केशवाय नमः । ॐ माधवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः । ॐ हृषीकेशाय नमः ।

• **आसन शुद्धि**ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥

• **पवित्री (पैंती) धारणम्** ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽ उत्त्पुनाम्यच्छिद्रेण

पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्त्वामः पूनेतच्छकेयम् ।।

• **यज्ञोपवित** ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजा पतेर्यत सहजं पुरुस्तात । आयुष्यं मग्रंय प्रतिमुन्च शुभ्रं यज्ञोपवितम बलमस्तु तेजः ॥

• **शिखाबन्धन** ॐ चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते । तिष्ठ देवि शिखामध्ये तेजोवृद्धि कुरुव मे ।।

• **तिलक**चन्दनस्य महत्पुण्यम् पवित्रं पापनाशनम् ।

आपदां हरते नित्यम् लक्ष्मी तिष्ठ सर्वदा ॥

• ॐ स्वस्तिस्तु याऽ विनशाख्या धर्म कल्याण वृद्धिदा ।

विनायक प्रिया नित्यं तां स्वस्तिं भो ब्रवंतु नः ॥

रक्षाबन्धनम्

येन बद्धो बलि राजा, दानवेन्द्रो महाबलः । तेन त्वाम् प्रतिबद्धनामि रक्षे माचल माचलः ।। ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति, दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम् । दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति, श्रद्धया सत्यमाप्यते ॥

स्वस्ति-वाचन

१. श्रीमन् महागणाधीपतये नमः ।

२. इष्ट देवताभ्यो नमः ।

३. कुल देवताभ्यो नमः ।

४. ग्राम देवताभ्यो नमः ।

५. स्थान देवताभ्यो नमः ।

६. वास्तु देवताभ्यो नमः ।

७. वाणी हिरण्यगर्भाया नमः ।

८. लक्ष्मी नारायणाभ्या नमः ।

९. उमा महेश्वराभ्या नमः ।

१०. शची पुरंदाराभ्या नमः ।

११. मातृ पितृ चरण कमलेभ्यो नमः ।

१२. सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ।

१३. सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः ।

१४. एतत कर्म प्रधान देवताभ्यो नमः ।

प्रधान संकल्प- एक साथ तीनों संस्कारों (उपनयन, वेदारम्भ तथा समावर्तन) हेतु निम्न संकल्प करे ।

संकल्प- हरिः ॐ विष्णु र्विष्णु र्विष्णुः श्रीमद् भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त मानस्य ब्रह्मणो द्वितीय परार्धे श्रीश्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविशंति तमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भरतखण्डे आर्यावर्तेक देशे बौद्धावतारे श्री पुण्यक्षेत्रे शुभ अमुक संवत्सरे, अमुक अयने, अमुक ऋतौ, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक नक्षत्रे, अमुक योगे, अमुक करणे, अमुक वासरे तथा च अमुक-अमुक राशि स्थितेषु ग्रहेषु सत्सु एवं ग्रह- गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य समये श्रुति-स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्तिकामः (अमक) गोत्रः सपत्नीकः (अमुक) शर्मा/ वर्मा/ गुप्तोहं अमुक कुमारस्य करिष्यमाण उपनयन-

वेदारम्भ-समावर्तन संस्कारं च करिष्ये ।

पुनर्जलमादाय- तदंगत्वेन गणेशाम्बिकयोः कलश स्थापनं, पुण्याहवाचन, मातृका पूजनं, नवग्रह पूजनं, वसोर्धारा पूजनं, आयुष्यमन्त्रजप, अभ्युदयिक श्राद्धं च करिष्ये

पृथ्वी ध्यानम्-ॐ स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ॥

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता । त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

गणेश आवाहनम्

गजाननम् भूत गणादि सेवितं कपित्थ जम्बू फलचारु भक्षणम् । उमासुतं शोक विनाश कारकं नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ।।

• गौरी ध्यानम्

• विशेषार्ध्य

• प्रार्थना

• अर्पण

• ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः। गणपतिम् आवाह्यामि स्थापयामि पूजयामि ।

ॐ हेमद्रितना यां देवीं वरदां शंकरप्रियाम् । लम्बोदरस्य जननीं गौरीं आवाह्याम्यहम् ।।

• ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः । गौरीम् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि ।

नीचे दिये हुए मंत्रो के द्वारा पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दें।

एक ताम्रपात्र में जल, चन्दन, अक्षत, फल, फूल, दूर्वा और दक्षिणा रख लें।

• रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक । भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥

• द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो । वरदस्त्वं वरं देहि वांछितं

वांछितार्थद ।।

अनेन सफलार्येण वरदोऽस्तु सदा मम ।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्थ्यं समर्पयामि ।

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय । नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

• त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्तवीर्या, विश्वस्य बीजं परमासि माया ।

सम्मोहितं देवि समस्तमेतत्, त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्तिहेतुः ॥

• गणेशाम्बिकाभ्यां नमः । प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि ।

अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम्, न मम ।

॥ गणेश अम्बिका पूजनम् एवं कलश पूजनम् इकाई 10 में देखे

॥ पुण्याहवाचनम् ॥

- पुण्याहवाचन के लिए एक मिट्टी, ताँबे या चाँदी का कलश वरुण कलश के पास जल से भर कर रख दे।
- वरुण कलश के पूजन के साथ इसका भी पूजन कर लेना चाहिए।
- पुण्याहवाचन का कर्म इसीसे किया जाता है।
- ब्राह्मण वरण संकल्पदेशकालौ संकीर्त्य अमुक गोत्रो, अमुक शर्मा, उपनयन कर्मणि सर्वाभ्युदय प्राप्तये एभिर्ब्राह्मणैः पुण्याहं वाचयिष्ये, तदंगतया ब्राह्मणानां पूजनं वरणं च करिष्ये ।
- ब्राह्मण वरण करें नमोस्त्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्रपादाक्षि शिरोरु बाहवे । सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटी युग युग धरिणे नमः ।।
- यजमान एभिर्गन्धाक्षत पृ्ष्प पृंगीफल द्रव्यैः अमृक कर्मणि सर्वाभ्युदय प्राप्तये पुण्याह- वाचनार्थं ब्राह्मणं त्वामहं वृणे ।
- ब्राह्मणवृतोस्मि

- ब्राह्मण ध्यान ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्विषीमतः सुरुचोव्वेन आवः । स बुध्न्या उपमाऽ अस्य विष्ठाः शतश्च योनिम शतश्च व्विवः ॥ विप्र नमस्कार करें।
- यजमान भूमि पर घुटना मोड कर कमल पुष्प के समान अपनी अञ्जलि में कलश को रखकर अपने सिर पर स्पर्श कर आशीर्वाद के लिए ब्राह्मणों से प्रार्थना करें।
- यजमानॐ दीर्घा नागा नद्यो गिरयस्त्रीणि विष्णुपदानि च । तेनायुः प्रमाणेन पुण्यं पुण्याहं दीर्घमायुरस्तु ॥
- ब्राह्मणअस्तु दीर्घमायुः । अस्तु दीर्घमायुः । अस्तु दीर्घमायुः ।

श्रीमहागणपति प्रसादाच्च परिपूर्णोऽस्तु ।

दक्षिणाका संकल्प कृतस्य पुण्याह वाचन कर्मणः समृद्ध्यर्थं पुण्याह वाचकेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इमां दक्षिणां विभज्य दातु मह मुत्सृजे ।

ब्राह्मण ॐ स्वस्ति ।

।। षोडश मातृका पूजनम् ।।

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन । ससत्स्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीं ।

गौरी पद्मा शची मेधा, सावित्री विजया जया । देवसेना स्वधा स्वाहा, मातरो लोकमातरः ॥ धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः, आत्मनः कुलदेवता । गणेशेनाधिका होता, वृद्धौ पूज्याश्च षोडश ।।

॥ सप्तघृत मातृका (वसोर्धारा) पूजनम् ॥

श्रीर्लक्ष्मीधृतिर्मेधा स्वाहा प्रज्ञा सरस्वती ।

माग्ङल्येषु प्रपूज्यन्ते सप्तैता घृतमातरः ॥

यदंगत्वेन भो देव्यः पूजिता विधिमार्गतः ।

कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम् ॥

• इनके पूजन के लिये किसी वेदी अथवा पाटे पर प्रादेशमात्र (तर्जनीसे अङ्गुष्ठ के बीचकी दूरी) स्थान में पहले रोली या सिन्दूर से

स्वस्तिक बनाकर ॥ श्री ॥ लिखे। इसके नीचे एक बिन्दु और इसके नीचे दो बिन्दु, इस प्रकार क्रमशः तीन, चार, पांच, छ बिन्दु बनाते हुए सबसे नीचे सात बिन्दु बनाये। यह सप्तघृत मातृका मण्डल है।

॥ आभ्युदयिक नान्दीमुख श्राद्धम् ।।

न स्वधाशर्मवर्मेति पितृनाम च चोच्चरेत् ।

न कर्म पितृतीर्थेन न कुशा द्विगुणीकृताः ।।

न तिलैर्नापसव्येन पित्र्यमन्त्र विवर्जितम् ।

अस्मच्छब्दं न कुर्वीत श्राद्धे नान्दीमुखे क्वचित् ।।

आचम्य प्राणानायम्य पवित्र धारणं के उपरान्त आभ्युदयिक नान्दीमुख षोडशमातृका के समक्ष पूर्वाभिमुख सव्य रहकर ही पितरों की अर्चना करने का विधान है।

• **संकल्पः** ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णु, ॐ नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमस्य श्री विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्याद्य श्री ब्रह्मणोह्नि द्वितीय परार्धे श्रीश्वेत वराह कल्पे वैवस्वत् मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बुद्वीपे भरतखण्डे आर्यावन्तार्गत ब्रह्मावर्तेक देशे पुण्यप्रदेशे अमुक संवत्सरे अमुक आयने अमुक ऋतौ, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक वासरे, अमुक नक्षत्रे, अमुक-अमुक राशि स्थितेषु ग्रहेषु सत्सु एवं ग्रह-गुण विशेषण विशिष्टायां अमुक गौत्रोत्पन्न, अमुक शर्मा / वर्मा अहं अमुक गोत्राणां मातृ-पितामहि- प्रपितामहि नाम अमुक देवीनां गायत्री सावित्री सरस्वती स्वरुपाणां नान्दीमुखीनां तथा अमुक गोत्राणां पितृ-पितामह-प्रपितामहानाम् अमुक देवानां वसु रुद्र आदित्य स्वरुपाणां नान्दीमुखानां तथा अमुक गोत्राणां मातामह-प्रमातामह-वृद्धप्रमातामहानाम् अमुक देवानां सपत्नीकानां अग्नि वरुण प्रजापति स्वरुपाणां नान्दीमुखानां प्रीतये उपनयन कर्मणी निमित्तकं सत्यवसु संज्ञक विश्वेदेव पूर्वकं संक्षिप्त संकल्प विधिना नान्दीमुख श्राद्धमहं करिष्ये ।

• **सक्षिरयवमुदक दानम्** दुध, जव, जल मिलाकर अर्पण करें।

१. ॐ सत्यवसु संज्ञकाः विश्वेदेवाः नांदिमुखाः । ॐ भूर्भुवः स्वः प्रीयंताम् ।

२. ॐ मातृ-पितामहि-प्रपिताहिभ्यः नांदिमुखिभ्यः । ॐ भूर्भुवः स्वः प्रीयंताम् । ३. ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहाः नांदिमुखाः । ॐ भूर्भुवः स्वः प्रीयंताम् । ४. ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहाः सपत्नीकाः नांदिमुखाः । ॐ भूर्भुवः स्वःप्रीयंताम् ।

• **जलाऽक्षत पुष्प प्रदानम्** जल, पुष्प, चावल सभी आसनों पर चढायें।

• शिवा आपः सन्तु इति जलम् ।

सौमनस्यमस्तु इति पुष्पम् ।

• अक्षतं चाऽरिष्टं चाऽस्तु इति अक्षतन् ।

• जलधारा दानम्

पितरों के लिए अँगुठे की ओर से पूर्वाग्र जलधारा दें।

ॐ अघोराः पितरः सन्तुः । इति पूर्वाग्रं जलधारां दद्यात् ।

• **आशिष ग्रहणम् यजमान हाथ जोड़कर प्राथना करें। ब्राह्मण कहें।**

गोत्रंन्नोभि वर्धतां । अभिवर्धन्तांवो गोत्रम् ॥

दातारोनोभि वर्धन्तां । अभिवर्धन्तांवो दातारः ॥

संततिर्नोभि वर्धन्तां । अभिवर्धतांव: संततिः ।।

श्रद्धाचनोमाव्यगमत । माव्यगमत्श्रद्धा ।।

अन्नचनोबहुभवेत् । भवतुवोबह्वन्नम् ।।

अतिथिंश्चलभेमहि । लभतांवोतिथयः ॥

वेदाश्चनोभि वर्धतां । अभिवर्धन्तावो वेदाः ॥

मायाचिष्मकंचन । मायाचध्वं कंचन ॥

एताः आशिष:सत्याः संन्तु । सन्त्वेताः सत्याः आशिषः ॥

• **दक्षिणा दानम्** मुन्नका, आँवला, यव, अदरक, मूल, तथा दक्षिणा लेकर ।

१. ॐ सत्यवसु संज्ञकेभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्यो नांदिमुखेभ्यः ।

• ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नांदिश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षामलक यवमुल फल

निष्क्रयिणिं दक्षिणां दातुमह मुत्सृजे ॥

२. ॐ मातृ-पितामहि-प्रपितामहिभ्यः नांदिमुखिभ्यः ।

• ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नांदिश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षामलक यवमुल फल निष्क्रयिणिं दक्षिणां दातुमह मुत्सृजे ।।

३. ॐ पितृ-पितामह-प्रपितामहेभ्यः नांदिमुखेभ्यः ।

• ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नांदिश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षामलक यवमुल फल निष्क्रयिणिं दक्षिणां दातुमह मुत्सृजे ॥

४. ॐ मातामह-प्रमातामह-वृद्ध प्रमातामहेभ्यः सपत्निकेभ्यो नांदिमुखेभ्यः ।

• ॐ भूर्भुवः स्वः कृतस्य नांदिश्राद्धस्य फलप्रतिष्ठा सिध्यर्थं द्राक्षामलक यवमुल फल निष्क्रयिणिं दक्षिणां दातुमह मुत्सृजे ।।

• **यजमान** ॐ उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे । अभि देवाँ इयक्षते ।

• ॐ इडामग्ने पुरुद गुं स गुं सनिं गोः शश्वत्तम गुं हव मानाय साध ।

स्यान्नः सूनुस्तनयो विजावाग्ने सा ते सुमतिर्भूत्वस्मे ॥

अनेन नांदिश्राद्धं संपन्नं सुसंपन्न ।

ब्राह्मण सुसंपन्न

• **प्रार्थना**

अक्रोधनाः शौचपराः सततं ब्रह्मचारिणः ।

ग्रहध्यानरता नित्यं प्रसन्नमनसः सदा ॥

•अदुष्ट भाषणाः सन्तु मा सन्तु परनिंदकाः ।

ममापि नियमा होते भवन्तु भवतामपि ॥

•ऋत्विजश्च यथा पूर्वं शक्रादीनां मखेऽभवन् ।

यूयं तथा मे भवत ऋत्विजो द्विसत्तमाः ।।

•अस्मिन् कर्मणि मे विप्राः वृता गुरुमुखादयः ।

सावधानाः प्रकुर्वन्तु स्वं कर्म यथोदितम् ।।

•अस्य यागस्य निष्पत्तौ भवन्तोऽभ्यर्थिता मया ।

सुप्रसादैः प्रकर्तव्यं कमेदं विधिपूर्वकम् ।।

•विसर्जनम्

ॐ वाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्राऽअमृता ऽ ऋतज्ञाः ।

अस्य मद्धवः पिबत मादयद्धवं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ॥१॥

•ॐ आमावाजस्य प्रसवो जगम्या देमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे ।

आमागन्तांपितरा मातरा चामा सोमोऽमृतत्वेन गम्यात् ॥

• आस्मिन् नांदिश्राद्धे न्युनातिरिक्तं नांदिमुख प्रसादात्परिपुर्णोस्तु ।अस्तु परिपुर्णतां ।।

•अनेन नांदिश्राद्धाख्येन कर्मणः नंदमुख नंदपितरः प्रियंतां वृद्धिः ।।

॥ आयुष्य मंत्र ॥

•ॐ यदा युष्यं चिरं देवाः सप्त कल्पान्त जीविषु ।
ददुस्तेना युषा युक्ता जिवेम शरदः शतम् ॥१॥
•दीर्घानागा नगा नद्यो अनन्ताः सप्तार्णवा दिशः ।
अनन्ते ना युषा तेन जीवेमः शरदः शतम् ॥२॥
•सत्यानि पंचभूतानि विनाश रहितानि च ।
अविनाश्या युषा ताद्वज्जीवेम् शरदः शतम् ॥३॥
•आयुष्यं वर्चस्य गुं रायस्पोषमौद्भिदम् ।
इद गुं हिरण्यं वर्चस्वज्जैत्राया विशता दुमाम् ॥४॥

•नतद्रक्षा गुं सि न पिशाचा स्तरन्ति देवानामोजः ।
प्रथमज गुं ह्येतत् यो विभर्ति दाक्षायण गुं हिरण्य गुं स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः ।
स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ ॥५॥
•यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य गुं शतानीकाय सुमनस्यमानाः ।
तन्म आबध्नामि शत शारदा यायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम् ॥ ॥६॥
आयुष्यम् । आयुष्यम् । आयुष्यम् । आयुष्यमाभिवृद्धिरस्तु ॥
॥ इति आयुष्य मन्त्र जपः ॥

प्रश्न -

१ .यज्ञोपवीत किसे कहते है।

२ .यज्ञोपवीत का महत्व क्या है।

इकाई 7 : ।। नवग्रह मंण्डल पूजनम् ।।

ब्रह्मा मुरारी स्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशि भूमि-सुतो बुधश्च ।

गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु ।।

• ग्रहोंके स्थापन-पूजनके लिये किसी वेदी अथवा पाटे पर नौ कोष्ठकों का एक चौकोर मण्डल बनाये । बीच वाले कौष्ठक में सूर्य, अग्निकोण के कोष्ठक में चन्द्र, दक्षिण में मंगल, ईशान कोण में बुध, उत्तर में बृहस्पति, पूर्व में शुक्र, पश्चिम में शनि, नैऋत्य कोण में राहु और वायव्य कोण में केतु की स्थापना करें।

॥ उपनयन संस्कार ॥

• **बटुक का प्रवेश**

• **केशाधिवास एवं मुण्डन**

• **संकल्प** ॐ अद्य अस्य कुमारस्य उपनयनांग भूतं वपनं करिष्ये ।

• **केशों का उन्दन (भिगोना)** ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्या आप उन्दन्तु ते तनूं दीर्घायुत्वाय वर्चसे ।

• **उस्तरा ग्रहण**शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हि गुं सीः ।

• **केश छेदन** ॐ येनावपत् सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्।

तेन ब्राह्मणो वपतेदमस्यायुष्यं जरदष्टिर्यथासत् ।।

• **ब्राह्मण भोजन संकल्प** केशाधिवास एवं मुण्डन हेतु तीन ब्राह्मण भोजन संकल्प ।

ॐ अद्य कुमारस्योपनयनाख्ये कर्मणि पूर्वांगत्वेन त्रीन् ब्राह्मणान् भोजयिष्यामि।

भोजनपर्याप्तं मिष्टान्नं तन्निष्क्रय द्रव्यं वा दास्ये ।

•बटुक को स्नान कराकर वस्त्र धारण कराकर पुष्पमालादि से अलंकृत कर आचार्य के दाहिनी ओर बैठायें ।

• बटुक के द्वारा स्वस्तिवाचन एवं स्थापित देवताओं की पंचोपचार पूजन करे।

• **गोदान** कुछ लोग ३ गोदान लिखते है, २ आचार्य एवं १ बटुक । यथा सामर्थ्य के अनुसार करना चाहिए।

• **गोदान संकल्प आचार्य -** अद्य शुभ-पुण्य-तिथौ अस्य कुमारस्य (दो बटु हों तो - अनयोः कुमारयोः, २ से अधिक हों तो - एषां कुमाराणाम् कहें) स्व-स्व काले अकृतानां संस्काराणां कालातिपत्तिदोष परिहारेण उपनयनाधिकार सिद्धि द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थम् प्रति संस्कार कृच्छत्रयात्मकं प्रायश्चित्तं गो-निष्क्रियभूतं द्रव्यं सांगता सहितं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ।

• **गोदान संकल्प बटुक** - अत्र गोत्रः बटुकोऽहं मम कामचार-कामवाद-कामभक्षणादि दोष निरसन पूर्वक

उपनयन-वेदारम्भ-समावर्तनेषु अधिकार सिद्धि द्वारा श्री परमेश्वर प्रतीत्यर्थं कृच्छत्रयात्मक प्रायश्चित्तं गोनिष्क्रियभूतं द्रव्यं सांगता सहितं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे ।

• **संकल्प (गायत्री जप)** अद्य शुभपुण्य तिथौ अस्य वटुकस्य (अनयोः वटुकयोः । एषां वटुकानाम्) गायत्री उपदेशाधिकार सिद्धि द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थम् यथा संख्याक गायत्री जपार्थम् एभिः वरण द्रव्यैः गोत्रं शर्माणं ब्राह्मणं त्वां वृणे ।

• गायत्री जप बाद में करने हेतु । (गायत्री जप ब्राह्मण द्वारा यथाकाले कारयिष्ये)

॥ अग्नि स्थापन ॥

• **पञ्च-भूसंस्कार**

• **संकल्प (आचार्य)** अद्य शुभपुण्यतिथौ गोत्रः शर्माऽहम् अस्मिन् उपनयनाख्ये कर्मणि पंचभू-संस्कार पूर्वक समुद्भव नाम अग्निस्थापनं करिष्ये ।

• **परिसमुह्य** ॐ दर्भैः परिसमूह्य, परिसमूह्य, परिसमूह्य ।

तीन कुशों (दर्भ) से वेदी अथवा ताम्रकुण्ड का दक्षिण से उत्तर की ओर परिमार्जन करे तथा उन कुशों को ईशान दिशा में फेंक दे।

• **उपलेपनम्** ॐ गोमयेन उपलिप्य, उपलिप्य, उपलिप्य । गोबर और जल से लीप दे।

• **उल्लेखनम्** ॐ दर्भ या स्रुवमूलेन उल्लिख्य, उल्लिख्य, उल्लिख्य ।

स्रुवा या कुशमूल से पश्चिम से पूर्व की ओर प्रादेशमात्र (दस अंगुल लम्बी)

तीन रेखाएँ दक्षिण से प्रारम्भ कर उत्तर की ओर खींचे।

• **उद्धरणम्**

• **अभ्युक्षण**

ॐ अनामिकाङ्गुष्ठेन उद्धृत्य, उद्धृत्य, उद्धृत्य ।

रेखांकित किये गये स्थल के ऊपर की मिट्टी अनामिका और अँगूठे के सहकार से पूर्व या ईशान दिशा की ओर फेंक दे।

ॐ उदकने अभ्युक्ष्य, अभ्युक्ष्य, अभ्युक्ष्य । पुनः जल से कुण्ड या स्थण्डिल को सींच दे ।

• **अग्नि स्थापनम्**

सौभाग्यवती स्त्री के द्वारा कांसे, तांबे या मिट्टी के पात्र में लायी गयी प्रदीप्त अग्नि को स्वाभिमुख करते हुए "हुं फट्" कहते हुए अग्नि को वेदी में स्थापित करें।

॥ बटुक का संस्कार ॥

बटुक आचार्य के दक्षिण भाग में और अग्नि के पश्चिम भाग में आसन पर बैठ जाय ।

• संकल्प

अद्य शुभ-पुण्य तिथौ गोत्रः शर्माऽहम् अस्य बटुकस्य ब्राह्मण्याभि व्यक्ति द्विजत्व

सिद्ध्यर्थं वेदाध्ययनाधिकारार्थं च उपनयनं करिष्ये ।

• बटुक को प्रतिष्ठित करे

ॐ मनोजूतिर्जुषता माजस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन् तनोत्वरिष्टं - यज्ञ गुं समिमं दधातु । विश्वे देवा सऽइह मादयंता मों३ प्रतिष्ठ ॥ आचार्य बटुक का दाहिना हाथ पकड़कर कहें । ॐ ब्रह्मचर्यमागामिति ब्रूहि । बटुक कहे । ॐ ब्रह्मचर्यमागाम् । आचार्य कहे। ॐ ब्रह्मचार्यसानि इति ब्रूहि । बटुक कहे । ॐ ब्रह्मचार्यसानि ।

• कटिसूत्र एवं कौपीन धारण

आचार्य बटुक के कन्धे पर रखे पीले कपड़े को छूकर मंत्र पढे ।

• मंत्र ॐ येनेन्द्राय बृहस्पतिर्वासः पर्यदधादमृतम् ।

तेन त्वा परि दधाम्यायुषे दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे ॥

• मेखला बन्धन

मौञ्जी मेखला त्रिवृता ग्रन्थयश्च प्रवर संख्यया ।

त्रिवृन्मौञ्जी समा लक्ष्णा कार्या विप्रस्य मेखला ।

क्षत्रियस्य तु मौर्वी ज्या वैश्यस्य शणतस्तथा ॥

• आचार्य बटुक को खड़ाकर उसके कटि-प्रदेश में आवृतकर प्रवर के नियमानुसार तीन

या पाँच गाँठ बाँधकर निम्न मन्त्र से ब्राह्मण को मुंज की, क्षत्रिय को प्रत्यंचा की और

वैश्य को क्षण की मेखला धारण कराये ।

•**मंत्र** ॐ इयं दुरुक्तं परि बाधमाना वर्णम् पवित्रं पुनती मऽआगात् ।

प्राणा पानाभ्यां बलमादधाना स्वसा देवी सुभगा मेखलेयम् ॥

•**यज्ञोपवीत सहित अष्ट भाण्ड दान**

यज्ञोपवीत धारण की योग्यता प्राप्त करने हेतु बटुक यज्ञोपवीत और चावल से पूर्ण दक्षिणा सहित आठ पात्रों (भाण्डों) के दान हेतु संकल्प करे एवं आठ ब्राह्मणों को देदे ।

•**संकल्प**

अद्य गोत्रः बटुकोऽहं स्वकीय-उपनयनकर्म विषयक सत्संस्कार प्राप्त्यर्थं तथा च द्विजत्व सिद्धि वेदाध्ययन-अधिकारार्थम् यज्ञोपवीत धारणार्थम् च श्री सवितृ सूर्यनारायण प्रीतये इमानि भाण्डाष्टानि स यज्ञोपवीत दक्षिणा सहितानि यथा - यथानाम् गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे ।।

•**यज्ञोपवीत का संस्कार**

•**प्रक्षालन** आचार्य १ जोड़ा जनेऊ (पीले रंग में रंगकर) जल से प्रक्षालन करे ।

• ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे धातन । महे-रणाय चक्षसे । ॥१॥

योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिव मातरः । ॥२॥

तस्मा अरंग माम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जन यथा च नः ॥३॥

•**अभिमन्त्रण** आचार्य यज्ञोपवीत की गाँठ का स्पर्श कर अभिमन्त्रण करे ।

ॐ प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मा विशान्तकः । तेनान्नेनाप्यायस्व ॥

• **प्रतिष्ठा** यज्ञोपवीत में देवताओं का प्रतिष्ठा करें।

• एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्वृहस्पतये ब्रह्मणे ।

तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव ॥

• **आवाहन** यज्ञोपवीत के नवों तन्तुओं पर २-२ दाना अक्षत छोडकर आवाहन करें ।

१. ॐ ओंकार दैवत्याय प्रथमतन्तवे नमः ।

२. ॐ अग्नि दैवत्याय द्वितीयतन्तवे नमः ।

३. ॐ नाग दैवत्याय तृतीयतन्तवे नमः ।

४. ॐ सोम दैवत्याय चतुर्थतन्तवे नमः ।

५. ॐ इन्द्र दैवत्याय पञ्चमतन्तवे नमः ।

६. ॐ प्रजापति दैवत्याय षष्ठतन्तवे नमः ।

७. ॐ वायु दैवत्याय सप्तमतन्तवे नमः ।

८. ॐ सूर्य दैवत्याय अष्टमतन्तवे नमः ।

९. ॐ विश्वेदेव दैवत्याय नवमतन्तवे नमः ।

• **ग्रन्थि पूजन** आचार्य यज्ञोपवीत की तीनों ग्रन्थियों के अधिदेवताओं का गन्धाक्षतपुष्प छोड़ते हुए पूजन करे

एवं अँगूठे से जनेऊ की गाँठ छूकर मंत्र पढे ।

• **ब्रह्मणे नमः**ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।

स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिम सतश्च विवः ॥१॥

• **विष्णवे नमः** इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूढमस्य पा ७ शसुरे स्वाहा ॥

• **ईश्वराय नमः** ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः ।

बाहुभ्यामुत ते नमः ।।

• **सूर्य दर्शन** यज्ञोपवीत को दोनों हाथ में लेकर सूर्य को दिखा दें।

• ॐ आकृष्णेन रजसा वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च ।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् ।।॥२॥

• **अभिमन्त्रण** यज्ञोपवित का जल से मार्जन करे तथा दस बार गायत्री मंत्र से अभिमन्त्रित करें।

ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे धातन । महे-रणाय चक्षसे ।

योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिव मातरः ।

तस्मा अरंग माम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जन यथा च नः ॥

• **विनियोग** यज्ञोपवित धारण हेतु आचार्य हाथ में जल लेकर विनियोग पढें ।

• ॐ यज्ञोपवीत मित्यस्य परमेष्ठी ऋषिः । त्रिष्टुप् छन्दः ।

लिङ्गोक्ता देवता ।यज्ञोपवीत धारणे विनियोगः ।

• **यज्ञोपवित धारण** जोड़ा जनेऊ खोलकर १ जनेऊ मण्डप में बाँध दें या सुरक्षित रख लें।

(समावर्तनसंस्कार में इसे पहनाया जाता है)

• बालक को स्वयं अथवा ३ या ५ ब्राह्मण मिलकर १ जनेऊ पहना दें।

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् ।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

• यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीते नोपनह्यामि ।

बालक दो बार आचमन कर ले।

• **मृगचर्म धारण** आचार्य मौन होकर उत्तरीय के रुप में बालक को मृगचर्म दें (कमर में बाँध लें)।

ॐ मित्रस्य चक्षुर्वरुणं बलीयस्तेजो यशस्वी स्थविर ७ समिद्धम् ।

अनाहनस्यं वसनं जरिष्णुः परीदं वाज्यजिनं दधेऽहम् ।।

बटुक दो बार आचमन कर ले।

• **दण्ड धारण** आचार्य मौन होकर पैर से लेकर मस्तक तक लम्बा पलाश दण्ड बटुक को दें।

• दण्ड ब्राह्मण के लिये केश पर्यन्त

दण्ड क्षत्रिय के लिये ललाट पर्यन्त

• दण्ड वैश्य के लिये नासिका (नाक) पर्यन्त

ॐ यो मे दण्डः परापतद्वैहायसोऽधिभूम्याम् । तमहं पुनरादद आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय ॥

बटुक दण्ड को निम्न मन्त्र बोलता हुआ ऊपर उठा ले।

• ॐ उच्छ्यस्व वनस्पत ऊर्ध्वा मा पाह्य गुं हसऽ आऽस्य यज्ञस्योद्दचः ॥

• **अंजलि पूरण** आचार्य निम्न मन्त्र द्वारा जल से बटुक की अंजलि भर दे ।

• ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे धातन । महे-रणाय चक्षसे । ॥१॥

योवः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनः । उशतीरिव मातरः । ॥२॥

तस्मा अरंग माम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ । आपो जन यथा च नः ॥३॥

• **सूर्य दर्शन** आचार्य बटुक को सूर्य दर्शन के लिये कहे। सूर्यमुदीक्षस्व।

• आचार्य द्वारा प्रदत्त अंजलिस्थ जल से सूर्य को अर्घ्य प्रदान करे ।

• **सूर्यो प्रस्थान** बटुक दोनों हाथ उठाकर निम्न मंत्रो द्वारा सूर्योपस्थान करे।

•ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ।

पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शत गुं श्रृणुयाम शरदः ।

शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात् ।।

•**हृदयालम्भन** आचार्य अपना दाहिना हाथ बालक के दाहिने कन्धे के ऊपर से ले जाकर बालक

का निम्न मंत्रों द्वारा हृदय स्पर्श करें।

•ॐ मम व्रते हृदयं दधामि । मम चित्त मनुचित्तं ते अस्तु ॥

मम वाचमेकमना जुषस्व । बृहस्पतिष्ट्वा नियनक्तु मह्यम् ॥

•**बटुक परिचय** आचार्य बटुक के दाहिने हाथ के अँगूठे को पकड़ कर पूछे ।

•आचार्य पूछे को नामाऽसि ? तुम्हारा नाम क्या है ?

•बालक कहे शर्मा / वर्मा / गुप्तोहं भो । बालक अपना नाम बतायें ।

•आचार्य पूछे कस्य ब्रह्मचर्यासि । तुम किसके ब्रह्मचारी हो ?

•बालक कहे भवतः । आप का।

आचार्य पढ़े ॐ इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यसि, अग्निराचार्यस्तवाहमाचार्यः (बटुक का नाम) शर्मन् ।

बटुक चारों दिशाओं को प्रणाम करें।

ॐ प्रजापतये त्वा परिददामि पूर्व दिशा

ॐ देवाय त्वा सवित्रे परिददामि दक्षिण दिशा

•ॐ अद्भ्यस्त्वौषधीभ्यः परिददामि पश्चिम दिशा

ॐ द्यावापृथिवीभ्यां त्वा परिददामि उत्तर दिशा

ॐ विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः परिददामि भूमि

•ॐ सर्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः परिददामि आकाश

• **अग्नि प्रदक्षिणा** अग्नि की प्रदक्षिणा करके बटुक आचार्य के दाहिनी ओर बैठ जाय ।

• **वरण संकल्प (ब्रह्मा)** आचार्य वरण सामग्री लेकर ब्रह्मा का वरण करे।

• ॐ अद्य कर्त्तव्य उपनयन कर्मणि कृताऽकृतावेक्षणरूप ब्रह्म कर्म कर्तुम् .....

गोत्रम् ..... शर्माणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे ।

• ब्राह्मण वरण लेकर कहें। ॐ वृतोऽस्मि ।

• **प्रार्थना (ब्रह्मा)** यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदधरः प्रभुः ।

तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ।

॥ कुशकण्डिका एवं हवन विधान ॥

• **प्रणीता पात्र स्थापन** ब्रह्मा का मुख देख कर अग्नि के उत्तर में कुशों के उपर प्रणीता पात्र में जल भर कर रखें।

• **परिस्तरणम्** १३ कुश या दूर्वा ले। उनके ३-३ के चार भाग को अग्नि के चारों ओर बिछायें।

पूर्व भाग अग्निकोण से ईशानकोण तक उत्तराग्र बिछाये ।

• दक्षिण भाग ब्रह्मासन से अग्निकोण तक पूर्वाग्र बिछायें ।

पश्चिम भाग नैऋत्यकोण से वायव्यकोण तक उत्तराग्र बिछायें।

उत्तर भाग वायव्यकोण से ईशानकोण तक पूर्वाग्र बिछायें।

पनुः दाहिने हाथ से वेदी के ईशानकोण से प्रारम्भ कर वामवति ईशान पर्यन्त प्रदक्षिणा करे

• **पात्रासादनम्** पवित्रच्छेदना दर्भाः त्रयः (पवित्र छेदन हेतु ३ कुश)। पवित्रे द्वे (पवित्री हेतु कुश) । प्रोक्षणीपात्रम् (प्रोक्षणी) । आज्यस्थाली (घी

का कटोरा)। चत्स्थाली (चरु पात्र) । सम्मार्जनकुशाः पञ्च (५ मार्जन कुश)। उपयमनकुशाः पंच (५ उपयमन कुश) । समिधस्तिस्रः (अंगूठे से तर्जनी मात्र ३ लकडी)। स्तुवा: आज्य (घृत) । पूर्णपात्रम् (२५६ मुठ्ठी चावल से भरा पात्र) । उप कल्पनीयानि द्रव्याणि । दक्षिणा वरो वा । पूर्णाहुति के लिये नारिकेल आदि हवन सामग्री पश्चिम से पूर्व तक उत्तराग्र रख लें।

• **पवित्रकनिर्माण** द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय द्वयोर्मूलेन द्वो कुशौ प्रदक्षिणीकृत्य त्रयाणां मूलाग्राणि एकीकृत्य अनामिकांगुष्टेन द्वयोरग्रे छेदयेत् । द्वे ग्राहये । त्रीणि अन्यच्च उत्तरतः क्षिपेत् ।

• **प्रोक्षणीपात्र** प्रोक्षणीपात्रे प्रणीतोदकमासिच्य प्रात्रान्तरेण चतुर्वारं जलं प्रपूर्य वामकरे पवित्राग्र दक्षिणे पवित्रयोर्मूलं धृत्वा मध्यतः । पवित्राभ्यां त्रिरुत्पवनम् प्रोक्षणीपात्रजलस्य (प्रोक्षणी पात्र से ३ बार अपने ऊपर छींटा मारे) । प्रोक्षणीनां सव्यहस्ते करणम् (प्रोक्षणी पात्र को सीधे हाथ से बांये हाथ पर रखें) । दक्षिणहस्तं उत्तानं कृत्वा मध्यमानामिकांगुल्योः मध्यपर्वाभ्यां अपां त्रिरुद्दिगनम् । प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी प्रोक्षणम् (प्रणीता के जल से प्रोक्षणी पात्र में ३ बार छींटा दें)। प्रोक्षण्युदकेन आज्यस्थाल्याः प्रोक्षणम् (प्रोक्षणी पात्र के जल से सब जगह छींटा दें।

• **पर्यग्नि करणम्** ज्वलितोल्मुकेन उभयोः पर्यग्निकरणम् (अग्नि को जला दें) । इतरथावृत्तिः । अर्द्धाश्रिते चरौ स्रुवस्य प्रतपनम् । आज्यपात्र से घी को कटोरे में निकालकर उस पात्र को वेदी के दक्षिणभाग में अग्निपर रख दे। घी के गरम हो जाने पर एक जलती हुई लकड़ी को लेकर घृतपात्र के ईशानभाग से प्रारम्भकर ईशानभाग तक दाहिनी ओर घुमाकर अग्नि में डाल दे। फिर खाली बायें हाथ को बायीं ओ रसे घुमाकर ईशानभाग तक ले आये। यह क्रिया पर्यग्निकरण कहलाती है।

सम्मार्जन (स्रुवा का) सम्मार्गकुशैः सम्मार्जनम् । अग्रैः अग्रंम् । मूलैः मूलम् । प्रणीतोदकेना अभ्युक्षणम् । पूनः प्रतपनम् । देशे नीधानम् । स्रुवाका सम्मार्जन-दायें हाथमें स्रुवा को पूर्वाग्र तथा अधोमुख लेकर आग

पर तपाये। पुनः स्रुवा को बायें हाथ में पूर्वाग्र ऊर्ध्वमुख रखकर दायें हाथ से सम्मार्जन कुश के अग्रभाग से स्रुवा के अग्रभाग का, कुशके मध्यभाग से खुवा के मध्यभाग का और कुश के मूलभाग से स्रुवाके मूलभाग का स्पर्श करे अर्थात् स्रुवा का सम्मार्जन करे । प्रणीता के जलसे स्रुवा का प्रोक्षण करे। उसके बाद सम्मार्जन कुशों को अग्नि में डाल दे।

• **घृत-चरु पात्र स्थापन** आज्योद्वासनम् । चरोरुद्वासनम् ।

• **घृत उत्प्लवन** घी एवं चरु पात्र को वेदी के पश्चिम भाग में उत्तर की ओर रख दें।

प्रोक्षणी में रखी हुई पवित्री के द्वारा घृत को तीन बार उपर उछाले। घृत का अवलोकन करे और घृत में कोई विजातीय वस्तु हो तो निकाल कर फेंक दें। तदनन्तर प्रोक्षणि के जल को तीन बार उछाले और पवित्री को पुनः प्रोक्षणी पात्र में रख दे।

• **३ समिधा की आहुति** उपयमनकुशान् वामहस्तेनादाय तिष्ठन् समिधोभ्याधाय ।

तीन समिधा घी में डुबोकर खड़े होकर मन में प्रजापति का ध्यान करते हुए अग्नि में डाल दे

• **पर्युक्षण (जलधर देना)** प्रोक्षण्युदकशेषेण सपवित्रहस्तेन अग्नेः ईशानकोणादारभ्य ईशानकोणपर्यंतं प्रदक्षिणवत् पर्युक्षणम् । हस्तस्य इतरथावृत्तिः । पवित्रयोः प्रणीतासु निधानम् । दक्षिणजान्वच्य जुहोति । तत्र आज्यभागौ च ब्रम्हाणा अन्वारब्धः खुवेण जुहुयात् । प्रोक्षणी पात्र से जल लेकर ईशान कोण से ईशान कोण तक प्रदक्षिण क्रम से जलधार गिरा दे एवं शंखमुद्रा से स्रुवा को पकड कर हवन करें।

• **प्रतिष्ठा (अग्नि)** पूर्व में वेदी में स्थापित अग्नि की निम्न मन्त्र से अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करे ।

• ॐ समुद्भवनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ।

• **ध्यान (अग्नि)** अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् । सुवर्णवर्णममलमनन्तं विश्वतोमुखम् । सर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षिशिरोमुखः ॥

विश्वरूपो महानग्निः प्रणीतः सर्वकर्मसु ।

• ॐ चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।

त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां २ आविवेश ॥

• ॐ भूर्भुवः स्वः समुद्भवनाम्ने अग्नये नमः । सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि

॥ हवन-विधि ॥

सर्वप्रथम प्रजापति देवता के निमित्त आहुति दी जाती है। तदनन्तर इन्द्र, अग्नि तथा सोमदेवता को आहुति देने का विधान है। इन चार आहुतियों में प्रथम दो आहुतियाँ आधार नामवाली हैं एवं तीसरी और चौथी आहुति आज्यभाग नाम से कही जाती है। ये चारों आहुतियाँ घी से देनी चाहिये। इन आहुतियों को प्रदान करते समय ब्रह्मा कुश के द्वारा हवनकर्ता के दाहिने हाथ का स्पर्श किये रहे, इस क्रिया को ब्रह्मणान्वारब्ध कहते हैं।

इदं प्रजापतये न मम ।

• **आघार** ॐ प्रजापतये स्वाहा ।

ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदं इन्द्राय न मम ।

• **आज्यभाग** ॐ अग्नये स्वाहा । इदं अग्नये न मम ।

ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय न मम ।

• **नव आहुति** १. ॐ भूः स्वाहा । इदं अग्नये न मम ।

२. ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे न मम ।

३. ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय न मम ।

४. ॐ त्वन् नो अग्ने वरुणस्य विद्वारन् देवस्य होडो अव यासि सीष्ठाः ।

यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा गुं सि प्रमु मुग्ध्यस्मत्स्वाहा।

इदं अग्नी वरुणाभ्यां न मम ।

५. ॐ स त्वन् नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुण ७ रराणो वीहि मृडीक गुं सुहवो न एधि स्वाहा। इदं अग्नी वरुणाभ्यां न मम ।

६. ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभि शस्ति पाश्च सत्य मित्त्व मया असि । अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज गुं स्वाहा ।

७. ॐ येते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः ।

तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ।

८. ॐ उदुत्तमं वरुण पाश मस्म दवा धमं वि मध्यम गुं श्रथाय ।

अथा वयमादित्य व्रते तवा नागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥

९. ॐ प्रजापतये स्वाहा ।इदं प्रजापतये न मम ।

• **स्विष्टकृत आहुति** ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इदं वरुणायादित्यादितये न मम ।

इदमग्नये स्विष्टकृते न मम ।इदं अग्नये अयसे न मम ।

• **संस्त्रव प्राशन**

हवन पूर्ण होने पर प्रोक्षणी पात्र से घृत दाहिने हाथ से यत्किंचित् पान करे ।

हाथ धो ले। फिर आचमन करें।

ॐ यस्माद्यज्ञपुरोडाशाद्यज्वानो ब्रह्मरूपिणः ।

तं संश्रवपुरोडाशं प्राश्नामि सुखपुण्यदम् ॥

• **मार्जन विधि** बालक प्रणीता पात्र के जल से कुशों के द्वारा अपने सिर पर मार्जन करे ।

•ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु ।सिर पर मार्जन करे।

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्म। जल निचे छोड दे ।

• **पवित्रप्रतिपत्ति** पवित्री का ग्रन्थि खोलकर उसे अग्नि में छोड़ दें।

• **पूर्णपात्र संकल्प** पूर्व में स्थापित पूर्णपात्र में द्रव्य-दक्षिणा सहित संकल्प कर ब्राह्मण को प्रदान करे ।

ॐ अद्य एतस्मिन् उपनयन होम कर्मणि कृता-कृता वेक्षण रूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं प्रजापति- दैवतम् अमुक-गोत्राय, अमुक-

शर्मणे ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

• ब्राह्मण कहे। परिगृहणातु ।

• **प्रणीता वमोक** प्रणीता पात्र को ईशान दिशा में उलट दें।

• **मार्जन** जल को अपने उपर मार्जन करे।

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ।

• **लग्नदान** बटुक गायत्री मन्त्र ग्रहण में अधिकार प्राप्ति के लिये तथा लग्नदोष की शान्ति केलिये दान का निम्न संकल्प करे के ब्राह्मणको दक्षिणा प्रदान करे।

• **संकल्प** ॐ अद्य अस्य कुमारस्य सावित्री ग्रहण लग्नात् स्थानस्थितैः दुष्टग्रहैः सूचित- दुष्टफल-निवृत्तिपूर्वक-शुभफल प्राप्तये आदित्यादि नवग्रहाणां प्रीतये च इदं सुवर्ण-निष्क्रयी भूतं द्रव्यं आचार्याय सम्प्रदे ।

देव पूजन आचार्य एक काँसे की थाली में चावल बिछाकर ओंकार, व्याहृति पूर्वक गायत्री के अक्षर सहित गणेश और कुलदेवता को सुवर्ण की शलाका अथवा कुशा से लिखकर बटुक द्वारा निम्न संकल्प पूर्वक उनका पूजन कराये ।

• **संकल्प** ॐ अद्य .... गोत्रः शर्मा मम ब्रह्मवर्चस सिद्ध्यर्थं वेदाध्ययनाधिकार सिद्ध्यर्थं गायत्र्युपदेशाङ्ग विहितं गायत्री सावित्री सरस्वती पूजन पूर्वकमाचार्यपूजनं गणपतिपूजनञ्च करिष्ये ।

• **गणपति पूजन** ॐ गणानां त्वा गणपति गुं हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपति गुं हवामहे, निधीनां त्वा निधिपति गुं हवामहे वसोः मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥

• ॐ भूर्भुवः स्वः गणपतये नमः । गणपतिम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

• **गायत्री पूजन** ॐ ता गुं सवितुर्वरेण्यस्य चित्रामाऽहं वृणे सुमतिं विश्वजन्याम् । यामस्य कण्वो अदुहत्प्रपीना गुं सहस्रधारां पयसा महीङ्गाम् ॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गायत्र्यै नमः। गायत्रीम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

• **सावित्री पूजन** ॐ सवित्रा प्रसवित्रा सरस्वत्या वाचा त्वष्ट्रा रूपैः पूष्णा पशुभिरिन्द्रेणास्मे बृहस्पतिना ब्रह्मणा वरुणेनौजसाऽग्निना तेजसा सोमेन राज्ञा विष्णुना दशम्या देवतया प्रसूतः प्र सर्पामि ।

• ॐ भूर्भवः स्वः सावित्र्यै नमः । सावित्रीम् आवाह्यामि स्थापयामि, पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

• **सरस्वती पूजन** ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः ।

• ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः । सरस्वतीम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

• **गुरु पूजन** ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु । यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥

• ॐ भूर्भुवः स्वः गुरवे नमः। गुरुम् आवाह्यामि, स्थापयामि, पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

• निचे दिये हुए मंत्रो के द्वारा पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दें।

• **अर्पण करें** अनया पूजया गायत्री- सावित्री- सरस्वती- आदि देवताः

प्रीयन्तां न मम ।

॥ गायत्री मन्त्र उपदेश ॥

• इसके बाद अग्निकुण्ड के समीप उत्तर-पश्चिमाभि मुख बैठा हुआ बटुक आचार्य के दोनों पैर स्पर्श करे । आचार्य बटुक के अभिमुख होकर एकान्त में गायत्री मन्त्र का उपदेश दे। गुरु बटुक को वस्त्र से आच्छादितकर निम्न क्रम से गायत्री का उपदेश करे-

• **विनियोग** प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता, व्याहृतीनां प्रजापतिऋषिः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि अग्निवायुसूर्या देवताः तत्सवितुरिति विश्वामित्र ऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता सर्वेषां माणवकोपदेशने विनियोगः ।

• **गायत्री उपदेश** बटुक आचार्य के सामने अपने हाथ में नारियल सुपारी लेकर बैठ जाय।

• आचार्य अपने दुपट्टे से बालक का सर ढंक लें एवं दाहिने कान में उपदेश देते समय आचार्य पहले गायत्री का प्रथम पाद, बाद में आधी ऋचा और उसके बाद व्याहृति सहित सम्पूर्ण मन्त्र का तीन बार उपदेश दे।

• **प्रथम बार** आचार्य बटुक से इनका उच्चारण भी करवाये।

• प्रथम पाद ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यम् ।

• द्वितीय पाद भर्गो देवस्य धीमहि ।

• तृतीय पाद धियो योनः प्रचोदयात् ।।

• **द्वितीय बार** आचार्य बटुक से इनका उच्चारण भी करवाये ।

• प्रथम आधी ऋचा ॐ भूर्भुव स्व तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

• द्वितीय आधी ऋचा धियो योनः प्रचोदयात् ।।

• **तृतीय बार** आचार्य बटुक को त्रिपदा गायत्री का एक साथ उपदेश दे ।

• ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।

धियो योनः प्रचोदयात् ।।

• **परिस मूहन** ब्रह्मचारी अग्नि कुण्ड के पश्चिम की ओर बैठ जाय ।

पाँच समिधाएँ अथवा कण्डों (गोबर) को घी में डुबोकर अग्नि में छोडे ।

१. ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मां कुरु ।

२. ॐ यथा त्व मग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि ।

३. ॐ एवं मा गुं सुश्रवः सौश्रवसं कुरु ।

४. ॐ यथा त्व मग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि ।

५. ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् ॥

• **अग्निपर्युक्षण**

प्रदक्षिण क्रम से ईशान से उत्तर तक जल से अग्नि का प्रोक्षण कर तीन समिधा को घी में डुबो कर खड़े होकर एक-एक आहुति अग्नि में छोडे ।

ॐ अग्नये समिध माहार्षम् बृहते जातवेदसे । यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यस एवमह मायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर् ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्य निराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्व्यन्नादो भूयास ७ स्वाहा ।।

• पुनः पाँच समिधाएँ अथवा कण्डों (गोबर) को घी में डुबोकर अग्नि में छोडे।

१. ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मां कुरु ।

२. ॐ यथा त्व मग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि ।

३. ॐ एवं मा गुं सुश्रवः सौश्रवसं कुरु ।

४. ॐ यथा त्व मग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि ।

५. ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् ॥

• **दोनों हथेली अग्नि में दिखाकर (तपाकर) ७ बार अपने मुख पर छुवाएं ।**

१. ॐ तनूपा ऽ अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि ।

२. ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि ।

३. ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि ।

४. ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपूण ।

५. ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु ।

६. ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु ।

७. ॐ मेधामश्विनौ देवा वाधत्तां पुष्कर स्त्रजौ ।

• **सर्वांग स्पर्श** ॐ अंगानि च मे आप्यायन्ताम्। (एक बार सिर से पाँव छू लें।)

• बालक दाहिने हाथ के पाँचों अँगुलियों को मिलाकर अंगों का स्पर्श करे।

• मुख ॐ वाक् च म आप्यायताम् ।

• नाक ॐ प्राणश्च म आप्यायताम् ।

• दोनों नेत्र ॐ चक्षुश्च म आप्यायताम् ।

• दोनों कान ॐ श्रोत्रञ्च म आप्यायताम् ।

• दोनों बाहु (भुजा) ॐ यशो बलं च म आप्यायताम् ।

• **त्र्यायुष्करण** आचार्य बटुक को स्रुवा से भस्म लेकर निर्दिष्ट अंगों में भस्म लगाए ।

• माथ (ललाट) में ॐ त्रयायुषं जमदग्नेः ।

ग्रीवा (कण्ठ) में ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।

दक्षिण बाहु मूल पर ॐ यद् देवेषु त्र्यायुषम् ।

• हृदय में ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ।

बटुक ब्रह्मचारी गोत्र-प्रवर पूर्वक अपना नामोच्चारण करता हुआ अग्नि तथा गुरु आदि को प्रणाम करे ।

• **अग्नि को प्रणाम** अमुक गोत्रः अमुक प्रवरान्वितः अमुक शर्माहं भो वैश्वानर त्वामभिवादये ।

• **वरुण को प्रणाम** अमुक गोत्रः अमुक प्रवरान्वितः अमुक शर्माहं भो वरुण त्वामभिवादये ।

• **सूर्य को प्रणाम** अमुक गोत्रः अमुक प्रवरान्वितः अमुक शर्माहं भो सूर्य त्वामभिवादये

• **गुरु को प्रणाम** अमुक गोत्रः अमुक प्रवरान्वितः अमुक शर्माहं भो आचार्य त्वामभिवादये ।

• **आशीर्वाद (आचार्य कहें)** आयुष्मान् भव सौम्य श्री शर्मन् / वर्मन / गुप्त (बटुक का नाम लें)। बटुक अन्य श्रेष्ठ जनों का भी आशीर्वाद लें।

• **भिक्षा ग्रहण** ब्रह्मचारी भिक्षापात्र लेकर दण्ड धारण कर सर्वप्रथम माता से भिक्षा माँगे । फिर अन्य लोगों से भीक्षा माँगे ।

• ब्राह्मण ब्रह्मचारी कहे भवति भिक्षां देहि मातः ।

• क्षत्रिय ब्रह्मचारी कहे भिक्षां भवति देहि मातः ।

• वैश्य ब्रह्मचारी कहे देहि भिक्षां भवति मातः ।

• अन्य लोगों से भीक्षा माँगे भवन् भिक्षां देहि ।

• प्राप्त भिक्षा गुरु को दे भो गुरो इयं भिक्षा मया लब्धा ।

• **ब्रह्मचारी के लिये नियमोपदेश** आचार्य बटुक ब्रह्मचारी के लिये

नियमों का उपदेश करे।

•अधः शायी स्यात् ।   ब्रह्मचारी को जमीन पर सोना चाहिये ।

•अक्षरालवणासी स्यात् । नमक, कटु-तिक्त, जूठी चीजें नहीं खाना चाहिए।

•समावर्तन पर्यन्तं दण्ड धारणम् । समावर्तन संस्कार तक दण्ड और मृगचर्म धारण करना चाहिये

•अग्नि परिचरणम् ।अग्नि की उपासना करनी चाहिये।

•प्रत्यहं समिदा हरणम् ।प्रतिदिन समिधा लानी चाहिये ।

•गुरु शुश्रूषणम् ।गुरु की सेव करनी चाहिये ।

•भिक्षाचर्या कुर्यात् ।भिक्षावृति से रहना चाहिये ।

•मधु मासांशनं न कर्त्तव्यम् ।मधु-मांस आदि का उपयोग नहीं करना ।

•स्त्रीणां मध्ये वस्थानम् न कर्त्तव्यम् ।स्त्रियों के बीच में नहीं बैठना।

•यथोक्तं कर्म कर्त्तव्यम् । ब्रह्मचारी के लिये बनाये गये नियम और कर्म को करते रहना ।

•अनृतं न वक्तव्यम् ।असत्य नहीं बोलना।

•अदत्तं न गृह्णीयात् ।बिना दिये कोई चीज नहीं लेना ।

•परिधान वस्त्रं क्षालनं बिना न दधीत । बिना पछारे धोती नहीं पहनना ।

•भग्नं विकृतं वस्त्रं न दधीत । फटा हुआ अथवा चिथड़ा कपड़ा नहीं पहनना ।

•उदयास्त समये सूर्यावलोकनं न कुर्यात् । उदय और अस्त के समय सूर्य को नहीं देखना ।

•पर्युषितमन्नं न भक्षयेत् ।बासी भोजन नहीं करना।

• कांस्य पात्रे भोजनादीनि च वर्जयेत् । कांस्य पात्र में भोजन नहीं करना।

• ताम्बूल भक्षणं न कुर्यात् । पान नहीं खाना ।

• अभ्यंग, अंजनं, छत्रं, उपानहौ वर्जयेत्। तेल मालिश, आँख में काजल, छाता, जूता का उपयोग नहीं करना।

• अत्यन्तं स्नानं, भोजनं, निद्रां, जागरणं,

क्रोध, लोभ, मोह, शोकानि वर्जय । बहुत अधिक स्नान, भोजन, शयन, जागरण, क्रोध, लोभ, मोह, शोक नहीं करना।

• गावाश्वहस्ति- उष्ट्रादियानं वर्जय ।हाथी, घोड़ा, ऊँट, बैल आदि की सवारी नहीं करना।

• विद्योपार्जने यत्नवान् भव ।विद्या प्राप्ति करने के लिए पूरा प्रयत्न करना ।

• **अग्नि पूजन** गन्धाक्षत पुष्प छोडते हुए समुद्भव नामक अग्नि का पूजन करे ।

• ॐ भूर्भुवः स्वः समुद्भव नामाग्नये नमः समुद्भवनामाग्निं पूजयामि, सर्वोपजारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ।

• **अग्नि विसर्जन**

अग्नि पर अक्षत छोडते हुए विसर्जन करे।

• ॐ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्व-स्थाने परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवास् तत्र गच्छ हुताशनः ।।

• **दक्षिणा संकल्प** बटुक आचार्य हेतु दक्षिणा संकल्प करे ।

• अद्यः शुभ-पुण्य-तिथौ ..... गोत्रः..... शर्माहं कृतस्य उपनयन कर्मणः सांगता सिद्ध्यर्थं दक्षिणा द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे । ॐ स्वस्ति ।ब्राह्मण कहें

• **पूर्णाहुति** स्रुवा में १ सुपारी और घी लेकर पूर्णाहुति करें।

•ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृत आजातमग्निम् ।

कवि ७ सम्राज मतिथिं जनाना मासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा ॥ इदमग्नये न मम ।

•**अर्पण (आचार्य)** यथाशक्त्या उपनयन विधेः परिपूर्णताऽस्तु । अस्तु परिपूर्णता ॥

•**विष्णु प्रार्थना** प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः ॥

॥ इति उपनयन विधि ॥

प्रश्न -

१ .नवग्रह मण्डल कैसे बनाया जाता है?

२ .नवग्रह मण्डल का महत्व क्या है।

इकाई 8, ॥ वेदारम्भ संस्कार प्रयोग ॥

• उपनयन के बाद आचार्य वेदारम्भ वेदी के समीप आकर बटुक को अपने दाहिने आसन पर बैठाये । आचमन, प्राणायाम आदि करके गणेशादि देवों का स्मरणात्मक पूजन करे एवं अग्नि की स्थापना करे ।

• **अग्निस्थापन** आचार्य वेदीपर समुद्भव नामक अग्नि की स्थापना हेतु संकल्प करे । वेदारम्भ - वेदी का संस्कार उपनयन संस्कार के समय सम्पन्न हो गया है, अतः पुनः करने की आवश्यकता नहीं है।

• **संकल्प** अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य-तिथौ अमुक गोत्रः, अमुक शर्माहं (बटुक का नाम) अस्य ब्रह्मचारिणः / दो हों तो अनयोः ब्रह्मचारिणोः / दो से अधिक हों तो - एषां ब्रह्मचारिणाम् यज्ञाधिकार सिद्धि द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं वेदारम्भ अहं करिष्ये ।

• अस्मिन् वेदारम्भ कर्मणि पंचभूसंस्कार-पूर्वकं समुद्भव नामाग्नि स्थापनं करिष्ये ।

• **मन्त्र**ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ २ आ सादयादिह ।

• **ब्रह्मा वरण**वरण सामग्री लेकर ब्रह्मा का वरण करे।

अद्य कर्तव्य वेदारम्भ हवन कर्मणि कृता-कृता वेक्षणादि ब्रह्मकर्म कर्तुम् अमुक गोत्रम् अमुक शर्माणम् ब्रह्मणाम् एभिः वरण द्रव्यैः ब्रह्मत्वेन त्वाम् अहम् वृणे ।

• ब्रह्मा वरण लेकर कहे। वृतोस्मि ।

• **प्रार्थना (ब्रह्मा)**

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदधरः प्रभुः ।

तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ।।॥

• **कुशकुण्डिका** पृ०सं० ४६ में दी गयी विधि के अनुसार

कुशकण्डिका करे ।

•**अग्नि प्रतिष्ठा** पूर्व में वेदी में स्थापित अग्नि की निम्न मन्त्र से अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करे ।

•ॐ समुद्भवनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ।

•**अग्नि ध्यान** अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् ।

सुवर्ण-वर्णममलमनन्तं विश्वतोमुखम् ।

सर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षिशिरोमुखः ॥

विश्वरूपो महानग्निः प्रणीतः सर्वकर्मसु ।

•ॐ चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य ।

त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां २ आविवेश ॥

• ॐ भूर्भुवः स्वः समुद्भवनाम्ने अग्नये नमः । सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि

• **अन्वारब्ध** हवन के समय ब्रह्मा कुशा से हवन कर्ता का स्पर्श किये रहे।

•हवन विधि

ॐ प्रजापतये स्वाहा ।इदं प्रजापतये न मम ।

ॐ इन्द्राय स्वाहा ।इदं इन्द्राय न मम ।

ॐ अग्नये स्वाहा।इदं अग्नये न मम ।

ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय न मम ।

•यजुर्वेद आहुतियाँ

ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा । इदं अन्तरिक्षाय न मम ।

ॐ वायवे स्वाहा ।इदं वायवे न मम ।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा।इदं ब्रह्मणे न मम ।

ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा ।इदं छन्दोभ्यो न मम ।

• ऋग्वेद आहुतियाँ

ॐ पृथिव्यै स्वाहा । इदं पृथिव्यै न मम ।

ॐ अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये न मम ।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । इदं ब्रह्मणे न मम ।

ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा । इदं छन्दोभ्यो न मम ।

• सामवेद आहुतियाँ

ॐ दिवे स्वाहा। इदं दिवे न मम ।

ॐ सूर्याय स्वाहा । इदं सूर्याय न मम ।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । इदं ब्रह्मणे न मम ।

ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा । इदं छन्दोभ्यो न मम ।

• अथर्ववेद आहुतियाँ

ॐ दिग्भ्यः स्वाहा । इदं दिग्भ्यो न मम ।

• ॐ चन्द्रमसे स्वाहा । इदं चंद्रमसे न मम ।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । इदं ब्रह्मणे न मम ।

• ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा । इदं छन्दोभ्यो न मम ।

• सामान्य आहुतियाँ

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम ।

• ॐ देवेभ्यः स्वाहा । इदं देवेभ्यो न मम ।

• ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा । इदं ऋषिभ्यो न मम ।

• ॐ श्रद्धायै स्वाहा । इदं श्रद्धायै न मम ।

• ॐ मेधायै स्वाहा । इदं मेधायै न मम ।

• ॐ सदसस्पतये स्वाहा । इदं सदसस्पतये न मम ।

• ॐ अनुमतये स्वाहा । इदं अनुमतये न मम ।

• **नव आहुति**

१. ॐ भूः स्वाहा । इदं अग्नये न मम ।

२. ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे न मम ।

३. ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम ।

४. ॐ त्वन् नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य होडो अव यासि सीष्ठाः ।

यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा गुं सि प्रमु मुग्ध्यस्मत्स्वाहा।

इदं अग्नी वरुणाभ्यां न मम ।

५. ॐ स त्वन् नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ । अव यक्ष्व नो वरुण गुं रराणो वीहि मृडीक गुं सुहवो न एधि स्वाहा। इदं अग्नी वरुणाभ्यां न मम ।

६. ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभि शस्ति पाश्च सत्य मित्त्व मया असि । अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज गुं स्वाहा ।

७. ॐ येते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः । तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥

इदं अग्नये अयसे न मम ।

इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ।

८. ॐ उदुत्तमं वरुण पाश मस्म दवा धमं वि मध्यम गुं श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवा नागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥

इदं वरुणायादित्यादितये न मम ।

९. ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम। (मौन होकर)

• **स्विष्टकृत आहुति** ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा । इदं अग्नये स्विष्टकृते न मम ।

• **संस्त्रव प्राशन** हवन पूर्ण होने पर प्रोक्षणी पात्र से घृत दाहिने हाथ से यत्किंचित् प्राशन करे ।

ॐ यस्माद्यज्ञपुरोडाशाद्यज्वानो ब्रह्मरूपिणः ।

तं संश्रवपुरोडाशं प्राश्नामि सुखपुण्यदम् ॥

• **मार्जन विधि** बालक प्रणीता पात्र के जल से कुशों के द्वारा अपने सिर पर मार्जन करे। सिर पर मार्जन करे।

• ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्म।

• ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु । जल निचे छोड दे।

• **पवित्रप्रतिपत्ति** पवित्री का ग्रन्थि खोलकर उसे अग्नि में छोड़ दें।

• **पूर्णपात्र संकल्प** पूर्व में स्थापित पूर्णपात्र में द्रव्य-दक्षिणा सहित संकल्प कर ब्राह्मण को प्रदान करे ।

• ॐ अद्य ..... गोत्रः,..... शर्माहं अस्य कुमारस्य वेदारम्भ संस्कार होम कर्मणि कृता-कृता वेक्षण रूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं प्रजापति- दैवतम् अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

• ब्रह्मा कहे। स्वस्ति कहकर उस पूर्णपात्र को ग्रहण कर ले ।

• **प्रणीता वमोक** प्रणीता पात्र को ईशान कोण में उलट दें।

• **मार्जन**• ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ।

• **देव पूजन / वेदारम्भ** ब्रह्मचारी देव पूजन एवं वेद पाठन हेतु संकल्प करे ।

• **संकल्प** ॐ अद्य गोत्रः

• शर्माहं पूर्वोच्चारित ग्रह-गुण विशेषण विशिष्टायां पुण्य तिथौ मम ब्रह्मवर्चस सिद्ध्यर्थं वेदारम्भ कर्मणः पूर्वांगत्वेन गणपति सहित सरस्वती विष्णु-लक्ष्मी यजुर्वेद गुरुणां पूजनं करिष्ये ।

• पट्टी (लकड़ी की तख्ती) पर पांच जगह अक्षत सोपारी रखकर पंचदेव की पूजा करे ।

• **गणपति पूजन** ॐ गणानां त्वा गणपति गुं हवामहे, प्रियाणां त्वा प्रियपति गुं हवामहे, निधीनां त्वा निधिपति गुं हवामहे वसोः मम । आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम् ॥

• ॐ भूर्भुवः स्वः गणेश इहागच्छ पूजार्थम् त्वाम् आवाह्यामि । इह तिष्ठ ।

• **विष्णु पूजन** ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढ़मस्य पा गुं सुरे स्वाहा।

• ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ पूजार्थम् त्वाम् आवाह्यामि । इह तिष्ठ ।

• **सरस्वती पूजन** ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती । यज्ञं वष्टु धियावसुः ।

• ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वती इहागच्छ पूजार्थम् त्वाम् आवाह्यामि । इह तिष्ठ ।

• **लक्ष्मी पूजन** ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम् ।

इष्णन् निषाणा मुं मइषाण सर्वलोकं मडषाण ।

• ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्मी इहागच्छ पूजार्थम् त्वाम् आवाह्यामि । इह तिष्ठ ।

• **वेद पुरुष पूजन** ॐ वेदोऽसि येनत्वं देव वेद देवेभ्यो वेदोऽभवस्तेनमह्य वेदो भूयाः ।

देवागातु विदो गातुं वित्वागातुमित् ।

मनसस्यत इमं देवयज्ञं ७ स्वाहा वातेधाः ॥

• ॐ भूर्भुवः स्वः वेत पुरुष इहागच्छ पूजार्थम् त्वाम् आवाह्यामि । इह तिष्ठ ।

• **प्रतिष्ठा** ॐ एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्ब्रहस्पतये ब्रह्मणे ।

तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव ॥

गन्ध-अक्षत-पुष्प द्वारा पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन कर दें।

• **जल अर्पण करें** अनया पूजया गणेश आदि देवताः प्रीयन्तां न मम ।

• **गुरु पूजन** बटुक गन्ध-पुष्पादि द्वारा गुरु का पूजन करे और प्रणाम करे ।

• ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु ।

यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम् ॥

• **वेदारम्भ** प्रणव व्याहृति पूर्वक गायत्री मन्त्र को पढकर अपने वेद की शाखा का आरम्भ करे ।

• ॐ भूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ।

• **शुक्लयजुर्वेदारम्भ** ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्या यध्व मघ्न्या इन्द्राय भागम् प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघश ७ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात वह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥

• **ऋग्वेदारम्भ**ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ।।

• **सामवेदारम्भ**ॐ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये । नि होता सत्सि बर्हिषि ॥

• **अथर्ववेदारम्भ**ॐ शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि स्त्रवन्तु नः ॥

• **काशी प्रस्थान**आचार्यानुसार इस अवसर पर ब्रह्मचारी को वेद पढ़ने के लिये काशी भेजते हैं।

• **पूर्णाहुति** स्त्रुवा में १ सुपारी और घी लेकर पूर्णाहुति करें।

• ॐ मूर्धानं दिवो अरतिं पृथिव्या वैश्वानर मृत आजातमग्निम् । कवि ७ सम्राज मतिथिं जनाना मासन्ना पात्रं जनयन्त देवाः स्वाहा ॥ इदमग्नये न मम ।

• **त्र्यायुष्करण** आचार्य बटुक को खुवा से भस्म लेकर निर्दिष्ट अंगों में भस्म लगाए।

माथ (ललाट) में ॐ त्रायुषं जमदग्नेः ।

ग्रीवा (कण्ठ) में ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।

दक्षिण बाहु मूल परॐ यद् देवेषु त्र्यायुषम् । हृदय में ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ।

• **अग्नि विसर्जन** समुद्भव नामक अग्नि पर अक्षत छोडते हुए विसर्जन करे ।

• ॐ गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्व-स्थाने परमेश्वर । यत्र ब्रह्मादयो देवास् तत्र गच्छ हुताशनः ।।

• **दक्षिणा संकल्प** ब्रह्मचारी आचार्य हेतु दक्षिणा संकल्प करे ।

• अद्यः शुभ-पुण्य-तिथौ ..... गोत्रः..... शर्माहं कृतस्य वेदारम्भ कर्मणः सांगता सिद्धयर्थं दक्षिणा द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

• ब्राह्मण कहें ॐ स्वस्ति ।

• **अर्पण (आचार्य)** यथाशक्त्या वेदारम्भ विधेः परिपूर्णताऽस्तु । अस्तु परिपूर्णता ॥

• **विष्णु प्रार्थना** प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत् ।

स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥

• यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो यज्ञ क्रियादिषु ।

न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ।।

• ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ।

॥ इति वेदारम्भ ॥

॥ समावर्तन संस्कार प्रयोग ।।

पारस्कर गृह्यसूत्र के एतदेव व्रतादेशनविसर्गेषु इस वचन के अनुसार समावर्तन संस्कार में वेदारम्भ एवं उपनयन संस्कार में विहित अधिकांश विधियों को सम्पादित किया जाता है। इसमें मातृपूजनादि से लेकर पूर्णपात्रादि दान तक का कर्म आचार्य द्वारा सम्पन्न होता है, तदनन्तर अष्टकलशाभिषेक से लेकर दण्ड धारण तक के कार्य स्नातक द्वारा सम्पन्न होते हैं।

• **गोदान संकल्प** बटुक स्नान हेतु आचार्य को गौ आदि प्रदान करे ।

• ॐ अद्य ..... अहं स्नानाधिकार सिद्धये इमां गां गोप्रत्याम्नाय निष्क्रिय भूतां दक्षिणां आचार्याय भवते सम्प्रददे ।

• **स्नानार्थ अनुमति** ब्रह्मचारी कहे आचार्य कहे

भो गुरो ! अहं स्नास्यामि । (हे गुरो! मैं स्नान करूँगा) स्नाहि । (स्नान करो)

• आचार्य समावर्तन संस्कार हेतु वेदी के समीप स्वयं पूर्वमुख एवं स्नातक को अपने दक्षिण उत्तरमुख बैठा ले।

• आचमन, प्राणायाम आदि करके गणेशादि देवों का स्मरणात्मक पूजन करे एवं अग्निकी स्थापना करे ।

• **अग्निस्थापन** आचार्य वेदी पर वैश्वानर नामक अग्नि की स्थापना हेतु संकल्प करे। वेदारम्भ - वेदी का संस्कार उपनयन संस्कार के समय सम्पन्न हो गया है, अतः पुनः करने की आवश्यकता नहीं है।

• **संकल्प** अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ-पुण्य-तिथौ अमुक गोत्रः, अमुक शर्माहं (बटुक का नाम) अस्य ब्रह्मचारिणः / दो हों तो अनयोः ब्रह्मचारिणोः / दो से अधिक हों तो - एषां ब्रह्मचारिणाम् गृहस्थाद्याश्रम प्राप्ति द्वारा श्री परमेश्वर प्रीत्यर्थं समावर्तनाख्यं संस्कारं करिष्ये ।।

• अस्मिन् समावर्तनाख्ये कर्मणि पंचभू-संस्कार पूर्वक सूर्य (वैश्वानर) नामाग्नि स्थापनं करिष्ये ॥

• **मन्त्र** ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे । देवाँ २ आ सादयादिह ।

• **ब्रह्मा वरण** वरण सामग्री लेकर ब्रह्मा का वरण करे ।

अद्य अमुक बटोः समावर्तन होम कर्मणि कृता-कृता वेक्षण रुप ब्रह्मकर्म कर्तुम् अमुक गोत्रम् अमुक शर्माणम् ब्रह्मणाम् एभिः वरण द्रव्यैः ब्रह्मत्वेन त्वाम् अहम् वृणे । वरण सामग्री ब्रह्मा को प्रदान करे ।

• ब्रह्मा वरण लेकर कहे। वृतोस्मि ।

• **प्रार्थना (ब्रह्मा)** यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदधरः प्रभुः । तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम ।

• **कुशकुण्डिका** पृ०सं० ४६ में दी गयी विधि के अनुसार कुशकण्डिका करे ।

• **अग्नि प्रतिष्ठा** पूर्व में वेदी में स्थापित अग्नि की निम्न मन्त्र से अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करे ।

• ॐ वैश्वानर नामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव ।

• **अग्नि ध्यान** अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् । सुवर्ण-वर्णममलमनन्तं विश्वतोमुखम् । सर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षिशिरोमुखः ॥ विश्वरूपो महानग्निः प्रणीतः सर्वकर्मसु ।

• ॐ चत्वारि श्रृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य । त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यां २ आविवेश ॥

• ॐ भूर्भुवः स्वः वैश्वानर नाम्ने अग्नये नमः । सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि

• **अन्वारब्ध** हवन के समय ब्रह्मा कुशा से हवन कर्ता का स्पर्श किये रहे ।

• घृत की आहुति प्रदान करे। खुवा में बचे घी को प्रोक्षणी पात्र में छोडता जाय ।

•हवन विधि

ॐ प्रजापतये स्वाहा ।इदं प्रजापतये न मम ।

•ॐ इन्द्राय स्वाहा । इदं इन्द्राय न मम ।

•ॐ अग्नये स्वाहा । इदं अग्नये न मम ।

ॐ सोमाय स्वाहा । इदं सोमाय न मम ।

• **अन्वारब्ध** ब्रह्मा हवन कर्ता से कुशों का स्पर्श हटा ले। तत्पश्चात् हवन करे ।

•यजुर्वेद आहुतियाँ

ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा ।इदं अन्तरिक्षाय न मम ।

ॐ वायवे स्वाहा ।इदं वायवे न मम ।

•ॐ ब्रह्मणे स्वाहा । इदं ब्रह्मणे न मम ।

•ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा ।इदं छन्दोभ्यो न मम ।

•ऋग्वेद आहुतियाँ

ॐ पृथिव्यै स्वाहा । इदं पृथिव्यै न मम ।

•ॐ अग्नये स्वाहा । इदं अग्नये न मम ।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ।इदं ब्रह्मणे न मम ।

ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा। इदं छन्दोभ्यो न मम ।

•सामवेद आहुतियाँ

ॐ दिवे स्वाहा।इदं दिवे न मम ।

•ॐ सूर्याय स्वाहा ।इदं सूर्याय न मम ।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ।इदं ब्रह्मणे न मम ।

ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा। इदं छन्दोभ्यो न मम ।

•अथर्ववेद आहुतियाँ

ॐ दिग्भ्यः स्वाहा। इदं दिग्भ्यो न मम ।

ॐ चन्द्रमसे स्वाहा ।इदं चंद्रमसे न मम ।

ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ।इदं ब्रह्मणे न मम ।

ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा ।इदं छन्दोभ्यो न मम ।

•सामान्य आहुतियाँ

ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम ।

ॐ देवेभ्यः स्वाहा । इदं देवेभ्यो न मम ।

ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा । इदं ऋषिभ्यो न मम ।

ॐ श्रद्धायै स्वाहा । इदं श्रद्धायै न मम ।

ॐ मेधायै स्वाहा । इदं मेधायै न मम ।

ॐ सदसस्पतये स्वाहा । इदं सदसस्पतये न मम ।

ॐ अनुमतये स्वाहा । इदं अनुमतये न मम ।

•अन्वारब्ध हवन के समय ब्रह्मा कुशा से हवन कर्ता का स्पर्श किये रहे ।

•भूरादि नव आहुति

१. ॐ भूः स्वाहा ।इदं अग्नये न मम ।

२. ॐ भुवः स्वाहा । इदं वायवे न मम ।

३. ॐ स्वः स्वाहा । इदं सूर्याय न मम ।

४. ॐ त्वन् नो अग्ने वरुणस्य विद्वारन् देवस्य होडो अव यासि सीष्ठाः ।

यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वाद्वेषा गुं सि प्रमु मुग्ध्यस्मत्स्वाहा। इदं अग्नी वरुणाभ्यां न मम।

५. ॐ स त्वन् नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ ।

अव यक्ष्व नो वरुण गुं रराणो वीहि मृडीक गुं सुहवो न एधि स्वाहा। इदं अग्नी वरुणाभ्यां न मम ।

६. ॐ अयाश्चाग्नेऽस्य नभि शस्ति पाश्च सत्य मित्त्व मया असि ।

अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषज गुं स्वाहा ।

७. ॐ येते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः ।

तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ।।

इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुभ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।

८. ॐ उदुत्तमं वरुण पाश मस्म दवा धर्म वि मध्यम गुं श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तवा नागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥

इदं वरुणायादित्यादितये न मम ।

९. ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये न मम। (मौन होकर)

इदं अग्नये स्विष्टकृते न मम ।

• **स्विष्टकृत आहुति** ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा ।

• **संस्त्रव प्राशन** हवन पूर्ण होने पर प्रोक्षणी पात्र से घृत दाहिने हाथ से यत्किंचित् प्राशन करे । हाथ धो ले। फिर आचमन करें।

ॐ यस्माद्यज्ञपुरोडाशाद्यज्वानो ब्रह्मरूपिणः । तं संश्रवपुरोडाशं प्राश्नामि सुखपुण्यदम् ॥

• **मार्जन विधि** बालक प्रणीता पात्र के जल से कुशों के द्वारा अपने सिर पर मार्जन करे ।

• ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु ।सिर पर मार्जन करे।

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यञ्च वयं द्विष्म। जल निचे छोड दे।

•**पवित्रप्रतिपत्ति** पवित्री का ग्रन्थि खोलकर उसे अग्नि में छोड़ दें।

•**पूर्ण पात्र दान** पूर्व में स्थापित पूर्णपात्र में द्रव्य-दक्षिणा सहित संकल्प कर ब्रह्मा को प्रदान करे।

•**संकल्प** ॐ अद्य अमुक गोत्रः, अमुक शर्माहं अस्य कुमारस्य समावर्तन संस्कार होम कर्मणि कृता-कृता वेक्षण रूप ब्रह्मकर्म प्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं प्रजापति-दैवतम् अमुक-गोत्राय, अमुक-शर्मणे ब्रह्मणे तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

स्वस्ति कहकर उस पूर्णपात्र को ग्रहण कर ले ।

•**प्रणीता बिमोक** प्रणीता पात्र को ईशान कोण में उलट दें।

• ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम् ।

•उन कुशों को अग्नि में छोड दे तथा ब्रह्मग्रन्थि को खोल दे ।

•**परिस मूहन** ब्रह्मचारी अग्नि कुण्ड के पश्चिम की ओर बैठ जाय।

पाँच समिधाएँ अथवा कण्डों (गोबर) को घी में डुबोकर अग्नि में छोडे।

१. ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मां कुरु ।

२. ॐ यथा त्व मग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि ।

३. ॐ एवं मा ७ सुश्रवः सौश्रवसं कुरु ।

४. ॐ यथा त्व मग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि ।

५. ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् ॥

• **अग्निपर्युक्षण** प्रदक्षिण क्रम से ईशान से उत्तर तक जल से अग्नि का प्रोक्षण कर तीन समिधा को घी में डुबो कर खड़े होकर एक-एक आहुति अग्नि में छोडे ।

ॐ अग्नये समिध माहार्षम् बृहते जातवेदसे । यथा त्वमग्ने समिधा

समिध्यस एवमह मायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर् ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्य निराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्व्यन्नादो भूयास ७ स्वाहा ।।

• **पुनः पाँच सुखी समिधाएँ अथवा सुखी कण्डों (गोबर) की आहुतियाँ दे।**

१. ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मां कुरु ।

२. ॐ यथा त्व मग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि ।

३. ॐ एवं मा ७ सुश्रवः सौश्रवसं कुरु ।

४. ॐ यथा त्व मग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि ।

५. ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम् ॥

• **दोनों हथेली अग्नि में दिखाकर (तपाकर) ७ बार अपने मुख पर छुवाएं -**

१. ॐ तनूपा ऽ अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि ।

२. ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि ।

३. ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि ।

४. ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपूण ।

५. ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु ।

६. ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु ।

७. ॐ मेधामश्विनौ देवा वाधत्तां पुष्कर स्त्रजौ ।

• **सर्वांग स्पर्श** ॐ अंगानि च मे आप्यायन्ताम्। (एक बार सिर से पाँव छू लें ।)

बटुक दाहिने हाथ के पाँचों अँगुलियों को मिलाकर अंगों का स्पर्श

करे।

• मुख ॐ वाक् च म आप्यायताम् ।

• नाक ॐ प्राणश्च म आप्यायताम् ।

• दोनों नेत्र ॐ चक्षुश्च म आप्यायताम् ।

• दोनों कान ॐ श्रोत्रञ्च म आप्यायताम् ।

• दोनों बाहु (भुजा) ॐ यशो बलं च म आप्यायताम् ।

• **त्र्यायुष्करण** बटुक स्रुवा से भस्म लेकर निर्दिष्ट अंगों में भस्म लगाए।

• माथ (ललाट) में ॐ त्रायुषं जमदग्नेः ।

• ग्रीवा (कण्ठ) में ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम् ।

• दक्षिण बाहु मूल पर ॐ यद् देवेषु त्र्यायुषम् ।

• हृदय में ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम् ।

• बटुक ब्रह्मचारी गोत्र-प्रवर पूर्वक अपना नामोच्चारण करता हुआ अग्नि तथा गुरु आदि को प्रणाम करे ।

अग्नि को प्रणाम अमुक गोत्रः अमुक प्रवरान्वितः अमुक शर्माहं भो वैश्वानर त्वामभिवादये ।

• **वरुण को प्रणाम** अमुक गोत्रः अमुक प्रवरान्वितः अमुक शर्माहं भो वरुण त्वामभिवादये ।

• **गुरु को प्रणाम** अमुक गोत्रः अमुक प्रवरान्वितः अमुक शर्माहं भो आचार्य त्वामभिवादये ।

• **आशीर्वाद (आचार्य कहें)** आयुष्मान् भव सौम्य श्री शर्मन् / वर्मन / गुप्त (बटुक का नाम लें) । बटुक अन्य श्रेष्ठ जनों का भी आशीर्वाद लें।

• **आठ कलशों के जल से अभिषेक की विधि ॥**

आचार्य अग्नि वेदी के उत्तर आटे या चावल का ८ कोष्ठ बना दें। इन ८ कोष्ठों पर १-१ कुशा रख दें।

• इन कुशों पर ताम्र आदि के ८ कलश जल, आम्र पल्लव, सुपारी तथा द्रव्य सहित स्थापित करे ।

• बालक उत्तर या पूर्व की ओर मुख करके बैठ जाय। तथा दक्षिण से एक-एक कलश का जल लेकर अपना अभिसिंचन करे ।

•बालक ८ कलशों को क्रमशः स्पर्श करे।

• ॐ येऽप्स्वन्तरग्नयः प्रविष्टा गोह्य उपगोह्यो मयूषो मनोहाऽस्खलो । विरुजस्तनदूषिरिद्रियहा तान् विजहामि यो रोचनस्तमिह गृह्णामि ।।

•बालक कलश के जल से अपने सिर पर अभिषेक करे ।

• **प्रथम कलश**ॐ तेन मामभिषिंचामि श्रियै यशसे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय ।

• **द्वितीय कलश**ॐ येन श्रियम कृणुतां येनाव मृशता ७ सुराम् । येनाक्ष्यावभ्यषिंचतां यद्वां तदश्विना यशः ।।

• **तृतीय कलश**ॐ आपो हिष्ठा मयो भुवस्तान ऊर्जे दधातन । महे रणाय चक्षसे ।

• **चतुर्थ कलश**ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः । उशतीरिव मातरः ।

•**पंचम कलश**   ॐ तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथः । आपो जनयथा च नः ।

•**षष्ठ, सप्तम और अष्टम कलश** से मौन रहकर ही सिर पर अभिषेक करे ।

• **मेखला निस्सारण** ब्रह्मचारी सिर की तरफ से मुँज की जनेऊ उतार दें।

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं मध्यम ७ श्रथाय । अथा वयमादित्य व्रते तनावागसो अदितये स्याम् स्वाहा ।।

•**मृगचर्म परित्याग** मृगचर्म को भी चुपचाप सिर से उतार दें।

•**दण्ड परित्याग** दण्ड को चुपचाप पृथिवी पर रख दें।

•दो बार आचमन करें।

• **सूर्योपस्थान** दोनो बाहुओं को ऊपर उठाकर सूर्य का उपस्थान करे ।

• ॐ उद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात् प्रातर्याविभिरस्थाद् दशसनिरसि

दशसनिं मा कुर्वा विदन् मा गमय । उद्यन् भ्राजभूष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थाद् दिवा

यावभिरस्थाच्छतसनिरसि शतसनिं मा कुर्वा विदन् मा गमय । उद्यन्

भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात् सायं यावभिरस्थात् सहस्रसनिरसि सहस्त्रसनिं

मा कुर्वा विदन् मा गमय ।।

•बालक बैठ कर दही या तिल खाकर आचमन कर ले।

• शिखा के अतिरिक्त समस्त केश मुण्डन कराकर नखादि कटवा ले।

• ब्रह्मचारी जल से कुल्ला कर सुगन्धित तेल से युक्त उबटन से शरीरोद्वर्तन कर समशीतोष्ण जल से स्नान करे नूतन वस्त्र धारण कर चन्दन आदि का अनुलेपन कर निम्न मन्त्रों से नासिका, नेत्र और श्रोत्र का स्पर्श करे ।

•**नासिका आदि का स्पर्श** मध्यमा और अनामिका अँगुली से अंगो का स्पर्श करे।

ॐ प्राणापानौ मे तर्पय। दोनों नासिका का स्पर्श करे।

ॐ चक्षुर्म्मे तर्पय । दोनों नेत्रों का स्पर्श करे।

ॐ श्रोत्रं मे तर्पय । दोनों कानों का स्पर्श करे।

• **पितरों को श्रलांजलि** अपसव्य होकर पितरों के लिये दक्षिण दिशा में जल गिरा दें।

•ॐ पितरः शुन्धध्वम् ।

सव्य होकर आचमन करे। एवं चन्दन से तिलक लगायें।

•**सविता देवता की प्रार्थना** ॐ सुचक्षा अहमक्षीभ्यां भूयास गुं सुवर्चा मुखेन । सुश्रुत् कर्णाभ्यां भूयासम् ।

•**नुतन वस्त्र धारण** ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि । शतं च जीवामि शरदः पुरूची रायस्पोषमभि संव्ययिष्ये ।।

•**यज्ञोपवीत धारण** (खम्भे में) जनेऊ के समय जो १ जनेऊ बाँध रखा है, उसे बालक को पहना दें।

• **विनियोग** यज्ञोपवीत मित्यस्य परमेष्ठी ऋषिः त्रिष्टुप् छन्दो लिंगोक्ता देवता यज्ञोपवीत धारणे विनियोगः ।

•ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात् ।

आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ॥

• **उत्तरीय वस्त्र धारण** ॐ यशसा मा द्यावा पृथिवी यशसेन्द्रा बृहस्पती । यशो भगश्च मा विन्दद यशो मा प्रतिपद्यताम् ।।

•**अलंकरणादि धारण** ॐ यद्यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु ।

तेन सङ्ग्रथिताः सुमनस आबध्नामि यशो मयि ॥

• **पगडी धारण** ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ श्रेयान् भवति जायमानः ।

तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः ।।

• **कर्णालंकरण** धारण ॐ अलङ्करणमसि भूयोऽ लङ्करणं भूयात् । (कुण्डल आदि धारण करे)

• **अंजन धारण** ॐ वृत्रस्यासि कनीन कश्चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि । (बुआ काजल लगावें)

• **दर्पण में मुखावलोकन** ॐ रोचिष्णुरसि ।

• **छत्र धारण** ॐ बृहस्पतेश्छदिरसि पाप्मनो मामन्तर्धेहि । तेजसो यशसो माऽन्तर्धेहि ।।

• **उपानह (जूता) धारण** ॐ प्रतिष्ठे स्थो विश्वतो मा पातम् ।

• **दण्ड धारण** ॐ विश्वेभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्परि पाहि सर्वतः ।

• **गोदान (आचार्य)** ॐ अद्य अमुक गोत्रः अमुक शर्मा मम स्नातकत्वसिद्धये इदं वर रुपेण गोनिषक्रय द्रव्यमाचार्याय दातुमहमुत्सृज्ये ।

• **स्नातक के सामान्य नियम**

आचार्य गृहस्थ जीवन में पालनीय नियमों का स्नातक को उपदेश दें।

• नृत्यगीतवादित्राणि न कुर्यात् न च गच्छेत् । • क्षेमे नक्तं ग्रामान्तरं न गच्छेत् । • न धावेत् । • न कूपेऽवेक्षणम् । • न वृक्षारोहणम् । • न फल त्रोटनम् । • अमार्गेण न गच्छेत् । • नग्नो न स्नायात् । • न संधि शयनम् । • न विषम भूमि लंघनम् । • अश्लीलं नोपवदेत । • उदितास्त समये सूर्यं न पश्येत् । • जलमध्ये सूर्यम् आकाशस्थं न पश्येत् । • देवे वर्षति न गच्छेत् । • उदके आत्मानं न पश्येत् । • अजात लोम्नीं प्रमत्तां षंडां च न गच्छेत् ।	नृत्य-गीत आदि का त्याग करना और वहाँ न जाना। कुशल होते हुए रात में दूसरे गाँव को मत जाना । दौड़कर मत चलना । कुआँ मत झाँकना । पेड़ पर मत चढ़ना । कच्चे फल मत तोड़ना । सन्धि वेला में यात्रा न करे । नग्न होकर स्नान न करे। सायं और प्रातःकाल गोधूलि में मत सोना । ऊँची-नीची जमीन मत लाँघना । खराब बात (गाली) मत देना । सूर्य का उदय-अस्त मत देखना । जल में सूर्य की परछाहीं मत देखना । पानी बरसने में मत घूमना ।

	जल में अपनी परछाही मत देखना । रोम रहित उन्मत्त पुरुष की आकृति वाली स्त्रयों और नपुंसक का साथ न करना।

• **पूर्णाहुति** यज्ञोपवीत, विवाह आदि में पूर्णाहुति का निषेध किया गया है।

• विवाहे व्रतबन्धे च शालायां वास्तु कर्मणि । गर्भाधानादि संस्कारे पूर्णाहुतिं न कारयेत् ।।

• **दक्षिणा संकल्प**

अद्य शुभ पुण्य तिथौ कृतानाम् उपनयन, वेदारम्भ समावर्तन कर्मणां सिद्ध्यर्थम् इमां दक्षिणाम् आचार्याय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

• **ब्राह्मण भोजन संकल्प**

अद्य कृतानां उपनयन-वेदारम्भ-समावर्तन कर्मणां सांगता सिद्ध्यर्थं यथा संख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये । तेभ्यः ताम्बूल दक्षिणां च दास्ये ।

• **भूयसी दक्षिणा संकल्प**

अद्य उपनयन-वेदारम्भ-समावर्तन कर्मणां सांगता सिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्त दोष परिहारार्थम् इमां भूयसी दक्षिणां नानानाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमहमुत्सृजे ।

• **आशीर्वाद** आचार्य बालक को आशीर्वाद दें।

• लोकाचार में आचार्य के बाद परिवार के लोग अशीर्वाद देते है।

• ॐ मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धि नाशोऽस्तु मित्राणाम् उदयस्तव ॥

• **प्रार्थना**

ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् ।
स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णम् स्यादिति श्रुतिः ।
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु ।
न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ।।

• ॐ विष्णवे नमः । विष्णवे नमः । विष्णवे नमः ।

• एक दण्ड में पोटली बाँध कर (पीले कपड़े में चावल-फल आदि) बालक को दें, जिसे लेकर बालक काशी

के लिए प्रस्थान करे ।

• लोकाचार में बालक जब काशी के लिए चलता है तो बालक का मामा उसे मनाकर वापस ले आता है और नेग देता है।

॥ इति उपनयन संस्कार विधिः ॥

प्रश्न -

१ .वेदारम्भ संस्कार किसे कहते है।

२ .वेदारम्भ संस्कार का सविस्तार वर्णन कीजिए।

खण्ड 3 : इकाई 9 : विवाह-पद्धतिः

वर-वरण-विधानम् शुभे मुहूर्ते कन्याभ्राता (पिता वा) वरगृहे ब्राह्मणैः स्वजनैश्च सह गत्वा, मण्डपे प्रत्यङ्मुखमुपविश्य, वरं प्राङ्मुखमुपवेशयेत्। ततः कन्याभ्राता (कन्यापिता वा) वरश्चोभावपि आचमन- प्राणायामं कृत्वा, "ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यान्तरः शुचिः।।" इत्यात्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्षयेत्।

तत्पश्चात् हस्ते अक्षत-पुष्पाण्यादाय, 'आ नो भद्रादीन् ०' 'सुमुखश्चैकदन्तश्चे' - त्यादि - स्वस्तिवाचन-मन्त्रान् मङ्गलश्लोकांश्च पठेत्। तद्यथा-

स्वस्तिवाचनम् -

यतो यतः समीहसे ततो न अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽ भयं नः पशुभ्यः।। १२।। श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। उमामहेश्वराभ्यां नमः। वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः। मातापितृभ्यां नमः। इष्टदेवताभ्यो नमः। कुलदेवताभ्यो नमः। ग्रामदेवताभ्यो नमः। वास्तुदेवताभ्यो नमः। स्थानदेवताभ्यो नमः। सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्।। १।। वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्यसमप्रभ !। निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा।। २।। सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।। ३।। धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।। ४।। विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। सङ्ग्रामे सङ्कटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥ ५ ॥ शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये।। ६।। अभीप्सितार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः ॥ ७ ॥

सर्वमङ्गलमङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके!। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि!

नमोऽस्तु ते॥८ ॥ सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः ॥ ९ ॥ तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।

विद्यावलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते! तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि ॥ १० ॥ लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।॥ ११ ॥ यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम। ॥ १२॥ अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।। १ ३।। स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते। पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।। १४।। सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः ॥ १५॥

इति स्वस्तिवाचनम्।

सङ्कल्पः - तदनन्तरं कन्याभ्राता (पिता वा) दक्षिणहस्ते जलाऽ क्षत-पुष्प-पूगीफल- द्रव्याण्यादाय, ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया तदनन्तर कन्या का भाई या पिता दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प, सोपारी और द्रव्य लेकर 'ॐ प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीयपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराह कल्पेवैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपेभारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तेकदेश अमुकप्रान्ते (अविमुक्त वाराणसीक्षेत्रे आनन्दवनेमहाश्मशाने गौरीमुखे त्रिकण्ठकविराजिते भागीरथ्याः पश्चिमभागे) विक्रमशकेबौद्धावतारे ... नामसंवत्सरे श्रीसूर्ये.... अयने....ऋतौ महामाङ्गल्यप्रदमासोत्तमे ... मासे... पक्षे... तिथौ.... वासरे.... नक्षत्रे.... योगे.... करणे.... राशिस्थिते चन्द्रे .... राशिस्थिते श्रीसूर्ये राशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथायथा- राशि स्थानस्थितेषुसत्सु एवं ग्रह-गुणगण-विशेषण-विशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः.....शर्माऽ हम्... गोत्रायाः.... नाम्न्याः भगिन्याः (कन्याया वा) करिष्यमाण-विवाह-कर्मणि वरपूजनपूर्वकं वरवरणं च करिष्ये। पुनर्जलं गृहीत्वा, आदौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थगणेशाऽम्बिकयोः पूजनं तदङ्गत्वेन कलशस्थापनं पूजनं च करिष्ये।

विष्णुर्विष्णु०' से लेकर 'वरवरणं च करिष्ये' तक सङ्कल्प वाक्य पढ़कर वरवरण का संकल्प करे। पुनः जल लेक 'आदौनिर्विघ्नता सिद्धयर्थ' से 'पूजनं च करिष्ये' वाक्य उच्चारणकर गौरी-गणेश, कलशादि पूजन का संकल्प करें।

ततो वरः जलाऽ क्षत-पुष्पद्रव्याण्यादाय-देश-काल-सङ्कीर्तन-पूर्वकम् '.... गोत्रः अमुकशर्माऽहं भविष्योद्वाहकर्मणि वरवृत्ति-ग्रहणं करिष्ये। तत्राऽऽदौ निर्विघ्नता- सिद्ध्यर्थं गणेशाऽम्बिकयोः पूजनं तदङ्गत्वेन कलशस्थापनं पूजनं च करिष्ये।' पश्चात् कन्याभ्राता (पिता वा) वरश्च षोडशोपचारैर्गणपत्यादीन् सम्पूजयेत्। तद्यथा-

गणेशाऽम्बिकापूजनम्

हाथ में अक्षत पुष्प लेकर गणेशजी का ध्यान व आवाहन करे - हे हेरम्ब त्वमेहि ह्यम्बिकात्र्यम्बकात्मजः। सिद्धिबुद्धिपते त्र्यक्ष लक्षलाभपितुः पितः।। नागास्यं नागहारं त्वां गणराजं चतुर्भुजम्। भूषितं स्वायुधैर्दिव्यैः पाशाङ्कुशपरश्वधैः।। आवाहयामि पूजार्थं रक्षार्थं च मम क्रतोः। इहाऽऽगत्य गृहाण त्वं पूजां यागं च रक्ष मे।। ॐ गणानान्त्वा गणपतिर्ट. हवामहे प्रियाणान्त्वा प्प्रियपतिर्ट. हवामहे निधीनान्त्वा

तत्पश्चात् वर भी, दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प एवं द्रव्य को लेकर देश-काल-सङ्कीर्तनपूर्वक 'गणेशाम्बिकयोः पूजनं च करिष्ये' तक पढ़कर अपने नाम-गोत्र का उच्चारण कर, क्रमशः वरवृत्तिग्रहण और गौरी-गणेश पूजन, कलशस्थापन-पूजन का संकल्प करें। पुनः कन्या का भाई (या पिता) और वर षोडशोपचार से गौरी-गणेशादि देवों का सविधि पूजन करें।

निधिपतिर्ट. हवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धि-बुद्धि-सहिताय गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि स्थापयामि। अक्षत-पुष्प लेकर श्रीगौरीजी का ध्यान व

आवाहन करे -

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम्। लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्।। ॐ अम्बे ऽअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन। ससस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकाङ्काम्पीलवासिनीम्।।

चन्दन श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठ ! चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ त्वाङ्गन्धर्वा ऽअखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्प्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मादमुच्च्यत। गणेशाम्बिकाभ्यां गन्धं (चन्दनं) समर्पयामि। अक्षत-अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर!।।

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया ऽअधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्प्रा नविष्ठ्या मती योजान्विन्द्र ते हरी।। गणेशाम्बिाकाभ्याम् अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्प-माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाऽऽहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ ओषधीः प्रतिमोद्द्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वा ऽइव सजित्त्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।। गणेशाम्बिकाभ्यां पुष्पमालां समर्पयामि। दुर्वा दुर्वाङ्कुरान् सुहरितानमृतान् मङ्गलप्रदान्। अनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक!।।

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्प्रतनु सहस्रेण शतेन च।। गणेशाम्बिकाभ्यां दुर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। सिन्दूर-सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ सिन्धोरिव प्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्प्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा ऽअरुषो न व्वाजी काष्ठा भिन्दन्नर्म्मिभिः पिन्वमानः।। सिन्दूरं समर्पयामि। अबीर बुक्का-नानापरिमलैर्द्रव्यैर्निर्मितं चूर्णमुत्तमम्। अबीरनामकं चूर्णं गन्धं चारु प्रगृह्यताम्।।

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्यायां हेतिं प्परिबाधमानः। हस्तग्घ्नोव्विश्श्वा

व्वयुनानि विद्वान्पुमान्पुमार्ट. सं प्परिपातु व्विश्वतः।। नानापरिमल-द्रव्याणि समर्पयामि।

धूप-वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ धूरसि धूरसि धूर्ख धूर्वन्तं धूर्व तं योऽ स्स्मान् धूर्व्वति तं धूर्व्वयं व्वयं धूर्वामः।

कलशस्थापनं पूजनं च

'ॐ पूर्णा दर्वि परापत०' से 'शतक्रतो' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर कलश पर पूर्णपात्र रखें। 'ॐ याः फलिनीर्या०' से 'मुञ्चन्त्वर्ट. हसः' तक मन्त्र पढ़ कर पूर्णपात्र के ऊपर सोपारी या नारियल स्थापित करें। इसके बाद हाथ में अक्षत लेकर नारियल के ऊपर 'ॐ तत्त्वा यामि०' से 'सशक्तिकमावाहयामि स्थापयामि' कहकर कलश पर वरुणदेव का आवाहन करते हुए अक्षत छोड़े।

ततः कलशाऽभिमन्त्रणम् -

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥ १ ॥ कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥ २ ॥ अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्ति पुष्टिकरी तथा। आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षयकारकाः।। ३।। *

इति पठित्वा, कलशेऽक्षतान् क्षिपेत्। तथा- 'ॐ अपांपतये वरुणाय नमः' इत्युक्त्वा, पञ्चोपचारेण षोडशोपचारेण वा वरुणं सम्पूजयेत्।

कलश-प्रार्थना-

देव-दानव-संवादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।। १।। त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः। त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः ॥ २ ॥

पुनः अक्षत लेकर 'ॐ मनो जूति०' से 'सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु' तक पढ़कर कलश में वरुण की प्रतिष्ठा करे। इसी प्रकार 'कलशस्य मुखे विष्णुः ०' से 'ॐ अपांपतये वरुणाय नमः' तक पढ़कर पञ्चोपचार या षोडशोपचार से वरुण का पूजन करे।

शिवः स्वयं त्वमेवाऽपि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः। आदित्या वसवो रुद्रा

विश्वेदेवाः स-पैतृकाः ॥ ३।। त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः। त्वत्प्रसादादिमं यज्ञं कर्तुमीहे जलोद्भव!। सान्निध्यं कुरु मे देव! प्रसन्नो भव सर्वदा ॥४॥ नमो नमस्ते स्फटिकप्रभाय, सुश्वेतहाराय सुमङ्गलाय।

सुपाशहस्ताय झषासनाय, जलाधिनाथाय नमो नमस्ते ॥ ५ ॥ इति श्लोकान् पठित्वा, कलशप्रार्थनां कुर्यात्। 'अनया पूजया वरुणाद्यावाहित-देवताः प्रीयन्तां न मम।'

इति कलस्थापनं पूजनं च।

वरपूजनम्

ततः कन्याभ्राता (पिता वा) 'ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः।।' इति मन्त्रेण वरस्य पादप्रक्षालनं कुर्यात्।

इसके बाद 'देव-दानव-संवादे' से लेकर 'नमो नमस्ते' तक पढ़कर कलश की प्रार्थना करे। हाथ में जल लेकर

'अनया पूजया वरुणाद्यावाहितदेवता प्रीयन्तां न मम।' कह कर छोड़ दे। इस प्रकार कलश स्थापन-पूजन समाप्त।

तदन्तर कन्या का भाई (या पिता) 'ॐ विराजो दोहोऽसि०' इस मन्त्र से वर के दोनों पैरों को धोवे।

'कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षस्थले कौस्तुभम्। नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्।। सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली। गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः।। 'ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः रोचन्ते रोचना दिवि। युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे। शोणा धृष्णू नृवाहसा।।' इति मन्त्रेण तिलकं कुर्यात्। 'ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।' इत्यनेन मन्त्रेणाऽक्षतान्। तथा- 'ॐ या आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै कामायेन्द्रियाय। सा अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च।।' इत्यनेन पुष्पमालां सङ्गृह्य, 'ॐ यद्यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु। तेन सङ्ग्रथिताः सुमनस आबध्नामि यशो मयि।।' इत्यनेन

पुष्पमालां वरस्य गले परिधापयेत्। तदनन्तरं कन्याभ्राता (पिता वा) स्वहस्ते वरणद्रव्यमादाय,'देशकालौ सङ्कीर्त्य,

'कस्तूरी तिलकं' एवं 'युञ्जन्ति०' मन्त्र पढ़ते हुए से वर के ललाट पर रोली या चन्दन लगावे। 'ॐ अक्षन्नमीमदन्त०' मन्त्र से चन्दन के ऊपर अक्षत लगावे और 'ॐ या आहरज्जमदग्निः ०' इस मन्त्र से हाथ में माला लेकर 'ॐ यद्यशोऽप्सरसामिन्द्र०' इस मन्त्र से वर के गले में माला पहनावे।

अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् अमुक गोत्रायाः अमुकनाम्न्या भगिन्याः (कन्याया वा) करिष्यमाणविवाहकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैर्गन्धा - ऽक्षत-पुष्प-ताम्बूल- नारिकेलहरिद्रा-दूर्वा-माङ्गलिकसूत्र- द्रव्य - भाजन-वासोभिरमुकगोत्रममुकशर्माण वरं कन्याप्रतिगृहीतृत्वेन त्वामहं वृणे।' वरः-'वृतोऽस्मि' इत्युक्त्वा, 'द्यौस्त्वा ददातु पृथ्वी त्वा प्रतिगृह्णातु।' इत्यनेन वरणद्रव्यं गृहीत्वा 'ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षया- ऽऽप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।।' इति मन्त्रं पठेत्। तदनन्तरं कन्याभ्राता (पिता वा) वरश्च भूयसीदक्षिणासङ्कल्पं कुर्यात्। तद्यथा- हस्ते जलं गृहीत्वा, 'कृतस्य वरवृत्तिकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोष-परिहारार्थममुकाऽ मुकगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य यथोत्साहं भूयसीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।' इति कन्याभ्राता पिता वा। वरस्तु-'कृतस्य वरवृत्तिग्रहणकर्मणः

वर-पूजन के बाद कन्या का भाई या पिता अपने हाथ में वर-वरण की सामग्री लेकर 'देशकालौ संकीर्त्य०' से 'त्वामहं वृणे' पर्यन्त संकल्प-वाक्य पढ़कर वर के हाथ में दे दें। वर भी 'वृतोऽस्मि' या 'द्यौस्त्वा ददातु०' कहकर वरण-सामग्री को ग्रहण करे। पुनः 'व्रतेन दीक्षामाप्नोति०' इस मन्त्र को पढ़े। तदनन्तर कन्या का भाई (या पिता) और वर हाथ में जल लेकर 'कृतस्य वरवृत्तिकर्मणः ०' से 'दातुमहमुत्सृजे' तक पढ़कर भूयसी दक्षिणा का संकल्प करें।

साङ्गतासिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोष- परिहारार्थममुकाऽ

मुकगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथोत्साहं भूयसीदक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।' ततो वरः पुनर्हस्ते जलमादाय, कृतस्य वरवृत्तिग्रहणकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं यथासङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये। ततः कन्याभ्राता (पिता वा) वरश्च हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा, यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्। इष्टकाम-समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।' इत्यनेन गणपत्यादि- स्थापित - देवानां विसर्जनं कुर्यात्। तत्पश्चात्-

'प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्-विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः।॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञ-क्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्।। इति पठित्वा, नमस्कारं कुर्यात्। इति वर-वरण-विधानं समाप्तम्। वर अपने वाक्य में 'कृतस्य वरवृत्तिग्रहणकर्मण:' से 'दातुमहमुत्सृजे' तक पढ़े। पुनः वर हाथ में जल लेकर 'कृतस्य वरवृत्तिग्रहणकर्मणः' से 'ब्राह्मणान् भोजयिष्ये' तक पढ़कर ब्राह्मण-भोजन का संकल्प करे। इसके बाद कन्या का भाई (या पिता) और वर हाथ में अक्षत लेकर 'यान्तु देवगणाः सर्वे' से 'पुनरागमनाय च' तक पढ़कर गणपत्यादि स्थापित देवताओं का विसर्जन एवं 'प्रमादात्कुर्वतां कर्म०' से 'सद्यो वन्दे तमच्युतम्' तक श्लोक पढ़कर गणपत्यादि देवताओं, आचार्य, माता-पिता एवं समस्त बड़ों को प्रणाम करे। इस प्रकार वर-वरण विधान समाप्त।

सविधि-मण्डपस्थापनं पूजनं च आग्नेयादि चतुर्षु मण्डपकोणेषु क्रमेण चतुः स्तम्भा मारोप्याऽ धोलिखित - विधानेन मध्ये च एकं सुदीर्घ सुपुष्टं स्तम्भमारोपयेत्। 'ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।। १।।' इत्यनेनाऽभ्रिमादत्ते। 'ॐ इदमहर्ट. रक्षसां ग्रीवा अपि कृन्तामि ॥२॥' इत्यनेनाऽवटोपरि लिखति।'ॐ मा वो रिषत्खनिता यस्मै चाऽहं खनामि वः। द्विपाच्चतुष्पादस्माकर्ट. सर्वमस्त्वनातुरम्।। ३।।' इत्यनेनाऽवटं खनति।' ॐ सिञ्चन्ति परिषिञ्चन्त्युत्सिञ्चन्ति पुनन्ति च। सुरायै भ्रवै मदे किन्त्वो वदति किन्त्वः ॥४॥' इति मन्त्रेण तस्मिन्नवटे जलमासिञ्चति।

अग्नि कोण से आरम्भ कर क्रम से चारों कोण में निम्नलिखित विधि से चार हरित (हरे) बाँस के खम्भों को गाड़कर सबके बीच में एक सुडौल स्तम्भ एवं हरिस आदि देशाचार तथा कुलाचार के अनुसार गाड़े। 'देवस्य त्वा०' इस मन्त्र से खन्ती या खुरपी को लेकर 'इदमहर्ट.' इस मन्त्र से गड्डा के ऊपर रेखा करे। 'ॐ मा वो रिषत्खनिता०' इस मन्त्र से गड्डा खोदें। 'ॐ सिञ्चन्ति०' इस मन्त्र से गड्ढे में जल छिड़के।

'ॐ यवोऽसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीः ॥ ५ ॥' इत्यनेन यववपनं करोति।

'ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण

शतेन च।। ६॥' इत्यनेन तस्मिन्नवटे तूष्णीं दूर्वाङ्कुरानावपति। 'ॐ दधिक्राब्णो

अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयूर्ट. षि तारिषत्।। ७।।'

इति मन्त्रेणाऽवटे दधि क्षिपेत्। 'ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वर्ट. हसः ॥८॥' इत्यनेन पूगीफलं क्षिपेत्।

'ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्। स दाधार पृथिवीं

द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ९॥' इत्यनेनाऽवटे द्रव्यं क्षिपेत्। 'ॐ उच्छ्यस्त वनस्पत ऊर्ध्वा मा पाह्यर्ट. हस आस्य यज्ञस्योद्दचः ॥ १० ॥' इत्यनेन हस्ताभ्यां स्तम्भमुत्थापयेत्। 'ॐ ऊर्ध्व ऊषुणऽऊतये तिष्ठां देवो न सविता।

इसी प्रकार 'ॐ यवोऽसि यवया०' इस मन्त्र से गड्ढे में जव एवं 'ॐ काण्डात् काण्डात्०' इस मन्त्र से चुपचाप दूब, 'ॐ दधि क्राब्णो०' इस मन्त्र से दधि एवं 'ॐ याः फलिनी ०' इस मन्त्र से गड्ढे में सोपारी छोड़े। 'ॐ

हिरण्यगर्भः' इस मन्त्र से गड्ढे में द्रव्य छोड़कर 'ॐ उच्छ्रयस्व वनस्पत०' इस मन्त्र से गाड़ने के लिए वाजस्य सनिता यदश्विभिर्वाघद्भिर्वि ह्वयामहे।। ११।।' इत्यनेनाऽवटे स्तम्भमारोपयेत्। 'ॐ स्थिरो भव वीड्वङ्ग आशुर्भव वाज्यर्वन् पृथुर्भव सुषदस्त्वमग्नेः पुरीषवाहणः ॥१२॥' इत्यनेनाऽवटे स्तम्भं कुर्यात्।

ततस्तस्मिन् स्तम्भे आग्नेयादि-क्रमेण '१. ॐ नन्दिन्यै नमः' नन्दिनीमावाहयामि। '२. ॐ नलिन्यै नमः' नलिनीमावाहयामि। '३. ॐ मैत्रायै नमः' मैत्रामावाहयामि। '४. ॐ उमायै नमः' उमामावाहयामि। '५. ॐ पशुवर्द्धिन्यै नमः' पशुवर्द्धिनी- मावाहयामि। इत्यादि-मण्डपमातरः।'ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञर्ट. समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो प्रतिष्ठ।।' इति मन्त्रेणाऽऽ वाहन-पुरस्सरमेकतन्त्रेण षोडशोपचारैर्पश्चोपचारैश्च सम्पूजयेत्।

बाँस को दोनों हाथों से उठावें और 'ॐ ऊर्ध्व ऊ षु ण०' इस मन्त्र से गाड़ दे। 'ॐ स्थिरो भव०' इस मन्त्र को पढ़कर स्थिर कर दे। इसके बाद उन स्तम्भों में अग्नि कोण से आरम्भ कर 'ॐ नन्दिन्यै नमः' से 'पशुवर्द्धिनीमावाहयामि' तक पढ़कर अक्षत छोड़े। पुनः 'ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य०' इस से नन्दिन्यादि पाँच मात्रिकाओं का आवाहन एवं प्रतिष्ठा कर एकतन्त्र से षोडशोपचार या पञ्चोपचार से पूजन करें।

अन्ते च हस्ते जलं गृहीत्वा, 'अनया पूजया नन्दिन्यादि-मण्डपमातरः प्रीयन्तामि' - त्युक्त्वा, तज्जलं भूमौ क्षिपेत्। पुनर्जलं गृहीत्वा 'कृतैतत् मण्डपपूजनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं दश- सङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये' इत्युच्चार्य जलं क्षिपेत्। तत्पश्चात्- 'प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्-विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः।। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञ-क्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्'।। इत्युक्त्वा मण्डपमातरं प्रार्थयेत्।

इति मण्डपस्थापनं पूजनं च समाप्तम्।

पूजन करने के बाद हाथ में जल लेकर 'अनया पूजया०' से 'प्रीयन्ताम्'

पर्यन्त वाक्य को पढ़कर भूमि पर जल छिड़क दे। पुनः हाथ में जल लेकर 'कृतैतन्मण्डपपूजनकर्मण:' से 'ब्राह्मणान् भोजयिष्ये' तक पढ़कर दश ब्राह्मण भोजन का संकल्प करे।

तत्पश्चात् 'प्रमादात् कुर्वतां कर्म०' तथा 'यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या ०' मन्त्र से हाथ जोड़कर मण्डप-मातृकाओं की प्रार्थना करे।

इस प्रकार मण्डप-स्थापन तथा पूजन विधि समाप्त।

हरिद्रालेपनम्

वरः स्वगृहे पूर्वाभिमुखः स्वासनमुपविश्य, आचमन-प्राणायामं कृत्वा, 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।' इत्यनेन आत्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य, हस्तेऽक्षत-पुष्पाण्यादाय, 'आ नो भद्रादीन् ० ' - 'सुमुखश्चैकदन्तश्च०' इत्यादि पठित्वा, पुनर्हस्ते जलं गृहीत्वा, देशकाल-सङ्कीर्तन-पुरस्सरममुक-गोत्रोऽ मुकशर्माऽहं मम विवाहाङ्ग भूतं हरिद्रालेपनं करिष्ये' इति सङ्कल्पयेत्।

अनेन प्रकारेणैव कन्याऽपि स्वगृहे, 'देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रा, अमुकनाम्नी कन्याऽहं स्वीकीय-विवाहाङ्गभूतं हरिद्रालेपनं करिष्ये।' इति सङ्कल्पं कुर्यात्।

इसके बाद वर अपने घर पर मण्डप में आसन पर पूर्वाभिमुख बैठकर आचमन और प्राणायाम करके 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा०' इससे अपने ऊपर एवं पूजा-सामग्री के ऊपर जल छिड़के और हाथ में अक्षत, पुष्प लेकर 'आ नो भद्रा०' इत्यादि मन्त्रों एवं 'सुमुखश्चैकदन्तश्चे' -ति मङ्गल श्लोकों (पृष्ठ ७ से १०) को पढ़े। पुनः हाथ में अक्षत लेकर 'देशकाल-सङ्कीर्तन०' (पृष्ठ १०-११) से 'हरिद्रालेपनं करिष्ये' पर्यन्त पढ़कर हरिद्रा लेपन का संकल्प करे।

हरिद्रालेपनम्

तत्पश्चात् वरः, कन्या च स्व-स्वगृहे हस्ते जलं गृहीत्वा, 'तदङ्गत्वेन कलशस्थापनं पूजनं च करिष्ये।' पुनर्जलं गृहीत्वा, 'निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाऽम्बिकयोः पूजनमहं करिष्ये।' इत्येवं सङ्कल्प्य गणेशादीन्

पूर्वोक्तप्रकारेण पूजयित्वा, निर्दिष्टक्रमानुसरेण हरिद्रालेपनं कुर्यात्।

'ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च।।' इति मन्त्रेण हरिद्रालेपनं कुर्यात्। 'ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि।। युञ्जन्त्यस्य

इसी प्रकार कन्या भी अपने घर पर मण्डप में बैठकर आचमन, एवं शरीर प्रोक्षण कर, हाथ में जल, अक्षत लेकर 'देशकालौ सङ्कीर्त्य' से 'हरिद्रालेपनं करिष्ये' तक पढ़कर संकल्प करे।

इसके बाद वर और कन्या अपने-अपने घर पर मण्डप में बैठकर हाथ में जल, अक्षत लेकर 'तदङ्गत्वेन' से कलश-स्थापन, पूजन एवं पुनः हाथ में जल लेकर 'निर्विघ्नता-सिद्ध्यर्थम्' 'करिष्ये' इस वाक्य को पढ़कर गणेशादि देवों का पूजन (पृष्ठ १२ से २८ के अनुसार) करके नीचे लिखे अनुसार हरिद्रालेपन करें। कसोरा (या परई) में रखे कड़वा तेल मिश्रित हरिद्रा को दूर्वा से उठाकर 'ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ति ०' मन्त्र से गणेशादि देवताओं से स्पर्श कराकर लेपन करे।

काम्या हरी विपक्षसा रथे। शोणा धृष्णू नृवाहसा।।' इति मस्तके कुङ्कुमानुलेपनम्। 'ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विना नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।' इत्यनेन अक्षतान् 'ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यर्ट. शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्टिर्यथासम्।।'

'ॐ युञ्जन्ति०' इस मन्त्र से ललाट में रोरी लगावे। 'ॐ अक्षन्नमीमदन्त०' इस मन्त्र द्वारा अक्षत लगावें और 'ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा०' इससे अपने-अपने देशाचार के अनुसार कङ्कण अथवा मौली वर के दक्षिण हाथ में और कन्या के वाम हाथ में बाँधे।

हरिद्रालेपनम्

दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।' पुनर्जलं गृहीत्वा, कृतैतद्-हरिद्रालेपनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थ दशसङ्ख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये' इति सङ्कल्पं कृत्वा, 'प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्-विष्णोः सम्पूर्ण

स्यादिति श्रुतिः ॥ १॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञ-क्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्।। २।। इति पठित्वा, प्रणमेत्।

इति हरिद्रालेपनं समाप्तम्।

पढ़कर आचार्य की दक्षिणा का संकल्प करे। पुनः हाथ में जल लेकर 'हरिद्रालेपने कर्मणि०' इस संकल्प-

वाक्य को पढ़कर भूयसी दक्षिणा का तथा पुनः हाथ में जल लेकर 'कृतैतद्-हरिद्रालेपनकर्मण:' से 'ब्राह्मणान्

भोजयिष्ये' तक उच्चारण करके दस ब्राह्मण-भोजन का संकल्प करे। तथा 'प्रमादात् कुर्वतां कर्म०' से 'सद्यो

वन्दे तमच्युतम्' तक पढ़कर प्रणाम करे।

इस प्रकार हरिद्रालेपन समाप्त।

मातृकापूजनम् (पञ्चाङ्गम्)

वरपिता एवं कन्यापिता च निज-निजगृहे, प्राङ्मुखमुपविश्य, आचम्य, प्राणानायम्य, 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा०' इत्यात्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य, हस्ते गन्धा-ऽक्षत-पुष्पाण्यादाय, 'आ नो भद्रा-दीन् सुमुखश्चैकदन्तश्चे' - त्यादि पठित्वा, सङ्कल्पं कुर्यात्। 'देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माहं सपत्नीकोऽ हं स्वकीय-पुत्रस्य विवाहाङ्गभूतं (अथवा स्वकीय-कन्यायाः विवाहाङ्ग भूतं) स्वस्तिपुण्याहवाचनं, मातृकापूजनं, वसोर्ध्वारापूजनम्, आयुष्यमन्त्रजपं साङ्कल्पिकविधिना नान्दीश्राद्धम् आचार्यादिवरणं च करिष्ये।'

मातृका-पूजन (पञ्चाङ्गपूजन) -वर और कन्या के पिता अपने-अपने घर में पूर्व मुख बैठकर आचमन एवं प्राणायाम कर 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा०' इस मन्त्र से अपने शरीर और पूजन-सामग्री की शुद्धि करके हाथ में गन्ध, अक्षत एवं पुष्प लेकर 'आ नो भद्रा०' इत्यादि स्वस्तिवाचन मन्त्रों तथा 'सुमुखश्चैकदन्तश्च०' इत्यादि मङ्गल- श्लोकों (पृष्ठ ७ से १०) को पढ़े। पश्चात् जल, अक्षत और द्रव्य लेकर 'देशकालौ सङ्कीर्त्य० (पृष्ठ १०-११)' से

'आचार्यादिवरणं च करिष्ये' तक संकल्प-वाक्य पढ़ कर मातृका पूजन आदि का संकल्प करे।

प्रश्न -

१ .विवाह पद्धति क्या है।

२ .विवाह पद्धति का सविस्तार वर्णन कीजिए।

इकाई १० : पित्रादीनामावाहनम्

पुनर्हस्ते जलं गृहीत्वा, 'निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणेशाऽम्बिकयोः पूजनमहं करिष्ये।' ततो - ग्रहशान्त्यनुसारेण गणेशपूजनादारभ्य पुण्याहवाचनान्तं कर्म कुर्यात्।

मातृभाण्ड - स्थापनं पूजनं च एकस्मिन्- नवीन- चुहिलकोपरि चतुर्षु छिद्रेषु चतुर्भाण्डस्थापनं कृत्वा, तानि

भाण्डानि तण्डुल-गुडपूर्णानि कुर्यात्।

इति मातृभाण्डस्थापनम्।

पित्रादीनामावाहनम्

ततः सम्पुटित-मृण्मयपात्रमध्ये प्रतिमास्वक्षतपुचेषु पूगीफलेषु वा स्व-पित्रादीनावाह्य, अपरसम्पुटित-मृण्मयपात्रमध्ये पूर्वरीत्या वाय्वादि-देवानावाह्य, तच्छिद्रान् माषान्नपिष्टेन पूरयित्वा, सिन्दूरालेपनेन सुसज्जितं कृत्वा, तत्पात्रं हस्ते सङ्गृह्य, गुप्तागारद्वारे गच्छेत्। इति मातृभाण्डास्थापनं पूजनं च।

द्वारमातृकापूजनम्

गुप्तागारद्वार-पार्श्वयोः द्वार-दक्षिणदेशे 'जयन्त्यादि' - तिस्रो देवीः कुङ्कुमादिना

विरचय्य, एवं द्वारवामदेशे 'आनन्दवर्द्धिन्यादि' - द्विदेवी विलिख्य, ततो द्वारदक्षिणदेशे - १. 'ॐ जयन्त्यै नमः, जयन्तीमावाहयामि।' २.'ॐ मङ्गलायै नमः, मङ्गलामावाहयामि।' ३.'ॐ पिङ्गलायै नमः, पिङ्गलामावाहयामि।' आसां देवीनामावाहनपूर्वकं पञ्चोपचारेण पूजनं कृत्वा, तथैव द्वार-वामभागे- १. रखकर, अपने पितरों का आवाहन करे, किसी दूसरे कसोरे से ढँक कर, उड़द की पिट्ठी ले उससे छिद्रों को मूँद कर रख दे। उसी प्रकार सम्पुटित दूसरे कसोरे में भी पूर्वोक्त रीति से वायु आदि देवताओं का आवाहन करके कसौरे से ढँककर, उसके छिद्रों को उड़द की पिट्ठी से

मूँद कर रख दे। ऐपन एवं सिंदूर द्वारा लेप कर अच्छी तरह उसे सुशोभित कर उस पात्र को हाथ में लेकर कोहबर में जायें। द्वारमातृकाओं का पूजन-कोहबर के दरवाजे के दक्षिण भाग में जयन्ती आदि तीन देवियों को कुंकुम आदि से बनावे और द्वार के वाम भाग में आनन्दवर्धिनी आदि दो देवियों को बनावे।

षोडशमातृकापूजनम्

'ॐ आनन्दवर्द्धिन्यै नमः, आनन्दवर्द्धिनीमावाहयामि।' २.'ॐ महाकाल्यै नमः, महाकालीमावाहयामी' ति आवाहन - पुरस्सरं सम्पूज्येत्। इति द्वारमातृकापूजनम्।

षोडशमातृकापूजनम्

गुप्तागारे भित्तौ सप्तदशगोमयपिण्डेषु गणपतिपूर्वकगौर्यादि - षोडशमातृणा- मावाहनपूर्वकं षोडशोपचारैः पूजनं कुर्यात्। तद्यथा-१. ॐ गणपतये नमः, गणपतिमावाहयामि, २. ॐ गौर्य्यै नमः, गौरीमावाहयामि, ३. ॐ पद्मायै नमः, पद्मामावाहयामि, ४. ॐ शच्यै नमः, शचीमावाहयामि, ५. ॐ मेधायै नमः, मेधामावाहयामि, ६. ॐ सावित्र्यै नमः, सावित्रीमावाहयामि, ७. ॐ विजयायै नमः, विजयामावाहयामि, ८. ॐ जयायै नमः, जयामावाहयामि, ९. ॐ देवसेनायै नमः, देवसेनामावाहयामि, १०. ॐ स्वधायै नमः, स्वधामावाहयामि, जयन्त्यै नमः' से लेकर 'पिङ्गलामावाहयामि' तक पढ़कर इन देवियों का पञ्चोपचार से पूजन करे। द्वार के वाम भाग में भी 'ॐ आनन्दवर्द्धिन्यै नमः' से 'महाकालीमावाहयामि' तक पढ़कर आवाहन पूर्वक पूजन करे। षोडशमातृका पूजन-इसके बाद कोहबर में जाकर दीवाल पर दक्षिण से आरम्भ कर उत्तर तक सत्रह पिड़िया बनाकर उनमें ॐ गणपतये नमः' से 'ॐ आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि' तक पढ़कर गणेश-सहित षोडश ११. ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि, १२. ॐ मातृभ्यो नमः, मातृः आवाहयामि, १३. ॐ लोकमातृभ्यो नमः, लोकमातृः आवाहयामि, १४. ॐ धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि, १५. ॐ पुष्ट्यै नमः, पुष्टिमावाहयामि, १६. ॐ तुष्ट्यै नमः, तुष्टिमावाहयामि, १७. ॐ आत्मनः

कुलदेवतायै नमः, आत्मनः कुलदेवतामावाहयामि।

आसां मातृणां षोडशोपचारैः पूजनं कृत्वा, प्रार्थयेत्। गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः।। धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिः आत्मनः कुलदेवताः। गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्यास्तु षोडश।। हस्ते पुनर्जलं गृहीत्वा, 'अनया पूजया षोडशमातरः प्रीयन्ताम्' इत्युच्चार्य, भूमौ जलं क्षिपेत्।

मातृकाओं के आवाहन सहित विधिपूर्वक षोडशोपचार द्वारा पूजन करे। तथा गौरी-पद्मा-शची-मेधा' से लेकर 'पूज्यास्तु षोडश' तक श्लोकों को पढ़कर उन देवियों की प्रार्थना करे।

पुनः हाथ में जल लेकर 'अनया पूजया षोडशमातरः प्रीयन्ताम्' उच्चारणकर भूमि पर जल छोड़ दे।

श्रियादि-सप्तघृत-मातृका - पूजनम्

षोडशमातृणामुत्तरस्यां दिशि भित्तौ कुङ्कुमेन गोलात्मकं सप्तबिन्दु-करणनन्तरमधस्थ - सप्तबिन्दुषु प्रतिबिन्दौ 'ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा" इति मन्त्रेण घृतेन दक्षिणत आरभ्य उदगन्ताः सप्तधाराः कृत्वा 'ॐ कामधुक्षः' इत्येतावता मन्त्रेण गुडेन सप्तधारायाः एकीकरणं कुर्यात्।

प्रतिधारामेकैक-देवतामावाहयेत्। १. ॐ श्रियै नमः, श्रियमावाहयामि, २. ॐ लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि, ३. ॐ धृत्यै नमः, धृतिमावाहयामि, ४. ॐ मेधायै नमः, मेधामावाहयामि, ५. ॐ स्वाहायै नमः, स्वाहामावाहयामि, श्रियादि सप्तघृतमातृका पूजन षोडश मातृकाओं के उत्तर तरफ दीवाल पर रोरी या सिन्दूर से अलग-अलग सात गोलाकार बिन्दु बनावे। प्रत्येक बिन्दुओं पर 'ॐ वसोः पवित्रमसि०' इस मन्त्र से दक्षिण से लेकर उत्तर तक सात बार घृत की धारा दे। 'ॐ कामधुक्षः' इस मन्त्र से उन सातों बिन्दुओं को गुड़ द्वारा एक में मिला दे। पुनः प्रत्येक धारा में 'ॐ श्रियै नमः, श्रियमावाहयामि' से लेकर 'सरस्वतीमावाहयामि' पर्यन्त सात मन्त्रों को ६.

ॐ प्रज्ञायै नमः, प्रज्ञामावाहयामि, ७. ॐ सरस्वत्यै नमः, सरस्वतीमावाहयामि। इत्यावाह्य, ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनो त्वरिष्टं यज्ञर्ट. समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामो प्रतिष्ठ।। इत्यनेन प्रतिष्ठाप्य, षोडशोपचारेण च सम्पूज्य, 'यदङ्गत्वेन भो देव्यः ! पूजिता विधिमार्गतः। कुर्वन्तु कार्यमखिलं निर्विघ्नेन क्रतूवम्।।' इति पठित्वा, प्रार्थयेत्।

हस्ते पुनर्जलं गृहीत्वा, 'अनया पूजया श्रियादि-सप्तघृतमातरः प्रीयन्ताम्' इत्युच्चार्य, भूमौ जलं क्षिपेत्।

इति श्रियादि-सप्तघृतमातृका-पूजनम्।

पढ़कर श्रियादि सप्तघृतमाताओं का आवाहन कर 'ॐ मनो जूतिर्जुषतामज्यस्य०' इस मन्त्र से प्रतिष्ठा और षोडशोपचार से पूजन करे तथा 'यदङ्गत्वेन भो देव्यः' से 'निर्विघ्नेन क्रतूद्भवम्' श्लोक पढ़कर सप्तघृत मातृकाओं की प्रार्थना करे।

पुनः हाथ में जल लेकर 'अनया पूजया श्रियादि-सप्तघृतमातरः प्रीयन्ताम्' कहकर जमीन पर जल छोड़ दे।

आयुष्यमन्त्रजपः

ततः - 'ॐ आयुष्यं वर्चस्ये' त्यारभ्य, 'जरदष्टिर्यथासमि'ति पर्यन्तानि मन्त्राणि ब्राह्मणाः पठेयुः। तद्यथा- 'ॐ आयुष्यं वर्चस्यर्ट. रायस्पोषमौद्भिदम्। इदर्ट. हिरण्यं वर्चस्व जैत्रायाविशतादुमाम्।। १।। ॐ न तद्रक्षार्ट. सि न पिशाचास्तरन्ति देवानामोजः प्रसवर्ट. ह्येतत्। यो बिभर्ति दाक्षायणर्ट. हिरण्यर्ट. स देवेषु कृणुते दीर्घमायुः स मनुष्येषु कृणुते दीर्घमायुः ॥ २॥ ॐ यदाबध्नन् दाक्षायणा हिरण्यर्ट. शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म आबध्नामि शतशारदायायुष्मान् जरदष्टि- र्यथासम्।। ३।।

इत्यायुष्यमन्त्रजपः।

आयुष्य मन्त्र का जप- उसके बाद 'ॐ आयुष्यं वर्चस्यठ' से 'जरदष्टिर्यथासम्' तक आयुष्य मन्त्रों को ब्राह्मण-पढ़ें।---

साङ्कल्पिक-नान्दीश्राद्धप्रयोगः

एकस्मिन् पलाशपत्रावलिमध्ये चतुर्षु स्थानेषु प्रदक्षिणक्रमेण ऋजून् कुशानास्तीर्य तदुपरि सङ्कल्पपूर्वकं सव्येन स-विधि-पूजनं कुर्यात्। तद्यथा- 'ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः भूर्भुवः स्वः इदं वः

पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।' इत्युच्चार्य, दक्षिणकरस्थ-जलमङ्गुष्ठ- द्वारा पत्रावलिस्थ-कुशोपरि क्षिपेत्। एवं मातृ-पितामहि-प्रपितामह्यः नान्दीमुख्यः भूर्भुवः स्वः इदं वः पाद्यं पादावनेजनं पादप्रक्षालनं वृद्धिः।' इत्युक्त्वा,

साङ्कल्पिक नान्दीश्राद्ध-इसके बाद साङ्कल्पिक विधि से नान्दी श्राद्ध का विधान करे। जो इस प्रकार है-एक पलाश के पत्तल पर पूर्व से दक्षिण, प्रदक्षिण क्रमानुसार, सीधे कुशाओं को बिछाकर उन पर सव्य होकर संकल्प सहित विधिपूर्वक पूजन करे।

सर्व-प्रथम हाथ में जल लेकर 'ॐ सत्यवसुसंज्ञकाः विश्वेदेवाः नान्दीमुखाः ०' से 'पादप्रक्षालनं वृद्धिः' तक १. भविष्यपुराणे-पिण्डनिर्वपणं कुर्यान्न वा कुर्यान्नराधिप। वृद्धिश्राद्धे महाबाहो ! कुलधर्मानवेक्ष्य हि।।

स्मृतौ-नान्दीश्राद्धं पिता कुर्यादाद्ये पाणिग्रहे पुनः। अत ऊर्ध्व प्रकुर्वीत स्वयमेव तु नान्दिकम्।। मंडनः - पित्रोस्तु जीवितो कुर्यात् पुनः पाणिग्रहं यदा। पितुर्नान्दीमुखश्राद्धं नोक्तं तस्य मनीषिणः।। २. अनस्मद्-वृद्धशब्दानामरूपाणामगोत्रिणाम्। अनाम्नामतिलाद्यैश्च नान्दीश्राद्धं च सव्यवत्।।

द्वारपूजा

कन्यागृहे वरयात्रा-गमनानन्तरं शिविकातो निःसृत्य वरः कन्यापितृद्वारि गत्वा,

कन्यापिता वरश्च आचम्य, प्राणानायम्य, ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्यभ्यन्तरः शुचिः ॥'

इत्यनेन पूजासम्भारानात्मानं च सम्प्रोक्ष्य, हस्तेऽक्षत-पुष्पाणि गृहीत्वा, 'आ नो भद्रादीन्' मङ्गलमन्त्रान् पठेत्।

तत्पश्चात् दाता हस्ते जला- ऽक्षत-द्रव्याण्यादाय, 'देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् अमुकगोत्रायाः अमुकनाम्न्याः कन्याया विवाहाङ्गभूतं द्वारमागतस्य द्वारपूजा-कन्या के द्वार पर बारात पहुँचने पर पालकी से उतर कर वर पूर्वाभिमुख और कन्या का पिता

पश्चिमाभिमुख आसन पर बैठ जायें। आचमन एवं प्राणायाम कर दोनों 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा०' इस मन्त्र से अपने ऊपर तथा पूजन-सामग्री के ऊपर जल छिड़कें तथा दोनों ही हाथ में अक्षत और पुष्प लेकर 'ॐ आ नो भद्रा०' स्वस्तिवाचन मन्त्रों (पृष्ठ ७ से १०) को पढ़ें।

संकल्प-इसके पश्चात् कन्या का पिता दाहिने हाथ में जल, अक्षत पुष्प एवं द्रव्य लेकर (पृष्ठ १० से ११) 'देशकालौ सुपूजितस्य वरस्य अर्चनं करिष्ये।' हस्ते पुनर्जलं गृहीत्वा, 'गणेशाम्बिका- पूजनपूर्वकं कलशस्थापनं तत्पूजनं च करिष्ये।' इति जलं भूमौ क्षिपेत्। पश्चात् वरः हस्ते जलाक्षत-द्रव्याण्यादाय 'देशकालौ संकीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं विवाहाङ्गभूत-द्वारपूजनाख्ये कर्मणि शुभता सिद्ध्यर्थं गणेशाम्बिका- पूजन-पूर्वकं कलशादिपूजनश्च करिष्ये।

तत्पश्चात् यथोपचारेण गणपत्यादि-पूजनपूर्वकं कलशस्थापनं तत्पूजनं च कुर्यात्। ततो निम्नलिखित - प्रकारेण वरपूजनं कुर्यात्।

प्रथमं 'ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः।।' इति मन्त्रेण वरस्य दक्षिणपाद- प्रक्षालनं कुर्यात्।

संकीर्त्य' से 'गणेशाम्बिकापूजनपूर्वकं कलशस्थापनं तत्पूजनं च करिष्ये' तक कहकर भूमिपर जल को छोड़ दे। वर भी दायें हाथ में जल, अक्षत, पुष्प तथा द्रव्य लेकर 'देशकालौ०' से 'पूजनं च करिष्ये' तक

उच्चारण कर संकल्प करें। तदन्तर दाता तथा वर पूजन-सामग्री द्वारा गणपत्यादि पूजन, कलश-पूजन (पृष्ठ १२ से २८ के अनुसार) करे। इसके पश्चात् दाता निम्नलिखित प्रकार से वर का पूजन करे। सर्वप्रथम विराजो दोहोऽसि' इस मन्त्र को पढ़कर

ततः - 'ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्।।' इति मन्त्रेण वरस्य ललाटे तिलकं कुर्यात्। ॐ अक्षन्नमी मदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।' इत्यनेनाऽक्षतान्। 'ॐ या आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै कामायेन्द्रियाय। सा अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च।।' इति मन्त्रेण वरस्य गले पुष्पमालां परिधापयेत्। हस्ते पुनर्जलं गृहीत्वा, 'कृतैतत् वरपूजनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं मनसोद्दिष्टां दक्षिणाममुकगोत्राय अमुकशर्मणे वराय तुभ्यमहं सम्प्रददे। इत्युदीर्य, वरहस्ते तज्जलं दक्षिणां च दद्यात्।

पुनर्हस्ते जलमादाय, कृतैतत् वरपूजनकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्त-

वर का दाहिना पैर धोकर 'गन्धद्वारां०' इस मन्त्र से वर के ललाट में रोरी एवं 'अक्षन्नमी मदन्त०' इस मन्त्र से अक्षत और 'ॐ या आहरज्जमदग्निः' इस मन्त्र से वर के गले में माला पहनावे। पुनः दाता हाथ में जल लेकर 'कृतैत् वरपूजनकर्मणः' से लेकर 'तुभ्यमहं सम्प्रददे' तक पढ़कर वर के दाहिने हाथ में जल एवं द्रव्य-दक्षिणा प्रदान करें।

दोष- परिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य भूयसीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।'

ततो हस्तेऽ क्षतान् गृहीत्वा, 'यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्। इष्टकाम-समृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च।।' इति गणपत्यादि-देवानां विसर्जनं कुर्यात्। तत्पश्चात्- प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्-विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः।। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्।। इति पठित्वा

प्रणमेत्।

इति द्वारपूजा समाप्ता।

इसके बाद पुनः दाता एवं वर हाथ में जल लेकर, 'कृतैतत् वरपूजनकर्मणः' से 'भूयसीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे' तक पढ़ भूयसी दक्षिणा का संकल्प कर उपस्थित सभी ब्राह्मणों को भूयसी दक्षिणा प्रदान करें।

अनन्तर दाता एवं वर हाथ में अक्षत लेकर 'यान्तु देवगणाः सर्वे०' श्लोक पढ़कर गणपत्यादि सभी देवों पर अक्षत छींटकर विसर्जन करें।

तदनन्तर दोनों 'प्रमादात्०' से 'सद्यो वन्दे तमच्युतम्' श्लोक पढ़कर सभी देवताओं को प्रणाम करे।

इस प्रकार द्वारपूजा समाप्त।

विवाहाऽनुक्रमणिका

१।। साधुस्ततो विष्टरं पाद्यविष्टम् अर्घाचमं वै मधुपर्क वाक् च मे। उत्सृजतृणान्यत्त्वथ वेदिकर्म स्यादग्निमभ्यर्चय कौतुकाद् वरः।। आनीय कन्या-वसनं वराय ददाति दाता वरवस्त्रदानम्। परस्परं दातृक - ग्रन्थिबन्धनं सङ्कल्प-कन्या-वरणं च होमः।। २।। लाजाहुतिर्गाम्यवचः सुमङ्गली परिवर्ति वामे ग्रथनं विधत्ते। स्विष्टाहुतिः स्यादभिषेकदानं कृत्वा वरः कौतुकमन्दिरं व्रजेत्।। ३।।

इति विवाहाऽनुक्रमणिका समाप्ता।

विवाहानुक्रम-कन्या का पिता 'साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तं' ऐसा कहकर वर का दाहिना हाथ पकड़कर पूर्वाभिमुख पीढ़े पर बैठावे तथा 'विष्टरो विष्टरो०' ऐसा तीन बार कहकर कुशनिर्मित विष्टर को प्रदान करे एवं तीन बार 'पाद्यं पाद्यं० कहकर अर्धे से वर के हाथ में अर्घ्य जल दे, उस जल से वर पहले अपना दाहिना पैर बाद में बायाँ पैर धोवे। कन्या-पिता पुनः विष्टर, पाद्य जल, अर्घ्य जल, आचमन, मधुपर्क देवे। तथा वर 'वाङ् मे आस्येऽस्तु' से 'तनूस्तन्वा मे सह सन्तु' तक पढ़कर दोनों हाथों से अपने सारे अंगों का स्पर्श करे। अनन्तर तृण परित्याग, पंचभूसंस्कार पूर्वक अग्नि स्थापन, कोहबर से कन्या को बुलाना, वर को

वस्त्र प्रदान, कन्या-पिता और माता का परस्पर ग्रन्थिबन्धन, कन्यादान का संकल्प, ब्राह्मणवरण एवं हवन, लाजा होम कर पत्नी को वामभाग में बैठाना, उसके माँग में सिन्दूर दान करे। तथा वर-कन्या का ग्रन्थिबन्धन, ध्रुव दर्शन, स्विष्टकृत् होम एवं अभिषेक कर वर-कन्या दोनों कोहबर में जायें।

इस प्रकार विवाहानुक्रम समाप्त।

विवाह-विधानम्

वरपक्षात् सर्वं वस्त्राभूषणादिकं मण्डपमानीय, 'ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञर्ट. समिमं दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों ३ प्रतिष्ठ।।' इति मन्त्रेण वस्त्राभूषाणादिकमुपरि अक्षतान् क्षिपेत्। पश्चात् गणेशाद्यावाहितदेवानां स्पर्श कारयित्वा, नापित-पत्नी- द्वारा गुप्तागारे स्थापयेत्।

तदनन्तरं मण्डपे कन्यामानीय सङ्कल्पपूर्वकं कन्याहस्तद्वारा ॐकार-लक्ष्मी-कुबेरान् अर्चयेत्। कन्यादक्षिणहस्ते जलं स्थाप्य, 'देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रायाः अमुकनाम्न्याः कन्यायाः स्वकीय-विवाहाङ्गभूतं गणेश-ॐकार-लक्ष्मी-कुबेराणां यथोपचारेण पूजनमहं करिष्ये।' इति सङ्कल्प्य।'ॐ गणेशाय नमः, गणेशमावाहयामि।

वर पक्ष की ओर से वस्त्र, आभूषण आदि समस्त देय वस्तु को लाकर 'ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य०' से 'प्रतिष्ठ' तक मन्त्र पढ़कर उन सभी वस्तुओं पर अक्षत छिड़के और उनको गणेशादि देवों का स्पर्श कराकर नाउन द्वारा कोहबर में भिजवा दें।

तत्पश्चात् कन्या को मण्डप में लाकर एवं उसके हाथ में जल देकर 'देशकालौ सङ्कीर्त्य०' से 'कुबेरमावाहयामि' ॐकाराय नमः, ॐकारमावाहयामि। ॐ लक्ष्म्यै नमः, लक्ष्मीमावाहयामि। ॐ कुबेराय नमः, कुबेरमावाहयामि।' इति सम्पूजयेत्।

तत्पश्चात् वरस्य ज्येष्ठभ्राता स्वाञ्जलिना पञ्चाञ्जलितण्डुल- फलानि

कन्यायाः अञ्जलौ दत्वा, पट्टसूत्रं परिधाय, 'ॐ दीर्घायुस्त ओषधे खनिता यस्मै च त्वा खनाम्यहम्। अथो त्वं दीर्घायुर्भूत्वा शतवल्शाभिरोहतात्।।' इति मन्त्रेणाऽ ऽ शिषं दद्यात्। पश्चात् कन्या गुप्तागारे गच्छेत्।

(शाला-विधानम्)

ततो वरः स्वहस्ते चतुर्मुखं दीपमादाय, मण्डपसमीपमागच्छेत्। तथा दाता तक पढ़कर गणेश आदि से लेकर कुबेर तक सभी देवों का पूजन कन्या द्वारा करावे। इसके बाद वर का बड़ा भाई कन्या के हाथ में अंजलि से पाँच बार अक्षत एवं फल देकर तागपाट पहना दे और हाथ में अक्षत लेकर 'ॐ दीर्घयुस्त ओषधे०' से 'शतवल्शाभिरोहतात्' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर कन्या के मस्तक पर आशीर्वाद रूप में छिड़के। उसके बाद कन्या कोहबर में जाये।

शालाविधान अर्थात् वर के जूते का परित्याग-कन्या के कोहबर में चले जाने के बाद वर अपने हाथ में वरहस्ताद् दीनं गृहीत्वा, स्वहस्तेन मण्डपे स्थापयेत्।

तत्पश्चात् कन्यापिता हस्तेऽक्षतान् गृहीत्वा, इमौ मन्त्रौ पठेत्। 'अथ वरमाह उपानहौ उपमुञ्चतु अग्नौ हविर्देयो घृतकुम्भप्रवेशः। तत्र स्थितो वरहोम्यः दूरेधताद् विसम्भ्रमः तस्माद्-वरमाह उपानहौ उपमुञ्चते।। १।। ॐ अथ वाराह्या उपानहौ उपमुञ्चते। अग्नौ ह वै देवा घृतकुम्भं प्रवेशयाञ्चक्नुस्ततो वराहः सम्बभूव तस्माद्वराहो गावः सञ्जानते ह्यमेधैतदंशमभिसञ्ज्ञाते स्वमे वै। तत्पशूनामेहो तत्प्रतिष्ठन्ति तस्मा- द्वाराह्य उपानहौ उपमुञ्चते।। २।।' इति मन्त्राभ्यां वरस्योपानहत्यागः।

तत्पश्चाद् भद्रपीठोपरि पञ्चसु स्थानेषु अक्षत-पुञ्जान् कृत्वा ततो दाता वरश्च चौमुखा दीप लेकर मण्डप के पास आवे। उसके बाद कन्या का पिता उसके हाथ से दीपक को लेकर वर की आरती करे तथा दीपक को मण्डप में रख दे।

अनन्तर कन्या का पिता अक्षत लेकर 'अथ वरमाह०' से लेकर 'उपानहौ उपमुञ्चते' तक मंत्र पढ़कर वर के उपानह पर अक्षत छिड़क कर जूतों को निकलवा दे।

तत्पश्चात् पीढ़े पर चारों कोने व मध्य में अक्षत की ढेरी रखकर दाता और वर दोनों ही पीढ़े को पकड़ कर पीठस्पर्शनं कृत्वा, मण्डपस्थगणपत्यादिदेवता स्पर्श कारयेत्। तदनन्तर 'ॐ षडर्घ्या भवन्त्याचार्य ऋत्विग्-वैवाह्यो राजा प्रियः स्नातक इति प्रतिसंवत्सरानर्हयेयुर्यक्ष्यमाणा ऋत्विज आसनमाहार्याह।' इति मन्त्रेण आसन- पश्चात्तिष्ठन्तं वरं प्रति कन्यापिता 'ॐ साधु भवानास्ताम् अर्चयिष्यामो भवन्तमि' ति ब्रूयात्। ततो वरः 'अर्चय' इति वदेत्।

ततः कन्यापिता वरस्य करं गृहीत्वा, भद्रपीठोपरि उपवेशयेत्। स्वयमपि उपविश्य आचम्य, प्राणानायम्य, 'देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् अमुकगोत्रायाः अमुकनाम्न्याः कन्याया अद्य विवाहं करिष्ये। तत्र गृहागताय

मण्डप-स्थित गणेशादि देवताओं एवं कलश का स्पर्श करावे।

अनन्तर 'षडर्घ्या भवन्त्याचार्य०' से आरम्भ कर 'आसनमाहार्याह' तक पढ़कर आसन के पीछे खड़े वर के प्रति कन्या का पिता 'ॐ साधु भवानास्तामर्चयिष्यामो भवन्तम्' इस प्रकार कहें। तथा वर 'अर्चय' ऐसा कहे। तदनन्तर कन्या का पिता वर का दाहिना हाथ पकड़ कर उसको पीढ़े पर बैठावे और स्वयं भी अपने आसन पर बैठ जाय। पश्चात् कन्या का पिता आचमन और प्राणायाम करके हाथ में अक्षत, जल लेकर 'देशकालौ सङ्कीर्त्य' स्नातकाय वराय कन्यादानाङ्गभूतं मधुपर्कं च करिष्ये।' ततो विष्टरमादाय, 'ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः' इति पुरोहितेनोक्ते 'विष्टरः प्रतिगृह्यताम्' इति दाता वदेत्। 'ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामि' इत्युक्त्वा, वरो हस्ताभ्यां विष्टरं गृहीत्वा, 'ॐ वर्ष्मोऽस्मि समानानामुद्यतामिव सूर्यः। इमं तमभितिष्ठामि यो मा कश्चाभिदासति।।' इति मन्त्रेण पीठे उत्तराग्रविष्टरोपरि वर उपविशेत्।

ततो दाता पाद्यपात्रमञ्जलावादाय, 'पाद्यं पाद्यं पाद्यं प्रतिगृह्यताम्' इति वदेत्। वरश्च 'पाद्यं प्रतिगृह्णामि' इत्युक्त्वा दाताऽञ्जलितोऽञ्जलिना पाद्यपात्रमादाय, 'ॐ विराजो दोहोऽसि विराजो दोहमशीय मयि पाद्यायै विराजो दोहः।।' इति मन्त्रेण से 'मधुपर्क च करिष्ये' तक पढ़कर जल को

भूमि पर छोड़ दे।

तत्पश्चात् प्रथम 'ॐ विष्टरो विष्टरो विष्टरः' पुरोहित के कहने पर कन्या का पिता 'विष्टरः प्रतिगृह्यताम्' इस प्रकार वर से कहे। वर भी 'ॐ विष्टरं प्रतिगृह्णामि' ऐसा कहे और दाता के हाथ से कुशरूप विष्टर को लेकर 'ॐ वर्ष्मोऽस्मि०' से लेकर 'अभिदासति' तक मन्त्र पढ़कर उसे पीढ़े पर उत्तराग्र रख कर वर बैठ जाये। अनन्तर दाता अञ्जलि में पाद्यपात्र में जल लेकर 'पाद्यं० प्रतिगृह्यताम्' इस प्रकार कहे, वर भी, पाद्यं ब्राह्मणश्चेत् पूर्वं दक्षिणपादं प्रक्षाल्य, पश्चाद्, वामचरणं स्वयं प्रक्षालयेत् (क्षत्रियादौ तु पूर्वं वामचरणं पश्चाद् दक्षिणचरणं स्वयं प्रक्षालयेत्।)

तदनन्तरं दाता 'ॐ विराजो दोहोऽसि०' इति मन्त्रेण वरस्य पादप्रक्षालनं कुर्यात्। 'ॐ युञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परि तस्थुषः। रोचन्ते रोचना दिवि। युञ्जन्त्यस्य काम्या हरी विपक्षसा रथे। शोणा धृष्णू नृवाहसा।।' इति मन्त्रेण। कस्तूरीतिलकं ललाटपटले वक्षस्थले कौस्तुभम्। नासाग्रे वरमौक्तिकं करतले वेणुः करे कङ्कणम्।। सर्वाङ्गे हरिचन्दनं सुललितं कण्ठे च मुक्तावली। गोपस्त्रीपरिवेष्टितो विजयते गोपालचूडामणिः।। इति श्लोकेन च वरस्य ललाटे तिलकं कुर्यात्। प्रतिगृह्णामि' ऐसा कहकर दाता के अञ्जलि से पाद्यपात्र को लेकर 'ॐ विराजो दोहोऽसि०' से लेकर 'विराजो दोहः' तक मन्त्र पढ़कर अपने दाहिने पैर को धोये। (यदि ब्राह्मण हो तो पहले दाहिने चरण में बाद में बायें पैर में जल स्पर्श करे और क्षत्रिय आदि हों तो पहले बायें पैर और पश्चात् दाहिने पैर पर स्वयं जल छोड़े।) इसके बाद कन्या का पिता भी, 'ॐ विराजो दोहोऽसि०' इस मन्त्र को पढ़कर वर का पाद प्रक्षालन करे (धोवे) और 'ॐ युञ्जन्ति०' से 'नृवाहसा' मन्त्र एवं 'कस्तूरीतिलकं' श्लोक को पढ़कर वर के ललाट में चन्दन लगाये।

'ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्टया मती योजान्विन्द्र ते हरी।।' इति मन्त्रेणाऽक्षतान् संलग्नीयात्। पश्चात् 'ॐ या अहरज्जमदग्निः श्रद्धायै मेधायै कामायेन्द्रियाय। ता अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च।।' इति मन्त्रेण पुष्पमालां संगृह्य, 'ॐ यद्यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु। तेन संग्रथिताः सुमनस आबध्नामि

यशो मयि।।' इति मन्त्रेण वरस्य गले परिधापयेत्।

पुनर्द्वितीय-विष्टरमादाय, वरस्तूष्णीमुत्तरात्रं पादयोरधः स्थापयेत्। ततो दूर्वा- ऽ क्षत-फल-पुष्प-चन्दन- सहितार्घपात्रं गृहीत्वा, 'ॐ अर्घोऽर्घोऽर्घः प्रतिगृह्यताम्' इति दाता वदेत्। 'ॐ अर्घ प्रतिगृह्णामि' इत्युक्त्वा, यजमानहस्तादर्घ्यं गृहीत्वा,

'ॐ अक्षन्नमीमदन्त' से 'इन्द्र ते हरी' तक मन्त्र पढ़कर अक्षत लगाये। तथा 'ॐ या आहरज्जमदग्निः ०' से 'भगेन च' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर पुष्प-माला हाथ में लेकर 'ॐ यद्यशोऽप्सरसां०' से 'आबध्नामि यशो मयि' तक मन्त्र पढ़कर वर के गले में माला पहना दे।

पुनः दाता (पिता) द्वितीय विष्टर अमन्त्रक वर को दें, वर मौन ही विष्टर को लेकर पैर के नीचे उत्तराग्र रख दे।

'ॐ आपःस्थ युष्माभिः सर्वान् कामानवाप्नवानि।।' इति मन्त्रेण शिरस्यर्घस्था- ऽक्षतादिकं किञ्चिद् दत्वा, 'ॐ समुद्रं वः प्रहिणोमि स्वां योनिमभिगच्छत। अरिष्टाऽस्माकं वीरा मा पराऽ सेचिं मत्पयः।।' इति मन्त्रेणाऽर्घ्यपात्रस्थ-जलमैशान्यां दिशि प्रक्षिपेत्।

तत्पश्चात्, दाता आचमनीयमादाय, 'आचमनीयमाचमनीयमाचमनीयं प्रतिगृह्यताम्' इति वदेत्। ततो वरः, 'आचमनीयं प्रतिगृह्णामि' इत्युक्त्वा, यजमानहस्तादाचमनीय- मादाय, 'आमाऽगन्यशसा सर्ट. सृज वर्चसा। तं मा कुरु प्रियं प्रजानामधिपतिं पशूनामरिष्टिं तनूनाम्।।' इति मन्त्रेण सकृदाचम्य, द्विस्तूष्णीमाचामेत्।

इसके बाद दाता दूर्वा, अक्षत, फल, पुष्प एवं चंदन सहित अर्घ्यपात्र अपने हाथ में लेकर 'ॐ अघोऽघोंऽर्घः प्रतिगृह्यताम्' ऐसा कहे। वर भी, 'अर्घ प्रतिगृह्णामि' कहकर यजमान के हाथ से अर्घ्य पात्र लेकर 'ॐ आपःस्थ युष्माभिः ०' से अर्घ्यस्थ अक्षत को अपने शिर पर छोड़कर 'ॐ समुद्रं वः' से 'पराऽसेचिं मत्पयः' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर अर्घ्यपात्रस्थ जल को ईशान कोण की ओर छोड़ दे। पश्चात् दाता आचमनी से जल लेकर,

'आचमनीयमाचमनीयमाचमनीयं प्रतिगृह्यताम्' इस प्रकार कहे। वर भी 'आचमनीयं प्रतिगृह्णामि' ऐसा कहकर दाता के हाथ से उसको लेकर 'ॐ आमा- ऽगन्यशसा०' से 'अरिष्टिं तनूनाम्' तक मन्त्र पढ़कर एक बार आचमन करे और दो बार बिना मन्त्र के आचमन करे।

ततो दाता सम्पुटित-कांस्यपात्रस्थ- दधि-मधु-घृतानि कांस्य-पात्रस्थ-पिहितान्यादाय, 'मधुपर्को मधुपर्को मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम्' इति दाता वदेत्। ततो वरः 'मधुपर्क प्रतिगृह्णामि' इत्युक्त्वा, 'ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे' इति पठित्वा, दातृकरस्थमेव निरीक्ष्य। ॐ देवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि।' इत्यनेन यजमानहस्तात् मधुपर्कं पाणिभ्यां गृहीत्वा, वामहस्ते कृत्वा, 'ॐ नमः श्यावास्यायान्नशने यत्त आविद्धं तत्ते निष्कृन्तामि।' इत्यनेनाऽ नामिकया त्रिः प्रदक्षिणमालोड्य, अनामिकाऽङ्गुष्ठाभ्यां किञ्चित् भूमौ प्रक्षिपेत्। पुनस्तेनैव प्रकारेण द्विवारं प्रत्येकमनेनैव क्रमेण क्षिपेत्।

तदनन्तर दाता काँसे की कटोरी में दधि, मधु एवं घृत को रखकर उसे दूसरी कटोरी में ढँककर तीन बार 'मधुपर्क: ०' ऐसा कहते हुए 'मधुपर्कः प्रतिगृह्यताम्' ऐसा कहें। वर भी, मधुपर्क प्रतिगृह्णामि' ऐसा कहकर 'ॐ मित्रस्य त्वा चक्षुषा प्रतीक्षे' मन्त्र पढ़कर दाता के हाथ में रखे हुए उस मधुपर्क का निरीक्षण करे और 'देवस्य त्वा०' से 'हस्ताभ्यां प्रतिगृह्णामि' तक पढ़कर यजमान के हाथ से उस मधुपर्क को दोनों हाथों से लेकर पुनः उसको बायें हाथ में रखकर 'ॐ नमः श्यावा० से 'निष्कृन्तामि' तक पढ़कर अनामिका अंगुलि से तीन बार आलोडन कर पुनः अनामिका और अंगुष्ठ से उस मधुपर्क का कुछ भाग पृथ्वी पर छिड़क दे। पुनः उसी प्रकार पूर्वोक्त मन्त्र से दो बार मधव्यं परमर्ट. रूपमन्नाद्यम्। तेनाऽहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणाऽ न्नाद्येन परमो मधव्योऽन्नादोऽ सानि।।' इति मन्त्रेणत्रिवारं मधुपर्कप्राशनम्। प्रतिप्राशने चैतन्मन्त्रपाठः। ततो मधुपर्कशेषमसञ्चरदेशे स्थापयेत्। १

ततो द्विराचम्य, वरः प्राणान् संस्पृशेत्। तद्यथा- 'ॐ वाङ्गऽ आस्येऽस्तु' इति पञ्चाङ्गल्यग्रैर्मुखं स्पृशेत्। 'ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु' इति तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्यां

नासिके युगपत् स्पृशेत्, ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु' इत्यनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां युगपच्चक्षुषी स्पृशेत्। 'ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु' इति दक्षिणकरेण सव्याऽपसव्यकर्णौ स्पृशेत्। 'ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु' इत्यनेन द्वौ बाहू हस्ताभ्यां स्पृशेत्।' 'ॐ ऊर्वोर्मे ओजोऽस्तु'

पृथ्वी पर छिड़के। तत्पश्चात् 'ॐ यन्मधुनो मधव्यं०' से 'अन्नादोऽसानि' पर्यन्त मन्त्र तीन बार पढ़कर उक्त मधुपर्क का तीन बार प्राशन करे। पश्चात् उस मधुपर्क को असंचर प्रदेश (निर्जन अथवा कलश और वर के मध्य) में रख दें। पुनः वर दो बार आचमन कर 'ॐ वाङ्ग ऽआस्येऽस्तु' पढ़कर पाँचों अंगुलि से मुख का, 'ॐ नसोर्मे प्राणोऽस्तु' कहकर तर्जनी - अंगूठे के बगल की अंगुलि एवं अंगुष्ठ से नासिका का, उसी प्रकार, 'अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु' ऐसा पढ़कर अनामिका-कानी अंगुलि के बगल वाली अंगुलि व अंगुष्ठ से दोनों नेत्रों का, 'कर्णयोर्में १. 'जनसञ्चारवर्जिते देशे' इत्यर्थः। अथवा 'कलश-वरयोर्मध्ये धारयेदि 'ति। इति कराभ्यां युगपदूर्बोः स्पृशेत्। 'ॐ अरिष्टानि मेऽङ्गानि तनूस्तन्वा मे सह सन्तु' इत्युभाभ्यां हस्ताभ्यां सर्वाङ्गानि स्पृशेत्। ततो वरः 'माता रुद्राणां दुहिता वसूनार्ट. स्वसाऽ ऽ दित्यानाममृतस्य नाभिः। प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागादितुं वधिष्ट।।' इत्युक्त्वा 'मम चाऽमुकशर्मणो यजमानस्योभयोः पाप्मा हतः।' 'ॐ उत्सृजत तृणान्यत्तु' इति पठित्वा, तृणत्यागः।

श्रोत्रमस्तु' पढ़कर दाहिने हाथ से दोनों कानों का तथा 'ॐ बाह्वोमें बलमस्तु' से दोनों हाथों द्वारा भुजाओं का एवं 'ॐ ऊवोर्मे बलमस्तु' से दोनों घुटनों का तथा 'ॐ अरिष्टानि०' से 'सह सन्तु' तक पढ़कर दोनों हाथों से अपने समस्त अङ्ग का स्पर्श करे।

इसके बाद दाता दीया अथवा दाने में एक कुश खड़ा कर 'ॐ गौ-गौ-गौः' इस प्रकार कहे। वर 'माता रुद्राणां०' से 'वधिष्ट' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर 'मम (स्वस्य) च अमुक शर्मणो यजमानस्य उभयोः पाप्मा हतः' पढ़कर अनामिका अंगुलि से उस कुशा को तोड़ दे। 'ॐ उत्सृजत तृणान्यत्तु' ऐसा

कह कर उस कुशा को फेंक दे।

आचार-क्रम से वर द्वारा गोदान- 'देशकालौ संकीर्त्य० मधुपर्कोपयोगिनो गोरुत्सर्गकर्मणः साद्गुण्यार्थं गोनिष्क्रयी भूतमिदं द्रव्यं (गोतृप्त्यर्थं तृणनिष्क्रयद्रव्यं वा) अमुकगोत्राय अमुकशर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृज्ये।' पर्यन्त संकल्प कर ब्राह्मण को देवे। ब्राह्मण 'स्वस्ति' ऐसा कहें।

तदनन्तरं वरः 'देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् अस्मिन् विवाहकर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकं योजकनामाऽग्निस्थापनं करिष्ये।' इत्यनेनाऽग्नि- स्थापनसङ्कल्पं कृत्वा, पञ्चभूसंस्कारं कुर्यात्। तद्यथा- हस्तपरिमितां चतुरस्रां वेदिकां कुशैः परिसमूह्य, तान् कुशान् ऐशान्यां दिशि परित्यज्य, गोमयोदकाभ्यामुपलिप्य, स्रुवमूलेन उत्तरोत्तरक्रमेण त्रिरुल्लिखय, उल्लेखनक्रमेणाऽ नामिकाऽङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य, जलेनाऽभ्युक्ष्य, तत्र तूष्णीं कांस्यपात्रपिहितं कांस्य-पात्रस्थ-वह्निमादाय, 'ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यमाहमुपब्रुवे। देवाँ २।। आसादयादिह।।' इति मन्त्रेण स्वाऽभिमुखं निदध्यात् तद्रक्षणार्थं किञ्चित् काष्ठं नियोजयेत्।

अनन्तर वर हाथ में जल लेकर 'देशकालौ सङ्कीर्त्य०' से 'अग्नि-स्थापनं करिष्ये' तक पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे। पुनः पञ्चभूसंस्कार पूर्वक अग्निस्थापन करे, जो इस प्रकार है-एक हाथ की चौकोनी वेदी बनाकर, उसको कुशा से परिमार्जन कर, उस कुशा को ईशान कोण में फेंककर, जल मिश्रित गोबर से लीपकर, स्रुवा के मूल भाग में उस वेदी पर तीन रेखा करें, उस उभरी हुई मृत्तिका को अनामिका अंगुष्ठ द्वारा हटाकर, पुनः जल छिड़क कर कांस्यपात्र में अग्नि रखकर 'ॐ अग्नि दूतं०' से 'आसादयादिह' तक मन्त्र पढ़कर वेदी पर अपने सम्मुख अग्नि स्थापन करे और उसकी रक्षा हेतु गोहरी या लकड़ी उस पर रख दे।

तत्पश्चात् वरः 'अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहम् अस्मिन् पुण्याहे धर्माऽर्थ-काम-प्रजा-सन्तत्यर्थं दारपरिग्रहणं करिष्ये।' इति सङ्कल्पं कुर्यात्। ततः कौतुकागारात् मण्डपे कन्यामानीय, यजमानः वराय वस्त्रचतुष्टयं प्रयच्छति

तेषु वरो वस्त्रद्वयं कन्यायै ददाति, वस्त्रद्वयं स्वयं परिधत्ते।

कन्यापूजनम्

तदनन्तरं गन्धाऽ क्षतपुष्पादिभिः कन्यां सम्पूजयेत्। ततः 'ॐ जरां गच्छ परिधत्स्व वासो भवाऽऽ कृष्टीनामभिशस्तिपावा। शतं च जीव शरदः सुवर्चा रयिं च पुत्राननु संव्ययस्वाऽ ऽ युष्मतीदं परिधत्स्व वासः।।' इति मन्त्रेण कन्या वस्त्रपरिधानं करोति।

तदनन्तर वर अपने हाथ में जल लेकर 'अमुकगोत्र: ०' से 'दारपरिग्रहणं करिष्ये' तक पढ़कर भूमि पर जल छोड़ दे।

इसके बाद कोहबर से कन्या को मण्डप में लाकर दाता वर को चार वस्त्र प्रदान करे। उन वस्त्रों में से वर दो

वस्त्र कन्या को देकर शेष दो वस्त्र स्वयं धारण करे।

कन्या पूजन- तत्पश्चात् दाता गन्ध, पुष्प, अक्षत आदि लेकर कन्या का पूजन करें एवं 'जरां गच्छ०' से 'परिधत्स्व वासः' तक मन्त्र पढ़कर कन्या वस्त्र धारण करे।

पश्चात् 'ॐ या ऽकृतन्नवयन् याऽ अतन्वत। याश्च देवीस्तन्तूनभितो ततन्थ। तास्त्वा देवी जरसे संव्ययस्वाऽऽ युष्मतीदं परिधत्स्व वासः।।' इत्यनेन मन्त्रेण कन्या उत्तरीयवस्त्रं परिधत्ते। ततो वरः - 'ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि। शतं च जीवामि शरदः पुरूचीं रायस्पोषमभि संव्ययिष्ये।' इति मन्त्रेण स्वयं वस्त्रं धारयति। तत आचम्य, 'ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्य प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।' इत्यनेन वरो यज्ञोपवीतं परिधार्य, आचम्य च 'ॐ यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पतिः। यशो भगश्च माऽविदद्यशो मा प्रतिपद्यताम्।।' इत्यनेन उत्तरीयवस्त्रधारणं कुर्यात्। तत्पश्चात् वरः कन्या च द्विराचमनं कुर्वीत।

'याऽकृतन्नवयन्०' से 'परिधत्स्व वासः' पर्यन्त पढ़कर कन्या उत्तरीय वस्त्र (ओढ़नी) धारण करे। तदनन्तर वर भी, 'ॐ परिधास्यै०' से 'संव्ययिष्ये' तक मन्त्र उच्चारण कर स्वयं वस्त्र धारण करे। तदनन्तर आचमन कर 'ॐ

यज्ञोपवीतं' से 'बलमस्तु तेजः' तक पढ़कर यज्ञोपवीत धारण कर, पुनः आचमन कर 'ॐ यशसा मा०' से 'प्रतिपद्यताम्' तक मन्त्रोचारण कर वर स्वयं उत्तरीय वस्त्र (दुपट्टा) धारण करें। पुनः वर और कन्या दोनों दो बार आचमन करें।

ततः - 'ॐ समञ्जन्तु विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ। सं मातरिश्वा सन्धाता समुद्रेष्ट्री दधातु नौ।।' इति मन्त्रं पठित्वा, कन्या-वरयोः परस्परमभिमुखीकरणम्। (कन्या वरश्च परस्परं निरीक्षेथाः)। ततः कन्याप्रदकर्तृकं ग्रन्थिबन्धनं कुर्यात्।

गोत्रोच्चारः

तत्पश्चाद् वर-कन्यापक्षीय ब्राह्मणाः गोत्रोच्चारणं कुर्युः। तद्यथा- ॐ गणानां त्वा गणपतिर्ट. हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिर्ट. हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिर्ट. हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।

तत्पश्चात् 'ॐ समञ्जन्तु०' से 'दधातु नौ' तक मन्त्र पढ़कर वर और कन्या परस्पर एक-दूसरे की ओर देखें। पश्चात् दाता और उसकी पत्नी का गठबन्धन करे।

पश्चात् दोनों पक्ष के ब्राह्मण, पुरोहित वर-कन्या का गोत्रोच्चार करें। वह इस प्रकार है-एक-एक दोनिया में

चावल, गुड़ एवं द्रव्य भरकर वर और कन्या के हाथ में रखकर सर्वप्रथम 'ॐ गणानां त्वा०' वैदिक मन्त्र एवं

'गौरीनन्दन गौरवर्णवदनः' आदि माङ्गलिक श्लोकों को पढ़कर 'अस्मिन् दिवसे०' से लेकर 'सावित्री भूयात्' तक सुन्दर ढङ्ग से उच्चारण कर गोत्रोच्चार करें।

गौरीनन्दन - गौरवर्णवदनः

शृङ्गार - लम्बोदरः,

सिन्दूरार्चित - दिग्गजेन्द्र - वदनः पादौ रणन्नूपुरौ। कर्णौ लम्ब-विलम्ब-गण्ड-विमलौ कण्ठे च मुक्तावली,

श्रीविघ्नेश्वर - विघ्नभञ्जनकारो कुर्यात् सदा मङ्गलम्।। अस्मिन् दिवसे वा अस्यां रात्रावस्मिन् मङ्गल-मण्डपाभ्यन्तरे स्वस्ति-श्रीमद्विविध- विद्या-विचार-चातुरी-विनिर्जित-सकलवादि-वृन्दोपरि-विराजमान-पद-पदार्थ- साहित्य-रचनामृतायमान-काव्यकौतुक - चमत्कार-परिणत-निसर्ग-सुन्दर-सारस्वत-सहजानुभाव-गुणनिकर-गुम्फितयशः सुरभीकृत-मङ्गलमण्डपस्य स्वस्ति-श्रीमतः शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत- वाजसनेय माध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनः अमुकगोत्रस्याऽ मुक- प्रवरस्या-ऽ मुकशर्मणः प्रपौत्रः, एवं शुक्लयजुर्वेदा० शर्मणः पौत्रः, तथा शुक्लयजु ० शर्मणः पुत्रः प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये, स्वस्ति संवादेषूभयोवृद्धिः वरकन्ययोर्मङ्गल- मास्तां वरश्चिरञ्जीवी भवतात्, कन्या च सावित्री भूयात्। इति वरपक्षे प्रथम-शाखोच्चारः॥१॥

ॐ पुनस्त्वाऽऽदित्या रुद्रा वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो वसुनीथ यज्ञैः। घृतेन त्वं तन्वं वर्द्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।। ईशानो गिरिशो मृडः पशुपतिः शूली शिवः शङ्करो, भूतेशः प्रमथाधिपः स्मरहरो मृत्युञ्जयो धूर्जीटः।

श्रीकण्ठो वृषभध्वजो हरभवो गङ्गाधरस्त्र्यम्बकः, श्रीरुद्रः सुरवृन्द - वन्दितपदः कुर्यात् सदा मङ्गलम्।। अस्मिन् दिवसे वा अस्यां रात्रावस्मिन् मङ्गल-मण्डपाभ्यन्तरे स्वस्ति- श्रीमद्विविध- विद्यालङ्कार- शरद्विमल-रोहिणी-रमण-रमणीयोदार-सुन्दरदामोदर-पाद-मकरन्द- वृन्द-शेखर - प्रचण्डाखण्ड-मण्डल- पूर्णपूरेन्दु नन्दन-चरणकमल- भक्तितदुपरि-महानुभाव-सकल-विद्याविनीत निजकुलकमल-कलिका-प्रकाशनैक भास्कर-सदाचार-सच्चरित-सकल-सत्प्रतिष्ठा-हे-उ-विशिष्ट-वरिष्ठस्य स्वस्ति- श्रीमतः शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत - वाजसनेय- माध्यन्दिनीय-शाखाऽध्येतुः अमुकगोत्रस्या-ऽ मुकप्रवरस्या - ऽ मुकशर्मणः प्रपौत्री, शुक्लयजुर्वेदान्तर्गतवाज० शर्मणः पौत्री, शुक्ल- यजुर्वेदान्तर्गतवाज० शर्मणः पुत्री, प्रयतपाणिः शरणं प्रपद्ये

स्वस्ति- संवादेषुभयोवृद्धि-र्वर-कन्ययोर्मङ्गलमास्तां वरश्चिरञ्जीवी भवतात् कन्या च सावित्री भूयात्। इति कन्यापक्षे प्रथम-शाखोच्चारः।।१।।

एवं द्विरपरं वर-कन्यापक्षे ब्राह्मणाः पठेत्। मङ्गलमन्त्र-श्लोकाश्च-ॐ यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्म राजन्याभ्यार्ट. शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। प्रियो देवानां दक्षिणायै दातुरिह भूयासमयं मे कामः समृद्ध्यतामुप मादो नमतु।। गौरी श्रीरदितिश्च कद्रुसुभगाः भूतिः सुपर्णा शुभा, सावित्री तु सरस्वती वसुमती सत्यव्रताऽ रुन्धती। स्त्राहा जाम्बवती च रुक्मभगिनी दुःस्वप्न-विध्वंसिनी, बेला चाऽम्बुनिधेः स-मीन-मकराः कुर्वन्तु वो मङ्गलम्।।

'अस्मिन् दिवसे०' इत्यारभ्य 'कन्या च सावित्री भूयात्' इति पर्यन्तं पठेत्।

इति वरपक्षे द्वितीय-शाखोच्चारः।।२।। ॐ आयुष्यं वर्चस्यर्ट. रायस्पोषमौद्भिदम्। इदर्ट. हिरण्यं वर्चस्व जैत्राया- ऽऽविशतादु माम्।।

नेत्राणां त्रितयं शिवं पशुपतेरग्नित्रयं पावनं, यद्वद्-विष्णुपदत्रयं त्रिभुवने ख्यातं च रामत्रयम्। गङ्गावाहपथत्रयं सुविमलं देवत्रयं त्रिस्वरं, सन्ध्यानां त्रितयं द्विजैरभिहितं कुर्वन्तु वो मङ्गलम्।। 'अस्मिन् दिवसे ०' इत्यारभ्य 'कन्या च सावित्री भूयात्' इत्यन्तं पठेत्।

इति कन्यापक्षे द्वितीय-शाखोच्चारः।।२।।

ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं तन्मे मनः शिवसङ्कल्पमस्तु।।

अश्वत्थो वटवृक्षचन्दनतरूमन्दार-कल्पद्रुमौ, जम्बू-निम्ब-कदम्ब-चूत-सरला वृक्षाश्च ये क्षीरिणः। सर्वे ते फलमिश्रिताः प्रतिदिनं विभ्राजिता सर्वतो, रम्यं चैत्ररथं स-नन्दनवनं कुर्वन्तु वो मङ्गलम्।। 'अस्मिन् दिवसे०' इत्यारम्भय, 'कन्या च सावित्री भूयात्' इति पर्यन्तं पठेत्। इति वरपक्षे तृतीय-शाखोच्चारः॥३॥

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः शतश्च योनिमस्तश्च विवः।।

ब्रह्मा वेदपतिः शिवः पशुपतिः सूर्यश्च चक्षुष्पतिः, शुक्रो देवपतिर्यमः पितृपतिः स्कन्दश्च सेनापतिः।

यक्षो वित्तपतिर्हरिश्च जगतां वायुः पतिः प्राणिनाम्, अन्ये ये पतयो वसन्ति सततं कुर्वन्तु वो मङ्गलम्।। 'अस्मिन् दिवसे ०' इत्यारभ्य, 'कन्या च सावित्री भूयात्' इत्यन्तं पठेत्।

इति कन्यापक्षे तृतीय-शाखोच्चारः।।३।।

वर-कन्या के हाथ से ब्राह्मणगण दोनिया ले लेवें।

१. अन्ये च मङ्गलश्लोकाः शाखोच्चारः (१)

मङ्गलम्।। १ ॥ गावः कामदुघाः सुरेश्वरगजो रम्भादि-देवाङ्गनाः। अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शङ्खोऽमृतं चाऽम्बुधेः, रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु वो तोड़े राम धनुष जाय मिथिला पूर्णावली हर्षिता, इन्द्रादिक सब देवता गगन में थे फूल बर्सादः विश्वामित्र विदेह की सहसभा आनन्द माची महा, जयमाला उर डार सीय सहिता कुर्यात् सदा गङ्गलम्।। २।। माला फूलन की सिय सुवर्णी डाली गले राम के, वर्षा फूलन की भई गगन तें बाजा बजे देव के। राजा मय रनिवास हर्षित भये हर्षित सभै देवता, दीनों आशीर्वाद दोउ कुलन भो कुर्यात् सदा मङ्गलम्।। ३।।

लक्ष्मी - कौस्तुभ-पारिजातक-सुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमाः, शाखोच्चार-मङ्गलाष्टकम् (२) श्रीमत्पङ्कज-विष्टरो हरिहरौ वायुर्महेन्द्रोऽनलश्चन्द्रो भास्कर-वित्तपाल-वरुणाः प्रेताधिपादि-ग्रहाः।

प्रद्युम्नो नलकूबरः सुरगजश्चिन्तामणिः कौस्तुभः स्वामी शक्तिधरश्च लाङ्गलधरः कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥ १॥ गङ्गा गोमति-गोपति-गणपति-र्गोविन्द-गोवर्द्धनो माता गोमय-गौरिजो गिरिसुता गङ्गाधरो गौतमः। गायत्री गरुडो गदाधर-गया-गम्भीर-गोदावरी गन्धर्व-ग्रह-गोप-गोकुलगणाः कुर्वन्तु नो मङ्गलम्।। २।। नेत्राणां त्रितयं शिवं पशुपतेरग्नित्रयं पावनं पुण्यं विष्णुपदत्रयं त्रिभुवनं ख्यातं च रामत्रयम्।

गङ्गावाहपथत्रयं सुविमलं देवत्रयं ब्राह्मणं सन्ध्यानां त्रितयं द्विजैः सुविहितं कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥ ३॥ गौरी श्रीः कुलदेवता च सुभगा भूमिः

प्रपूर्णा शुभा सावित्री च सरस्वती सुरनदी सत्यव्रताऽरुन्धती। सत्या जाम्बवती च रुक्म-भगिनी दुःस्वप्न-विध्वंसिनी वेला चाऽम्बुनिधेः सुमीन-मकराः कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥ ४॥ अश्वत्थो वटवृक्ष-चन्दन-तरुर्मन्दार-कल्पद्रुमौ जम्बू-निम्ब-कदम्ब-चूत-सरला वृक्षाश्च ये क्षीरिणः। सर्वे ते फलसंयुताः प्रतिदिनं विभ्राजनं राजते रम्यं चैत्ररथं च नन्दनवनं कुर्वन्तु नो मङ्गलम् ॥५॥ वाल्मीकिः सनकः सनन्दनतरुर्व्यासो वसिष्ठो भृगु-र्जाबालि -र्जमदग्नि-कच्छजनको गगर्गोऽङ्गिरा गौतमः। मान्धाता भरतो नृपश्च सगरो धन्यो दिलीपो नलः पुण्यो धर्मसुतो ययाति नहुषो कुर्वन्तु नो मङ्गलम्।। ६।। लक्ष्मीः कौस्तुभ-पारिजातकसुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमाः गावः कामदुधाः सुरेश्वरगजो रम्भादिदेवाङ्गनाः। अश्वः सप्तमुखः सुधा हरिधनुः शङ्खो विषं चाऽम्बुधेः रत्नानीति चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्वन्तु नो मङ्गलम्।।७।। गङ्गा सिन्धु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्मदा काबेरी सरयू महेन्द्रतनया चर्मण्वती वेदिका। क्षिप्रा वेत्रवती महासुरनदी ख्याता गया गण्डकी पूर्णाः पुण्यजलैः समुद्र-सहिताः कुर्वन्तु नो मङ्गलम्।।८।।

इति कालिदासकृतं शाखोच्चार-मङ्गलाष्टकं समाप्तम्।

प्रश्न -

१ .पित्रादीनामावाहनम् क्या है।

२ .पित्रादीनामावाहनम् का सविस्तार वर्णन कीजिए।

इकाई 11 : कन्यादानम्

ततः कन्यापिता (भ्राता वा) शङ्खस्थ-दूर्वा ऽक्षत-फल-पुष्प-चन्दन-जलान्यादाय, जामातृ-दक्षिणकरोपरि कन्यादक्षिणकरं निधाय, दाता हस्ते जलमादाय, 'देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्मा, सपत्नीकोऽहम् अस्याः कन्यायाः अनेन वरेण धर्म-प्रजाया उभयोर्वंशवृद्ध्यर्थम्, एवं मम समस्त-पितृणां निरतिशयानन्द- ब्रह्मलोका- वाप्त्यादि-कन्यादान-कल्पोक्तफल-सिद्ध्यर्थमनेन वरेणाऽस्यां कन्यायामुत्पादयिष्य- माणसन्तत्या दशपूर्वान् दशापरान् मां चैकविंशतिपुरुषानुद्धर्तुकामः श्रीलक्ष्मीनारायण-प्रीतये च ब्राह्मविवाहविधिना कन्यादानमहं करिष्ये'। ततो दाता कन्यां प्रार्थयेत्- 'कन्यां कनक-सम्पन्नां कनकाभरणैर्युताम्। दास्यामि विष्णवे तुभ्यं ब्रह्मलोकजिगीषया।। १ ॥ विश्वम्भरः सर्वभूताः साक्षिण्यः सर्वदेवताः। इमां कन्यां प्रदास्यामि पितृणां तारणाय च ॥ २॥

कन्यादान- तदनन्तर कन्या का पिता (या भाई) दायें हाथ में अक्षत, पुष्प, जल लेकर देश-काल का उच्चारण कर 'अमुकगोत्रः' से 'कन्यादानमहं करिष्ये' तक संकल्प उच्चारण कर परात या थाली में छोड़ दे। उसके बाद दाता 'कन्यां कनकसम्पन्नां०' से 'तारणाय च' पर्यन्त श्लोक पढकर कन्या की प्रार्थना करें।

कन्यादान - प्रधान - सङ्कल्पः

'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय प्रहरार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भूर्लोके भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तेक- देशान्तर्गताऽ मुकक्षेत्रे भागीरथ्या अमुकभागे अमुकसंवत्सरे अमुकायने श्रीसूर्ये अमुकऋतौ अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे, अमुगोत्रऽ मुकप्रवरस्य शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत-वाजसनेय-माध्यन्दिनीय-शाखाध्यायिनोऽ मुकशर्मणः

प्रपौत्राय, अमुकगोत्रस्या - ऽमुकप्रवरस्य शुक्लायजुर्वेदान्तर्गत-वाजसनेय-माध्यन्दिनीय शाखाध्यायिनोऽ मुकशर्मणः पौत्राय, अमुकगोत्रस्याऽमुक प्रवरस्य शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत- वाजसनेय- माध्यन्दिनीयशाखाध्यायिनोऽमुक - शर्मणः पुत्राय, अमुकगोत्राया-

कन्यादान का प्रधान संकल्प- दाता (पिता) वर के दाहिने हाथ पर कन्या का दाहिना हाथ रख उस पर शंख में (अथवा देशाचार अनुसार आटे की लोई पर) दुर्वा, कुश, पुष्प, फल, चन्दन, अक्षत, द्रव्य रखे एवं पत्नी के सहित कन्या के हाथ को स्पर्श किये रहें, कन्या का भाई भरे हुए लोटे से धीरे-धीरे जल गिराता रहे, जल की ऽमुकप्रवराय शुक्लयजुर्वेदान्तर्गत-वाजसनेय- माध्यन्दिनीय-शाखाध्यायिने- ऽ मुकशर्मणे वराय, कन्यापक्षे तु-प्रपौत्रीम्, पौत्रीम्, एवं गोत्रप्रवरपूर्वकं प्रपितामहादि- नाम-कन्या-वरनामान्तमुपर्युक्तं वारत्रयं पठित्वा, अमुकगोत्रः अमुकप्रवरः अमुक-शर्माऽहम् अमुकगोत्राम् अमुकप्रवराम् अमुकनाम्नीम् इमां कन्यां सुस्नातां यथाशक्त्यलङ्कृतां गन्धाद्यर्चितां वस्त्रयुगच्छन्नां प्रजापति - दैवत्यां शतगुणीकृत- ज्योतिष्टोमातिरात्र-शतफल-प्राप्तिकामः अमुकशर्मणे श्रीधरस्वरूपिणे वराय पत्नीत्वेन तुभ्यमहं सम्प्रददे।' 'ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथ्वी त्वा प्रतिगृह्णातु।' इति मन्त्रं पठन् वरः गृह्णीयात्।

'ॐ स्वस्ति' इति च ब्रूयात्। ततो दाता- 'यस्त्वया धर्मश्चरितव्यः सोऽनया सह, धर्मे चाऽर्थे च कामे च त्वयेयं नाऽतिचरितव्या।' वरः- 'नाऽतिचरामि' इति

धार टूटे नहीं संकल्प वाक्य आचार्य बोलें- 'ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः' से 'पत्नीत्वेन तुभ्यमहं संप्रददे' दाता कन्या के हाथ को वर के दाहिने हाथ पलट कर अपना हाथ हटा लेवें।

वर- 'ॐ द्यौस्त्वा ददातु पृथ्वी त्वा प्रतिह्णातु' एवं 'ॐ स्वस्ति' कहे। तदनन्तर दाता वर से कहे- 'यस्त्वया पठित्वा, 'कोऽदात् कस्मा ऽअदात् कामोऽदात् कामायादात्। कामो दाता कामः प्रतिगृहीता कामैतत्ते।।' इति

त्रिवारं पठेत्। कन्या-प्रार्थना - ततो दाता- गौरीं कन्यामिमां विप्र! यथाशक्ति-विभूषिताम्। गोत्राय शर्मणे तुभ्यं दत्ता विप्र ! समाश्रय ॥ १ ॥ कन्ये! ममाऽग्रतो भूयाः कन्ये मे देवि! पार्श्वयोः। कन्ये! मे पृष्ठतो भूयास्त्वद्दानान् मोक्षमाप्नुयात्।। २।। मम वंशकुले जाता यावद्-वर्षाणि पालिता। तुभ्यं विप्र ! मया दत्ता पुत्र-पौत्र- प्रवर्धिनी।। ३ ॥ इति पठित्वा, कन्यां प्रार्थयेत्।

कन्यादानसाङ्गता

ततो दाता हस्ते जलमादाय, 'कृतैतत् कन्यादानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थम् इदं धर्मश्चरितव्यः सोऽनया सह' से 'नाऽतिचरितव्या' तक उक्त प्रतिज्ञा-वाक्य कहे। वर भी- 'नाऽतिचरामि' कहकर उसका उत्तर देते हुए 'कोऽदात्' से 'कामैतत्ते' पर्यन्त मन्त्र तीन बार पढ़े।

तत्पश्चात् दाता 'गौरी कन्यामिमां विप्र !' से लेकर 'पुत्र-पौत्र-प्रवर्धिनी' पर्यन्त तीन श्लोकों को पढ़कर कन्या की प्रार्थना करे।

सुवर्णं दक्षिणाद्रव्यं गोमिथुनं च वराय तुभ्यमहं समप्रददे' इति पठित्वा, वरहस्ते जलं

क्षिपेत्।

गो-प्रार्थना

दाता- 'यज्ञसाधनभूता या विश्वस्याऽ घौघनाशिनी। विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा।।' इत्युच्चार्य, गो-प्रार्थनां कुर्यात्।

भूयसीदक्षिणा-सङ्कल्पः - दाता हस्ते जलमादाय 'देशकालौ सङ्कीर्त्य, कृतस्य कन्यादानकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्त-दोषपरिहारार्थं यथोत्साहं भूयसीं दक्षिणां नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमहमुत्सृजे' तज्जलं भूमौ क्षिपेत्।

कन्यादान साङ्गता-हाथ में जल अक्षत तथा सुवर्ण, द्रव्य-दक्षिणा व गोमिथुन दान द्रव्य लेकर 'कृतैतत् कन्यादानकर्मणः ०' से 'तुभ्यमहं

सम्प्रददे' तक पढ़कर वर के दाहिने हाथ में उक्त सुवर्णदान एवं गोदानरूप द्रव्य प्रदान करे।

गो-प्रार्थना- 'यज्ञसाधनभूता या०' से 'अनया गवा' तक श्लोक पढ़कर दाता गौ की प्रार्थना करे। भूयसी-दक्षिणा संकल्प-दाता दाहिने हाथ में जल लेकर देश-काल उच्चारणपूर्वक 'कृतस्य कन्यादानकर्मणः' इस संकल्प द्वारा उपस्थित ब्राह्मणों को भूयसी दक्षिणा देवे।

ततो दाता-

विवाह-विधानम्

'ॐ प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्-विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः ॥ १ ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञ-क्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्'।॥ २॥ -इत्युच्चार्य विष्णुं प्रणमेत्। ततः 'ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।' इति त्रिवारं पठेत्।

इति कन्यादानं समाप्तम्।

ततो वरः पित्रा दत्तां कन्यामादाय, हस्तं गृहीत्वा। ॐ यदैषि मनसा दूरं दिशोऽनु पवमानो वा हिरण्यपर्णो वैकर्णः स त्वां मन्मनसां करोतु।। 'श्रीअमुकी देवी'ति पठन्निष्क्रामति।

तत्पश्चात् 'प्रमादात् कुर्वतां कर्म' से 'ॐ विष्णवे नमः' पढ़कर भगवान् विष्णु की प्रार्थना करे। तत्पश्चात् वर कन्या का हाथ पकड़ कर 'ॐ यदैषि मनसा०' से 'करोतु' तक मंत्र पढ़ता हुआ कन्या का नाम लेकर निकले।

दृढकलशस्थापनम्

ततो वेदिदक्षिणस्यां दिशि जलपूर्ण दृढकलशं तिष्ठतो मौनिनः पुरुषस्य स्कन्धेऽभिषेकपर्यन्तं धारयेत्। कन्यापिता 'परस्परं समीक्षेथाम्' इति ब्रूयात्। ततो वरः- ॐ अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि शिवाः पशुभ्यः सुमनाः सुवर्चाः।

वीरसूर्देवकामाः स्योना शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।। १।। सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद ऽउत्तरः तृतीयोऽग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः ॥ २ ॥ सोमोऽददद् गन्धर्वाय गन्धर्वोऽददग्नये। रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो ऽइमाम्।।३।। सा नः पूषा शिवतमामैरय सा न ऽउरू उशती विहर। यस्यामुशन्तः प्रहराम शेषं यस्मामु कामा बहवो निविष्ट्यै।।४।॥ इति पठित्वा परस्परं निरीक्षयेत्। दृढ़कलश स्थापन-तदनन्तर वेदी के दक्षिण ओर मौन धारण किये हुए मनुष्य के कन्धे पर जल

से पूर्ण कलश अभिषेक पर्यन्त रखे। तत्पश्चात् कन्या का पिता वर से 'आप लोग परस्पर एक दूसरे को देख लें' इस प्रकार कहे। वर भी, 'ॐ अघोरचक्षुरपतिघ्न्येधि०' से 'निविष्ट्यै' तक चार मन्त्र पढ़कर परस्पर एक-दूसरे का निरीक्षण करें।

विवाह-विधानम् ततो वर-कन्येऽग्निं प्रदक्षिणीकृत्य, पश्चादग्नेस्तृणपुलके कटे वा दक्षिणपादं

दत्वा, वधू 'दक्षिणतः कृत्वा, तामुपवेश्य, स्वयमुपविशेत्। गोदानम्-ततो वरः गोदानं कुर्यात्। तद्यथा-'देशकालौ सङ्कीर्त्य, अमुकगोत्रः अमुकशर्माऽहं कन्याग्रहण-दोषनिवृत्त्यर्थं शुभफलप्राप्त्यर्थं च इदं गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं रजतं चन्द्रदैवतं यथानामगोत्राय ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।'

आचार्यवरणम्- 'अद्य कर्त्तव्य-विवाहहोमकर्मणि आचार्यकर्मकर्तुम् एभिर्वरणद्रव्यैः अमुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणम् आचार्यत्त्वेन त्वामहं वृणे।'

तदनन्तर कन्या और वर दोनों अग्नि की प्रदक्षिणा करके आसन पर पहले वर अपना दाहिना पैर रख अपनी दाहिनी ओर कन्या को बैठाकर स्वयं भी बैठ जाय।

गोदान- वर हाथ में जल लेकर 'देशकालौ संकीर्त्य०' यह संकल्प-वाक्य पढ़कर कन्या-ग्रहणदोष-निवृत्ति के

लिए गोदान करे।

१. सीमन्ते च विवाहे च तथा चातुर्थ्यकर्मणि। मखे दाने व्रते श्राद्धे पत्नी दक्षिणतो भवेत्।।

सम्प्रदाने भवेत् कन्या घृतहोमे सुमङ्गली। वामभागे भवेद् भार्या पत्नी चातुर्थ्यकर्मणि।। व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थी सहभोजने। व्रतदाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे।।

वागे सिन्दूर दाने च वामे चैव द्विरागये।

वाम मागे च राय्या, स्त्री तिष्ठति दक्षिणे।।

सर्वेषु धर्मकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभा। अभिषेके विप्रपादक्षालने चैव वामतः।।

प्रार्थना-आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन्नाचार्यो भव सुव्रत!।।

ब्रह्मवरणम्- 'अद्य कर्तव्य-विवाह-होमकर्मणि कृताऽकृताऽवेक्षण-रूप 'ब्रह्मकर्मकर्तुममुकगोत्रममुकशर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।' 'वृतोऽस्मि' इति प्रतिवचनम्।

प्रार्थना - यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्वलोकपितामहः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम!।।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धाभाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।। 'यथा-विहितं कर्म कुरु' इति वरेणोक्ते 'यथाज्ञानं करवावः'

इति ब्रह्मा - आचार्यौ वदेताम्।

आचार्य वरण- अनन्तर वर हाथ में वरण-सामग्री, अक्षत, द्रव्य जल लेकर देश-काल संकीर्तन पुरःसर 'अद्य कर्तव्यविवाहहोमकर्मणि' से 'आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे' तक पढ़कर आचार्य के हाथ में वरण-सामग्री देकर आचार्य का वरण कर 'आचार्यस्तु यथा स्वर्गे' से 'आचार्यो भव सुव्रत' तक पढ़ता हुआ उनकी प्रार्थना करे।

ब्रह्मवरण- पुनः हाथ में जल लेकर 'अद्य कर्तव्यविवाहहोमकर्माण' से 'ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे' तक पढ़कर भूमि पर जल छोड़ते हुए ब्रह्मा का

वरण करे। ब्रह्मा भी 'वृतोऽस्मि' ऐसा कहें। पश्चात् वर 'यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा' से लेकर 'ब्रह्मा भव द्विजोत्तम' तक श्लोक एवं 'व्रतेन०' इत्यादि मंत्र पढ़ता हुआ 'यथा-विहितं कर्म कुरु' ऐसी प्रार्थना- पुरःसर कहे। 'यथाज्ञानं करवाव:' इस प्रकार ब्रह्मा एवं आचार्य दोनों कहें। १२

कुशकण्डिका

ततोऽग्नेर्दक्षिणतः १ शुद्धमासनं दत्वा। अग्नेरुत्तरतः प्रणीता- सनद्वयम्। ब्रह्माणमग्निं प्रदक्षिणीकृत्य, कल्पिताऽऽसने उपवेशयेत्। 'अत्र त्वं मे ब्रह्मा भव।' 'भवामि' इति प्रतिवचनम्। प्रणीतापात्रं पुरतः कृत्वा, वारिणा परिपूर्य, कुशैराच्छाद्य, प्रथमासने निधाय, ब्रह्मणे मुखमवलोक्य, द्वितीयासने निदध्यात्।

तत ईशानादि-पूवयै कुशैः परिस्तरणम्। तद्यथा- ३ बर्हिषश्चतुर्थभागमादाय।

कुशकण्डिका - आचार्य अग्नि की दक्षिण ओर कुशरूप आसन और उत्तर ओर प्रणीता पात्र स्थापन के लिए दो कुश रखे। अग्नि की हाथ से प्रदक्षिणा कर ब्रह्मा को 'अत्र त्वं मे ब्रह्मा भव' कहकर स्थापित करे। ब्रह्मा भी 'भवामि' ऐसा कहें। तथा प्रणीतापात्र को आगे कर उसको जल से पूर्ण कर दो कुशाओं से उस पात्र को ढँककर कुशरूप प्रथम आसन पर रख ब्रह्मा का मुख देख द्वितीय आसन पर उस प्रणीता को रखे।

१. प्रश्नः - उत्तरे सर्वतीर्थानि उत्तरे सर्वदेवताः। उत्तरे प्रोक्षणी प्रोक्ता किमर्थं ब्रह्मदक्षिणे ?।। उत्तरम् - दक्षिणे दानवा प्रोक्ताः पिशाचोरगराक्षसाः। तेषां संरक्षणार्थाय ब्रह्मा स्थाप्यस्तु दक्षिणे।

२. अथाऽग्नेरुत्तरतः प्रागग्रैः कुशैरासनद्वयं कल्पयित्वा, एकमग्नेरुत्तरतः, द्वितीयं तत्पश्चिमे।

यथा-प्रणीता उत्तरे स्थाप्या, वितस्त्यन्तरतोऽग्नितः।

३. एकाशीतिकुशो बर्हिः। चतुःषष्टिकुशो बर्हिः। बर्हिर्दर्भमुष्टिः।

आग्नेयादीशानान्तम्। ब्रह्मणोऽग्निपर्यन्तम्। नैर्ऋत्याद् वायव्यान्तम्। अग्नितः प्रणीतापर्यन्तं कुर्यात्।

ततः पात्रासादनं कुर्यात्। अग्नेरुत्तरतः पश्चिमदिशि पवित्रच्छेदनार्थं कुशत्रयम्। पवित्रकरणार्थं साग्रमनन्तर्गर्भम्। प्रोक्षणीपात्रम्। आज्यस्थाली। सम्मार्जनकुशाः पञ्च। उपयमनकुशाः सप्त। समिधस्तिस्त्रः। स्रुव। आज्यम्। पूर्णपात्रम्। तस्यामेव दिशि शमी-पलाश-मिश्रा लाजाः। दृषदुपलम्। कुमारी-भ्राता। शूर्पः। दृढपुरुषः। आलेपनादि- द्रव्यम्।

परित्रकरणम्। द्वयोरुपरि त्रीणि निधाय, द्वौ मूलेन प्रदक्षिणीकृत्य, त्रिभिश्छिन्द्य,

पुनः हाथ में कुशा लेकर अग्निकोण से ईशान कोण तक, ब्रह्मा से लेकर वेदी तक, नैर्ऋत्य कोण से वायव्यकोण तक एवं अग्नि से प्रणीता पर्यन्त सोलह कुशाओं का परिस्तरण करे।

तदनन्तर अग्नि के उत्तर भाग से पश्चिम में पवित्री के लिए तीन कुशा, पुनः दो कुशा रखे। प्रोक्षणी पात्र, आज्य- स्थाली (घी का कटोरा), संमार्जन कुशा पाँच, उपयमन कुशा सात, समिधा तीन, स्रुवा, घृत, पूर्णपात्र, उसी ओर शमी तथा पलाश मिश्रित लाजा (धान का लावा) सिल, कन्या का भाई, सूप, दृढ़पुरुष एवं ऐपन आदि सामग्री को रखे। अधोलिखित प्रक्रिया से पवित्री बनावे। दो कुशा के ऊपर तीन कुशा को रख कर दो कुशाओं से मूल को द्वौ ग्राह्यौ, त्रिस्त्याज्यः। सपवित्रकरेण प्रणीतोदकं त्रिः प्रोक्षणीपात्रे निधाय। अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां गृहीतपवित्राभ्यां त्रिरुत्पवनम्। प्रोक्षण्यां सव्यहस्तकरणम्। त्रिरुद्दिङ्गनम्। प्रणीतोदकेन प्रोक्षणी-प्रोक्षणम्। प्रोक्षणीजलेना-ऽऽ सादित-वस्तुसेचनम्। अग्निप्रणीतयोर्मध्ये प्रोक्षणीर्निधाय। आज्यस्थाल्यामाज्यनिर्वापः। अधिश्रयणम्। ज्वलदुल्मुकेन पर्यग्निकरणम्। इतरथावृत्तिः। स्रुवप्रतपनम्।

सम्मार्जनकुशानामग्रैरन्तरतो मूलैर्बाह्यतः स्रुवसम्मार्जनम्। प्रणीतोदकेनाऽभ्युक्ष्य सम्मार्जनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः। पुनः स्रुवं प्रतप्य, दक्षिणदेशे निदध्यात्। तत आज्य- घुमाकर, उन तीन कुशाओं को तोड़ कर, दो कुशाओं को ग्रहण करता हुआ तीन कुशाओं का परित्याग करे। उन्हीं दो कुशाओं की पवित्री बनावे। पवित्री वाले हाथ से प्रणीता पात्र के जल को तीन बार प्रोक्षणी पात्र में डाले। अनामिका और अँगूठे से पवित्री को पकड़

कर तीन बार प्रोक्षणी पात्र के जल को प्रादेश मात्र (एक बित्ता) उछाले तथा प्रणीता के जल से प्रोक्षणी का प्रोक्षण करे और उक्त प्रोक्षणी के जल से वेदी के पास स्थापित सभी वस्तुओं का सिंचन करे। अग्नि-प्रणीता के मध्य में प्रोक्षणीपात्र रख दे। तदनन्तर घी के कटोरे में घी रखे। उसे अग्नि पर तपावे और जलती हुई तृण (लकड़ी) से उस घी के कटोरे की प्रदक्षिणा करे। पुनः एक बार उलटी प्रदक्षिणा करे। पश्चात् उस वेदी की अग्नि में स्रुव का प्रतपन करे।

आज्य मग्नेरवतार्य, प्रणीतापश्चिमतो निधाय। अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां गृहीतपवित्राभ्यां प्रोक्षणी- वदुत्पवनम्। अवेक्ष्य। अपद्रव्ये सति तन्निरसनम्। पुनः प्रोक्षण्युत्पवनम्। आज्यमग्नेः पश्चिमतो निधाय। वामहस्ते उपयमनकुशान् आदाय। उत्तिष्ठन् दक्षिणहस्ते समिधो- ऽभ्याधाय, प्रजापतिं मनसा ध्यात्वा, तृष्णीं घृताक्ताः समिधस्तिस्त्रः अग्नौ क्षिपेत्। उपविश्य सपवित्रकरेण प्रोक्षण्युदकेन ईशानादारभ्य, ईशान-पर्यन्तं प्रदक्षिणक्रमेणा-ऽग्निं पर्युक्ष्य इतरथावृत्तिः। प्रणीतापात्रे पवित्रं निधाय पातित-दक्षिण-जानुः, कुशेन

तत्पश्चात् संमार्जन कुशा के अग्र भाग से स्रुवा के निचले भाग को पोंछे और कुशा के अग्र भाग से स्रुवा के ऊपरी भाग का संमार्जन करे तथा प्रणीता पात्र के जल से छिड़के और संमार्जन कुशा का अग्नि में प्रक्षेप करें। पुनः स्रुवा को तपा कर दाहिनी ओर रख दे। तथा आज्यपात्र को अग्नि से उतार कर प्रणीता पात्र के पश्चिम भाग में रखता हुआ अनामिका एवं अँगूठे से पवित्री पकड़ कर प्रोक्षणी की तरह उछाले। उस आज्य (घी) को देखकर उसमें यदि तिनका आदि पड़ गया हो तो उसको निकाल दे। पुनः प्रोक्षणी के समान उसको अग्नि के पश्चिम भाग में रखकर सात उपयमन कुशाओं को बायें हाथ में लेकर तथा तीन समिधाओं को दाहिने हाथ में ग्रहण कर खड़ा होकर प्रजापति का मन से ध्यान करता हुआ उन तीन समिधाओं का मौन होकर अमन्त्रक अग्नि में प्रक्षेप करे। तत्पश्चात् बैठकर पवित्री सहित हाथ से जल द्वारा ईशान कोण से आरम्भ कर पुनः ईशान कोण तक अग्नि के

द्वादशाहुतयः

ब्रह्मणान्वारब्धः १ समिद्धतमेऽग्नौ वेणाऽऽज्याहुतीर्जुहुयात्। इति कुशकुण्डिका समाप्ता।

आघारसंज्ञक - द्वादशाहुतयः

(तत्राघारादारभ्य, द्वादशाहुतिषु तत्तदाहुत्यनन्तरं वा वाऽवस्थित-हुतशेष-घृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः) ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।। १।। (इति मनसा), ॐ इन्द्राय स्वाहा इदमिन्द्राय न मम।। २।। (इत्याघारः), ॐ अग्नये स्वाहा इदमग्नये न मम।।३।। ॐ सोमाय स्वाहा इदमग्नये न मम।।४।। (इत्याज्यभागौ), ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम ॥ ५॥ ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।। ६।। ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।।७।। (एता महाव्याहृतयः)।

चारों ओर जल घुमाता हुआ एक बार उस जल को विपरीत घुमावे। तथा दोनों पवित्रियों को प्रणीता पात्र में स्थापित कर अपना दाहिना घुटना मोड़ कुशा द्वारा ब्रह्मा का स्पर्श करता हुआ प्रज्वलित अग्नि में स्रुवा से घृत की आहुति देवे। आघारादि हवन- तदनन्तर कुशा द्वारा ब्रह्मा का स्पर्श कर 'ॐ प्रजापतये स्वाहा ०' से लेकर 'अदितये स्याम स्वाहा' तक पढ़कर यथाक्रम बारह आहुतियों को प्रदान कर 'इदं वरुणाय०' पढ़कर प्रोक्षणी पात्र में वावशिष्ट

१. अन्वारम्भे कृते होमे ब्रह्मणो दक्षिणे करे। बहुकाष्ठैः समिन्धीयादर्चिष्मन्तं क्रियाक्षमम्।। २. भूरादिनवसु स्विष्ट-कृतिस्वाद्यचतुष्टये। अन्वारब्धो भवेत्तेषु सोऽन्वारम्भः कुशेन हि।। तसात्त्य न ॐ त्वं नोऽ अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडोऽ अवयासिसीष्ठाः यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषार्ट. सि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्निवरुणाभ्यां न मम।।८।। ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठोऽ अस्या उषसो व्युष्टौ अव यक्ष्व नो वरुणर्ट. रराणो वीहि मृडीकर्ट. सुहवो न ऽएधि स्वाहा।। इदमग्निवरुणाभ्यां न मम ॥९॥ ॐ अयाश्चाग्नेऽ स्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽ असि। अयानो यज्ञर्ट. वहास्ययानो धेहि भेषजर्ट. स्वाहा। इदमग्नये अयसे न मम ॥ १०॥ ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः।

तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम ॥ ११ ॥ ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमर्ट. श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो ऽअदितये स्याम स्वाहा।। इदं वरुणायादित्यायादितये न मम।।१२।।

इति प्रायश्चित्तसंज्ञकाः द्वादशाहुतयः।

घृत का प्रक्षेप करे। प्रजापति और इन्द्र दोनों आधार संज्ञक और अग्निसोम आज्य भाग हैं। 'ॐ भूः भुवः स्वः' को महाव्याहृति कहते हैं। 'ॐ त्वां नो' से लेकर 'ॐ उदुत्तमं०' तक की बारह आहुति प्रायश्चित्त संज्ञक है।

राष्ट्रभृद्धोमः

(ततोऽन्वारम्भं विना द्वादशराष्ट्रभृद्धोमः कर्तव्यः। ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्नि- र्गन्धर्व स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदमममृतासाहे ऋतधामेऽग्नये गन्धर्वाय न मम।।१।। ॐ ऋताषाड् ऋतधामाऽग्निर्गन्धर्वस्तस्यौषधयोऽप्सरसो मुदो नाम ताभ्यः स्वाहा। इदमोषधिभ्योऽप्सरोभ्यो मुद्भ्यश्च न मम ॥२॥ ॐ सर्ट. हितो विश्वासामा सूर्यो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदं सर्व. हिताय विश्वसाम्ने सूर्याय गन्धर्वाय न मम।। ३।। ॐ सर्ट. हितो विश्वसामा सूर्यो गन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरस ऽ आयुषो नाम ताभ्यः स्वाहा। इदं मरीचिभ्योऽप्सरोभ्य ऽआयुभ्यो न मम ॥ ४॥ ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदं सुषुम्णाय सूर्यरश्मये चन्द्रमसे गन्धर्वाय न मम ॥ ५ ॥ ॐ सुषुम्णः सूर्यरश्मिश्चन्द्रमा गन्धर्वस्तस्य

राष्ट्रभृत्होम - तत्पश्चात् ब्रह्मा के स्पर्श बिना घृत द्वारा 'ॐ ऋताषाड् ऋतधामाग्नि०' से 'एष्टिभ्यो न मम' तक मन्त्र पढ़कर आहुति देकर प्रोक्षणीपात्र में वावशिष्ट घृत का परित्याग करे।

नक्षत्राण्यप्सरसो भेकुरयो नाम ताभ्यः स्वाहा। इदं नक्षत्रेभ्योऽप्सरोभ्यो भेकुरिभ्यो न मम।। ६।। ॐ इषिरो विश्वव्यचा वातो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म

क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदमिषिराय विश्वव्यचसे वाताय गन्धर्वाय न मम।। ७।। ॐ इषिरो विश्वव्यचा वात गन्धर्वस्तस्यापोऽप्सरस ऽऊर्जो नाम ताभ्यः स्वाहा। इदमद्भ्यो- ऽप्सरोभ्यऽ ऊग्भ्यों न मम। ॥८॥ ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वः स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदं भुज्यवे सुपर्णाय यज्ञाय गन्धर्वाय न मम।। ९।। ॐ भुज्युः सुपर्णो यज्ञो गन्धर्वस्तस्य दक्षिणाऽप्सरसस्तावा नाम ताभ्यः स्वाहा। इदं दक्षिणाभ्योऽप्सरोभ्यस्तावाभ्यो न मम।। १०।। ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्व स न इदं ब्रह्म क्षत्रं पातु तस्मै स्वाहा वाट्। इदं प्रजापतये विश्वकर्मणे मनसे गन्धर्वाय न मम।। ११।। ॐ प्रजापतिर्विश्वकर्मा मनो गन्धर्वस्तस्य ऋक्सामान्यप्सरस- ऽएष्टयो नाम ताभ्यः स्वाहा। इदमृक्सामभ्योऽप्सरोभ्य एष्टिभ्यो न मम।। १२॥ इति राष्ट्रभृद्धोमः।

जयाहोमः

जयासंज्ञकास्त्रयोदशमन्त्राः- ॐ चित्तं च स्वाहा। इदं चित्ताय न मम।। १।। ॐ चित्तिश्च स्वाहा। इदं चित्त्यै न मम।। २।। ॐ आकूतं च स्वाहा। इदमाकूताय न मम।। ३।। ॐ आकूतिश्च स्वाहा। इदमाकूत्यै न मम।।४।। ॐ विज्ञातं च स्वाहा। इदं विज्ञाताय न मम।। ५।। ॐ विज्ञातिश्च स्वाहा। इदं विज्ञात्यै न मम।।६।। ॐ मनश्च स्वाहा। इदं मनसे न मम।।७।। ॐ शक्वरीश्च स्वाहा। इदं शक्वरीभ्यो न मम।।८।। ॐ दर्शश्च स्वाहा। इदं दर्शाय न मम।। ९।। ॐ पौर्णमासं च स्वाहा। इदं पौर्णमासाय न मम।। १०।। ॐ बृहच्च स्वाहा। इदं बृहते न मम।। ११।। ॐ रथन्तरं च स्वाहा। इदं रथन्तराय न मम।। १२।। ॐ प्रजापतिर्जयानिन्द्राय वृष्णे प्रायच्छदुग्रः पृतना जयेषु। तस्मै विशः समनमन्तः सर्वाः स उग्रः स इ हव्यो बभूव स्वाहा।। इदं प्रजापतये जयानिन्द्राय न मम।। १३।।

जयाहोम- इसके बाद सुवा में घृत लेकर 'ॐ चित्तं च स्वाहा०' से प्रारम्भ कर 'न मम' पर्यन्त कह तेरह आहुति प्रदान कर प्रोक्षणीपात्र में खुवा के बचे हुए घृत का परित्याग करे।

अभ्यातानहोमः

(उदकोपस्पर्शः) अभ्यातानसंज्ञकाऽष्टादशमन्त्राः- ॐ

अग्निर्भूतानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा। इदमग्नये भूतानामधिपतये न मम।। १।। ॐ इन्द्रो ज्येष्ठानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा। इदमिन्द्राय ज्येष्ठानामधिपतये न मम।। २।। ॐ यमः पृथिव्या अधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा। इदं यमाय पृथिव्या अधिपतये न मम।। ३।। (अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः।)

ॐ वायुरन्तरिक्षस्याधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा। इदं वायवेऽन्तरिक्षस्याधिपतये अभ्यातान हवन- पुनः 'ॐ अग्निर्भूतानामधिपतिः' से लेकर 'परेभ्योऽवरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यो न मम' तक अठारह मन्त्र पढ़कर आहुति कर सुवावशिष्ट घृत का प्रोक्षणीपात्र में परित्याग करे। न मम ॥ ४॥ ॐ सूर्यो दिवोऽधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामा - शिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा। इदं सूर्याय दिवोऽधियतये न मम ॥५॥

ॐ चन्द्रमा नक्षत्राणामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽ स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा। इदं चन्द्रमसे नक्षत्राणामधिपतये न मम।। ६।। ॐ बृहस्पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽ स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा। इदं बृहस्पतये ब्रह्मणोऽधिपतये न मम।।७।। ॐ मित्रः सत्यानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा। इदं मित्राय सत्यानामधिपतये न मम। ॥८ ॥ ॐ वरुणोऽपामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा। इदं वरुणायाऽपामधिपतये न मम।। ९।। ॐ समुद्रः स्त्रोत्या- नामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा। इदं

समुद्राय स्त्रोत्यानामधिपतये न मम।। १०॥

ॐ अन्नर्ट. साम्राज्यानामधिपतिस्तन्माऽ वत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्य- स्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा। इदमन्नाय साम्राज्यानामाधिपतये न मम ॥ ११॥ ॐ सोम ओषधीनामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽ स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा। इदं सोमाय ओषधीनामधिपतये न मम।। १२।। ॐ सविता प्रसवानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽ स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा। इदं सवित्रे प्रसवानामधिपतये न मम।।१३।। ॐ रुद्रः पशूनामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा। इदं रुद्राय पशूनामधिपतये न मम।। १४।। (अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः १) ॐ त्वष्टा रूपाणामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन्

१. यम-रुद्र-पितृणां च मृतेश्चापि तथैव च। आहुत्यन्ते च कर्तव्यो जलस्पर्शः सदा बुधैः।।

अपि च-यम-रुद्रादिकं हुत्वा स्पृशेत् प्राणीतकं जलम्। इति कर्मकौमुद्यां स्पष्टम्। धूर्जटेस्त्यागमेशान्ये वनगिनोस्तु दक्षिणे। आचार्य-वरयोर्मध्ये मृत्युत्यागो विधीयते। अतोऽग्रेर्दक्षिणतस्त्यागो न प्रोक्षण्याम्। इति। ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽ स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा।

इदं त्वष्ट्रे रूपाणामधिपतये न मम।। १५।। ॐ विष्णुः पर्वतानामधिपतिः स माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा। इदं विष्णवे पर्वतानामधिपतये न मम।। १६।। ॐ मरुतो गणानामधिपतयस्ते माऽवत्वस्मिन् ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽस्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा। इदं मरुद्भयो गणानामधिपतिभ्यो न मम।। १७।।

ॐ पितरः पितामहाः परेऽवरे ततामहाः। इह माऽवत्वस्मिन्

ब्रह्मण्यस्मिन् क्षत्रेऽ स्यामाशिष्यस्यां पुरोधायामस्मिन् कर्मण्यस्यां देवहूत्यार्ट. स्वाहा। इदं पितृभ्यः पितामहेभ्यः परेभ्योऽ वरेभ्यस्ततेभ्यस्ततामहेभ्यो न मम ॥१८॥ (अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः) इत्यभ्यातानहोमः।

माता ॐ अग्निरैतु प्रथमो देवतानार्ट. सोऽस्यै प्रजां मुञ्चतु मृत्युपाशात्। तदयर्ट. राजा वरुणोऽनुमन्यतां यथेयं स्त्री पौत्रमधं न रोदात् स्वाहा। इदमग्नये न मम।। १॥ इमामग्निस्त्रायतां गार्हपत्यः प्रजामस्यै नयतु दीर्घमायुः। अशून्योपस्था जीवतामस्तु पौत्रमानन्दमभिविबुद्ध्यतामियर्ट. स्वाहा। इदमग्नये न मम ॥ २॥ ॐ स्वस्ति नो ऽअग्ने दिव आ पृथिव्या विश्वानि धेह्ययथा यजत्र। यदस्यां महि दिवि जातं प्रशस्तं तदस्मासु द्रविणं घेहि चित्रर्ट. स्वाहा। इदमग्नये न मम।। ३।। ॐ सुगन्नु पन्थां प्रदिशन्न एहि ज्योतिष्मद्धे ह्यजरन्न आयुः। अपैतु मृत्युरमृतं न ऽ आगाद् वैवस्वतो नो ऽअभयं कृणोतु स्वाहा। इदं वैवस्वता न मम ॥४॥ (अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः)।

पश्चाहुतयः

पञ्चाहुति-तत्पश्चात् खुवा में घी लेकर 'ॐ अग्निरैतु प्रथमो०' से 'वैवस्वताय न मम' तक मन्त्र पढ़कर चार आहुतियाँ प्रदान करे।

लाजाहोमः

(ततोऽन्तःपटम्) ॐ परं मृत्यु अनु परेहि पन्थां यस्ते अन्य इतरो देवयानात्। चक्षुष्मते शृण्वते ते ब्रवीमि मा न प्रजार्ट. रीरिषो मोत वीरान् स्वाहा। इदं मृत्यवे न मम।।५।। (अत्र प्रणीतोदकस्पर्शः)।

ततो वधूमग्रतः कृत्वा, वधू-वरौ प्राङ्मुखौ स्थितौ भवतः लाजाहोमं कुर्यात्। तद्यथा-वराञ्जलि-पुटोपरि संलग्न-वध्वञ्जलिस्थ- घृताभिघारित-वधूभ्रातृदत्त-शमी- वर कन्या के मध्य वस्त्र से आड़कर 'ॐ परं मृत्यु अनु०' से लेकर 'इदं मृत्यवे न मम' तक मन्त्र पढ़कर पाँचवीं आहुति देकर प्रोक्षणीपात्र में खुवावशिष्ट घृत का परित्याग करता हुआ प्रणीता के जल को अपने नेत्रों में स्पर्श करे।

लाजाहोम- तदनन्तर वर-वधू पूर्वाभिमुख खड़े होकर वधू को आगे कर, वर की अञ्जलि पर वधू

१. अयं त्यागः, आचार्य-वरयोर्मध्ये।

२ . कर्ममात्राणि भक्ष्याणि लाजामुष्टितः मताः। इति सिद्धान्तशेखरः। एकाहुति त्रिधा कृत्वा आपोशाने बलौ तथा। लाजाहोमं प्रकुर्वीत इति शातातपोऽब्रवीत्।। अन्यच्च - तिष्ठन्त्यतिष्ठता पत्या गृहीताञ्जलिनैव सा। अञ्जलिस्थास्त्रिधा सर्वान् प्राङ्मुखीप्रतिमन्त्रतः।। लाजाः स्युर्व्रीहयो भ्राष्टानुहुयान् मुष्टिसम्मितम्। प्रजापत्येन तीर्थेन दैवेनैवेति बहवृचाः।। भ्रातुरभावे अधिकारिणः- अन्यो भ्रातुरभावे स्यात् बान्धवो जातिरेव वा। भ्रातृस्थाने भ्रातृव्यस्य मातुलस्य च यः सुतः।। मातुः स्वसुः सुतस्तद्वत् तद्वत्पितृस्वसुः सुतः।। -१०७

पलाशमिचैर्लाजैः वधूकर्तृको मन्त्रपाठपूर्वको होमः। ॐ अर्यमणं देवं कन्या ऽअग्निमयक्षत। स नो ऽअर्यमा देवः प्रेतो मुञ्चतु मा पतेः स्वाहा। इदमर्यमणे न मम ॥ १ ॥ ॐ इयं नार्युपब्रूते लाजानावपन्तिका। आयुष्मानस्तु मे पतिरेधन्तां ज्ञातयो मम स्वाहा इदमग्नये न मम।। २।। (इत्यनेन लाजार्धं जुहोति) ॐ इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ समृद्धिकरणं तव। मम तुभ्यं च संवननं तदग्निरनुमन्यतामियर्ट. स्वाहा। इदमग्नये न मम।।३।। (इत्यनेन सर्वान् लाजान् जुहोति।) की अञ्जलि रखकर उसमें वधू के भाई द्वारा चार मुट्ठी घृत एवं शमी-पलाश-मिश्रित लावा से 'ॐ अर्यमणं देवं कन्या०' से लेकर 'इदमर्यमणे न मम' तक मन्त्र उच्चारण कर अञ्जलि स्थित लावा में-से तृतीयांश लावा का अग्नि में हवन करे। पुनः 'इयं नार्य्यपब्रूते ०' से 'इदमग्नये न मम' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर अवशिष्ट तृतीयांश लावा में-से अर्धाश लावा का अग्नि में हवन करे। फिर 'ॐ इमाँल्लाजानावपाम्यग्नौ०' से 'इदमग्नये न मम' तक मन्त्र उच्चारण कर समग्र लावा का होम कर दे। परा ताना

वध्वङ्गुष्ठग्रहणम्

ततो वधूदक्षिणहस्तं साङ्गुष्ठं गृह्णाति वरः- ॐ गृभ्णामि ते सौभगत्वाय

हस्तं मया पत्या जरदष्टिर्यथाऽऽसः। भगो ऽअर्यमा सविता पुरन्धिर्मह्यं त्वाऽदुर्गार्हपत्याय देवा।। १।। ॐ अमोऽहमस्मि सा त्वर्ट. सा त्वमस्यमोऽअहम्। सामोऽहमस्मि ऋक् त्वं द्यौरहं पृथिवी त्वम्।। २।। ॐतावेहि विवहावहै सह रेतो दधावहै। प्रजां प्रजनयावहै पुत्रान् विन्द्यावहै बहून्।। ३।। ॐ ते सन्तु जरदष्टयः संप्रियौ रोचिष्णू सुमनस्यमानौ। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतर्ट. शृणुयाम शरदः शतम्।। ४।।

अश्मारोहणम् ततो वधूमग्नेरुत्तरतः प्राङ्मुखीं पूर्वोपकल्पितं दृषदुपलं दक्षिणपादेनारोहयति वर द्वारा वधू के अँगूठे का ग्रहण- तदनन्तर वर-वधू के दाहिने हाथ के अँगूठे को अपने दाहिने हाथ से पकड़ कर 'ॐ गृभ्णामि ते० ' 'शृणुयाम शरदः शतम्' तक चार मन्त्रों को पढ़े। अश्मारोहण- उसके बाद अग्नि के उत्तर पूर्वाभिमुख बैठी हुई वधू से वहाँ रखे हुए पत्थर पर दाहिना पैर २. मव्येनादाय हस्तेन वधूपादं च दक्षिणाम्। शिलामारोहयेत् प्रागायतां दक्षिणपाणिना।।

वरः। ॐ आरोहेममश्मानमश्मेव त्वर्ट. स्थिरा भव। अभितिष्ठ पृतन्यतोऽ वबाधस्व पृतनायतः।। इति मन्त्रेण तां शिलामारोहयित्वा आरूढायामेव तस्यां वरो गाथां गायति-ॐ सरस्वति प्रेदमव सुभगे वाजिनीवति। यां त्वा विश्वस्य भूतस्य प्रजायामस्याग्रतः। यस्यां भूतर्ट. समभवद्यस्यां विश्वमिदं जगत्। तामद्य गाथां गास्यामि या स्त्रीणामुत्तमं यशः।। ततोऽग्रे वधूः पश्चाद् वरः प्रणीता-ब्रह्मसहितमग्निं प्रदक्षिणं कुरुतः। तत्र वरस्य पठनीयो मन्त्रः- ॐ तुभ्यमग्ने पर्यवहन्त्सूर्या वहतु ना सह। पुनः पतिभ्यो जायां दाऽग्ने प्रजया सह।।

ततः पश्चादग्नेः स्थित्वा, लाजाहोम-साङ्गुष्ठहस्तग्रहणाऽश्मारोहण-गाथागायना-

रखवाये एवं 'ॐ आरोहेम०' से 'पृतनायतः' तक मन्त्र वधू पढ़े तथा वर भी 'ॐ सरस्वति प्रेदमव०' से 'स्त्रीणामुत्तमं यशः' पर्यन्त मन्त्रोच्चारण करे और वर-वधू को अपने आगे कर प्रणीता और ब्रह्मा सहित 'ॐ तुभ्यमग्ने०' से लेकर 'प्रजया सह' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर अग्नि की परिक्रमा करे।

तदनन्तर वेदी के पीछे खड़े होकर लाजा होम, अँगूठे के साथ हस्त ग्रहण, अश्मारोहण, गाथागान तथा वर और वधू दोनों प्रदक्षिणा करें। इसी प्रकार तीन बार प्रदक्षिणा करने से नव लाजाहुति।

लाजाहोमः

ऽग्निप्रक्षिणानि पुनरपि द्विस्तथैव। एता नव लाजाहुतयः। साङ्गुष्ठहस्तग्रहणत्रयम्। अश्मारोहणत्रयम्। गाथा-गानत्रयं च सम्पद्यते।

तदनन्तरमवशिष्टलाजैः कन्याभ्रातृ-दत्तैरञ्जलिस्थ-शूर्पकोणेन वधूर्जुहोति। ॐ भगाय स्वाहा। इदं भगाय न मम।

अग्रे वरः पश्चाद् वधूस्ततस्तूष्णीं चतुर्थपरिक्रमणं कुर्यात्। ततो वर उपविश्य ब्रह्मणाऽन्वारब्धः आज्येन प्राजापत्यं जुहुयात्। ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम। अत्र प्रोक्षणीपात्रे हुतशेषाज्यप्रक्षेपः।

तीन बार अश्मारोहण एवं तीन बार गाथागान पूरा होता है-इस तरह नव लाजाहुति सम्पन्न हुई। पुनः कन्या का भाई पूरा लावा कन्या के सूप में गिरा दे, कन्या सूप के कोने से लावा नीचे की तरफ गिरावे तथा वर या आचार्य उस लावा को हाथ में लेकर 'ॐ भगाय स्वाहा०' मन्त्र पढ़कर अग्नि में हवन करे। पुनः वधू को पीछे कर वर बिना मन्त्र के चौथी प्रदक्षिणा करे तथा वर बैठकर कुशा द्वारा ब्रह्मा से स्पर्श कर 'ॐ प्रजापतये स्वाहा' कहकर घी से आहुति देवे और 'इदं प्रजापतये न मम' कहकर खुवा में बचे हुए घी को प्रोक्षणीपात्र में छोड़ दे।

१. लाजानाज्यं सुर्व कुम्भं द्विकमस्मानमेव च। एतेषां बाह्यतः कृत्वा शेषस्येव प्रदक्षिणा।।

सप्तपदी

तत आलेपनेनोत्तरोत्तरकृत-सप्तमण्डलेषु पूगीफलस्थेषु (अक्षतपुंजे वा) सप्तपदाक्रमणं वरः कारयति वक्ष्यमाणमन्त्रैः। तत्र प्रथमे-ॐ एकमिषे विष्णुस्त्वा नयतु ॥१॥ द्वितीये-ॐ द्वे ऊर्जे विष्णुस्त्वा नयतु।। २।। तृतीये-ॐ त्रीणि रायस्पोषाय विष्णुस्त्वा नयतु।। ३।। चतुर्थे-ॐ चत्वारि

मायोभवाय विष्णुस्त्वा नयतु।।४।। पञ्चमे-ॐ पञ्च पशुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु।।५।। षष्ठे-ॐ षड्- ऋतुभ्यो विष्णुस्त्वा नयतु।। ६।। सप्तमे-ॐ सखे सप्तपदा भव सा मामनुव्रता भव विष्णुस्त्वा नयतु ॥ ७॥

पुराणोक्त - सप्तपदी - श्लोकाः

कन्योवाच -

लब्धोऽसि त्वं मया भर्तः ! पुण्यैश्च विविधै कृतैः। देवीसम्पूजिता नित्यं वन्दनीयोऽसि मे सदा।।

सप्तपदी- तदनन्तर सात जगह अक्षत-पुंज (अक्षत-ढेरी) पर सुपारी रखकर वर वधू के अंगूठे द्वारा क्रम से 'ॐ एकमिषे०' से 'विष्णुस्त्वा नयतु' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर सात बार स्पर्श कराकर उस ढेरी को हटावे।

सप्तपदी

सुख-दुःखानि कर्माणि गृहस्थस्य भवन्ति हि। भव सौम्य ! सदैव त्वं कन्या एकमिषे वदेत्।। १।।

वापी-कूप-तडागानि यज्ञ- यात्रा-महोत्सवान्। नाऽऽरम्भेदननुज्ञाय द्वे ऊर्जेऽपि तथा वदेत्।। २।।

व्रतोद्यापन-दानानि स्त्रीणां भावाः स्वभावजाः। कृत्यभङ्गो न ते कार्यस्त्रीणि रायस्तथा वदेत्।। ३।॥ स्वकर्मणाऽर्जितं वित्तं पशु- धान्य- धनागमम्। सर्वं निवेदयेन्मह्यं चत्वारीति तथा वदेत्।। ४।।

पुराणोक्त सप्तपदी श्लोक- कन्या वर से सात श्लोकों द्वारा 'लब्धोऽसि त्वं०' से 'तदा मां प्रतिपालयेत्' पर्यन्त वाक्य कहती है।

कन्या ने कहा- हे पतिदेव! मैंने श्रद्धाभक्ति पूर्वक अनेक पुण्य कार्य किये तथा देवी का पूजन भी किया, इसी से आप पति रूप में हमें प्राप्त हुए। आप निरन्तर हमसे पूजनीय हैं। गृहस्थाश्रम में सदा सुख-दुःख आते-जाते रहते हैं, उसमें आप सदा शान्तचित्त रहें, यह आपसे मेरी पहली माँग है।।१।।

हे स्वामिन्! अब से आप बावली, कूप, तालाब आदि का निर्माण, यज्ञ, यात्रा, उत्सवादि समस्त कार्य मेरी अनुमति के बिना न करें। इस प्रकार कन्या अँगूठे से दूसरी सुपारी हटाकर कहे।॥२॥

हे पतिदेव! व्रत, उद्यापन, दान आदि करना स्त्रियों का स्वाभाविक धर्म है, मेरे इस कार्य में आप कभी बाधा न डालें। यह मैं आपसे तीसरी माँग करती हूँ।।३।।

हे स्वामिन्! आप अपने पुरुषार्थ द्वारा जो भी धन कमाकर लावें तथा बैल, गाय आदि पशु या अन्न, द्रव्य सभी मुझे समर्पित करें। यह चौथी माँग कन्या ने की।।४।।

गजा-ऽश्वादि-पशूनां च हेयोपादेय-कारणम्। अनापृच्छ्य न कर्त्तव्यं पञ्च पश्चिति संवदेत्।। ५।। भूषणानि विचित्राणि रत्न-धातुमयानि च। दद्यान्न प्रतिगृह्णीयात् षड्-ऋतावपि संवदेत्।। ६।।

गीत-वादित्र-माङ्गल्यं बन्धूनां च गृहे सदा। अनाहूता गमिष्यामि तदा मां प्रतिपालयेत्।। ७॥ वरोक्तानि पञ्चवाक्यानि

वर उवाच-

क्रीडा-शरीर - संस्कार- समाजोत्सव-दर्शनम्। हास्यं परगृहे यानं त्यजेत् प्रोषितभर्तृका।। १।।

हे पतिदेव! आज से आप हाथी, घोड़े आदि पशुओं का खरीदना या बेचना बिना हमसे पूछे न करें। कन्या इस पाँचवें वाक्य द्वारा कहती है।॥५॥

हे पतिदेव! समय-समय पर जो आप हमको रत्न और सोने-चाँदी धातुओं से बने अनेक प्रकार के आभूषणों एवं चित्र-विचित्र वस्त्रों को दें, उनको पुनः आप लेने का लोभ न करें-यह कन्या अपने छठें वाक्य में कहे।।६।।

यहा पर तीर्थ व्रतोद्यापन यज्ञदान से मदीम चित्तानुगतं च चित्तां मदीय आज्ञा परियालनन्च पतिव्रता धर्म परामणत्वारं कुय्र्या सदा सर्वमिमं

प्रयत्न का आचार्य गण वर पक्ष एवं कन्या पक्ष के सामने करे और इसके महत्व को बताएं।

हे स्वामिन्! अपने भाई-बन्धुओं के घर (एवं मैके में) जब भी मांगलिक कार्य होगा और गाना-बजाना होगा, उस समय मैं बिना बुलाये ही चली जाऊँगी, उस समय आप मुझे अपमानित न करेंगे। अर्थात् उसमें आप बाधा न पहुँचायेंगे। यह कन्या अपने सातवें वाक्य में कहे।॥७॥

इस प्रकार वर भी 'क्रीडा-शरीर-संस्कार०' से 'भव वामाङ्गगामिनी' पर्यन्त पाँच श्लोक कन्या से कहे। वर ने कहा- हे प्रिये! मेरे घर पर रहने के समय क्रीड़ा (हँसी-मजाक), पाउडर, लिपिस्टिक आदि से शरीर विष्णुर्वैश्वानरः साक्षी ब्राह्मण-ज्ञाति-बान्धवाः। पञ्चमं ध्रुवमालोक्य स- साक्षित्वं ममागता।। २॥ तव चित्तं मम चित्तं वाचा वाच्यं न लोपयेत्। व्रते मे सर्वदा देयं हृदयं स्वं वरानने!।। ३।। मम तुष्टिश्च कर्तव्या बन्धूनां भक्तिरादरात्। ममाऽऽज्ञा परिपाल्यैषा पातिव्रतपरायणे! ॥ ४॥ विना पत्नी कथं धर्म आश्रमाणां प्रवर्त्तते। तस्मात् त्वं मम विश्वस्ता भव वामाङ्गगामिनी ॥५॥

इति सप्तपदी समाप्ता।

सजाना, सामाजिक कार्य, देवदर्शन आदि, हास-परिहास, दूसरे के घर जाना आदि कार्य करो। किन्तु पति के परदेश चले जाने पर आने तक पतिव्रता स्त्री को पूर्वोक्त कार्यों को नहीं करनी चाहिए। इसलिए मैं भी तुमको उपर्युक्त नियमों का पालन करने हेतु सदा सचेष्ट रहने के लिए उपदेश देता हूँ।।१।। हे देवि! तुम्हारे साथ इस मेरे विवाह में भगवान् विष्णु, अग्नि, ब्राह्मणगण, बन्धु-बान्धवगण और पाँचवें सूर्य (या ध्रुव नक्षत्र) साक्षी के रूप में हैं। इनके साक्षित्व में आज से तुम मेरी पत्नी हुई हो।।२।।

हे वरानने! तुम सदैव अपना चित्त मेरे अनुकूल रखना, हमारी उचित आज्ञा का उल्लङ्घन नहीं करना। मैं जो कुछ तुमसे कहूँ, उसे अपने मन

में ही रखना और मेरे नियम के अनुकूल अपने हृदय को रखना।।३।। हे पतिव्रते! तुम्हारा परम कर्तव्य है कि, जिस प्रकार मुझे सन्तोष हो, उसी प्रकार कार्य करना और माता-पिता, भाई-बन्धुओं के विषय में आदरपूर्वक भक्तिभाव रखना एवं सदा मेरे आदेश का पालन करना।।४।। हे सुमुखि! पत्नी के बिना गृहस्थाश्रम धर्म का पालन नहीं हो सकता, अतः तुम मेरी विश्वासपात्र वामाङ्गी एवं सहधर्मिणा बनो। इन पाँचों श्लोकों को बर अथवा उसके आचार्य कहें।।५।।

वरकृताभिषेकः

ततोऽग्नेः पश्चादुपविश्य, दृढपुरुष-स्कन्धस्थित-कुम्भादाम्रपल्लवेन जलमानीय, तेन जलेन वरो वधूमभिषिञ्चति। ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्। पुनः कुम्भादानीत-जलेनात्मानमभिषिञ्चति वरः- ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।। १।। ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।। २।। ॐ तस्मा ऽ अरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः ॥ ३ ॥ इति त्रिभिर्मन्त्रै-रात्मानमभिषिञ्चति।

दिवालग्ने सूर्यदर्शनम्

ततः 'सूर्यमुदीक्षस्वे'ति वरः वधू सम्बोध्य, वरो वदेत्-ॐ तच्चक्षुर्देवहितं

अभिषेक - तत्पश्चात् अग्नि के पीछे बैठकर वर दृढ़ पुरुष के कन्धे पर रखे कलश-जल को लेकर आम के पल्लवों से 'ॐ आपः शिवाः' से 'कृण्वन्तु भेषजम्' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर वधू के मस्तक पर छिड़के। पुनः उसी कलश के जल से 'ॐ आपोहिष्ठ०' से लेकर 'आपो जनयथा च नः' तक इन तीन ऋचाओं द्वारा अपने ऊपर जल का सिंचन करे।

हृदयालम्भनम्

पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतर्ट. श्रृणुयाम शरदः शतं प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः भूयश्च शरदः शतात्।।

रात्रिलग्ने ध्रुवदर्शनम्

अस्तमिते सूर्ये 'ध्रुवमुदीक्षस्वे'ति प्रैषानन्तरं ध्रुवं पश्यति वधूः- ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं त्वा पश्यामि ध्रुवैषि पोष्ये मयि मह्यं त्वा ऽअदात्। बृहस्पतिर्मया पत्या प्रजावती सञ्जीव शरदः शतम्।।

हृदयालम्भनम्

तदनन्तरं वरो वधूदक्षिणांसस्योपरि स्वदक्षिणहस्तं नीत्वा, तस्या हृदयमालभेत्। ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि। मम चित्तमनु चित्तं ते ऽअस्तु। मम वाचमेकमना जुषस्व। प्रजापतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्।

सूर्य दर्शन- इसके बाद यदि दिन का लग्न हो, तो वर-वधू से 'सूर्यमुदीक्षस्व' ऐसा कहे और 'तच्चक्षुर्देवहितं' से 'शरदः शतात्' पर्यन्त मन्त्र का पाठ करे। ध्रुव दर्शन- यदि रात्रि का लग्न हो, तो वर-वधू से 'ध्रुवमुदीक्षस्व' ऐसा कहकर 'ॐ ध्रुवमसि ध्रुवं' से 'शरदः शतम्' तक मन्त्र पढ़े।

सिन्दूरदानम्

तत्पश्चाद् वधूमभिमन्त्रयति वरः ॐ सुमङ्गलीरियं वधूरिमा समेत पश्यत। सौभाग्यमस्यै दत्वा याथाऽस्तं विपरेत न।।

ततो वरस्थ वामभागे कन्या गत्वा, ग्रामसुभगस्त्रियः पुनरपि सिन्दूरकरणं कुर्युः।

हृदय-स्पर्श- तदनन्तर वर-वधू के दाहिने कन्धे से हाथ ले जाकर 'ॐ मम व्रते ते हृदयं०' से 'नियुनक्तु मह्यम्' पर्यन्त मन्त्र उच्चारण कर उसके हृदय का स्पर्श करे।

सिन्दूरदान- पुनः वर अपनी अनामिका अँगुली को वधू के मस्तक पर रखकर 'ॐ सुमङ्गलीरियं वधूरिमा०' से 'विपरेत न' तक मन्त्र पढ़कर वधू के माँग में सिन्दूर भरे।

इसके अनन्तर वधू को अपने बायें भाग में बैठावे एवं उपस्थित चार सौभाग्यवती स्त्रियाँ वधू के माँग में 'अखण्ड सौभाग्यवती भव' कहकर भलीभाँति सिन्दूर लगावें। इसी को सिन्दूर बहोरना कहते हैं।

१. वामे सिन्दूरदाने च वामे चैव द्विरागमे। वामभागे च शय्यायां नामकर्म तथैव च।। शान्तिकेषु च सर्वेषु प्रतिष्ठोद्यापनादिषु। वामे ह्युपविशेत् पत्नी व्याघ्रस्य वचनं यथा।।

२. अत्र कुलाचाराद् वृद्धानां वचनं कर्तव्यम्। पतिपुत्रान्विता भव्याश्चतस्रः सुभगा अपि।। सौभाग्यमस्यै दद्युस्तां मङ्गलाचारपूर्वकम्। इति कारिकोक्तम्।

कन्यावरयोग्र्रन्थिबन्धनम्

ततः - ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाऽऽप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।। इत्यनेन मन्त्रेणाचार्यः कन्या-वरयोग्रन्थिबन्धनं कुर्यात्। तत्पश्चात् कन्यावरौ गुप्तागारे गत्वा, लोहितानडुहचर्मणि, प्रतिलोमास्तीर्णकुशेषु वा, उपवेशयेद् वरः। ॐ इह गावो निषीदन्त्विहाश्वा ऽइह पूरुषाः। इह सहस्रदक्षिणो यज्ञ ऽइह पूषा निषीदन्तु।। इति मन्त्रेण।

पुनः वधू-वरौ मण्डपमागत्य, ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम। अयं च होमो ब्रह्मणान्वारब्धकर्तृकः। संस्रवप्राशनम्। आचमनम्।

ग्रन्थिबन्धन - तदनन्तर वर-कन्या का ग्रन्थिबन्धन आचार्य 'ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति०' से 'श्रद्धया सत्यमाप्यते' तक मन्त्र पढ़ कर करें। पश्चात् वर-वधू दोनों कोहबर में जाकर लाल बैल के चमड़े पर या कुशासन पर 'ॐ इह गावो०' से 'पूषा निषीदन्तु' तक मन्त्र पढ़कर बैठ जायें।

स्विष्टकृतहवन- पुनः दोनों ही मण्डप में आकर कुश से ब्रह्मा का स्पर्श करते हुए, 'ॐ अग्नये स्विष्टकृते पवित्राभ्यां मार्जनम्। ॐ सुमित्रिया न ऽआप ऽओषधयः सन्तु। इति मन्त्रेण पवित्रे गृहीत्वा, प्रणीताजलेन शिरः सम्मृज्य। अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः। ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् वरो हस्ते जलमादाय, ॐ अद्य कृतैतद्-विवाह- होमकर्मणि कृताऽकृतावेक्षण- रूपकर्मप्रतिष्ठार्थम् इदं पूर्णपात्रं स-दक्षिणाकं प्रजापतिदैवतम् अमुकगोत्राया- ऽ मुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रदे। 'ॐ स्वस्ति' इति ब्रह्मा वदेत्। एवमेवाचार्याय

सङ्कल्पं कृत्वा, दक्षिणां दद्यात्।

ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः। अग्नेः पश्चादैशान्यां वा प्रणीतान्युब्जीं कृत्वा, ॐ

स्वाहा' से एक आहुति देकर 'इदमग्नये स्विष्टकृते न मम' कहकर प्रोक्षणी पात्र में सुवावशिष्ट घृत का प्रक्षेप करें।

तथा प्रोक्षणी में छोड़े छोड़े हुए घृत का प्राशन कर आचमन करें। 'ॐ सुमित्रिया न आप०' इस मन्त्र को पढ़कर प्रणीता पात्र के जल को कुशा द्वारा अपने शिर पर छिड़कता हुआ उन कुशों को अग्नि में छोड़ दे। पूर्णपात्रदान-तदनन्तर वर दाहिने हाथ में जल लेकर 'ॐ अद्य कृतैतद्०' से 'तुभ्यमहं सम्प्रददे' पर्यन्त संकल्प पढ़कर पूर्णपात्र ब्रह्मा को प्रदान करे और ब्रह्मा भी 'स्वस्ति' ऐसा कह दें। इसी प्रकार संकल्प द्वारा आचार्य को भी दक्षिणा दे।

पवित्राभ्यां मार्जनम्। ॐ सुमित्रिया न ऽआप ऽओषधयः सन्तु। इति मन्त्रेण

पवित्रे गृहीत्वा, प्रणीताजलेन शिरः सम्मृज्य। अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः। ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् वरो हस्ते जलमादाय, ॐ अद्य कृतैतद्-विवाह-होमकर्मणि कृताऽकृतावेक्षण- रूपकर्मप्रतिष्ठार्थम् इदं पूर्णपात्रं स-दक्षिणाकं प्रजापतिदैवतम् अमुकगोत्राया- ऽ मुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रदे। 'ॐ स्वस्ति' इति ब्रह्मा वदेत्। एवमेवाचार्याय सङ्कल्पं कृत्वा, दक्षिणां दद्यात्।

ततो ब्रह्मग्रन्थिविमोकः। अग्नेः पश्चादैशान्यां वा प्रणीतान्युब्जीं कृत्वा, ॐ स्वाहा' से एक आहुति देकर 'इदमग्नये स्विष्टकृते न मम' कहकर प्रोक्षणी पात्र में सुवावशिष्ट घृत का प्रक्षेप करें।

तथा प्रोक्षणी में छोड़े छोड़े हुए घृत का प्राशन कर आचमन करें। 'ॐ सुमित्रिया न आप०' इस मन्त्र को पढ़कर प्रणीता पात्र के जल को कुशा द्वारा अपने शिर पर छिड़कता हुआ उन कुशों को अग्नि में छोड़ दे। पूर्णपात्रदान-तदनन्तर वर दाहिने हाथ में जल लेकर 'ॐ अद्य कृतैतद्०' से 'तुभ्यमहं सम्प्रददे' पर्यन्त संकल्प पढ़कर पूर्णपात्र ब्रह्मा को प्रदान करे और ब्रह्मा भी 'स्वस्ति' ऐसा कह दें। इसी प्रकार संकल्प द्वारा

आचार्य को भी दक्षिणा दे।

त्र्यायुषकरणम्

दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः। इति न्युब्जीकरणम्। तत उपयमनकुशैर्मार्जयेत्। ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्। उपयमनकुशानामग्नौ प्रक्षेपः।

ततः स्रुवेण भस्मानीय अनामिकया, 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' इति ललाटे। 'ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्' इति ग्रीवायाम्। 'ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्' इति दक्षिणबाहुमूले। 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्' इति हृदि। वध्वाऽपि अनेनैव क्रमेण 'तन्नो' इत्यस्य स्थाने 'तत्ते' इति विशेषः।

पुनः कुशनिर्मित ब्रह्मा की ग्रन्थी को खोल दे, तथा 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु०' इस मन्त्र से प्रणीता पात्र को

उलट दे। उपयमनकुशा से 'ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः' से 'कृण्वन्तु भेषजम्' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर प्रणीतापात्र से गिरे हुए जल से मार्जन कर उपयमन कुशाओं को अग्नि में प्रक्षेप कर दे। तदनन्तर स्रुवा से भस्म लेकर अनामिका अँगुलि से 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' से लेकर 'ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर ललाट, ग्रीवा, दक्षिणा बाहुमूल एवं हृदय में लगाये। उसी प्रकार वधू को भी भस्म लगाये। यहाँ विशेषता यह है कि, 'तन्नो अस्तु' के स्थान पर 'तत्ते अस्तु' ऐसा कहें।

अभिषेकः (१)

तत आचार्यः निम्नाङ्कित- श्लोकैर्वर-वधू दृढपुरुषस्कन्धस्थित-कलशजलेना- ऽभिषिञ्चयेत्।

गणाधिपो रविर्विधुः धरासुतो बुधो गुरुः कविः शनिर्विधुन्तुदश्च केतुरित्यमी ग्रहाः। धराम्बुतेजसस्तथा सुगामरालयौ सदा दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः ॥१॥ अजो-ऽज-युग्म-कर्कटे सुतुण्डकन्यका तुला परे तथाऽलि-चाप-नक्र-कुम्भ-मीनराशयः। जया च भद्रसंज्ञिका तु

पूर्णरिक्तनन्दिका दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः॥२॥ अशेष-लेख-रञ्जिनी सुरारिदर्प-गञ्जिनी निशुम्भ-शुम्भ- भञ्जिनी धराधरेन्द्र-नन्दिनी। समस्त-जाड्य-खण्डिनी नितान्त लोकमण्डिनी दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः॥३॥

गजासनः खगासनः प्रफुल्ल-पङ्कजासनो हुताशनः शरासनो हरिस्तु पन्नगासनः।

वृषासनः सुरासनः सुरारिदर्पनाशनो दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः ॥४॥

इसके बाद पुरुष के कन्धे से घड़े का जल लेकर आम्रपल्लव द्वारा आचार्य 'गणाधिपो०' से लेकर 'भवन्तु मङ्गलाय वः' एवं 'शिव हरे विजयं कुरु मे वरम्' पर्यन्त पढ़कर वर-वधू का मार्जन करें।

प्रयाग-पुष्कर-प्रभास-बिन्दु-मानसादयो ऽविमुक्त-युक्त-कोशलामला गया त्ववन्तिका। पुरी मधौश्च नैमिषास्य दर्दरश्च कान्तिका दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः॥५॥ वसिष्ठ-वामदेव-धौम्य-नारदा-ऽत्रि-अङ्गिरा-स्त्वगस्त्य-शक्ति-कौशिकाऽसिताः सनन्दनादयः। शुकोऽथ कण्व-बालखिल्ल-याज्ञवल्क्य-कश्यपाः दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः।। ६।। पृथुः पुरूरवा नृगो दधीचिरिन्द्रहारको भगीरथो तमधुवांशुमान् सहस्रबाहवः। रघुर्नलो ययाति-धुन्धुमार-सव्यसाचिनो दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः ॥७॥ वियन्नदी सरस्वती कलिन्द-नन्दिनी सई शशिप्रभा च गण्डकी च गोमती ककुद्मती। असी च वामतो हि नर्मदा च सप्तसागराः दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः॥८॥ सरस्वती रमा सती ह्यरुन्धती महीसुता पृथा च गौतमप्रियात्रिवल्लभा च देवकी। शची सुदक्षिणा शकुन्तला च द्रौपदी क्षमा दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः ॥९॥ हिमालयः सुरालयस्तथा च शङ्करालयो महेन्द्र विन्ध्य-ऋष्य-मूक-कूट-मन्दरादयः। सुवेल-गन्धमादनोदयाद्रि - भूधराश्च ये दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः ॥१०॥

युधिष्ठिरोऽथ विक्रमार्क - शालिवाहनो नृपो विदूरथोऽभिनन्दनो-ऽर्जुनश्च

नागयुक् सदा। इमे च कल्किसंयुताश्च षट् शकप्रवर्त्तकाः दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः ॥ ११॥ अथर्व-ऋग्-यजूंषि सामसंज्ञकोऽष्टसिद्धयः प्रमत्त-दिग्गजा बलि-महेन्द्र-वाहनादयः। वटोऽ क्षयश्च केतुकल्प-भूरुहादि-भूरुहा दिने दिने प्रतिक्षणं भवन्तु मङ्गलाय वः ॥१२॥

वर-वध्वोर्गणेशपूजनम्

ततो वरः 'सुमुखश्चैकदन्तश्च०' इत्यादि मङ्गलश्लोकान् पठित्वा हस्ते जलमादाय, 'देशकालौ सङ्कीर्त्य, गोत्रः शर्मा सपत्नीकोऽहं द्विरागमन-निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं गणपत्याद्यावाहित- देवानां पूजनं करिष्ये' इति सङ्कल्प्य, यथाविहित-सामग्र्या पूजनं कुर्यात्।

हस्ते पुनर्जलमादाय, 'अद्य कृतैतद्-विवाहकर्मणः साङ्गता-सिद्ध्यर्थम् आचार्याय इस प्रकार आचार्य वर-वधू को अभिषिंचित कर 'स्वस्ति न इन्द्रो०' अथवा 'स्वस्तिस्तु या विनाशाख्या०' मन्त्र एवं श्लोकों को पढ़कर वर को तिलक लगायें। वर-वधू द्वारा गणेशाम्बिका पूजन-तत्पश्चात् वर 'सुमुखश्चैकदन्तश्च०' इत्यादि मंगल श्लोकों को पढ़कर हाथ में जल लेकर 'देशकालौ सङ्कीर्त्य०' से 'पूजनं करिष्ये' तक संकल्प पढ़कर यथाविहित सामग्री से मण्डपस्थ गणेशादि देवों का पूजन करे।

वरवध्वोर्गणेशपूजनम्

मनसोद्दिष्टां दक्षिणां तथा तन्मध्ये न्यूनाति-रिक्तदोष- परिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृजे।' इत्युच्चार्य भूयसीदक्षिणा- माचार्यदक्षिणां च दद्यात्।

ततो वरः-

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्-विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ १॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञ-

क्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्।। २।।॥ 'ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः।' इत्याचार्यः विष्णुं प्रार्थयेत्।

इति विवाह-विधानं समाप्ता।

वर पुनः हाथ में जल लेकर 'अद्य कृतैतत्०' से 'दातुमहमुत्सृजे' तक संकल्प पढ़कर आचार्य-दक्षिणा तथा उपस्थित ब्राह्मणों को भूयसी दक्षिणा दे। इसके पश्चात् वर 'प्रमादात् कुर्वतां कर्म०' से 'सद्यो वन्दे तमच्युतम्' तक दो श्लोक पढ़कर देवताओं को नमस्कार करते हुए 'ॐ विष्णवे नमः' ऐसे तीन बार कहकर भगवान् विष्णु की प्रार्थना करे।

इस प्रकार विवाह विधान समाप्त।

अथ चतुर्थीकर्म

ततश्चतुर्थ्यामपररात्रौ वरः स्नानादिकं कृत्वा, उभावपि शुभासने प्राङ्मुखावुपविश्य, आचम्य प्राणानायम्य, 'अपवित्रः पवित्रो वा०' इति आत्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य, हस्ते अक्षत-पुष्पाणि गृहीत्वा, 'आ नो भद्रादीन्' - मङ्गलमन्त्रान् पठित्वा, हस्ते जलमादाय, 'देशकालौ सङ्कीर्त्य, गोत्रः शर्मा सपत्नीकोऽहं मम अस्या भार्यायाः सोम-गन्धर्वा- ऽग्न्युपभुक्तदोष- परिहाराय विवाहाच्चतुर्थ्यामपररात्रे चतुर्थीकर्म करिष्ये।' तत्रादौ निर्विघ्नतासिद्ध्यर्थं श्रीगणपत्यादिदेवता पूजनं च करिष्ये। पुनर्हस्ते जलमादाय, 'अस्मिन् चतुर्थीकर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकम् अग्निस्थापनं च करिष्ये।'

चतुर्थी कर्म- तदनन्तर विवाह के चौथे दिन, वर-वधू दोनों स्नान कर पूर्वाभिमुख आसन पर बैठकर आचमन एवं प्राणायाम करके 'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा०' मन्त्र से अपने ऊपर तथा पूजन-सामग्री पर जल छिड़क कर हाथ में अक्षत, पुष्प लेकर 'आ नो भद्रा०' इत्यादि (पृष्ठ ७ से १० तक) माङ्गलिक मन्त्रों को पढ़कर, हाथ में जल लेकर 'देशकालौ सङ्कीर्त्य' (पृष्ठ १०-११) से 'चतुर्थीकर्म करिष्ये' पर्यन्त संकल्प-वाक्य उच्चारण

कर जल को भूमि पर छोड़ दे। पुनः जल लेकर गणेश-गौरी, वरुण (कलश), मातृकादि पूजन का संकल्प करें। पुनः हाथ में जल लेकर 'अस्मिन् चतुर्थीकर्मणि पञ्चभूसंस्कारपूर्वकमग्निस्थापनं करिष्ये' तक संकल्प-वाक्य पढ़कर अग्निस्थापन का सङ्कल्प करे।

चतुर्थीकर्म तद्यथा-हस्तपरिमितां चतुरस्त्रां वेदीं कुशैः परिसमूह्य, गोमयोदकेनोपलिप्य, स्फेनोल्लिख्य, अनामिकाऽङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य, जलेनाऽभ्युक्ष्य, 'ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ २।। आसादयादिह।।' इति मन्त्रेणाऽग्निमुपसमाधाय।

पुनर्हस्ते वरणसामग्रीं च गृहीत्वा, जलमादाय, 'देशकालौ सङ्कीर्त्य, अस्यां रात्रौ कर्तव्यचतुर्थीहोम-कर्माण कृता- ऽकृता- ऽवेक्षणरूप-ब्रह्मकर्मकर्तुम् अमुकगोत्र- ममुकशर्माणं ब्राह्मणम् एभिः पुष्प-चन्दन-ताम्बूल-वासोभिर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।' इत्युक्त्वा, वरणसामग्रीं ब्रह्मणे दद्यात्। ब्रह्माऽपि 'वृतोऽस्मि' इति वदेत्। पुनर्वरो 'यथाविहितं कर्म कुरु' इति वदेत्। ब्रह्माऽपि 'यथाज्ञानं करवाणि' इति कथयेत्।

अग्निस्थापन- एक हाथ चौकोर वेदी का निर्माण कर, उसे कुशा से संमार्जित कर, गोबर-मिश्रित जल से लीपकर, सुवा से उस पर तीन रेखाकर, अनामिका और अँगूठे से उन तीनों रेखाओं से कुछ मिट्टी निकाल कर बाहर फेंक दे, पुनः जल छिड़क कर 'ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे०' इस मन्त्र से वेदी पर अग्नि-स्थापन करे।

पुनः वर हाथ में जल एवं वरण-सामग्री लेकर देश-कालोच्चारणपूर्वक 'अस्यां रात्रौ' से 'त्वामहं वृणे' तक संकल्प पढ़कर ब्रह्मा का वरण करे तथा वरण-सामग्री उनको दे दें। ब्रह्मा भी, 'वृतोऽस्मि' ऐसा कह दें। पुनः वर ब्रह्मा से 'यथाविहितं कर्म कुरु' ऐसा कहे। ब्रह्मा भी 'यथाज्ञानं करवाणि' इस प्रकार कहें।

ततो दक्षिणतो ब्रह्माणमुपवेश्योत्तरतः उदपात्रं (कलश-पूरितं जलं) प्रतिष्ठापयेत्। ततः स्थालीपाकं श्रपयित्वा (चरुं निर्माय) आज्यभागाविष्ट्वाऽऽ ज्याहुतीर्जुहोति। तद्यथा-ॐ अग्ने प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै पतिघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदमग्नये न मम।। १।। उदपात्रे त्यागः। ॐ वायो प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै प्रजाघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदं वायवे न मम।। २।। (उदपात्रे त्यागः) ॐ सूर्यप्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा

तत्पश्चात् दक्षिण की ओर ब्रह्मा को स्थापित कर, उसके उत्तर भाग में जलपूर्ण घट को स्थापित करे। उसके बाद वेदी पर चरु (चावल) पकावे, तथा कुशकुण्डिका कर 'ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम। ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदं इन्द्राय न मम। ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम। ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम'। आधार और आज्यभाग संज्ञक इन देवों की घृत से आहुति करे।

इसके बाद 'अग्ने प्रायश्चित्ते०' से 'इदं गन्धर्वाय न मम' पर्यन्त पाँच मन्त्र पढ़कर प्रायश्चित संज्ञक पाँच देवों के लिए घी से हवन कर जलपात्र में 'न मम' कहकर स्रुवा से बचे हुए घृत का प्रक्षेप करे।

प्रश्न -

१ .कन्यादान किसे कहते है।

२ .कन्यादान किस किस को करना चाहिए।

इकाई 12 : चतुर्थीकर्म

नाथकाम उपधावामि याऽस्यै पशुघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदं सूर्याय न मम।। ३।। (उदपात्रे त्यागः)। ॐ चन्द्रप्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै गृहघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदं चन्द्रमसे न मम।।४।। (उदपात्रे त्यागः)। ॐ गन्धर्व प्रायश्चित्ते त्वं देवानां प्रायश्चित्तिरसि ब्राह्मणस्त्वा नाथकाम उपधावामि याऽस्यै यशोघ्नी तनूस्तामस्यै नाशय स्वाहा। इदं गन्धर्वाय न मम।। ५।। (उदपात्रे त्यागः)। इति पञ्चाहुतिर्जुहुयात्। इति स्थालीपाकेन जुहोति। ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम। (उदपात्रे त्यागः)। अग्निमाहुतिदशके, तत्तदाहुत्यनन्तरं हुतशेषघृतस्य प्रोक्षणीपात्रे प्रक्षेपः। तत्र ब्रह्मणान्वारब्धेन आज्यस्थालीपाकाभ्यां स्विष्टकृद्धोमः। ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा। इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

तदनन्तर स्थालीपाक (घृतमिश्रित पके हुए चावल), एक कसोरे में थोड़ा निकाल कर 'ॐ प्रजापतये स्वाहा' कहकर स्थालीपाक से हवन कर 'इदं प्रजापतये न मम' कह खुवा से बचे हुए घृत का प्रोक्षणीपात्र में परित्याग कर कसोरे में रखे हुए अवशिष्ट चावल का खड़े होकर कुशा ले ब्रह्मा का स्पर्श करते हुए, तत आज्येन भूरादिनवाहुतीर्दद्यात्। ॐ भूः स्वाहा। इदमग्नये न मम।। १।। ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे न मम।। २।। ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय न मम ॥ ३॥ ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान्देवस्य हेडो अवयासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाँसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा। इदमग्निवरुणाभ्यां न मम।।४।। ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोतीनेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अवयक्ष्व नो वरुणर्ट. रराणो वीहि मृडीकर्ट. सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्निवरुणाभ्यां न मम।। ५।। ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभिशस्ति याश्च सत्यमित्वमया असि अयानो यज्ञं वहास्ययानो धेहि भेषजर्ट. स्वाहा। इदमग्नये अयसे न मम।। ६।। ॐ ये ते शतं वरुणं ये सहस्त्रियं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः।

'ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा' पढ़कर अग्नि में आहुति देकर 'इदमग्नये स्विष्टकृते न मम' कहकर स्रुवा से बचे हुए घृत को प्रोक्षणीपात्र में प्रक्षेप करे।

तत्पश्चात् 'ॐ भूः स्वाहा' से लेकर 'इदं प्रजापतये न मम' पर्यन्त घृत से नव आहुति देवे और 'इदं न मम' कहकर स्रुवावशिष्ट घृत को प्रोक्षणीपात्र में छोड़ दे।

तेभिन्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा। इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।। ७।। ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमं श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा। इदं वरुणायाऽऽदित्यायादितये न मम।। ८।। ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये न मम।। ९।। संस्रवप्राशनम्। आचमनम्। पवित्राभ्यां मार्जनम्। ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु। अग्नौ पवित्रप्रतिपत्तिः। ब्रह्मणे पूर्णपात्रदानम् पुनर्हस्ते जलामादाय, 'अस्यां रात्रौ कृतैतच्चतुर्थीहोमकर्मणोऽङ्गतया विहितं पूर्णपात्रमिदं प्रजापतिदैवतममुकगोत्रायाऽ मुकशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।' पुनः प्रोक्षणीपात्रस्थ घृत को अनामिका और अंगुष्ठ से सूंघ कर, आचमन कर 'ॐ सुमित्रिया न०' इस मन्त्र से प्रोक्षणीपात्रस्थित कुशा से अपने को मार्जन करते हुए उन कुशाओं को अग्नि में छोड़ दे। पूर्णपात्र दान- पुनः वर हाथ में जल लेकर देशकाल का उच्चारण करते हुए 'अस्यां रात्रौ०' से 'तुभ्यमहं ततो ब्रह्मा, 'ॐ स्वस्ति' इति वदेत्। 'ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।।' इति मन्त्रेण ऐशान्यां प्रणीतान्युब्जीकरणम्। ततो वर उदपात्रात् जलमानीय, आम्रपल्लवेन वधूमूहिन, ॐ या पतिघ्नी प्रजाघ्नी पशुघ्नी गृहघ्नी यशोघ्नी निन्दिता तनूर्जारघ्नी तत एनां करोमि या जीर्य्यत्वं मया सह।। इति मन्त्रेण 'अमुकी देवी'ति नामोच्चार्य, अभिषिञ्चयेत्। ततो मन्त्रचतुष्टयेन वधू स्थालीपाकं प्राशयति वरः। तद्यथा- ॐ प्राणैस्ते प्राणान् सन्दधामि।। १।। ॐ अस्थिभिरस्थीनि सन्दधामि।। २।। ॐ मांसैस्ते मांसानि सन्दधामि।। ३।। त्वचा ते त्वचं सन्दधामि।। ४।। (मन्त्रान्ते अन्नप्राशनम्)।

सम्प्रददे' तक कहकर ब्रह्मा को पूर्णपात्र प्रदान करे। ब्रह्मा भी, 'ॐ स्वस्ति' ऐसा कह दे। तथा 'ॐ दुमित्रिया०' यह मन्त्र पढ़कर ईशान कोण में प्रणीतापात्र को उलट दे। तदनन्तर वर कलश के जल से आम्रपल्लव द्वारा वधू का नाम लेकर 'ॐ या ते पतिघ्नी०' से 'मया सह' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर वधू के मस्तक पर सिंचन करे। पुनः वर 'ॐ प्राणैस्ते प्राणान्०' से लेकर 'ते त्वचं सन्दधामि' तक चार मन्त्र पढ़कर प्रत्येक मन्त्र के बाद चार बार वधू को स्थाली पाक के चरु का वधू को प्राशन कराये (खिलावे)। उसी प्रकार वधू भी वर को इन चार मन्त्रों को पढ़कर चार बार खिलाये।

ततो वधू हृदयं स्पृष्ट्वा वरः पठेत्-ॐ यत्ते सुशीम हृदयं दिवि चन्द्रमसि स्थितम्। वेदाहं तन्मां तद्-विदद्यात्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतर्ट. शृणुयाम शरदः शतम्।।

ततः कङ्कणमोक्षणं कृत्वा, स्रुवेण भस्मानीय, त्र्यायुषाणि कुर्यात्। पश्चात् ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां दत्त्वा, तैराशीर्वादान् गृहीत्वा।

उसके बाद वर 'ॐ यत्ते सुशीम हृदयं दिवि०' से 'शरदः शतम्' पर्यन्त मन्त्र पढ़कर अपना दाहिना हाथ वधू के गले से नीचे ले जाकर उसके हृदय का स्पर्श करे।

तत्पश्चात् देशाचार के अनुसार परस्पर एक दूसरे का कङ्गन देवताओं के सामने खोलकर रख दें। पुरोहित स्रुवा से भस्म लेकर 'ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः' से 'यद्देवेषु त्र्यायुषम्' पर्यन्त मन्त्र उच्चारण कर वर-वधू के ललाट, दक्षिण बाहु मूल एवं ग्रीवा में लगावे। पुनः वर सङ्कल्पपूर्वक आचार्य को दक्षिणा एवं उपस्थित ब्राह्मणों को भूयसी दक्षिणा प्रदान करे और उनसे आशीर्वाद ले।

ततो वरः-

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्-विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।। १।। यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपो-यज्ञ-

क्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे तमच्युतम्।। २।। 'ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः।' इत्याचार्यः विष्णुं प्रार्थयेत्।

इति चतुर्थीकर्म समाप्तम्।

इति देवरिया-जनपदान्तर्गत-'मझौली राज्य' (सम्प्रति वाराणसी) वास्तव्येन पण्डित-श्रीसन्तशरणमिश्रात्मज- व्याकरणाचार्य-साहित्यवारिधि-तन्त्ररत्नाकर आचार्य-पण्डित-श्रीशिवदत्तमिश्रशास्त्रिणा विरचिता विवाह-पद्धतिः समाप्ता।

बाद में 'प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्० तथा 'यस्य स्मृत्या च नामोत्तत्या०' इन दो श्लोकों को पढ़कर 'ॐ विष्णवे नमः' इसको तीन बार कहकर भगवान् विष्णु को प्रणाम करे।

विनय-पद्य-पुष्पाञ्जलिः कन्यापक्षे वाक्यम् -

यत्र नानाकलाकल्प-कल्याण-बुद्धयो, वेद-वेदाङ्ग - दर्शन-पुराणेतिहास-काव्यादि-परिशीलन- शालिशेमुषीकाः, अनेक - पण्डितमण्डली - मण्डित-सभासु वादिपराजयलब्ध-ख्यातयः, सत्यशील- शौचाचार- चञ्चरा देवकल्पाकल्पाः भवन्तस्तत्रभवन्तो देदीप्यमाना वर्तन्ते तत्र का गणनाऽल्पप्रसर - शालीनसम्विदां विशेषतः सभाऽप्रतिभ-जिह्यचेतसामस्माकम्। तथापि युष्मद्दर्शनपुण्य-विध्वस्ततमस्काः सत्वोद्रेकसमेधितमेधसः सान्द्रानन्दनिर्भराः भवतां सभासदां सभाजनाय निवेदयामः पद्यपुष्पाञ्जलिमिमं कर्णपूरीकुर्वन्तु समाहितचेतसो भवन्तः।

पद्य-पुष्पाञ्जलि को समर्पित कर विद्वत्प्रकाण्डैः परिमण्डितायां, नाऽस्यां सभायामुचितोऽस्मि वक्ता। तथापि वाचामुचितेऽत्र काले, मूकायितुं नोचितमित्यवैमि।। १॥ आमन्त्रणाय भवतां समुपागताः स्मः, भावत्कसत्कृतिकृतौ स्खलिता विलक्षाः। अस्माकवास - भवनाङ्गणभूमिरात्म-पादारविन्दरजसा परिशोधनीया।। २।।

वरपक्षे वाक्यम्-

दूराद्भवतां शील-सौहाद्र- पाण्डित्यप्रकर्षमाकर्ण्य युष्मद्दर्शन-कुतुकसमाकृष्टाः समागत्याऽत्र श्रुतानुमिताभ्यामप्यधिकगुणगरिमाणमुपहतो भवतः साक्षात्कृत्यात्मना भवत्सम्बन्धसन्धानकारि दैवं प्रशंसन्तः समुचितावसर- प्रसरया वाचा समुपश्लोकयामो भवतः।

विनय-पद्य-पुष्पाञ्जलिः

तथा च- यैः कीर्त्या धवलीकृतं त्रिभुवनं श्यामीकृतं चाऽम्बरं धूमैरध्वर - सम्भवैः प्रतिदिनं दानैर्द्विजास्तोषिताः। शिक्षा-संस्कृतया गिरा प्रतिदिनं यैस्तोषिताः पण्डिता- स्तैर्भक्त्या विनिमन्त्रितास्तदधुना धन्या धरण्यां वयम्।।३।। कन्या श्रीरिव रूपिणी गुणवती शुद्धं कुलं भूतले वित्तं रूप्य-सुवर्णभूरि विमला कीर्तिश्च दिग्व्यापिनी।

नागो भाति मदेन कं जलरूहैः पूर्णेन्दुना शर्वरी शीलेन प्रमदा जवेन तुरगो नित्योत्सवैर्मन्दिरम्। वाणी व्याकरणेन हंसमिथुनैर्नद्यः सभा पण्डितैः सत्पुत्रेण कुलं नृपेण वसुधा लोकत्रयं विष्णुना।। ६।। राजन्ते तपसा श्रुतेन च यथा सब्राह्मणा भूतले सत्सङ्गेन जनिहररचलया भक्त्या च रागोदयः। विद्या-वैभव-तत्कुलेड्यगुणिनां भाग्येन चासेदुषा सम्बन्धेन तथैव भवतां भामो हि भो सज्जनाः।।७।। इन्द्रस्याऽ म्बुसमर्पणं किमुचितं यस्याऽङ्गणे स्वर्णदी वासोऽलङ्करणैर्भवेदुपचितं किं तस्य कल्पद्रुमः। अन्नाद्यैरपि तुष्टिरस्ति कियती यस्याऽस्ति गेहे सुधा तस्मात् सर्वपरा नतिः समुचिता बद्ध्वाऽञ्जलिं त्वत्पुरः।। ८।।

वरपक्षे पठनीय-श्लोकाः

पचसा कमलं कमलेन पयः पयसा कमले न विभति सरः। मणिना वलयं विभा वलये नमणिः मणिना वलये न जितिकरः ।

शशिना च निशा निशया च शशी, शशिना निशया च विभाति नभः भवता च सभा सभया च भवान्, भवता सभया च विभामो वयम्।। १०।।

दूरेऽपि श्रुत्वा भवदीय-कीर्ति, कर्णौ च तृप्तौ न हि चक्षुषी मे। तयोर्विवादं परिहर्तुकामः समागतोऽहं तव दर्शनाय।। ११।।

कमलिनी मलिना रविणा विनास विरहणी मलिना पतिना विना ।
कुमुदनी मलिना शशिना विनाश वैमहो मलिना भवता विना ।।12।।
अपटः कपटी हिमहीन रुचिः प्रथिता पशुस्य कलत्ररतः
द्विजराज भवत्सद्शो न हरो न हरिः न हर न हरिः ।।13।।

प्रश्न -

१ .चतुर्थीकर्म किसे कहते है।

२ .चतुर्थीकर्म का सविस्तार वर्णन कीजिए।

इकाई 13 : मलिन षोडशी (दशगात्र)

मृत्युस्थानसे लेकर अस्थिसंचयनतक छः पिण्ड तथा दशगात्रके दस पिण्डों को मिलाकर सोलह पिण्डदान होता है। अशौचकाल का यह पिण्डदान 'मलिनषोडशी' कहलाता है। स्थाने द्वारे चतुष्पथे चितायां शव मस्तके। अस्थि संचयनो षष्ठो दश पिण्डा दशाहव काः। मोटक (तीन कुशों को मोड़कर मूल और अग्र भाग को पिता कर बट ले इसी को मोटक कहते है। पिण्डदान मोटक से करनाचाहिए अपसव्य होकर।

पिण्ड तथा निर्माण-षट्पिण्डदान

१. शवनिमित्तक पहला पिण्डदान

अपसव्य हो जाय। दायें हाथमें त्रिकुश, तिल और जल लेकर शवनिमित्तक प्रथम पिण्डके दानका मृति (मृत्यु)-स्थानपर प्रतिज्ञा-संकल्प करे -(मोटक तिल जल अपसव्यं दक्षिण मूख भूत्वा)

प्रतिज्ञा-संकल्प - अद्य गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्रस्य (स्त्री हो

तो...गोत्रायाः बोले) प्रेतस्य (स्त्री हो तो प्रेतायाः बोले) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं भूम्यधिदेवतातुष्ट्यर्थं च मृतिस्थाने शवनिमित्तकं पिण्डदानं करिष्ये। इस तरह संकल्प बोलकर संकल्प-जल गिरा दे।

(**क) अवनेजन -** पुनः जलसे भूमिको सींच दे।

इसके बाद जल, तिल, चन्दन और श्वेत पुष्प लेकर अवनेजनका संकल्प करे-

अद्यगोत्र (स्त्री हो तो गोत्रे) प्रेत (स्त्री हो तो प्रेते) मृतिस्थाने शवनिमित्तकपिण्डस्थाने अत्रावनेनिश्व ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम् ।

(**ख) पिण्डदानका संकल्प -** त्रिकुश, तिल, जल और पिण्ड लेकर (बायें हाथसे दाहिने हाथका स्पर्श करते हुए) पिण्डदानका संकल्प करे-

अद्य .....गोत्र (..... गोत्रे) तवोपतिष्ठताम्। ऐसा संकल्प कर प्रेत (प्रेते) मृतिस्थाने शवनिमित्तक एष पिण्डस्ते मया दीयते, कुशोंके बीचमें पितृतीर्थसे पिण्डको रख दे।

(**ग) प्रत्यवनेजन** अवनेजनपात्र में जल, तिल, सफेद चन्दन, सफेद फूल छोड़कर (यदि उसमें जल अवशिष्ट हो तो छोड़ना आवश्यक नहीं) इसे दायें हाथमें रख ले। पुनः त्रिकुश, तिल, जल लेकर प्रत्यवनेजनका संकल्प करे-

अद्यगोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) मृतिस्थाने शवनिमित्तकपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम् ।

इस तरह संकल्प बोलकर पिण्डपर जल छोड़ दे और पुनः पिण्डको उठाकर अर्थीपर (शवके पास) रख दे। तदनन्तर सव्य होकर भगवान्से प्रार्थना करे-

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः। अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥

भगवान्‌का नामोच्चारण करते हुए सबके साथ शवको उठाकर घरके बाहरी दरवाजेपर उतारकर उत्तरकी ओर सिर करके रख दे।

२. पान्थनिमित्तक दूसरा पिण्डदान

अपसव्य होकर द्वारपर दक्षिणाभिमुख बैठ जाय। दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर दूसरे पिण्डदानका प्रतिज्ञा-संकल्प करे-

प्रतिज्ञा-संकल्प अद्य गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं गृहवास्त्वधिदेवतातुष्ट्यर्थं निर्गमद्वारे पान्थनिमित्तकं पिण्डदानं करिष्ये। (बोलकर जल गिरा दे।)

(**क) अवनेजन** द्वार-भूमिका प्रोक्षण कर दे। जल, तिल, सफेद चन्दन, सफेद फूल लेकर अवनेजनका संकल्प करे-

अद्य गोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) निर्गमद्वारे पान्थनिमित्तकपिण्डस्थाने अत्रावनेनिश्व ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम् ।

- ऐसा संकल्प कर प्रोक्षित भूमिपर पितृतीर्थसे आधा जल गिरा दे। वहाँपर दक्षिणाग्र तीन कुश बिछा दे।

(**ख) पिण्डदानका संकल्प -** दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल, जल और पिण्डको लेकर (बायें हाथसे दाहिने हाथका स्पर्श करते हुए) पिण्डदानका संकल्प करे-

अद्य गोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) निर्गमद्वारे पान्थनिमित्तक एष पिण्डस्ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्। ऐसा बोलकर कुशोंके बीचमें पितृतीर्थसे पिण्ड रख दे।

(**ग) प्रत्यवनेजन** अवनेजनपात्रमें जल, तिल, श्वेत चन्दन, श्वेत पुष्प छोड़कर पात्रको दायें हाथमें रख ले। फिर त्रिकुश, जल, तिल लेकर प्रत्यवनेजनका संकल्प करे-

अद्य गोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) निर्गमद्वारे पान्थनिमित्तकपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्। बोलकर पिण्डके ऊपर प्रत्यवनेजन-जल डाल दे।

इसके बाद पिण्डको अर्थीपर (शवके पास) रखकर सव्य होकर निम्न मन्त्रसे भगवान्‌की प्रार्थना करे- अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः । अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥

शवयात्रा

आत्मीयजनों के साथ जोर से भगवन्नाम ('राम नाम सत्य है', 'हरि बोल' आदि) का उच्चारण करते हुए शवको कन्धों पर उठा ले। जो बड़े हैं, उन्हें आगे कर और छोटी उम्रवालोंको पीछे कर यात्रा प्रारम्भ कर दे।

३. खेचरनिमित्तक तीसरा पिण्डदान

चौराहा आने पर पवित्र स्थानमें शवको कन्धोंसे उतारकर उत्तरकी ओर सिर करके रख दे। क्रियाकर्ता अपसव्य हो जाय और दक्षिणकी ओर मुख कर बैठ जाय। दायें हाथ में त्रिकुश, तिल और जल लेकर तीसरे पिण्डदानका प्रतिज्ञा-संकल्प करे-

प्रतिज्ञा-संकल्प अद्य गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थम् उपघातकभूतापसारणार्थं चतुष्पथे खेचरनिमित्तकं पिण्डदानं करिष्ये। ऐसा बोलकर जल भूमिपर छोड़ दे।

(क) अवनेजन श्राद्धकर्ता जलसे भूमिका प्रोक्षण कर ले। अवनेजनपात्रमें जल, तिल, सफेद चन्दन और सफेद फूल छोड़कर इसे दायें हाथमें रख ले। पुनः बायें हाथसे इसमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर निम्न संकल्प करे-

अद्यगोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) चतुष्पथे खेचरनिमित्तकपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्। ऐसा बोलकर प्रोक्षित भूमिपर जल गिरा दे। वहाँ दक्षिणाग्र तीन कुश बिछा दे।

(ख) पिण्डदानका संकल्प - पुनः त्रिकुश, तिल, जल और पिण्डको दायें हाथमें लेकर (बायें हाथसे दाहिने हाथका स्पर्श करते हुए) पिण्डदानका संकल्प करे-

अद्य गोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) चतुष्पथे खेचरनिमित्तक एष पिण्डस्ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम् । - ऐसा बोलकर कुशोंके मध्य पिण्डको पितृतीर्थसे रख दे।

(ग) प्रत्यवनेजन अवनेजनपात्रमें जल, तिल, सफेद चन्दन, सफेद फूल छोड़कर पात्रको दाहिने हाथमें रख ले। फिर बायें हाथसे त्रिकुश, जल, तिल लेकर निम्नलिखित संकल्प करे-

अद्यगोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) चतुष्पथे खेचरनिमित्तकपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्। - ऐसा बोलकर पिण्डपर पितृतीर्थसे जल चढ़ा दे।

इसके बाद पिण्डको अर्थीपर रखकर सव्य हो जाय और निम्न मन्त्रसे भगवान्से प्रार्थना करे-

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः । अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ भगवान्के नामका उच्चारण करते हुए शवको उठा ले और चल दे।

४. भूतनिमित्तक चौथा पिण्डदान

विश्रामस्थानपर पहुँचकर शवको कन्धों से उतारकर रख दे। क्रियाकर्ता दक्षिणकी ओर मुँह करके अपसव्य हो बैठ जाय। दायें हाथ में त्रिकुश, तिल और जल लेकर चौथे पिण्डदान का प्रतिज्ञा-संकल्प करे-

प्रतिज्ञा-संकल्प अद्य गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं देहस्याहवनीययोग्यताभावसम्पादकयक्षराक्षसपिशाचा- दितुष्ट्यर्थं विश्रामस्थाने भूतनिमित्तकं पिण्डदानं करिष्ये। ऐसा बोलकर संकल्प-जल

भूमिपर छोड़ दे।

(क) अवनेजन भूमिको जलसे सींच दे। अवनेजनपात्रमें जल, तिल, सफेद चन्दन, सफेद फूल डालकर दाहिने हाथमें रख ले। बायें हाथसे इसमें त्रिकुश, तिल, जल रखकर अवनेजनका संकल्प करे-

अद्यगोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) विश्रामस्थाने भूतनिमित्तकपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम् ।

- ऐसा बोलकर प्रोक्षित भूमिपर अवनेजन जल छोड़ दे और वहाँपर दक्षिणाग्र तीन कुश बिछा दे।

(ख) पिण्डदानका संकल्प - इसके बाद त्रिकुश, तिल, जल और पिण्ड लेकर बायें हाथसे दाहिने हाथका स्पर्श करते हुए पिण्डदानका संकल्प करे-

अद्य गोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) देहस्याहवनीययोग्यताभावसम्पादकयक्षराक्षसपिशाचादि- तुष्ट्यर्थं भूतनिमित्तक एष पिण्डस्ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्। - ऐसा बोलकर कुशोंके बीचमें पिण्डको पितृतीर्थसे रख दे।

(ग) प्रत्यवनेजन अवनेजनपात्रमें जल अवशिष्ट हो तो जल न डाले। अन्यथा तिल, जल, सफेद चन्दन, सफेद फूल डालकर इस पात्रको अपने दाहिने हाथमें रख ले। फिर बायें हाथसे त्रिकुश, तिल, जल लेकर संकल्प करे-

अद्यगोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) विश्रामस्थाने भूतनिमित्तकपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्। - ऐसा संकल्प बोलकर पिण्डपर पितृतीर्थसे जल छोड़ दे।

इसके बाद पिण्डको अर्थीपर रखकर सव्य हो जाय और निम्न मन्त्रसे भगवान्‌की प्रार्थना करे-

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः । अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष

प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥

भगवान्के नामोंका उच्चारण करते हुए शवको उठाकर श्मशान पहुँचाये। यदि गंगा आदि नदी हो तो शवको डुबाकर स्नान कराये और उत्तरकी ओर सिरकर शवको भूमिपर रख दे।

५. साधकनिमित्तक पाँचवाँ पिण्डदान

चिताभूमिका संस्कार- जहाँ कूड़ा, केश आदि न हो, ऐसे स्थानको झाड़कर गोबर, मिट्टीसे लीप दे तथा भूमिकी प्रार्थना करे-

अपसर्पन्तु ते प्रेता ये केचिदिह पूर्वजाः ॥

भूमिपर कुश बिछा दे। उसपर स्वयं या सगोत्रियोंके द्वारा चिता बनवाये, जो उत्तरसे दक्षिणतक लगभग चार हाथ लम्बी हो। चितामें तुलसी, चन्दन, बेल, पीपल, आम, गूलर, बरगद, शमी आदि यज्ञीय काष्ठ भी डाले। द्विजेतरोंसे चिता न बनवाये। इस चितापर शवको लिटा दे। मृतकके सभी अंगोंपर तुलसीकी सूखी लकड़ी रख दे। शवके सर्वांगपर घृतका लेप करे। चन्दन एवं यज्ञीय काष्ठ आदिको शवपर रखे। नेत्र, मुख आदिपर कर्पूर रख दे। शवके ऊपर ओढ़ाये गये चद्दरका कोना फाड़कर उस चद्दरको श्मशानके अधिपतिको दे दे। शवपर कपड़ा रहने दिया जाय, नग्न दाह न करे।

चिताके दक्षिण भागमें अपसव्य होकर दक्षिणकी ओर मुँहकर बैठ जाय। दायें हाथमें त्रिकुश, तिल, और जल लेकर चितानिमित्तक पाँचवें पिण्डदानकी प्रतिज्ञा करे-

प्रतिज्ञा-संकल्प - अद्य... गोत्रः .....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् ..... गोत्रस्य (..... गोत्रायाः) ..... प्रेतस्य (.....प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं चितायां शवहस्ते साधकनिमित्तकं पिण्डदानं करिष्ये । - ऐसा बोलकर संकल्प-जल छोड़ दे।

(क) अवनेजन - भूमिको सींच दे। नये अवनेजनपात्रमें जल, तिल, सफेद चन्दन, सफेद फूल छोड़कर दायें हाथमें रख ले। त्रिकुश, जल और तिल लेकर अवनेजनका संकल्प करे -

अद्य गोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) चितायां साधकनिमित्तकपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम् ।

- ऐसा बोलकर प्रोक्षित भूमिपर पितृतीर्थसे अवनेजनजल गिरा दे। वहाँपर दक्षिणाग्र तीन कुश बिछा दे।

(**ख) पिण्डदानका संकल्प -** दायें हाथमें त्रिकुश, तिल, जल और पिण्ड लेकर बायें हाथसे दाहिने हाथका स्पर्श करते हुए संकल्प करे - अद्य गोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकशास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं चितायां साधकनिमित्तक एष पिण्डस्ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्। - ऐसा बोलकर कुशोंके मध्य पितृतीर्थसे पिण्ड रख दे।

(ग) प्रत्यवनेजन अवनेजनपात्रमें यदि जल अवशिष्ट न हो तो जल, तिल, सफेद चन्दन, सफेद फूल डालकर दायें हाथमें रख ले, पुनः बायें हाथसे जल, तिल, त्रिकुश लेकर प्रत्यवनेजनका संकल्प करे -

अद्यगोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) चितायां साधकनिमित्तकपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्। संकल्पका जल पितृतीर्थसे पिण्डपर डाल दे। फिर पिण्डको उठाकर शवके हाथमें रख दे। इसके बाद सव्य होकर भगवान्‌की प्रार्थना करे -

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः । अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥

क्रव्याद अग्निकी पूजा - चिताकी दाहिनी ओर वेदीपर अथवा किसी पात्रमें क्रव्याद अग्नि की स्थापना निम्न मन्त्रसे करे -

क्रव्यादनामानमग्निं प्रतिष्ठापयामि।

पूजन - 'क्रव्यादाग्नये नमः' इस मन्त्रसे गन्धाक्षत-पुष्पादिसे अग्निकी संक्षिप्त पूजा करे।

प्रार्थना - निम्न मन्त्रसे अग्निकी प्रार्थना करे-

त्वं भूतकृज्जगद्योने त्वं लोकपरिपालकः ।

उक्तः संहारकस्तस्मादेनं स्वर्गं मृतं नय ॥

चिता पर शव को कैसे रखे- नारी तु उत्तानं पुरुष अधोमुख।

शवदाह (सिरकी ओर अग्नि-ज्वालन)- इसके बाद अपसव्य हो जाय। चितापर जल छिड़क दे। फिर इस क्रव्याद अग्निको सरपत आदिपर रखकर निम्नलिखित मन्त्रों को पढ़ते हुए चिता की तीन या एक परिक्रमा कर सिर की ओर आग प्रज्वलित करे-

कृत्वा तु दुष्कृतं कर्म जानता वाऽप्यजानता । मृत्युकालवशं प्राप्तं नरं पञ्चत्वमागतम् ॥ धर्माऽधर्मसमायुक्तं लोभमोहसमावृतम् । दहेयं सर्वगात्राणि दिव्यान् लोकान् स गच्छतु ॥

असौ स्वर्गाय लोकाय स्वाहा।

(वाराहपुराण, निर्णयसिन्धु)

कपालक्रिया - जब शव आधा जल जाय, तब कपालक्रिया करे। बाँससे शवके सिरपर चोट पहुँचानी चाहिये (यतियोंकी श्रीफलसे कपालक्रिया करनी चाहिये) और उसपर घृत डाल देना चाहिये। तदनन्तर उच्च स्वरसे रोना चाहिये।

संसारकी नश्वरताका प्रतिपादन - इसके बाद सम्बन्धीजन घास आदिपर बैठ जायें और संसारकी नश्वरताका प्रतिपादन करें। स्वयं श्मशान ही संसारसे वैराग्य उत्पन्न कर देता है। वैराग्यके बाद भगवान् और उनकी आज्ञाके रूप कर्तव्यके पालनकी ओर दृष्टि अवश्य जानी चाहिये।

चितामें सात समिधाएँ डालना - एक-एक बित्तेकी सात यज्ञीय लकड़ियाँ लेकर दाहकर्ता शवकी सात प्रदक्षिणा करे। प्रत्येक प्रदक्षिणाके अन्तमें 'क्रव्यादाय नमस्तुभ्यम्' मन्त्रसे एक-एक समिधा चितामें डालता जाय।

दाहसे अवशिष्ट अंशको जलमें डालना - अन्तमें शवका किंचित् भाग अर्थात् कपोत- परिमाण (कबूतरके बराबरतक) जलमें डाल देना चाहिये, पूरा जलाना मना है।

६. अस्थिसंचयननिमित्तक छठा पिण्डदान

शास्त्रका वचन है-

अपरेद्युस्तृतीये वा दाहानन्तरमेव वा। (अन्त्यकर्मदीपक)

इसका अभिप्राय है कि दूसरे दिन, तीसरे दिन अथवा दाहके बाद तत्काल चिता शान्त कर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दायें हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर छठे पिण्डदानका इस प्रकार संकल्प करे-

प्रतिज्ञा-संकल्प अद्य गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) अस्थिसंचयननिमित्तकपिण्डदानं करिष्ये। ऐसा बोलकर संकल्प-जल चिताभूमिपर छोड़ दे।

(क) अवनेजन - संकल्प कर भूमिको सींच दे। अवनेजनपात्र (दोने) में जल, तिल, सफेद चन्दन और सफेद फूल छोड़कर इसे दायें हाथमें रख ले। पुनः त्रिकुश, तिल, जल लेकर संकल्प करे-

अद्य गोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) अस्थिसंचयननिमित्तकपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्। बोलकर प्रोक्षित भूमिपर अवनेजन जल गिरा दे। भूमिपर दक्षिणाग्र त्रिकुश बिछा दे।

(ख) पिण्डदानका संकल्प - दायें हाथमें त्रिकुश, तिल, जल और पिण्ड लेकर बायें हाथसे दाहिने हाथका स्पर्श करते हुए संकल्प करे-

अद्य गोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थम् अस्थिसंचयननिमित्तक एष पिण्डस्ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्। ऐसा संकल्प बोलकर पितृतीर्थसे कुशोंके मध्य पिण्डको रख दे।

(ग) प्रत्यवनेजन - अवनेजनपात्रमें (जल अवशिष्ट न हो तब) तिल, जल, सफेद चन्दन, सफेद फूल डालकर दायें हाथमें रख ले और प्रत्यवनेजन-संकल्प करे। संकल्पके समय बायें हाथको दायें हाथके नीचे रख ले।

अद्यगोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) अस्थिसंचयननिमित्तकपिण्डोपरि अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्। - ऐसा बोलकर इस जलको पितृतीर्थसे पिण्डपर गिरा दे एवं पिण्डको नदी आदिके जलमें डाल दे।

प्रार्थना - सव्य होकर निम्न मन्त्रसे भगवान्‌की प्रार्थना करे-

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः । अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥

बलि प्रदान पिण्डसे जो अन्न बचा लिया गया था। उसीको हाथमें लेकर श्मशानवासी देवोंको निम्न मन्त्रोंको पढ़कर बलि प्रदान करे-

येऽस्मिन् श्मशाने देवाः स्युर्भगवन्तः सनातनाः । तेऽस्मत् सकाशाद् गृह्णीयुर्बलिमष्टाङ्गमक्षयम् ।। प्रेतस्यास्य शुभाँल्लोकान् प्रयच्छन्तु च शाश्वतान् । अस्माकमायुरारोग्यं सुखं च दत्त मे चिरम् ॥ श्मशानवासिभ्यो देवेभ्यो नमः । सर्वस्वीयभागं सदीपं बलिं गृह्णन्तु । -

ऐसा कहकर दीपकके साथ अन्न-बलि प्रदान करे।

अस्थिसंचयनका मुहूर्त, संचयन तथा प्रक्षेप-विधि

मंगल, रवि तथा शनि- इन दिनोंमें, युग्मतिथियों (षष्ठी-सप्तमी, अष्टमी-नवमी, एकादशी-द्वादशी, चतुर्दशी-पूर्णिमा तथा प्रतिपदा अमावास्या) में, एकपाद (कृत्तिका, उत्तराफाल्गुनी तथा उत्तराषाढा), द्विपाद (मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा) और त्रिपाद (कृत्तिका, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी ...और पूर्वाभाद्रपद) नक्षत्रोंमें तथा पिण्डदान करनेवालेको अपने जन्मनक्षत्रमें अस्थिसंचयन नहीं करना चाहिये। माता और पिताके कुलको छोड़कर जो व्यक्ति अन्य कुलकी अस्थिका संचयन करता है, उसे प्रायश्चित्तके रूपमें चान्द्रायणव्रतका अनुष्ठान करना चाहिये।

यहाँ यह विशेष रूपसे ध्यातव्य है कि धनके लोभके वशीभूत होकर दूसरे गोत्रका अस्थिसंचयन नहीं करना चाहिये, किंतु परोपकारकी दृष्टिसे करुणा एवं कृपावश अनाथ व्यक्तिके संस्कारके रूपमें यदि कोई अस्थिसंचयन करता है तो उसे प्रायश्चित्तरूपमें चान्द्रायणव्रत करनेकी आवश्यकता नहीं है, प्रत्युत करोड़ों यज्ञोंके अनुष्ठानका पुण्य उसे प्राप्त होता है- 'अनाथप्रेतसंस्कारः कोटियज्ञफलप्रदः' तथा 'दयया अन्यस्यापि नयने महापुण्यम्' (धर्मसिन्धु पृ० ६५४)।

गायका दूध डालकर हड्डियोंको तर कर दे। मौन होकर पलाशकी दो लकड़ियोंसे कोयला आदि हटाकर हड्डियोंको अलग कर ले। सबसे पहले सिरकी हड्डियोंको अलग करे और कनिष्ठिकासे चुने। अन्तमें पैरकी हड्डियोंको एकत्र करे। कुश बिछाकर उसके ऊपर रेशम या तीसीके रेशोंसे बना वस्त्र बिछा दे। इसी वस्त्रपर हड्डियोंको रखता जाय।

इन्हें पंचगव्यसे सींचकर स्वर्ण, मधु, घी, तिल डाल दे। पुनः सुगन्धित जलसे तर कर दे और सर्वोषधि मिलाकर बाँधकर मिट्टीके बर्तनमें रख दे। इसके बाद दक्षिण दिशाको देखकर 'नमोऽस्तु धर्माय' कहकर जलमें प्रवेश करे, फिर 'स मे प्रीतो भवतु' कहकर पात्रको जलमें डाल दे। जलसे निकल- कर सूर्यका दर्शन करे और ब्राह्मणोंको यथाशक्ति दान दे।

दस दिनों के भीतर गंगामें अस्थिप्रक्षेप करनेसे मरनेवालेको वही फल प्राप्त होता है जो गंगामें (गंगातटपर) मरनेसे होता है। यदि किसी सुदूर तीर्थमें अस्थिप्रक्षेप करना हो तो अस्थिकलशको वृक्षपर लटका देना चाहिये और दस दिनों के भीतर तीर्थ में प्रक्षेप कर देना चाहिये। इस यात्रामें अस्थिकलश को रजस्वला आदि अस्पृश्य के दोष से बचाना चाहिये। कहीं यह दोष आ ही जाय तो लिखे अनुसार प्रायश्चित्त कर लेना चाहिये। फिर पहलेकी तरह दक्षिण दिशाका अवलोकन कर 'नमोऽस्तु धर्माय' उच्चारण कर और जलमें प्रवेश कर 'स मे प्रीतो भवतु' कहकर पात्र का प्रक्षेप करे। जलसे निकलकर सूर्यदर्शन करे और ब्राह्मणों को यथाशक्ति दक्षिणा दे। यदि भूमि में गाड़ना हो तो दक्षिण से उत्तर की ओर प्रादेश मात्र (अँगूठे और तर्जनी के बीच की दूरी) लम्बा- और चार अंगुल का चौड़ा गड्ढा खोदकर उसमें कुश बिछाकर उसपर हल्दी के रंग से रँगा वस्त्र बिछाकर हड्डियों को रख दे। फिर गाय के घीसे तर कर सुवासित जलसे सींचे और सर्वोषधि मिलाकर गाड़ दे।

घटस्फोट - इसके बाद चिताके भस्म, अंगार आदि सभी वस्तुओंको जलमें बहा दे। इस तरह चिता-स्थलीको साफ कर दे। अन्तमें कोई व्यक्ति क्रियाकर्ताके कन्धेपर जलसे भरा घड़ा रख दे और क्रियाकर्ता पीछेकी ओर न देखते हुए 'एवं कदापि माऽभूत्' कहकर घड़ेको पीछे गिरा दे। स्नान - इसके बाद सब लोग कर्ता तथा बच्चोंको आगे कर दूसरे घाटपर जाकर जलको बायीं ओर घुमाकर मौन होकर स्नान करें।

तिलोदकदान - स्नानके बाद अपसव्यकी स्थितिमें ही सभी लोग दक्षिणकी ओर मुँहकर तिलांजलि दें। त्रिकुश, तिल, जल लेकर संकल्प बोलें -

संकल्प - अद्य गोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) चितादाहजनिततापतृषोपशमनाय एष तिलतोयाञ्जलिस्ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्। ऐसा संकल्प कर तिलांजलि दे।

चौदह पीढ़ीतकके बन्धु-बान्धवोंको दस दिनतक प्रतिदिन वृद्धिक्रमसे अर्थात् पहले दिन एक, दूसरे दिन दो तथा तीसरे दिन तीन- इस प्रकार अंजलिसंख्या बढ़ाते हुए तिलतोयांजलियाँ देनी चाहिये।

जो लोग बाहर रहते हों और मृत्युके कुछ दिन बाद उन्हें मृत्युका समाचार प्राप्त हो तो समाचार मिलनेके दिन पूर्व दिनोंकी तिलतोयांजलियोंके साथ तिलांजलियाँ देनी चाहिये। तत्पश्चात् वृद्धिक्रमसे दसवें दिनतक तिलतोयांजलियाँ देनी चाहिये। यदि कोई मृत्युके दस दिनोंके अन्दर तिलतोयांजलि न दे सके तो वह दसवें दिन सभी दिनोंके लिये गिनकर एक संकल्पसे सभी (पचपन) तिलतोयांजलियाँ दे दे। तिलतोयांजलिदानके पृथक् पृथक् संकल्प इस प्रकार हैं-

(क) एक अंजलिदानका संकल्प- अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर त्रिकुश, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प बोले-

अद्य गोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) चितादाहजनिततापतृषोपशमनाय एष तिलतोयाञ्जलिस्ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्। एक तिलतोयांजलि दे।

(ख) दो अंजलिदानका संकल्प अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर त्रिकुश, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प बोले-

अद्य गोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) चितादाहजनिततापतृषोपशमनाय इमौ तिलतोयाञ्जली ते मया दीयेते, तवोपतिष्ठेताम्। दो तिलतोयांजलियाँ दे।

(ग) तीन या अधिक तिलतोयांजलियोंका संकल्प - अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर त्रिकुश, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प बोले-

अद्य गोत्र (गोत्रे) प्रेत (प्रेते) चितादाहजनिततापतृषोपशमनाय इमे तिलतोयाञ्जलयः ते मया दीयन्ते, तवोपतिष्ठन्ताम्। तीन या अधिक तिलतोयांजलियाँ दे।

तत्त्वोपदेश - दाहकर्ता जलसे निकलकर दो सूखे वस्त्र पहन ले। गीले वस्त्रको एक बार निचोड़कर उत्तरकी ओरसे प्रारम्भ कर दक्षिणकी ओरतक सूखनेके लिये फैला दे। पुनः सभी लोग एक जगह बैठ जायँ और प्रियजनके वियोगसे उत्पन्न शोकको इतिहास आदि सुनाकर दूर करें, कहें-

'मानव-तन नश्वर है, निःसार है। शरीर तो पृथ्वी, जल, पावक, वायु और आकाशसे बना है और इसको इन्हीं पंचभूतोंमें मिल जाना है। अतः इस शरीरके लिये शोक करना कैसा? ऐसा तो अवश्य होना ही है। हाँ, इस मानव-तन पानेका एक बहुत बड़ा उपयोग यह है कि इस शरीरसे भगवान् को पाया जा सकता है। अतः शोक- मोह छोड़कर भगवान्का ही स्मरण करना चाहिये और उनकी आज्ञा समझकर विहित कर्म ही करना चाहिये।

श्मशानसे लौटनेके बादके कृत्य - इसके बाद बच्चोंको आगे करके सभी शव यात्री घर की ओर बढ़ें। पीछे न देखें। दरवाजे पर आकर थोड़ी देर रुक जायँ। वहाँ नीमकी पत्तियाँ चबायें। आचमन करें। जल, गोबर, तेल, मिर्च, पीली सरसों और अग्निका स्पर्श करें। फिर पत्थर पर पैर रखकर घरमें प्रवेश करें। २ कुछ देर बैठकर भगवान्का चिन्तन करें और मृतात्माकी शान्तिकी कामना करें।

प्रश्न -

१ .मलिन षोडशी किसे कहते है।

२ .मलिन षोडशी का सविस्तार वर्णन कीजिए।

इकाई 14 - मध्यम षोडशी (एकादशाह)-1

१. पहला पिण्ड (विष्णुके लिये)

२. दूसरा पिण्ड (शिवके लिये)

३. तीसरा पिण्ड (यमराजके लिये)

४. चौथा पिण्ड (सोमराजके लिये)

५. पाँचवाँ पिण्ड (हव्यवाहनके लिये)

६. छठा पिण्ड (कव्यवाहनके लिये)

७. सातवाँ पिण्ड (कालके लिये)

८. आठवाँ पिण्ड (रुद्रके लिये)

९. नवाँ पिण्ड (पुरुषके लिये)

१०. दसवाँ पिण्ड (प्रेतके लिये)

११. ग्यारहवाँ पिण्ड (विष्णुके लिये)

१२. बारहवाँ पिण्ड (ब्रह्माके लिये)

१३. तेरहवाँ पिण्ड (विष्णुके लिये)

१४. चौदहवाँ पिण्ड (शिवके लिये)

१५. पंद्रहवाँ पिण्ड (यमके लिये)

१६. सोलहवाँ पिण्ड (तत्पुरुषके लिये)

श्राद्धविधि

श्राद्धकर्ता पवित्र होकर श्राद्धस्थलपर आ जाय। सभी श्राद्धीय सामग्रियोंको यथास्थान रख ले। सर्वप्रथम पाकनिर्माण करना चाहिये।

पाकनिर्माण - ईशानकोणमें हाथसे बनाये गये मिट्टीके दो बर्तनोंमें देवताओंके लिये २ किलो तथा

प्रेतके लिये २५० ग्राम दूधमें चावल डालकर खीरके दो पृथक् पृथक् पाक तैयार कर ले। प्रेतके लिये केवल एक पिण्डके लिये खीर बनानी चाहिये। पाकनिर्माण हो जानेके अनन्तर उसमें तुलसीदल छोड़कर भगवान् विष्णुका भोग लगा दे।

शिखाबन्धन - श्राद्धकर्ता अपने आसनपर पूर्वाभिमुख बैठ जाय, गायत्रीमन्त्रसे शिखाबन्धन कर ले। **सिंचन-मार्जन -** निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा श्राद्धीय वस्तुओंपर जल छिड़के-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु ।

पवित्रीधारण - निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले-

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

आचमन - ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः। ॐ माधवाय नमः। इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन करे। ॐ हृषीकेशाय नमः कहकर हाथ धो ले।

प्राणायाम - प्राणायाम करे।

आसनों और पात्रोंका रखना श्राद्धस्थलके पूर्वभागमें दक्षिण दिशासे प्रारम्भकर उत्तरकी ओर क्रमसे विष्णु आदि नौ देवताओंके नौ आसन पश्चिमाभिमुख लगाये जायँ। दसवाँ आसन प्रेतके लिये इसी पंक्तिमें उत्तराभिमुख लगाया जाय। पुनः छः आसन देवताओंके लिये इसी पंक्तिमें पश्चिमाभिमुख बिछाये जायें।

देवताओंके आसनके सामने भोजनपात्रके रूपमें पलाशका पत्तल,

भोजनपात्रके दक्षिण अर्घपात्र (पलाशका दोना अथवा हाथका बना मिट्टीका दीया) और जलपात्र (पलाशका दोना अथवा हाथका बना मिट्टीका दीया) तथा भोजनपात्रके सामने घृतपात्र (पलाशका दोना अथवा हाथका बना मिट्टीका दीया) रखे। प्रेतके लिये भी भोजनपात्रके पश्चिम जलपात्र तथा अर्धपात्र और भोजनपात्रके सामने घृतपात्र रखे।

यजमानका आसन- इसके बाद यजमान अपना बैठनेका आसन देवश्राद्धके लिये पूर्वाभिमुख तथा प्रेतश्राद्धके लिये दक्षिणाभिमुख लगाये।

रक्षादीप-प्रज्वालन- इस श्राद्धमें दो दीपक तिल-तेलके जलेंगे। देवताओंका देवासनोंसे पूर्व पूर्वाभिमुख और प्रेतका प्रेतासनसे दक्षिण दक्षिणाभिमुख दीपक जलाकर क्रमशः जौ तथा तिलपर रख दे। निम्न मन्त्रसे दीपकोंकी प्रार्थना करे-

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् । यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ॥ **गदाधर आदिकी प्रार्थना**- अंजलिमें फूल लेकर गयाधाम, गदाधर तथा पितरोंका स्मरण कर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे-

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम् । स्वपितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्॥ ॐ गयायै नमः । ॐ गदाधराय नमः। कहकर फूल चढ़ा दे।

तदनन्तर तीन बार 'ॐ श्राद्धभूम्यै नमः' कहकर भूमिपर जौ एवं पुष्प छोड़े।

भूमिसहित विष्णु-पूजन- श्राद्ध आरम्भ करनेके पूर्व विष्णुभगवान्का पूजन करनेका विधान है। अतः शालग्राम शिलापर षोडशोपचार अथवा पंचोपचार पूजन करना चाहिये। यदि सम्भव

न हो तो निम्न श्लोकसे विष्णुभगवान्का स्मरण-पूजन करते हुए पुष्पांजलि समर्पित कर श्राद्ध आरम्भ करना चाहिये- शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥ ॐ भूमिपत्नीसहिताय विष्णवे नमः - कहकर भगवान् विष्णुको प्रणामकर पुष्प अर्पित कर दे।

कर्मपात्रका निर्माण श्राद्धकर्ममें जलका उपयोग करनेके लिये कर्मपात्रका निर्माण कर ले।

अक्षतोंके ऊपर जलसे भरा एक कलश रखकर उसमें चन्दन, तुलसी, जौ, पुष्प तथा कुश छोड़ दे और त्रिकुशसे जलको दक्षिणावर्त आलोडित करते हुए निम्न मन्त्रोंको पढ़े-

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम् । अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्व हसः ॥ ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनासि चकृमा वयम् । वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वथंहसः ।। ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनासि चकृमा वयम् । सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वथंहसः ॥

प्रोक्षण - कर्मपात्रके जलसे कुशद्वारा अपना तथा सभी श्राद्धसामग्री एवं पाकका प्रोक्षण करे और बोले- 'श्वादिदुष्ट दृष्टिनिपातदूषितपाकादिकं पूतं भवतु।'

दिग्-रक्षण - बायें हाथमें पीली सरसों लेकर दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र बोले- नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम । इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः ॥

तदनन्तर दाहिने हाथ से सरसों को पूर्व-दक्षिण आदि दिशाओंमें निम्न मन्त्रों को पढ़ते हुए छोड़े- पूर्व में - प्राच्यै नमः। दक्षिण में अवाच्यै नमः। पश्चिममें- प्रतीच्यै नमः। उत्तर में- उदीच्यै नमः। आकाश में - अन्तरिक्षाय नमः। भूमिपर - भूम्यै नमः ।

हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-

पूर्वे नारायणः पातु वारिजाक्षस्तु दक्षिणे । प्रद्युम्नः पश्चिमे पातु वासुदेवस्तथोत्तरे । ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः ॥

नीवीबन्धन - किसी पत्र-पुटक या पानके पत्तेपर तिल, त्रिकुशका

टुकड़ा लपेटकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए दक्षिण कटिभागमें उसे खोंस ले, बाँध ले-

ॐ निहन्मि सर्वं यदमेध्यकृद् भवेद्धताश्च सर्वेऽसुरदानवा मया। यक्षाश्च रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता मया यातुधानाश्च सर्वे ॥ ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि।

प्रतिज्ञासंकल्प - दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ तथा जल लेकर निम्नलिखित वाक्य बोले- ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने पुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य विष्णोराज्ञया जगत्सृष्टि कर्मणि प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्ध श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे तत्प्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे क्षेत्रे (यदि काशी हो तो अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते महाश्मशाने भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या वामभागे) बौद्धावतारे संवत्सरे उत्तरायणे/दक्षिणायने ऋतौ मासे पक्षे तिथौ वासरे गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्रस्य (स्त्री हो तो गोत्रायाः बोले)। प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकविष्णुलोकाद्युत्तमलोकप्राप्त्यर्थं पितृपङ्क्ति - प्रवेशार्थं च विष्ण्वादितत्पुरुषान्तदेवानां प्रेतस्य च एकोद्दिष्टविधिना मध्यमषोडशश्राद्धानि करिष्ये। हाथका जलादि पात्र (तष्टा) में छोड़ दे।

पितृगायत्रीका पाठ - पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे -

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

प्रथम नौ देवताओंके लिये आसनदानका संकल्प देवताओंके लिये बिछाये गये आसनोंपर पूर्वाग्र तीन-तीन कुशाओंको आसनके रूपमें रख दे। हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर प्रथम नौ देवताओंको आसन-प्रदान करनेके लिये निम्न संकल्प पढ़े-

ॐ अद्य (प्रेतायाः) प्रेतस्य (गोत्रायाः) गोत्रस्य... क्रियमाणे सिद्ध्यर्थं -प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशाधिकार

वो विभज्य आसनानि विष्ण्वादिपुरुषान्तदेवानामिमानि मध्यमषोडशश्राद्धे । नमः

- यह संकल्प पढ़कर हाथका जल, जौ आदि नौ आसनोंपर देवतीर्थसे छोड़ दे।

आवाहन - देवताओंके नौ आसनोंपर इस मन्त्रसे जौ छोड़े-ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः। यहाँकी पवित्री उतार दे।

प्रेतके लिये आसनदानका संकल्प प्रेतके सम्मुख अपने आसनपर बैठ जाय। यहाँकी पवित्री पहन ले। अपसव्य तथा दक्षिणाभिमुख होकर प्रेतासनपर दक्षिणाग्र तीन कुश रख दे। फिर त्रिकुश, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प पढ़ते हुए पितृतीर्थसे आसनदान दे और तिल, जल आसनपर छोड़ दे-

ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशाधिकार- सिद्ध्यर्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धे प्रेतस्य इदमासनं ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम् ।

आवाहन - ॐ अपहता असुरा रक्षांसि वेदिषदः- इस मन्त्रसे प्रेतके आसनपर तिल छोड़े यहाँकी पवित्री उतार दे।

ग्यारहवेंसे सोलहवेंतक छः देवताओंके लिये आसनदानका संकल्प - देवताओंके सम्मुख अपने आसनपर आ जाय। सव्य पूर्वाभिमुख होकर यहाँकी पवित्री पहन ले। छः आसनोंपर पूर्वाग्र तीन-तीन कुश रख दे। तदनन्तर हाथमें त्रिकुश, जल, जौ लेकर निम्न संकल्प करे -

ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्ति - प्रवेशाधिकारसिद्ध्यर्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धे विष्ण्वादितत्पुरुषान्तदेवानामिमानि आसनानि विभज्य वो नमः। संकल्पका जौ जल देवतीर्थसे आसनोंपर छोड़ दे।

आवाहन - देवताओंके छः आसनोंपर इस मन्त्रसे जौ छोड़े-

ॐयवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः ।

अर्धपात्र-निर्माण- प्रथम नौ देवताओंके समीप आसनपर बैठ जाय। नौ देवभोजनपात्रोंके दक्षिण रखे हुए अर्घपात्रोंमें पवित्रक, जल, जौ आदि निम्न मन्त्रोंसे छोड़े-

प्रक्षेप-पवित्रक (क) निम्न मन्त्रसे देवनिमित्तक नौ अर्घपात्रोंमें पूर्वाग्र पवित्रक रखे -

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

(ख) जल-प्रक्षेप निम्न मन्त्रसे नौ अर्घपात्रोंमें जल डाले-

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः ॥

(ग) यव-प्रक्षेप निम्न मन्त्रसे नौ देवार्घपात्रोंमें जौ डाले-

ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः ।

(घ) चन्दन और पुष्प-प्रक्षेप नौ अर्धपात्रोंमें चन्दन, पुष्प मौन होकर छोड़े। पवित्री उतार दे।

प्रेतार्घपात्रका निर्माण अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर पवित्री धारणकर प्रेतके अर्धपात्रमें

'पवित्रे स्थो०' इस मन्त्रसे दक्षिणाग्र पवित्रक, 'शं नो देवी०' मन्त्रसे जल तथा निम्न मन्त्रसे तिल छोड़े-

ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः । प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितँल्लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा ॥ इसके बाद मौन होकर चन्दन पुष्प छोड़े। प्रेतमण्डलकी पवित्री उतार दे।

पुनः देवमण्डलमें अपने आसनपर आकर सव्य पूर्वाभिमुख हो देवमण्डलकी पवित्री धारण कर पहलेकी भाँति देवनिमित्तक शेष छः अर्धपात्रोंमें पवित्रक, जल, जौ पूर्वोक्त मन्त्रोंसे तथा चन्दन, पुष्प मौन होकर

छोड़े।

देवार्घपात्रोंका अभिमन्त्रण अर्घ देनेसे पहले अर्घपात्रको बायें हाथमें रखकर पवित्रकको दायें हाथसे निकालकर भोजनपात्रपर पूर्वाग्र रखे और उस पवित्रकपर पूजनपात्रसे एक आचमनी जल' ॐ नमो नारायणाय' कहकर छोड़ दे। अर्घपात्रको दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र बोलकर अभिमन्त्रित करे -

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा पार्थवीर्याः ।

हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शथं स्योनाः सुहवा भवन्तु ॥

अर्घदान - तदनन्तर प्रथम अर्धपात्रको दाहिने हाथमें रख ले तथा त्रिकुश, जौ, जल लेकर नीचे लिखे संकल्पोंको पढ़कर अर्घदान करे-

१. विष्णु-अर्घदान ॐ अद्यगोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्ति- पूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गते विष्णुश्राद्धे विष्णो एषोऽर्घस्ते नमः। ऐसा बोलकर विष्णुके भोजनपात्रमें रखे हुए पवित्रकपर देवतीर्थसे जल गिरा दे। पवित्रकको पुनः अर्धपात्रमें पूर्वाग्र रख दे और अर्धपात्रको 'ॐ विष्णवे स्थानमसि' कहकर देवके दाहिने अर्थात् देवासनके उत्तरमें ऊर्ध्वमुख स्थापित कर दे।

इसी प्रक्रियासे निम्नलिखित सभी देवताओंके अलग-अलग अर्धपात्रोंका उपर्युक्त मन्त्रोंसे अभिमन्त्रण कर उन्हें अर्घ प्रदान करे और इसी प्रकार पवित्रक तथा अर्धपात्रको भी निर्दिष्ट स्थानपर रखे।

२. शिव-अर्घदान ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गते शिवश्राद्धे शिव एषोऽर्घस्ते नमः।

३. यमराज-अर्घदान ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्ति- पूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गते यमश्राद्धे यमराज एषोऽर्घस्ते नमः ।

४. सोमराज-अर्घदान ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः)

प्रेतत्व-

निवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गते सोमराजश्राद्धे सोमराज एषोऽर्घस्ते नमः ।

५. हव्यवाहन-अर्घदान ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्ति प्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गते हव्यवाहनश्राद्धे हव्यवाहन एषोऽर्घस्ते नमः ।

६. कव्यवाहन-अर्घदान ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गते कव्यवाहनश्राद्धे कव्यवाहन एषोऽर्घस्ते नमः ।

७. काल-अर्घदान ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्ति- पूर्वकपितृपङ्क्ति प्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गते कालश्राद्धे काल एषोऽर्घस्ते नमः ।

८. रुद्र-अर्घदान ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्ति- पूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गते रुद्रश्राद्धे रुद्र एषोऽर्घस्ते नमः।

९. पुरुष-अर्घदान ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्ति- पूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गते पुरुषश्राद्धे पुरुष एषोऽर्घस्ते नमः ।

यहाँकी पवित्री छोड़ दे।

प्रेतार्घका अभिमन्त्रण- प्रेतमण्डलमें अपने आसनपर आकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर यहाँकी पवित्री पहन ले। अर्घपात्रको बायें हाथमें रखकर उसके पवित्रकको दाहिने हाथसे निकालकर भोजनपात्रमें उत्तराग्र रख दे और उस पवित्रकपर एक आचमनी जल 'ॐ नमो नारायणाय' कहकर छोड़े। अर्धपात्रको दाहिने हाथसे ढककर 'या दिव्या०' यह पूर्वोक्त मन्त्र बोलकर अभिमन्त्रित करे।

१०. प्रेत-अर्घदान- तदनन्तर दाहिने हाथमें अर्धपात्र रखकर हाथमें

त्रिकुश, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प बोले-

ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रेतश्राद्धे प्रेत एषोऽर्घस्ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम् । इस तरह संकल्प कर भोजनपात्रमें रखे हुए पवित्रकपर अर्घका जल पितृतीर्थसे गिरा दे। फिर उस

पवित्रकको उठाकर दक्षिणाग्र अर्धपात्रपर रख दे। इसके बाद इस अर्धपात्रको उठाकर प्रेतासनके बायें भाग (पश्चिम दिशा) में 'प्रेताय स्थानमसि' कहकर सीधा रख दे। यहाँकी पवित्री छोड़ दे।

देवमण्डलमें आकर आसनपर बैठ जाय। सव्य पूर्वाभिमुख होकर पवित्री धारण कर ले। शेष छहों देवार्घपात्रोंका पूर्वोक्त देवरीतिसे अभिमन्त्रण कर हाथमें त्रिकुश, जौ, जल तथा अर्धपात्र लेकर संकल्पपूर्वक देवोंको अर्घदान निम्न भाँतिसे करे -

११. **विष्णु-अर्घदान** ॐ अद्यगोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्ति- पूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गते विष्णुश्राद्धे विष्णो एषोऽर्घस्ते नमः। बोलकर विष्णुभोजनपात्रमें रखे हुए पवित्रकपर देवतीर्थसे जल गिरा दे। पवित्रकको पूर्वाग्र अर्धपात्रमें रख दे तथा 'ॐ विष्णवे स्थानमसि' कहकर अर्धपात्रको देवके दाहिने अर्थात् देवासनके उत्तरमें सीधा स्थापित कर दे। इसी प्रक्रियासे निम्न सभी देवताओंको अर्घ प्रदान करे और पवित्रक तथा अर्घपात्रको भी निर्दिष्ट स्थानपर रख दे।

१२. **ब्रह्मा-अर्घदान** ॐ अद्यगोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्ति- पूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गते ब्रह्मश्राद्धे ब्रह्मन् एषोऽर्घस्ते नमः ।

१३. **विष्णु-अर्घदान** ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्ति- पूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गते विष्णुश्राद्धे विष्णो एषोऽर्घस्ते नमः ।

१४. शिव-अर्घदान ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्ति- पूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गते शिवश्राद्धे शिव एषोऽर्घस्ते नमः ।

१५. यम-अर्घदान ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्ति- पूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गते यमश्राद्धे यम एषोऽर्घस्ते नमः ।

१६. तत्पुरुष-अर्घदान ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्ति- पूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गते तत्पुरुषश्राद्धे तत्पुरुष एषोऽर्घस्ते नमः । देवमण्डलकी पवित्री यहीं उतार दे।

इकाई 15 - मध्यम षोडशी (एकादशाह)-2

प्रश्न -

१ .मध्यम षोडशी -(एकादशाह)2 किसे कहते है।

२ .मध्यम षोडशी -(एकादशाह)2 का सविस्तार वर्णन कीजिए।

आसनों पर पूजनसामग्री चढ़ाना- पहले नौ आसनोंपर सव्य पूर्वाभिमुख होकर देवमण्डलकी पवित्री पहनकर पूजनसामग्री चढ़ाये। पवित्री उतार दे। दसवें प्रेतके आसनपर अपसव्य

दक्षिणाभिमुख होकर प्रेतमण्डलकी पवित्री पहनकर पूजनसामग्री चढ़ाये, यहाँ जौके स्थानपर तिल रखे। पवित्री उतार दे। पुनः छः देव-आसनोंपर सव्य पूर्वाभिमुख होकर देवमण्डलकी पवित्री पहनकर पूजनसामग्री चढ़ाये।

आसनोंपर पूजन सभी आसनोंपर पृथक् पृथक् विविध उपचारोंसे पूजन करे। यथा-

यजमान बोले- 'इदमाचमनीयम्', आचार्य बोले (स्वाचमनीयम्) कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्) - कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्) - कहकर वस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते) - कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः) - कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे यवाक्षताः (सुयवाक्षताः) - कहकर जौ चढ़ाये, प्रेतके आसनपर इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः) - कहकर तिल चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्) - कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः) - कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः) कहकर दीपक दिखाये और हाथ धो ले।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्) - कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्) - कहकर फल समर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्) - कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा) - कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

प्रत्येक आसनपर संकल्प-जल छोड़ना- त्रिकुश, जौ, जल लेकर संकल्प कर पहले प्रथम नौ देवताओंके आसनोंपर संकल्पजल छोड़नेके लिये निम्न संकल्प एक बार बोले और नौ देवताओंके आसनपर पृथक् पृथक् देवतीर्थसे जल छोड़ दे-

संकल्प - ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृ- पङ्क्तिप्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धे विष्ण्वादिपुरुषान्तदेवा एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं नमः। यहाँकी पवित्री छोड़ दे।

दसवें आसनपर आकर यहाँकी पवित्री पहन ले। अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर त्रिकुश, तिल, जल लेकर संकल्प करे-

संकल्प - ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः)

प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्ति- प्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गते दशमे प्रेतश्राद्धे प्रेत एतान्यर्चनानि ते मया दीयन्ते, तवोपतिष्ठन्ताम्। ऐसा कहकर पितृतीर्थसे जल प्रेतासनपर छोड़ दे। यहाँकी पवित्री छोड़ दे।

देवमण्डलकी पवित्री पहनकर सव्य पूर्वाभिमुख हो जौ, जल, त्रिकुश लेकर निम्न संकल्प एक बार बोलकर शेष छः आसनोंपर जल छोड़ता जाय-

संकल्प ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृ- पङ्क्तिप्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धे विष्ण्वादितत्पुरुषान्तदेवा एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं नमः ।

मण्डलकरण प्रथम नौ देवताओंके आसनसहित भोजनपात्रोंके चारों ओर जलसे दक्षिणावर्त चतुष्कोण मण्डल करे। देवमण्डलकी पवित्री उतार दे। प्रेतमण्डलकी पवित्री धारण कर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर प्रेतके आसनसहित भोजनपात्रके चारों ओर गोल मण्डल वामावर्त बनाये। पवित्री उतार दे।

पुनः देवमण्डलकी पवित्री धारणकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर शेष छः देवताओंके आसनसहित

भोजनपात्रोंके चारों ओर दक्षिणावर्त चतुष्कोण मण्डल बनाये। सभी मण्डल बनाते समय निम्न मन्त्र पढ़े- ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति । एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु ॥

भूस्वामीके पितरोंको अन्नप्रदान- भूस्वामीके पितरोंको अन्न प्रदान करनेके लिये अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर किसी पात्रमें सब प्रकारके अन्न तथा साथमें जल, घृत, तिल लेकर - 'ॐ इदमन्नमेतद् भूस्वामिपितृभ्यो नमः' बोलकर अन्नादिको जलसे सिंचित भूमिपर दक्षिणकी ओर कुशके ऊपर रख दे और जल गिरा दे।

अन्नपरिवेषण - सभी भोजनपात्रोंसे जौ एवं तिल हटा दे। सव्य पूर्वाभिमुख होकर देवतीर्थसे नौ देवताओंके भोजनपात्रोंपर अन्न परोसकर जलपात्रोंमें जल तथा घृतपात्रोंमें घृत रख दे। देवमण्डलकी पवित्री उतारकर प्रेतमण्डलकी पवित्री पहन ले। अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर

प्रेतके भोजनपात्रपर पितृतीर्थसे अन्न परोसकर पात्रोंमें जल तथा घृत रख दे। प्रेतमण्डलकी पवित्री उतारकर देवमण्डलकी पवित्री पहन ले। सव्य होकर छः देवताओंके पात्रोंपर अन्नपरिवेषण कर दोनियोंमें जल तथा घृत रख दे।

मधु-प्रक्षेप - सव्यापसव्य होकर सभी देवभोजनपात्रों तथा प्रेतभोजनपात्रपर निम्न मन्त्र बोलते हुए दोनों हाथोंसे मधु डाले-

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव थं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता । मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँर अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ ॐ मधु मधु मधु ॥

पात्रालम्भन उत्तान बायें हाथके ऊपर दाहिना हाथ उत्तान स्वस्तिकाकार रखकर विष्णुके प्रथम अन्नपात्रका स्पर्श कर निम्नलिखित मन्त्र बोले-

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाथं सुरे स्वाहा ॥

ॐ कृष्ण हव्यमिदं रक्ष मदीयम् ।

अन्न आदिका स्पर्श बायें हाथको भोजनपात्रमें संकल्पपर्यन्त लगाये रखे और अनुत्तान दायें हाथके अँगूठेसे अन्न छूकर बोले- 'इदमन्नम्।' जल छूकर बोले- 'इमा आपः।' घी छूकर बोले- 'इदमाज्यम्।' पुनः अन्न छूकर बोले- 'इदं हव्यम् ।'

जौ बिखेरना - अन्नके ऊपर यह मन्त्र पढ़कर दाहिने हाथसे जौ छोड़े-ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः ।

हव्यदान-संकल्प- बायें हाथसे अन्नपात्रका स्पर्श किये हुए ही दायें हाथमें त्रिकुश, जल, जौ लेकर निम्नलिखित संकल्प बोलकर विष्णुके भोजनपात्रके पास जल आदिको छोड़े-

ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशार्थं क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गतविष्णुश्राद्धे विष्णवे इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं हव्यं स्वाहा सम्पद्यताम्, न मम।

इसी प्रकार पृथक् पृथक् आठ देवोंके भोजनपात्रोंका आलम्भन, अंगुष्ठनिवेशन तथा अन्नपर जौविकिरण करे और पृथक् पृथक् हव्यदानका संकल्प करे। यहाँकी पवित्री तथा त्रिकुशको यहीं छोड़ दे।

अष्टादश पदार्थोंमें परिगणित होनेके कारण प्रेतश्राद्धमें पात्रालम्भन तथा अन्नावगाहन निषिद्ध है।

कव्यदान-संकल्प- प्रेतमण्डलमें आकर यहाँकी पवित्री पहन ले। अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर प्रेतके अन्नपर 'ॐ अपहता असुरा रक्षांसि वेदिषदः' मन्त्रसे तिल छोड़े। तदनन्तर त्रिकुश, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्तिप्रवेशार्थ क्रियमाणे मध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गते दशमे प्रेतश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करममृतस्वरूपं कव्यं प्रेताय ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्। कहकर पितृतीर्थसे जल छोड़ दे। यहाँकी पवित्री उतार दे।

हव्यदान-संकल्प आगेके देवमण्डलमें आकर यहाँकी पवित्री धारण कर ले। सव्य पूर्वाभिमुख हो पूर्ववत् देवरीतिसे शेष छः देवताओंका पृथक् पृथक् पात्रालम्भन, अङ्गुष्ठनिवेशन, अन्नपर जौविकिरण तथा पृथक् पृथक् हव्यदानका संकल्प करे।

प्रार्थना - हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-

ॐ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्। अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं पित्रादीनां प्रसादतः ॥

पितृगायत्रीका जप निम्न पितृगायत्रीका जप करे देवताभ्यः ॐ - नमः नमो नित्यमेव स्वधायै स्वाहायै नमः । च एव महायोगिभ्य पितृभ्यश्च

॥

वेदशास्त्रादिका पाठ - इस अवसरपर यथासम्भव श्रुति, स्मृति, पुराण और इतिहासका पाठ करे, इससे पितरोंको प्रसन्नता होती है। पैरोंके नीचे पूर्वाग्र तीन कुश रख ले।

श्रुतिपाठ- ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् ॥

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मध्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ॥

ॐ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि ॥

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः ॥

स्मृतिपाठ - मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः ।

प्रतिपूज्य योगीश्वरं वर्णाश्रमेतराणां यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन् ॥

याज्ञवल्क्यं सम्पूज्य मुनयोऽब्रुवन् ।

नो ब्रूहि धर्मानशेषतः ॥

मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनोऽङ्गिराः । यमापस्तम्बसंवर्ताः कात्यायनबृहस्पती ।।

पराशरव्यासशङ्खलिखिता दक्षगौतमौ । शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः ॥

पुराण - नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।

देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः

चक्रवाकाः हंसाः सरसि मानसे ॥

शकुनिस्तस्य शाखाः । राजा धृतराष्ट्रोऽमनीषी ।। भीमसेनोऽस्य

शाखाः। ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च ॥ महाभारत दुर्योधनो मन्युमयो महाद्रुमः स्कन्धः कर्णः दुःशासनः पुष्पफले समृद्धे मूलं युधिष्ठिरो धर्ममयो महाद्रुमः स्कन्धोऽर्जुनो माद्रीसुतौ पुष्पफले समृद्धे मूलं कृष्णो विकिरदान - अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दक्षिण दिशाकी भूमिको जलसे सींच दे। उसपर तीन कालञ्जरे गिरौ।

शरद्वीपे तेऽभिजाताः कुरुक्षेत्रे वेदपारगाः ।

ब्राह्मणा प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ ॥

विकिरदान अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दक्षिण दिशाकी भूमिको जल से सींच दे। उसपर तीन कुश बिछाकर पिण्डदानके लिये निर्मित सामग्रीमेंसे किंचित् सामग्री लेकर उसमें तिल मिलाकर दाहिने हाथमें ले ले तथा त्रिकुश, तिल, जल साथ लेकर बिछाये गये कुशोंपर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए पितृतीर्थसे रख दे -

असंस्कृतप्रमीतानां त्यागिनां कुलभागिनाम् । उच्छिष्टभागधेयानां दर्भेषु विकिरासनम् ।।

अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम्॥

तदनन्तर पहिनी हुई पवित्री, त्रिकुश आदिका वहीं परित्याग कर दे। हाथ-पाँव धो ले। अपने आसनपर आ जाय। सव्य पूर्वाभिमुख होकर आचमन कर ले, नयी पवित्री धारण कर ले। श्रीहरिका स्मरण कर पिण्डदानके लिये वेदियोंका निर्माण करे।

वेदीनिर्माण - भोजनपात्रोंके पश्चिम पहले प्रादेशमात्र लम्बी तथा छः अंगुल चौड़ी नौ वेदियाँ बनाये और अपसव्य होकर प्रेतनिमित्तक एक (दसवीं) वेदी प्रेतभोजनपात्रके उत्तर बनाये। पुनः सव्य होकर छः देववेदियाँ बनाये।

अवनेजनपात्र-स्थापन देववेदियोंकी दक्षिण दिशामें अवनेजनपात्र (दोनिये या मिट्टीके दीये) रखे, प्रेतवेदीके पश्चिममें भी एक अवनेजनपात्र रखे। ये ही अवनेजनपात्र बादमें प्रत्यवनेजनपात्र कहलाते हैं।

प्रोक्षण - निम्न मन्त्र पढ़ते हुए पहले नौ वेदियोंको सव्यसे तथा प्रेतवेदीको अपसव्य होकर और पुनः सव्य होकर छः देववेदियोंको जलसे सींचकर प्रोक्षित कर ले-

ॐ पुरी अयोध्या द्वारावती मथुरा माया काशी काञ्ची ज्ञेयाः सप्तैता ह्यवन्तिका। मोक्षदायिकाः ॥

रेखाकरण - बायें हाथके अंगुष्ठ तथा तर्जनीसे तीन समूल कुशोंके अग्रभागको और दाहिने हाथके अंगुष्ठ तथा तर्जनीसे कुशोंके मूल भागको पकड़कर पश्चिमसे पूर्वकी ओर प्रेतवेदीको छोड़कर सभी देववेदियोंपर इस मन्त्रसे एक-एक रेखा खींचे-ॐ अपहता असुरा रक्षासि वेदिषदः। उन कुशोंको ईशान दिशामें फेंक दे।

प्रेतश्राद्धमें वर्ज्य अष्टादश पदार्थोंमें परिगणित होनेके कारण दसवीं (प्रेतकी) वेदीपर रेखा नहीं खींची जायगी।

उल्मुकस्थापन - सभी देववेदियोंके चारों ओर दायीं ओरसे प्रदक्षिणक्रमसे अंगारको निम्न मन्त्रसे घुमाये -

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति । परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् ॥ और उसे प्रथम विष्णुवेदीके दक्षिण की ओर श्राद्धपर्यन्त स्थापित कर दे।

इस प्रक्रियाका निर्वाह अंगार तथा गोहरी आदिके अभावमें ज्वालामुखी धूप आदिसे भी किया जा सकता है। प्रेतश्राद्धमें वर्ज्य अष्टादश पदार्थोंमें परिगणित होनेके कारण दसवीं प्रेतकी वेदीपर उल्मुक नहीं रहेगा।

अवनेजनपात्रनिर्माण - पूर्व स्थापित नौ देव-अवनेजनपात्रोंमें जल, जौ, गन्ध, पुष्प डाल दे। यहाँकी पवित्री उतार दे। प्रेतमण्डलकी पवित्री धारणकर प्रेत-अवनेजनपात्रमें अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर जल, तिल, गन्ध, पुष्प डाल दे, पवित्री उतार दे। पुनः देवमण्डलकी पवित्री पहनकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर शेष छः अवनेजनपात्रोंमें जल, जौ, गन्ध, पुष्प डाले। इसके बाद दायें हाथमें पहला अवनेजनपात्र (दोनिया अथवा दीया) तथा

त्रिकुश, जल, जौ लेकर अवनेजनका निम्न संकल्प करे -

अवनेजनदानका संकल्प - १. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश श्राद्धान्तर्गतविष्णुश्राद्धे पिण्डस्थाने विष्णो अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः । (वेदीपर खींची गयी रेखापर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें सीधा रखे ।)

२. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश-

श्राद्धान्तर्गतशिवश्राद्धे पिण्डस्थाने शिव अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। (वेदीपर खींची गयी रेखापर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें सीधा रखे।)

३. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतयमश्राद्धे पिण्डस्थाने यमराज अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। (वेदीपर खींची गयी रेखापर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें सीधा रखे।)

४. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतसोमश्राद्धे पिण्डस्थाने सोमराज अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। (वेदीपर खींची गयी रेखापर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें सीधा रखे।)

५. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतहव्यवाहनश्राद्धे पिण्डस्थाने हव्यवाहन अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। (वेदीपर खींची गयी रेखापर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें सीधा रखे।)

६. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं

क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतकव्यवाहनश्राद्धे पिण्डस्थाने कव्यवाहन अत्रावनेनिश्व ते नमः। (वेदीपर खींची गयी रेखापर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें सीधा रखे।)

७. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतकालश्राद्धे पिण्डस्थाने काल अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। (वेदीपर खींची गयी रेखापर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें सीधा रखे।)

८. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतरुद्रश्राद्धे पिण्डस्थाने रुद्र अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। (वेदीपर खींची गयी रेखापर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें सीधा रखे।)

९. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतपुरुषश्राद्धे पिण्डस्थाने पुरुष अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। (वेदीपर खींची गयी रेखापर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें सीधा रखे।) देवमण्डलकी पवित्री उतार दे।

१०. प्रेतमण्डलकी पवित्री धारण कर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर तिल, जल, त्रिकुश तथा अवनेजनपात्र लेकर -

ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतप्रेतश्राद्धे पिण्डस्थाने प्रेत अत्रावनेनिक्ष्व ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्। (बोलकर पितृतीर्थसे अवनेजनपात्रका आधा जल वेदीके मध्य गिराकर अवनेजनपात्र वेदीके पश्चिमकी ओर सीधा रख दे।) यहाँकी पवित्री उतार दे।

पुनः दूसरी पवित्री धारण कर सव्य पूर्वाभिमुख होकर त्रिकुश, जल, जौ लेकर ग्यारहवेंसे सोलहवेंतककी अवनेजनदान-क्रिया निम्नवत् करे -

११. ॐ अद्य... गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतविष्णुश्राद्धे पिण्डस्थाने विष्णो अत्रावनेनिश्व ते नमः। (वेदीपर खींची गयी रेखापर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें सीधा रखे।)

१२. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतब्रह्मश्राद्धे पिण्डस्थाने ब्रह्मन् अत्रावनेनिश्व ते नमः। (वेदीपर खींची गयी रेखापर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें सीधा रखे।)

१३. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतविष्णुश्राद्धे पिण्डस्थाने विष्णो अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। (वेदीपर खींची गयी रेखापर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें सीधा रखे।)

१४. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतशिवश्राद्धे पिण्डस्थाने शिव अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। (वेदीपर खींची गयी रेखापर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें सीधा रखे।)

१५. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतयमश्राद्धे पिण्डस्थाने यम अत्रावनेनिश्व ते नमः। (वेदीपर खींची गयी रेखापर देवतीर्थसे आधा जल छोड़े और अवनेजनपात्रको वेदीके दक्षिणमें सीधा रखे।)

१६. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गततत्पुरुषश्राद्धे पिण्डस्थाने तत्पुरुष अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। (वेदी पर खींची गयी रेखा पर देवतीर्थ से आधा जल छोड़े और अवनेजन पात्र को वेदी के दक्षिण में सीधा रखे।)

इकाई 16 - मध्यम षोडशी (वृषोसर्ग-एकादशाह)-3

प्रश्न -

१. - मध्यम षोडशी (वृषोसर्ग-एकादशाह)-3 किसे कहते है।

२. - मध्यम षोडशी (वृषोसर्ग-एकादशाह)-3 का सविस्तार वर्णन कीजिए।

वेदियोंपर कुश रखना - सव्य पूर्वाभिमुख रहकर ही पहले नौ देववेदियोंके मध्यमें खींची गयी रेखापर तीन-तीन कुश पूर्वाग्र रख दे, पवित्री उतार दे तथा प्रेतमण्डलकी पवित्री पहन ले। दसवीं प्रेतवाली वेदीपर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर तीन कुश दक्षिणाग्र रखे। पवित्री उतारकर नयी पवित्री पहन ले। पुनः सव्य पूर्वाभिमुख होकर शेष छः देववेदियोंपर तीन-तीन कुश पूर्वाग्र रखे।

पिण्डनिर्माण एवं पिण्डदान - पिण्डान्नमें शर्करा, मधु, घृत, जौ मिलाकर पंद्रह पिण्ड बना ले। प्रेतके लिये पकायी गयी खीरमेंसे एक पिण्ड प्रेतके लिये भी बना ले। प्रेतवाले पिण्डमें शर्करा, मधु, घृत, तिल मिला लेना चाहिये। सव्य और पूर्वाभिमुख होकर जौ, जल, त्रिकुश और एक-एक पिण्ड दायें हाथमें लेकर निम्न संकल्पके साथ पहले नौ देववेदियोंके मध्यमें स्थित कुशोंपर अवनेजनस्थानपर देवतीर्थसे पिण्ड रखता जाय -

१ प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं (प्रेतायाः) प्रेतस्य (गोत्रायाः) गोत्रस्य अद्य ॐ . पिण् एष विष्णो श्राद्धान्तर्गतविष्णुश्राद्धे -क्रियमाणमध्यमषोडशडस्ते नमः।

२. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतशिवश्राद्धे शिव एष पिण्डस्ते नमः ।

३. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतयमश्राद्धे यम एष पिण्डस्ते नमः ।

४. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश-

श्राद्धान्तर्गतसोमश्राद्धे सोमराज एष पिण्डस्ते नमः । ५. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतहव्यवाहनश्राद्धे हव्यवाहन एष पिण्डस्ते नमः ।

६. ॐ अद्य "गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्ग हान्तर्गतकव्यवाहनश्राद्धे कव्यवाहन एष पिण्डस्ते नमः।

७. ॐ अद्य "गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतकाल तर्गतकालश्राद्धे काल एष पिण्डस्ते नमः ।

८. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतरुद्रश्राद्धे रुद्र एष पिण्डस्ते नमः ।

९. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतपुरुषश्राद्धे पुरुष एष पिण्डस्ते नमः ।

कुशोंके मूलपर हाथ पोंछना - तदनन्तर पिण्डोंके नीचे बिछे हुए पिण्डाधार कुशोंके मूलमें पृथक् पृथक् हाथ पोंछ ले। पवित्री उतार दे।

दूसरी पवित्री पहनकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो हाथमें तिल, जल, त्रिकुश और तिल मिलाया हुआ पिण्ड लेकर निम्न संकल्पके साथ (दसवीं) प्रेतवेदीके मध्यमें कुशोंपर पितृतीर्थसे पिण्ड रख दे-

१०. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकपितृपङ्क्ति- प्रवेशार्थं

क्रियमाणमध्यमषोडशश्राद्धान्तर्गतप्रेतश्राद्धे प्रेत एष पिण्डस्ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम्।

तदनन्तर पिण्डोंके नीचे बिछे हुए कुशोंमें हाथ पोंछ ले। पवित्री उतार दे।

दूसरी पवित्री धारण कर पुनः सव्य पूर्वाभिमुख होकर त्रिकुश, जौ, जल तथा एक-एक पिण्ड दायें हाथमें लेकर निम्न संकल्प करके वेदीपर रखे कुशोंके मध्यमें देवतीर्थसे रखता जाय-

११. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतविष्णुश्राद्धे विष्णो एष पिण्डस्ते नमः ।

१२. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतब्रह्मश्राद्धे ब्रह्मन् एष पिण्डस्ते नमः ।

१३. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतविष्णुश्राद्धे विष्णो एष पिण्डस्ते नमः।

१४. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतशिवश्राद्धे शिव एष पिण्डस्ते नमः । १५. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश-श्राद्धान्तर्गतयमश्राद्धे यम एष पिण्डस्ते नमः ।

१६. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश-श्राद्धान्तर्गततत्पुरुषश्राद्धे तत्पुरुष एष पिण्डस्ते नमः ।

कुशों के मूलपर हाथ पोंछना - तदनन्तर पिण्डोंके नीचे बिछे हुए कुशोंके मूलपर पृथक्- पृथक् हाथ पोंछ ले। आचमन कर ले, भगवान्का ध्यान कर ले।

प्रत्यवनेजनदानका संकल्प - त्रिकुश, जौ, जल तथा सजल

प्रत्यवनेजनपात्र (पात्रमें जल न हो तो छोड़ ले) हाथमें लेकर प्रत्यवनेजनदानका संकल्प कर पिण्डोंपर सम्पूर्ण जल देवतीर्थसे छोड़कर पात्र पूर्ववत् रख दे-

१. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतविष्णुपिण्डे विष्णो अत्र प्रत्यवनेनिश्व ते नमः ।

२. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतशिवपिण्डे शिव अत्र प्रत्यवनेनिश्व ते नमः ।

३ प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं (प्रेतायाः) प्रेतस्य (गोत्रायाः) गोत्रस्य अद्य ॐ . यम श्राद्धान्तर्गतयमपिण्डे -क्रियमाणमध्यमषोडशअत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः ।

४ प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं (प्रेतायाः) प्रेतस्य (गोत्रायाः) गोत्रस्य अद्य ॐ ॐ . अत्र सोमराज र्गतसोमपिण्डे श्राद्धान्तर्गत -क्रियमाणमध्यमषोडश । नमः ते प्रत्यवनेनिक्ष्व

५. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश-

श्राद्धान्तर्गतहव्यवाहनपिण्डे हव्यवाहन अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः ।

६. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतकव्यवाहनपिण्डे कव्यवाहन अत्र प्रत्यवनेनिश्व ते नमः ।

७. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतकालपिण्डे काल अत्र प्रत्यवनेनिश्व ते नमः ।

८. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं

क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतरुद्रपिण्डे रुद्र अत्र प्रत्यवनेनिश्व ते नमः ।

९. ॐ अद्यगोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश-

श्राद्धान्तर्गतपुरुषपिण्डे पुरुष अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। पवित्री उतार दे।

दूसरी पवित्री पहनकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो त्रिकुश, तिल, जल तथा सजल प्रत्यवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प बोले-

१०. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतप्रेतपिण्डे प्रेत अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते मया दीयते, तवोपतिष्ठताम् ।

ऐसा कहकर पितृतीर्थसे प्रत्यवनेजनजल पिण्डपर गिराकर पात्रको पूर्ववत् रख दे। पवित्री उतार दे।

दूसरी पवित्री पहनकर पुनः सव्य पूर्वाभिमुख होकर त्रिकुश, जल, जौ तथा प्रत्यवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्पके साथ शेष छः पिण्डोंपर प्रत्यवनेजनजल गिराये।

११. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतविष्णुपिण्डे विष्णो अत्र प्रत्यवनेनिश्व ते नमः।

१२. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतब्रह्मपिण्डे ब्रह्मन् अत्र प्रत्यवनेनिश्व ते नमः ।

१३. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतविष्णुपिण्डे विष्णो अत्र प्रत्यवनेनिश्व ते नमः ।

१४. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश-

श्राद्धान्तर्गतशिवपिण्डे शिव अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः । १५. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश-श्राद्धान्तर्गतयमपिण्डे यम अत्र प्रत्यवनेनिश्व ते नमः ।

१६. ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गततत्पुरुषपिण्डे तत्पुरुष अत्र प्रत्यवनेनिश्व ते नमः ।

नीवीविसर्जन नीवी का विसर्जन कर उसे उत्तर की ओर फेंक दे, आचमन करे तथा भगवान्का स्मरण करे।

पिण्डपूजन - सव्यापसव्यसे निम्न रीतिसे विविध उपचारोंद्वारा पृथक् पृथक् पिण्डोंका पूजन करे तथा तीन-तीन कच्चे सूतोंको पिण्डपर वस्त्रके निमित्त चढ़ाये। यथा-

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) *- कहकर पिण्डोंपर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्) - कहकर पिण्डोंपर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर पिण्डोंपर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्) - कहकर वस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते) - कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः) कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे यवाक्षताः (सुयवाक्षताः) - कहकर जौ चढ़ाये, प्रेतके पिण्डपर इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः) - कहकर तिल चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्) - कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः) - कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः) - कहकर दीपक दिखाये और हाथ धो ले।

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्) - कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर पिण्डोंपर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्) - कहकर फल समर्पित करे। इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्) - कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा) - कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

पिण्डार्चनदानका संकल्प - सव्य पूर्वाभिमुख होकर त्रिकुश, जौ, जल लेकर प्रथमसे लेकर नौ पिण्डोंपर निम्न संकल्प पढ़कर हाथका जल गिराये -

ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतविष्ण्वादिपुरुषान्तदेवाः पिण्डेषु एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं नमः। यहाँकी पवित्री यहीं उतार दे।

दसवें प्रेतपिण्डपर अर्चनदान- दूसरी पवित्री धारण कर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दसवें पिण्डपर पूजनसामग्री अर्पित करके हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर अर्चनदानका संकल्प पढ़े और जल पिण्डपर चढ़ा दे-

ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं

क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतप्रेतपिण्डे प्रेत एतान्यर्चनानि ते मया दीयन्ते, तवोपतिष्ठन्ताम्। यहाँकी पवित्री यहीं उतार दे।

अर्चनदानका संकल्प पुनः दूसरी पवित्री धारण कर सव्य पूर्वाभिमुख होकर ग्यारहवेंसे सोलहवें पिण्डतक क्रमशः छः पिण्डोंपर निम्न संकल्प पढ़कर हाथका जल गिराये।

ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं क्रियमाणमध्यमषोडश- श्राद्धान्तर्गतविष्ण्वादितत्पुरुषान्तदेवाः पिण्डेषु एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं नमः ।

सद्गतिकी कामना प्रेतकी सद्गतिके लिये इस प्रकार बोले- एभिः पिण्डदानैः गोत्रस्य

(गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिः सद्गतिप्राप्तिश्च भवताम्।

अक्षय्योदकदान आचमन करके निम्न प्रकारसे अक्षय्योदकदान करे-

हाथमें जल लेकर 'ॐ शिवा आपः सन्तु' कहकर पहले नौ देवभोजनपात्रोंपर जल डाले।

हाथमें पुष्प लेकर 'ॐ सौमनस्यमस्तु' कहकर पहले नौ देवभोजनपात्रोंपर पुष्प डाले।

हाथमें जौ लेकर 'ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु' कहकर पहले नौ देवभोजनपात्रोंपर जौ डाले। देवमण्डलकी पवित्री उतार दे।

अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर प्रेतमण्डलकी पवित्री धारण कर प्रेतके भोजनपात्रपर 'ॐ शिवा आपः सन्तु' कहकर जल, 'ॐ सौमनस्यमस्तु' कहकर पुष्प एवं 'ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु' कहकर अक्षत छोड़े यहाँकी पवित्री उतार दे।

पुनः सव्य पूर्वाभिमुख हो देवमण्डलकी पवित्री धारण कर ग्यारहवेंसे लेकर सोलहवें- इस प्रकार छः देवभोजनपात्रोंपर 'ॐ शिवा आपः सन्तु' कहकर जल छोड़े, 'ॐ सौमनस्यमस्तु' कहकर पुष्प छोड़े तथा

'ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु' कहकर जौ छोड़े।

भोजनपात्रोंपर जलदानका संकल्प - एक पत्र-पुटकमें जौ एवं जल लेकर नीचे लिखे

मन्त्रोंसे भोजनपात्रोंपर जल डाले-

१. ॐ विष्णोर्दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

२. ॐ शिवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

३. ॐ यमस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

४. ॐ सोमराजस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

५. ॐ हव्यवाहनस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

६. ॐ कव्यवाहनस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

७. ॐ कालस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

८. ॐ रुद्रस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

९. ॐ पुरुषस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। यहाँकी पवित्री उतार दे।

१०. प्रेतमण्डलकी पवित्री धारण कर ले। अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर ॐ अद्य गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्त्यर्थं मध्यमषोडश श्राद्धान्तर्गतदशमप्रेतश्राद्धे प्रेतस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर प्रेतभोजनपात्रपर पितृतीर्थसे जल डाले। यहाँकी पवित्री उतार दे। अब सव्य और पूर्वाभिमुख होकर देवमण्डलकी पवित्री पहनकर -

११. ॐ विष्णोर्दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

१२. ॐ ब्रह्मणो दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

१३. ॐ विष्णोर्दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

१४. ॐ शिवस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

१५. ॐ यमस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

१६. ॐ तत्पुरुषस्य दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

कहकर देवभोजनपात्रोंपर देवतीर्थसे जल डाले।

पिण्डोंपर जलदान- सभी पंद्रह पिण्डोंपर पूर्वाग्र कुशत्रय अलग-अलग रखकर एक पात्रमें जल डालकर उसी जलसे निम्न मन्त्रसे पूर्वाग्र जलधारा दे। प्रेतके पिण्डपर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर उसपर निम्न मन्त्रसे दक्षिणाग्र जलधारा दे-

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः । अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥

नारायण सुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्त वरप्रद । अनेन तर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥

हिरण्यगर्भपुरुष व्यक्ताव्यक्त सनातन । अस्य प्रेतस्य मोक्षार्थं सुप्रीतो भव सर्वदा ॥

अब इसके बाद इन मन्त्रोंको बोले-ॐ विष्ण्वादितत्पुरुषान्तदेवा एषा जलधारा युष्मभ्यं नमः । ॐ विष्ण्वादयस्तत्पुरुषान्तदेवाः प्रीयन्ताम्, न मम।

आशीषप्रार्थना तदनन्तर निम्न मन्त्रसे यजमान प्रार्थना करे -

ॐ गोत्रं नो वर्धतां दातारो नोऽभिवर्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु ॥ (ब्राह्मण बोले- सन्तु एताः सत्या आशिषः ।)

पिण्डोंका आघ्राण- नम्र होकर सव्यसे पंद्रह देवपिण्डोंको और अपसव्यसे प्रेतपिण्डको सूँघे तथा उठाकर किसी पात्रमें रख दे। पिण्डाधार कुशों तथा उल्मुक (अंगार) को अग्निमें छोड़ दे।

अर्घपात्रोंका संचालन सव्यापसव्यसे सभी अर्घपात्रोंको हिला दे।

दक्षिणा-संकल्प - त्रिकुश, जौ, जल तथा हिरण्यादि दक्षिणा लेकर निम्न प्रकार संकल्प करे- ॐ अद्य... शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्रस्य (गोत्रायाः) प्रेतस्य (प्रेतायाः) प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वक-वैकुण्ठाद्युत्तमलोकप्राप्तिकामनया मध्यमषोडशश्राद्धानां प्रतिष्ठार्थं हिरण्यं (निष्क्रयद्रव्यं वा) ब्राह्मणेभ्यः सम्प्रददे ।

पितृगायत्रीका पाठ - तदनन्तर तीन बार पितृगायत्रीका पाठ कर ले-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

रक्षादीपनिर्वापण - सव्य होकर देवताओंके रक्षादीपपर दूसरा दीपक रखकर उसे बुझा दे और प्रेतका रक्षादीप अपसव्य होकर बुझाये। हाथ धो ले तथा आचमन कर ले।

प्रार्थना - तदनन्तर सव्य होकर प्रार्थना करे-

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि । न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम् ॥

ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ॥

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः । ॐ साम्बसदाशिवाय नमः । ॐ साम्बसदाशिवाय नमः ।

श्राद्धीय वस्तुओंको ब्राह्मणको दे दे अथवा गायको खिला दे या जलमें डाल दे।

इकाई 17 - उत्तम षोडशी (एकादशाह)-2

प्रश्न -

१. - उत्तम षोडशी (एकादशाह)-2 किसे कहते है।

२. - उत्तम षोडशी (एकादशाह)-2 का सविस्तार वर्णन कीजिए।

- शय्या के पास से उठकर श्राद्ध स्थल पर आ जाय।
- पूर्व की ओर मुख करके बैठे
- त्रिकुश से अपने ऊपर तथा श्राद्ध सामग्री पर जल छिड़के-

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

- ३ बार आचमन करे। नारायणाय नमः । केशवाय नमः । माधवाय नमः ।
- हाथ धो ले ।। **हृषीकेशाय नमः । पुण्डरीकाक्षः पुनातु ।।**
- दीपक पर अक्षत-तिल छिड़क कर प्रार्थना करे-

॥ हे दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् ।

यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ।।

- बाएं हाथ में पीली सरसों लेकर दाहिने हाथ से उसे ढंक कर निम्न मन्त्र पढ़े-

॥ नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तम ।

इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षत्वं सर्वतो दिशः ।।

- दाहिने हाथ से २-२ दाना सरसों चारों दिशा में छिड़के-पढ़े-
- हाथ की शेष सरसों अपने सामने भूमि पर छोड़ दें।

• अपने सामने भूमि पर जल-चंदन-अक्षत-पुष्प चढ़ांकर पूजन कर दें-

• पूजन वाक्य पढ़ता रहे ।। **श्राद्धभूम्यै नमः ।।**

• १ कुशा को ३ बार मोड़कर २ दाना तिल लेकर अपनी दाहिनी टेट में (धोती में) लपेट लें मन्त्र पढ़ें।

१. निहन्मि सर्वम् यद मेध्य कृद् भवेत्। हताश्च सर्वेऽसुर दानवा मया ।

यक्षांसि रक्षांसि पिशाच गुह्यका हतामया यातुधानाश्चसर्वे ।।

२. सोमस्य नीवीरसि विष्णोः शर्मासि शर्म यजमानस्येन्द्रस्यो- निरसि सुसस्याः कृषी स्कृधि ।

• त्रिकुश-तिल-जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करें-

अद्य आशौचान्त द्वितीये दिवसे अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः) प्रेतत्व विमुक्ति कामः षोडश श्राद्धान्तर्गत - (१) आद्य श्राद्धं तथा च, (२) प्रथम मासिक, (३) त्रैपाक्षिक, (४) द्वितीयमासिक, (५) तृतीयमासिक, (६) चतुर्थमासिक, (७) पंचममासिक, (८) ऊनषाण्मासिक, (९) षाण्मासिक, (१०) सप्तममासिक, (११) अष्टममासिक, (१२) नवम्मासिक, (१३) दशममासिक, (१४) एकादशमासिक, (१५) द्वादशमासिक एवम् (१६) ऊनाब्दिक-संज्ञकानि श्राद्धानि अहं करिष्ये ।

• कुश-तिल-जल भूमि पर छोड़ दें।

• ३ बार गायत्री का जप करें- ब्राह्मण मन्त्र पढ़ें-

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ।।

• जनेऊ अंगौछा उलटा पहन लें अपसव्य हो।

• दक्षिण दिशा में मुख करके बैठें।

- बायां घुटना मोड़ लें।

- दाहिने हाथ में मोटक-तिल-जल तथा १६ मोटक आमन के लिए लेकर संकल्प करें।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीये दिवसे अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः) एषु षोडश श्राद्धेषु इमानि-आसनानि मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ।।

- संकल्प के बाद इन १६ मोटकों को सामने के १६ तिप्ता आसन कर क्रमशः १-१ रख दें। [पश्चिम से पूर्व की ओर इसी क्रम से रखें]।

- हाथ में लगा तिल इन्हीं आसनों पर छिड़क दें।

- संकल्प वाला मोटक अपने सामने भूमि पर रख दें।

- सव्य होकर दाहिने हाथ के अंगूठे की जड़ से अपना नाक-कान छू लें।

नोट - यदि दान-प्रक्रिया शय्यादान के साथ पूरी नहीं की है, तो यहाँ पर करें

जूता-छाता आदि का दान करके आगे का श्राद्ध किया जाए, दान के लिए शय्या के पास फिर जाना चाहिए।

- दान के बाद पुनः श्राद्ध स्थल में आ जाएँ।
- दक्षिण की ओर मुख करके अपने आसन पर बैठे।
- अपसव्य हो जाय [जनेऊ अंगौछा दाहिने कंधे पर कर ले]।

- बाएँ हाथ में तिल लेकर दाहिने हाथ से २-२ दाना तिल सभी १६ भोजन पात्रों पर छिड़क दें।

- मन्त्र पढ़े। ॥ अपहता असुरा रक्षा ७ सिवे दिषदः ।।
- दाहिने हाथ में फिर तिल लेकर प्रेत का आवाहन करें-

।। आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष् वात्ताः पथिभिर् देवयानैः ।

अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु ते ऽवन् त्वस्मान् ।।

- हाथ का तिल सभी आसनों पर [१६ मोटकों पर] छिड़क दे।

- आसन के सामने रखी सभी १६ दोनियों में १-१ कुशा गाँठ लगाकर रख दें [कुश का अग्रभाग दक्षिण की ओर रहे।

।। पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण-सूर्यस्य रश्मिभिः ।

तस्य ते पवित्रपते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ।।

- सभी अर्धपात्र (दोनिया) में थोड़ा-थोड़ा जल भर दें, मन्त्र पढ़ता रहे-

॥ शन्नोदेवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये । शैय्योरभि स्रवन्तु नः ।।

- सभी दोनिया (अर्धपात्र) में २-२ दाना तिल छोड़ दे, मन्त्र पढ़े-

तिलोसि सोमदेवत्यो गोसवो देव निर्मितः ।

प्रत्नमद्भिः प्रत्तः स्वधया पितृन्-लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा ।।

- चुपचाप सभी अर्धपात्र में चंदन-फूल छोड़ दें।

- सभी १६ अर्धपात्र (दोनिया) से कुशा निकाल निकाल कर दोनिया के सामने वाले भोजन पात्र (पत्ता) पर उत्तर की ओर अग्रभाग करके रख दें।

[जिस दोनिया का कुशा हो उसी के आसन पर रखना चाहिए (ध्यान से रखें)]।

- संकल्प वाला मोटक लेकर पूजा के लोटा से बोर-बोर कर इन सभी १६ कुशों पर जल छिड़क दें।

- दाहिने हाथ से इन १६ अर्धपात्रों (दोनिया) को ढके मंत्र पढ़े-

।। या दिव्या आपः पयसा संवभूवुर् य अन्त रिक्षा उत पार्थिवीर्याः ।

हिरण्यवर्णा यज्ञियास् तान आपः शिवाःश १७ स्योना सुहवा भवन्तु ॥

- मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें-

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेदिवसे अस्मद् पितः यथानाम गोत्र ! प्रेत ! (मातः गोत्रे प्रेते) एषुश्राद्धेषु एते हस्तार्घाः ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम्।

- संकल्प करके हाथ का तिल-जल दोनिया पर छिड़क दें। मोटक सामने भूमि पर रख दें।

- क्रमशः १-१ अर्धपात्र उठा कर २-२ बूँद जल भोजन पात्र पर रखे कुश-पवित्री पर चढ़ाएँ।

- शेष जल आसन मोटक पर चढ़ा दे।

- भोजन पात्र पर रखे कुशा को उठा कर दोनिया (अर्धपात्र) में रख दे।

- दोनिया आसन के पीछे (दक्षिण में) उलट कर रख दे।

[इसी तरह सभी अर्धपात्र का जल चढ़ाएँ, कुश-पवित्री रखे, अर्धपात्र पीछे उलट कर रखता जाए—मन्त्र पढ़ता जाएः-।। पित्रे स्थान मसि ।।

[श्राद्ध के अन्त तक इन उलट कर रखी दोनिया को हिलाना-डुलाना नहीं चाहिए सभी १६ आसन मोटक पर २-२ दाना तिल छिड़क दें।

- बाएँ हाथ में १ कुशा लेकर प्रेत का ध्यान करें-

।। इमं लोकं परित्यज्य गतोऽसि परमां गतिम् ।

मनसा वायुरूपेण विप्रे त्वां योजयाम्यहम् ।।

- उक्त मन्त्र पढ़कर कुशा दक्षिण में फेंक दें।

- सभी १६ आसन मोटक पर चुपचाप मन में पिता (माता) का ध्यान करता हुआ:-

चंदन-तिल-फूल-कच्चा सूत-धूप-दीप नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी

दक्षिणा चढ़ाकर पूजन कर दें।

- मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें-

अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र ! प्रेत! (मातः गोत्रे-प्रेते) एषु श्राद्धेषु एतानि-गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-वासांसि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ।।

- संकल्प के बाद जल-तिल आसन पर छिड़क दे।

- दाहिने हाथ में जल लेकर आसन (भोजन पात्र) के चारों ओर घुमा कर भूमि पर छोड़ दे।

यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति । एवं मण्डल तोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु ॥

- १ दोनिया में थोड़ा सा जल छोड़कर अग्नि कोण में एक किनारे रख दे।

- १ चम्मच पिण्डा वाली खीर हाथ में लेकर तिल-घी लगाकर इस दोनिया में छोड़ दें-मन्त्र पढ़ें-

।। इदम्-अन्नम्-एतद्-भूस्वामि पितृभ्यो नमः ।।

- सभी १६ भोजन पात्रों पर फिर दूसरी १-१ दोनिया रख दें थोड़ा-थोड़ा जल सब दोनिया में भर दें।

- सभी १६ भोजन पात्रों पर १-१ बूँद घी तथा आधा चम्मच खीर रख दें। खीर पर २ बूँद शहद लगा दें।

- दोनों हाथ के अंगूठों से शहद छूकर, हाथ को उलटा कर (हथेली नीचे रहे)।

- सभी १६ भोजन पात्रों पर रखे घी-खीर-जल को ढक ले-या-भोजन पात्रों को छू लेंमन्त्र पढ़ें-

मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ।

मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पर्थिव १७ रजः । मधु द्यौ रस्तु नः पिता ।। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तुसूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः । मधु-मधु-मधु ।

- बाएँ हाथ से भोजन पात्रों को छूता हुआ - निम्न मन्त्र पढ़ें-

(१) पृथिवी ते पात्रं द्यौ रपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा ।

(२) इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढ़ मस्य पा सुरे स्वाहा ।।

(३) कृष्ण कव्य मिदं रक्ष मदीयम् ।।

- क्रमशः बाएँ उल्टे हाथ से १-१ भोजन पात्र को छूकर दाहिने हाथ के अंगूठे से उस पर का घी-खीर *दोनिया का जल ३-३ बार क्रमशः १-१ मोटक आसन पर छुआ दें। निम्न वाक्य पढ़ता रहे- [जिस पात्र का हो, उसी मोटक पर लगाए-एक दूसरे का उलट फेर न हो]।

खीर- इदमन्नम् । इदमन्नम् । इदमन्नम् ।

घी- इदमाज्यम् । इदमाज्यम्। इदमाज्यम् ।

जल इमा आपः। इमा आपः । इमा आपः ।

फिर खीर - इदं कव्यम् । इदं कव्यम् । इदं कव्यम् ।

- सभी १६ भोजन पात्रों पर तिल छिड़क दें। ॥ **अपहता असुरा रक्षा १७ सिवेदिषदः ।।**

- मोटक तिल-जल लेकर संकल्प करें-

अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र ! प्रेत ! (मातः गोत्रे ! प्रेते!) एषु श्राद्धेषु इमानि सोपकरणानि दत्तैतानि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ।

- हाथ का तिल-जल प्रेतासन पर छिड़क दे-

• सव्य होकर अपना नाक-कान छू लें, गायत्री जप करें- ब्राह्मण पढ़े :-

(१) मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन् त्वोषधीः । मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव १७ रजः । मधुद्यौरस्तु नः पिता।

मधुमान्नो वनस्पतिर् मधु माँ अस्तु सूर्यः । माध्वीर् गावो भवन्तु नः ॥

।। मधु ।। मधु ।। मधु ।।

(२) अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्।

तत् सर्वम छिद्रमस्तु ॥ परिपूर्ण मस्तृ ।।

• अपने पैर के नीचे ३ कुशा रखकर निम्न मन्त्रों का पाठ करें-

(१) कृणुष्व पाजः प्रसितिन् न पृथ्वीं याहि राजे बाम वाँ इमेन । तृष्वी मनु प्रसितिं दूणानोऽस्ताऽसि विध्य रक्षसस् तपिष्ठैः ।।

(२) तव भ्रमास आशु या पतन् त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः । तपू १७ ष्यग्ने जुह्वा पतंगान सन्दितो विसृज विष्व गुल्काः ।।

(३) प्रति स्पशो विसृज तूर्णि तमो भवा पायुर् विशो अस्या अदब्धः । यो नो दूरे अघ श १७ सो यो अन् त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरा दधर्षीत् ।।

(४) उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व न्यमित्राँ ओषतान् तिग्म हेते ।

यो नो अराति ७ समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम् ।।

(५) ऊर्ध्वा भव प्रति विध्या ध्यस्मदा विष् कृणुष्व देव्या न्यग्ने । अव स्थिरा तनुहि यातु जूनां जामि मजामिम् प्रमृणीहि शत्रून् ।।

• भूमि पर २ दाना तिल छिड़क कर फिर मन्त्र पाठ करे-

उदीरतामवर उत् परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।

असुं य ईयुर वृका ऋतज्ञास्ते नो ऽवन्तु पितरो हवेषु ।।

• पुरुषसूक्त का पाठ करे-

सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् । स भूमि १७ सर्वतस् पृत्वाऽत्य तिष्ठद् दशाङ्गुलम् । पुरुष एवेद १७ सर्वम् यद्भूतं यच्च भाव्यम् । उता मृतत्व स्येशानो यदन्ने नाति रोहति । एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः । पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिन्वि । त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः । ततो विष्वङ् व्यक्रामत् सा शना नशने अभि । ततोविराड जायत विराजो अधि पूरुषः । सजातो अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमि मथोपुरः । तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः सम् भृतं पृषदाज्यम् । पशूस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये । तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे । छन्दा १७ सि जज्ञिरे तस्माद् यजुस् तस्मा दजायत । तस्मा दश्वाअजायन्त ये के चो भयादतः । गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माजाता अजावयः । तँ यज्ञम्वर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषंजातमग्रतः । तेन देवा अयजन्त साध्याऋषयश्चये । यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् । मुखं किमस्यासीत् किंबाहू किमूरू पादा उच्येते । ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः । ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या १७ शूद्रोअजायत । चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योअजायत । श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत । नाभ्याआसीदन्तरिक्ष १७ शीर्णोद्यौः समवर्त्तत । पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ अकल्पयन् । यत् पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत । वसन्तोऽस्यासी दाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद् धविः । सप्तास्यासन् परिधयस् त्रिः सप्त समिधः कृताः । देवा यद् यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् । यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास् तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन् । तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः । आशुः शिशानो वृषभो नभीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् । संक्रन्दनो निमिष एकवीरः शत १७ सेना अजयत् साक मिन्द्रः ।। नमः शम्भवाय च भयो भवाय च नमः ।॥ शङ्करायच मयस्कराय च नमः । शिवाय च शिवतराय च ।। नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्तेऽनेक चक्षुषे । नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय वैः नमः ।।

इकाई 18 - उत्तम षोडशी (एकादशाह)-2

प्रश्न -

१. - उत्तम षोडशी (एकादशाह)-2 किसे कहते है।

२. - उत्तम षोडशी (एकादशाह)-2 का सविस्तार वर्णन कीजिए।

विकर पिण्डदान -

- अपसव्य होकर पहले विकर को पिण्ड दें।
- अग्नि कोण में १ किनारे (जिससे कुछ छू न जाए) ३ कुशा का टुकड़ा [दक्षिण की ओर कुशा का अग्रभाग रहे] विकर आसन के निमित्त रख दे।
- १ दोनिया में १ पिण्डा तिल-घी-शहद लगा कर रख ले, जल ले ले।
- ऊपर १ कुशा रख कर दाहिने हाथ से ढंक लें। मन्त्र पढे-

अनग्नि दग्धाश्च ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम ।

भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम् ॥

- अपने आसन से उठ कर अग्नि कोण में [जो ३ कुशा-आमन रखा है, उसी पर] पिण्डा सहित दोनिया उलट कर रख दें।
- दोनों हाथ की पवित्री (पैंती) उतार कर वहीं रख दें।
- श्राद्ध स्थल से बाहर निकल कर हाथ-पाँव धोकर अपने स्थान पर आकर बैठें।
- सव्य होकर अपने ऊपर जल छिड़के (पूर्व-मुख किए रहें)

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा ।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

- ३ बार आचमन करें-

।। ओम् नारायणाय नमः । ओम् केशवाय नमः । ओम् माधवाय नमः।।

- हाथ धो लें। दोनों हाथ में दूसरी पवित्री (पैंती) पहन लें। भगवान का ध्यान करे

अनादि निधनो देव शंख चक्र गदाधर ।

अव्यक्तः पुण्डरीकाक्षः सर्वपापहरो भव ।।

- जनेऊ अंगौछा उलटा कर अपसव्य हो जाय, दक्षिण की ओर मुख कर लें।

- बाएँ हाथ में क्रमशः १-१ कुशा लेकर दाहिने हाथ से कुशा का अग्रभाग पकड़ कर कुशा की जड़ से क्रमशः सभी १६ वेदी पर एक-एक रेखा (लाइन) खींच दें-मन्त्र पढ़ें-

।। अपहताऽअसुरा रक्षा गुं सिदिषदः।।

- लाइन खींच कर कुशा अपने पीछे उत्तर दिशा में फेंकता जाए।
- गोबर के कंडे पर अग्नि लेकर सभी वेदी पर घुमा दे मन्त्र पढ़ता रहे।

॥ ये रूपाणि प्रतिमुंचमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति ।

परापुरो निपुरो ये भरन्ति अग्निष्टान् लोकान् प्रणुदात्यस्मात् ।।

- घुमाने के बाद इस अग्नि को दक्षिण दिशा में अलग रख दें।
- मोटक से सभी वेदी पर जल छिड़क दें- मन्त्र पढ़ता रहे-

।। अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका ।

पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः ।।

- कुशा को बीच से अलग कर ३-३ कुश टुकड़ों को सभी वेदी पर रेखा (लाइन) के ऊपर बिछा दें।
- दक्षिण की ओर कुशा का अग्रभाग रहे।

- सव्य होकर अपना नाक-कान छू ले - हरि स्मरण करे।
- पूर्व दिशा की ओर मुख करके निम्न मन्त्र पढ़ें-

ओम् देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ।

नमः स्वाहायै स्वधाये नित्यमेव नमो नमः ।

- अपसव्य होकर दक्षिण मुख कर लें।
- हर वेदी के आगे (अपनी ओर) एक-एक रख दें।
- दोनिया में थोड़ा-थोड़ा जल भर दें, तिल-चन्दन-फूल छोड़ दे।
- मोटक तिल जल लेकर, बाएँ हाथ से सब दोनियया को छू लें। संकल्प पढ़ें-

अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र ! प्रेत! (मातः गोत्रे-प्रेते) एषु पिण्ड श्राद्धेषु पिण्डस्थानेषु अत्र अवने निग्ध्वं ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ।

- हाथ का तिल जल दोनिया पर छिड़क दें, मोटक अपने सामने भूमि पर रख दें।
- एक-एक दोनिया क्रमशः उठा-उठा कर २-२ बूंद जल वेदी पर बिछे कुशा पर चढ़ा दें।
- शेष जल सहित दोनिया अपने स्थान पर फिर रखता जाए।

।। पिण्डदान ।।

- खीर में तिल-घी-शहद मिलाकर बेल के समान १६ पिण्डा बना लें [थोड़ी खीर बिना तिल की बचाए रहें]।
- सभी पिण्डों पर १-१ बूँद शहद लगा दें, हाथ में मोटक लें।
- क्रमशः १-१ पिण्डा-तिल जल लेता जाय और संकल्प

पढ़-पढ़ कर वेदी पर कुशा के ऊपर रखता जाय।

(१) अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र ! प्रेत ! [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत आद्य श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठाम् ।

(२) अद्य पितः गोत्र ! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत प्रथम मासिक एषपिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।

(३) अद्य पितः गोत्र ! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत द्वितीय मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।

(४) अद्य पितः गोत्र ! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत त्रैपाक्षिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

(५) अद्य पितः गोत्र ! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत तृतीय मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।

(६) अद्य पितः गोत्र ! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत चतुर्थ मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।

(७) अद्य पितः गोत्र ! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत पंचम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।

(८) अद्य पितः गोत्र ! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत षाण्मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।

(९) अद्य पितः गोत्र ! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत ऊनषाण्मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।

(१०) अद्य पितः गोत्र ! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत सप्तम् मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।

(११) अद्य पितः गोत्र ! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत अष्टम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम्।

(१२) अद्य पितः गोत्र ! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत नवम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।

(१३) अद्य पितः गोत्र ! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत दशम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।

(१४) अद्य पितः गोत्र ! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत एकादश मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।

(१५) अद्य पितः गोत्र ! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत द्वादश मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।

(१६) अद्य पितः गोत्र ! प्रेत [मातः गोत्रे-प्रेते] षोडश श्राद्धान्तर्गत ऊनवार्षिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।

- हाथ का मोटक भूमि पर रख दें, हाथ का तिल पिण्ड पर चढ़ा दें।

- पिण्डा के नीचे वेदी पर जो कुशा बिछाया है, उन सब को छू लें।

- सव्य होकर नाक-कान छू लें, हरि स्मरण करें।

- प्रेत का ध्यान करता हुआ मुख सामने कर पिण्डों की ओर रोकी हुई श्वास (सांस) छोड़ दें; मन्त्र पढ़े-

अत्र पितर्मादयस्व यथा भाग मा वृषायस्व ।

अमीमदन्त पिता यथा भाग मा वृषायिष्ट ।।

- मोटक-तिल-जल-लेकर संकल्प करें-बाएँ हाथ से १६ दोनिया छू लें। [जिसका जल वेदी पर चढ़ाया है शेष जल सहित रखी है]।

।। अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र ! प्रेत ! [मातः गोत्रे-प्रेते] एषु श्राद्धेषु पिण्डे अत्र प्रत्यवने निग्ध्वं ते मया दीयन्ते तवोप तिष्ठन्ताम् ।।

- संकल्प कर हाथ का तिल-जल जो १६ दोनिया जल सहित सामने रखी है उस पर छिड़क दें; और

- क्रमशः १-१ दोनिया उठा कर उसका जल-तिल-फूल क्रमशः १-१ पिण्डों पर चढ़ा दें।

• दोनिया किनारे अलग फेंक दें।

• टेंट में (धोती में) जो कुशा-तिल लपेटा है। उसे निकाल कर नैऋत्य कोण में (अपने दाहिने हाथ दक्षिण की ओर कोने में) फेंक दें।

• सव्य होकर-नाक-कान छू लें- भगवान का ध्यान करें। फिर अपसव्य हो जाय।

• बाएँ हाथ में सूत लेकर दाहिने हाथ से पकड़कर प्रत्येक पिण्डा पर अलग-अलग चढ़ा दें, निम्न मन्त्र पढ़ता रहे-

नमस्ते पितः रसाय नमस्ते पितः शोषाय नमस्ते पितर् जीवाय । नमस्ते पितः स्वधायै नमस्ते पितर् घोराय नमस्ते पितर् मन्यवे । नमस्ते पितः पितर् नमस्ते गृहान्नः पितर् देहि नमस्ते पितर् देष्म । एतत्ते पितर् वासः।

• मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें

अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र प्रेत ! [मातः गोत्रे-प्रेते] एषु श्राद्ध पिण्डेषु एतानि वासांसि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ।

• हाथ का तिल-जल पिण्डों पर छिड़क दें, मोटक भूमि पर रख दें।

• चुपचाप मौन होकर पिण्डों पर क्रमशः -

चन्दन-तिल-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ाकर पूजन कर दें।

• मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें-

अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र ! प्रेत ! (मातः गोत्रे प्रेते) एषु श्राद्ध पिण्डेषु एतानि गन्धार्चन-पुष्प-धूप-ताम्बूल पूगीफलानि ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ॥

• संकल्प पढ़कर हाथ का तिल-जल पिण्डों पर चढ़ा दें मोटक भूमि पर रख दें।

• बची हुई खीर (बिना तिल मिली) थोड़ी-थोड़ी सभी पिण्डों के पास वेदी पर रख दें।

• दाहिने हाथ में जल ले-लेकर सभी पिण्डों के पास छोड़ दें। मन्त्र पढें ।॥ शिवा आपः सन्तु ।।

• फूल चढ़ा दें। ।। सौमनस्य मस्तु ।।

• भोजन पात्र पर अक्षत छोड़ दें। ।। अक्षतं चारिष्टं चास्तु ।।

• मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प पढ़ें-

अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य [मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः] एषु श्राद्धेषु दत्तैतानि अन्न-पानादिकानि उपतिष्ठन्ताम् ।

• हाथ का तिल-जल पिण्डों पर छिड़क दें।

• सव्य होकर नाक-कान छू लें- पूर्व की ओर मुख करके हरि का स्मरण करें।

• दक्षिण दिशा की ओर मुख करके दक्षिण दिशा को देखता हुआ (सव्य होकर ही)

• दाहिने हाथ में जल ले-ले कर पूर्व की ओर गिराता हुआ सभी पिण्डों पर जल धारा दे मंत्र पढ़ता रहे :--

।। अघोरः पिताअस्तु ।।

• पूर्व की ओर मुख घुमा कर - हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

ओम् गोत्रं नो वर्धन्ताम् दातारो नोऽभि वर्धन्ताम् वेदाः सन्तति रेव च ।

श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु ।।

अन्नं च नो बहु भवेद् अतिथींश्च लभेमहि ।

याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कंचन ।

एताः सत्या आशिषः सन्तु । सन्त्वेताः सत्या आशिषः ।।

• अपसव्य होकर सभी पिण्डों पर से पान-सुपारी फूल-सूत आदि पूजन-सामग्री हटा दें।

• सभी पिण्डों पर कुशा का ३-३ टुकड़ा रख दें।

• क्रमशः १-१ दोनिया में दूध मिला जल लें लेकर दक्षिण की ओर धार गिराते हुए क्रमशः १-१ पिण्डा पर जल-दुग्ध धारा दें- देते समय निम्न मन्त्र पढ़ता रहें-

ओम् ऊर्जम् वहन्ती रमृतंघृतं पयः कीलालं परिश्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयत मे पित्तरम् ।।

• थोड़ा झुककर सभी पिण्डों को सूँघ लें। पिण्डों को वेदी से उठा कर अलग रख दें।

अथवा १-१ पिण्ड उठा-उठा कर सूंघ कर अलग क्रिनारे रखता जाय।

• वेदी पर बिछे हुए सभी कुशों को उठाकर अग्नि में डाल दें।

• १६ अर्घ पात्र (दोनिया) जो आसन मोटक के पीछे उलट कर रखा है। उन सभी को सीधा कर दें- उनमें तिल छिड़क दें।

।। नौकादान ।।

[यदि "वैतरणी" विधि करनी है, तो "नौकादान" बाद में होगा।]

• सव्य होकर आचमन करें-गायत्री का जप कर लें।

• ऊख की नौका के ऊपर कपास तथा १ ताँबे की कटोरी में तिल रखें।

• ब्राह्मण तथा नौका पर जल-गन्ध-फूल छोड़ दें।

॥ इक्षुमयी नौकायै नमः ।। देय ब्राह्मणाय ते नमः ।।

• ब्राह्मण के हाथ में जलदे कहे - ॥ अद्य इमां इक्षुमयी नौकां ते ददानि ।।

- ब्राह्मण कहे ।। ददस्व ॥

- नौका तथा ब्राह्मण पर फिर जल छिड़क दें। कुश-अक्षत जल लेकर संकल्प करें।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि गोत्रस्य पितुः प्रेतस्य [मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः] प्रेतत्व विमुक्तिकामनया यममार्गे वैतरणी उत्तारणार्थम् इमाम् इक्षुमयी नौकां सकार्पासां तिल पात्र सहितां च यज्ञपुरुष दैवताम् गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे

- ब्राह्मण को संकल्प देकर नौका स्पर्श करा दें।
- ब्राह्मण नौका छूकर कहे ।। स्वस्ति
- फिर कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर सांगता दें।

।। अद्य कृतेतत् इक्षुमयी नौकादान सांगता सिध्यर्थम्-इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे

- ब्राह्मण को सांगता दे ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति

।। सान्नोदक कुम्भदान ।॥

- मिट्टी का घड़ा जल भर कर अपने सामने रखें। अपसव्य हो जाएँ, दक्षिण मुख करें।

- एक सीधा [आटा-चावल-दाल आदि घड़ा के पास रख लें।

[इस घड़ा तथा सीधा को ही सान्नोदक कुम्भ कहते हैं]

- घड़ा तथा सीधा पर जल-गन्ध-तिलाक्षत-फूल आदि चढ़ा दें।
- ब्राह्मण पर भी गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा
- कुश-तिल-जल लेकर संकल्प करें।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीये दिवसे गोत्रस्य पितुः प्रेतस्य [मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः] प्रेतत्व विमुक्तिकामनया यम मार्गे गाढ़ तृष्णा-तृषा-निवारणार्थम् इदं सान्नोदकं कुम्भं सोपस्कर महितं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय

तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

- संकल्प ब्राह्मण को दे दें ब्राह्मण लेकर कहें ।। स्वस्ति ।।
- फिर मोटक-तिल-जल द्रव्य लेकर सांगता दें।

।। अद्य कृतेतत् सान्नोदक कुम्भदान प्रतिष्ठा सिध्यर्थम् इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

- ब्राह्मण को सांगता दे दें ब्राह्मण लेकर कहें ।। स्वस्ति ।।
- हाथ जोड़कर प्रार्थना करें-

।। गन्धोदक तिलैर्मिश्र सान्नं कुम्भं समन्वितम् ।

पितृभ्यः सम्प्रदास्यामि ह्यक्षय्य मुपतिष्ठताम् ।।

।। वर्षाशनदान ।।

[वर्ष भर के लिए जो अन्न दिया जाता है उसे वर्षाशन कहते हैं] वर्षाशन तथा ब्राह्मण पर जल-गन्ध-अक्षत-फूल चढ़ा दें।

- ब्राह्मण के हाथ में जल दें कहें ।। अद्य इदं वर्षाशनं ते ददानि ।।
- ब्राह्मण कहें ।। ददस्व ।।।
- फिर ब्राह्मण तथा वर्षाशन पर जल छिड़क दें।
- मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि गोत्रस्य पितुः प्रेतस्य [मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः] प्रेतत्व विमुक्ति कामनया प्रेताद्यारभ्यमाण दिन पर्यन्त दशदिवस न्यून संवत्सर भोग्यान्नम् इदं वर्षाशनं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

- □ ब्राह्मण को संकल्प दे दें।
- ब्राह्मण लेकर कहें ।॥ स्वस्ति ।।
- फिर मोटक-तिल जल द्रव्य लेकर सांगता दें।

।। अद्य कृतैतत् वर्षाशन दान प्रतिष्ठार्थम् इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे

ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

- ब्राह्मण को सांगता दे दें ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति ।।

।। दक्षिणादान ।।

- मोटक-तिल-जल लेकर ब्राह्मण को श्राद्ध की दक्षिणा दें।

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि गोत्रस्य पितुः प्रेतस्य [मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः] प्रेतत्व विमुक्ति कामनया स्वर्ग प्राप्ति कामनया च कृतैतेषां श्राद्धानां प्रतिष्ठार्थम् इदं दक्षिणा द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

- ब्राह्मण को दक्षिणा दें दें।
- ब्राह्मण लेकर कहें ।। स्वस्ति ।।

।। ब्राह्मण भोजन संकल्प ।।

- मोटक-तिल-जल लेकर ब्राह्मण भोजन का संकल्प करें :-

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य [मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः] प्रेतत्व विमुक्ति कामनया अक्षय स्वर्गादि उत्तमलोक फल प्राप्ति कामनया अस्मिन् श्राद्ध दिवसे यथान्नेन यथासंख्यकान् ब्राह्मणान् [एकं ब्राह्मणम्] भोजयिष्ये । दक्षिणां ताम्बूलं च दास्ये ।।

- संकल्प पढ़कर मोटक-तिल-जल सामने भूमि पर छोड़ दें।
- हाथ में जल-तिल-चावल लेकर दीपक बुझा दें सव्य हो जाय आचमन कर लें।
- पूर्व की ओर मुख करके गायत्री जप कर लें। प्रार्थना करें।

प्रमादात् कुर्वताम् कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्तया तपो यज्ञ क्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ।। विष्णवे नमः । विष्णवे नमः । विष्णवे नमः ।

- पान-सुपारी-दक्षिणा ब्राह्मण उठा लें, कुशा को छोड़कर शेष

प्रयुक्त सामग्री, जैसे-

- वेदी की मिट्टी दोनिया-पत्तल-पिण्डा-खीर-तिल-जवा-फूल आदि जो पिण्डा पर चढ़ा था। उपयोग में आ चुका है- सब बटोर कर नदी-तालाब में अथवा बाग-बगीचे में एक किनारे फेंक दें।
- कुशा को बटोर कर एक किनारे कहीं अलग फेंक दें। श्राद्ध स्थान को लीप कर स्वच्छ शुद्ध कर दें।
- यदि सपिण्डन भी इसी दिन करना है, तो ब्राह्मण भोजन सुफल बाद में होगा।

सपिण्डन इस दिन नहीं करना है तो ब्राह्मण भोजन करा दें। बिठाकर पांव दाबें, आशीर्वाद सुफल लेना चाहिए। ब्राह्मण को पान दक्षिणा दें।

प्रश्न -

१ .मध्यम षोडशी किसे कहते है।

२ .मध्यम षोडशी का सविस्तार वर्णन कीजिए।

खण्ड 4
इकाई 19 : सपिण्डन एवं त्रयोदशाह

- सपिण्डन श्राद्ध में पिण्ड के लिए दो जगह अलग-अलग खीर पकाई जाती है।
- १ छोटी हाँडी में लगभग १ बेल के समान पिण्ड के लिए खीर प्रेत के निमित्त पकाएँ।
- दूसरी खीर बड़ी हाँडी में बेल के समान ५ पिण्ड तैयार हो - इस अनुमान से पितरों के लिए पकाएँ।
- गोबर के कंडे में तथा मिट्टी के पात्र में खीर पकाई जाती है।
- लोहे के पात्र में खीर नहीं पकानी चाहिए और लोहे की कलछुल से चलाना भी नहीं चाहिए।
- खीर चलाने के लिए १ लकड़ी या सरकंडा जैसी कोई पवित्र वस्तु का प्रयोग करना चाहिए।
- मृत प्रेत का श्राद्ध तथा पितरों का श्राद्ध अलग-अलग होता है। इसलिए दोनों के बीच १ हाथ की दूरी
- सुविधा के लिए दोनों के बीच में १ रेखा (लाइन) खींच देनी चाहिए।
- प्रेत की खीर या अन्य प्रेत श्राद्ध सामग्री या प्रेत-श्राद्ध स्थल के स्पर्श के बाद जब पितरों की ओर आना हो अथवा पितरों वाली खीर या अन्य कोई वस्तु स्पर्श करनी पड़े तो हाथ-पाँव धोकर ही करना चाहिए।
- मृत प्रेत तथा पितरों के लिए अलग-अलग २ जल पात्र भी रखना चाहिए।
- मोटक-पैंती भी अलग-अलग रखें। जिस ओर जाएँ- उस ओर की पैंती पहन लें और उधर का मोटक इस्तमाल करें।

- श्राद्ध की पूजन-सामग्री भी प्रेत के लिए अलग तथा पितर-विश्वेदेवा के लिए अलग दो जगह रखे।
- पितरों की पूजन सामग्री से "विश्वेदेवा" की पूजा होती है।
- श्राद्धकर्ता दक्षिण दिशा की ओर मुख करके पिण्डदान करेगा। अतः दक्षिण की ओर पितरों की वेदी बनाएँ।
- पितर वेदी के पश्चिम विश्वेदेवा का आसन रखना चाहिए।
- पितर वेदी के पूर्व बाईं ओर १ लाइन खींचकर लाइन के पार प्रेत की वेदी बनाएँ।
- प्रेतवेदी १ बीता लम्बी-चौड़ी दक्षिण की ओर नीची जिससे जल दक्षिण की ओर ही बहे- इस ढंग से
- बनाएँ। प्रेत वेदी के आगे दक्षिण की ओर ३ पत्ता जोड़कर १ आसन रखें।
- पितरों के लिए ३ वेदी उत्तर से दक्षिण के क्रम में अर्थात् अपने सामने से आगे की ओर ढालदार बनाएँ।
- पितरों के लिए ३-३ पत्ता जोड़कर ३ आसन वेदी के दक्षिण दिशा में बगल-बगल (पूर्व से पश्चिम के क्रम में) रखें।

।। श्राद्ध प्रारम्भ ।।

- पहले पितृस्थल की ओर आसन पर बैठकर पूर्व की ओर मुख घुमाकर -
- अपने ऊपर तथा श्राद्ध सामग्री पर त्रिकुश से जल छिड़कें-

।। अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

- ३ बार आचमन करें।

नारायणाय नमः । केशवाय नमः । माधवाय नमः ।

हृषीकेशाय नमः । पुण्डरीकाक्षः पुनातु ।

- हाथ धो लें।
- बाएँ हाथ में सरसों लेकर दाहिने हाथ मे ढंक कर निम्न मन्त्र पढ़ें-

।। नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तम । इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षत्वं सर्वतो दिशः ।।

- दाहिने हाथ से ४-४ दाना सरसों सभी दिशाओं में छिड़के मन्त्र पढता रहे-

पूर्व में	- प्राच्ये नमः ।	दक्षिण में	- अवाच्यै नमः ।
पश्चिम में	- प्रतीच्यै नमः ।	उत्तर में	- उदीच्यै नमः ।
ऊपर आकाश में -	अन्तरिक्षाय नमः ।	नीचे भूमि में -	भूम्यै नमः ।

- पढ़कर हाथ का सब सरसों सामने भूमि पर छोड़ दें।
- अपने सामने भूमि पर ३ बार जल छोड़ दें- चंदन-अक्षत-पुष्प छोड़ कर पूजा कर दें- पूजन वाक्य पढ़ता रहे- ॥ श्राद्धभूम्यै नमः ।। इसी वाक्य से गन्धाक्षत-पुष्प चढ़ा दें।
- १ कुशा २ दाना तिल लेकर दाहिनी ओर कमर में (धोती के टेट में) खोस लें-

१. निहन्मि सर्वम् यदा मेध्य कृद् भवेत् हताश्च सर्वेऽसुर दानवा मया । रक्षांसि यक्षांसि पिशाच गुह्यका हतामया यातुधानाश्चसर्वे ।।

२. सोमस्य नीवीरसि विष्णोः शर्मा सि शर्म यजमानस्येन्द्रस्व । योनिरसि सुसस्याः कृषी स्कृधि ॥

- त्रिकुश-अक्षत-जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करें-

पिता के लिए- ।। अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्ति पूर्वक अक्षय स्वर्गादि उत्तमलोक प्राप्ति कामनया तथा च अमुक गोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्धपपितामहानां यथानाम धेयानां पितामहादि

त्रय श्राद्ध सम्बन्धिकाल काम विश्वेदेव पूर्वकाणां सपिण्डीकरण श्राद्धमहं करिष्ये ।।

१. सधवा माता के लिए -।। अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः प्रेतत्व विमुक्ति पूर्वक अक्षय स्वर्गादि उत्तमलोक फल प्राप्ति कामनया पितामही वृद्धप्रपितामहीनां पितामह्यादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिकाल काम विश्वेदेव पूर्वकाणां सपिण्डीकरण श्राद्धमहं करिष्ये ।।

२. विधवा माता के लिए- ।। अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः प्रेतत्व विमुक्ति पूर्वक अक्षय स्वर्गादि उत्तमलोक फल प्राप्ति कामनया पितृ- पितामह- प्रपितामहानां यथानाम धेयानां पित्रादित्रय श्राद्ध सम्बन्धिकाल काम विश्वेदेव पूर्वकाणां सपिण्डीकरण श्राद्धमहं करिष्ये ।।

- हाथ का कुश-जल-अक्षत सामने भूमि पर छोड़ दें।
- दाहिने हाथ से अपना नाक-कान छू लें। गायत्री जप लें।

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

- पश्चिम की ओर मुख कर लें। विश्वेदेवा का पूजन करें।
- त्रिकुश-जवा-जल तथा १ कुशा गाँठ लगाकर [विश्वेदेवा के आसन हेतु] दाहिने हाथ में लेकर संकल्प करें।

पिता- ।। अद्य अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक अमुक गोत्राणां पितामह प्रपितामह-वृद्ध प्रपितामहानां यथानामधेयानां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा इदमासनं वो नम:

सधवा माता- ।। अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक अमुक गोत्राणां पितामही प्रपितामही वृद्ध प्रपितामहीनां देवीनां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः ।।

विधवा माता हेतु - ॥ अद्य मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक गोत्राणां पितृ-पितामह-प्रपितामहानां नामधेयानां श्राद्ध सम्बन्धिनो

विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः ।।

- आसन का कुशा विश्वेदेव के लिए रखे तिप्ता (पत्ते का आमन) पर पूर्वाग्र रख दें।
- हाथ का जव-जल उसी पर चढ़ा दें। संकल्प का त्रिकुश भूमि पर रख दें।
- हाथ में जवा लेकर आवाहन करें- निम्र मन्त्र पढ़ें- ।।

विश्वेदेवास आगत श्रृणुताम इम हवम्। एदम्बर्हिर्निषीदत ।

विश्वान्-देवान्-अहम्-आवाहयिष्ये।।

- हाथ जवा विश्वदेव पर चढ़ा निम्न मन्त्र

यवोसि यव यास्म यवयारातीः ॥

- हाथ जोड़कर विश्वदेव प्रार्थना

विश्वेदेवाः श्रृणुतेम १७ हवम्मे अन्तरिक्षे य उप द्य विष्ठ ये अग्नि जिह्वा उतवा आसद्यास्मिन् वर्हिषि मादयध्वम् ।।

विश्वेदेवा महाबलाः विहिताः सावधाना भवन्तु ते ।।

- अर्घपा के प्याले पर 1 पर टुकड़ा लगाकर पूर्वाग्र रखें मन्त पढे

पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यमिच्छद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम्

- पियाले जल जवा रख दे

शन्नोदेवी रभिष्टयआपो भवन्तु पीयते शययो रविस्रवन्तु नम:

यवोसि यव यास्म द्वेषो यव या राती:

- चुपचाप अर्घपात्र में चन्दन-फूल छोड़ दें।
- अर्धपात्र को दाहिने उठाकर बाएं हाथ में रखें
- प्याले में रखे हुए गाँठ लगे कुश पवित्री को प्याले से निकालकर भोजनपात्र (पत्ता) पर रख दें।

• त्रिकुश से बोर कर पूजा के लोटा का जल इस कुश पवित्री पर छिड़क दें।

• दाहिने हाथ से प्याले को ढंक लें-मन्त्र पढ़ें-

या दिव्याआपः पयसा संवभूवुर्या अन्तरिक्षा उत पार्थिवीर्याः । हिरण्यवर्णा यज्ञियास् तान आपः शिवाः श १७ स्योना सुहवा भवन्तु ।।

• त्रिकुश-जवा-जल तथा अर्धपात्र पियाला दाहिने हाथ में लेकर संकल्प पढ़ें-

१. पिता हेतु- ।। अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक गोत्राणां पितामह - प्रपितामह-वृद्ध प्रपितामहानाम् यथानामधेयानाम् श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एष हस्तार्घो वो नमः ।।

२. सधवा माता के लिए -।। अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक गोत्राणां देवीनां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एष हस्तार्घो वो नमः ॥

३. विधवा माता के लिए- ।। अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक गोत्राणां पितृ-पितामह-प्रपितामहानां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एष हस्तार्घो वो नमः ।।

• संकल्प करके प्याले का जल २ बूँद भोजन पात्र पर रखे कुशपवित्री पर चढ़ाकर शेष जल आसन (कुश) पर चढ़ा दें।

• भोजन पात्र पर रखे कुश टुकड़े को उठाकर प्याला में रख लें।

• प्याला आसन के पीछे दाहिनी ओर सीधा ही रख दें- मन्त्र पढ़ें ।। विश्वे देवेभ्यः स्थानमसि ।।

• इस प्याले को श्राद्ध के अन्त तक हिलाना-डुलाना नहीं चाहिए।

• विश्वेदेव (कुश) पर जव-फूल-धूप-दीप-कच्चासूत-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ाकर पूजन करें।

• कुशा-जवा-जल लेकर संकल्प पढ़ें-

पिता हेतु -।। अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक गोत्राणां पितामह - प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहानाम् श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल वासांसि वो नमः ।।

सधवा माता के लिए- अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक गोत्राणां पितामही-प्रपितामही-वृद्ध प्रपितामहीनां देवीनां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल वासांसि वो नमः ।। विधवा माता के लिए अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक गोत्राणां पितृ-पितामह-प्रपितामहानां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल वासांसि वो नमः ॥

• हाथ का जवा-जल विश्वेदेव आसन पर चढ़ा दें। त्रिकुश भूमि पर रख दें।

• दाहिने हाथ में जल लेकर विश्वेदेव के आसन-भोजन पात्र आदि सबके चारों ओर घुमाता हुआ सामने भूमि पर छोड़ दें-मन्त्र पढ़ता रहे-

॥ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति ।

एवं मण्डल तोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु ।।

• अपसव्य होकर दक्षिण की ओर मुख करके १ दोनिया में १ चम्मच खीर (पितर खीर से) २ दाना तिल, १ बूंद घी-शहद-जल लें।

• मोटक-तिल-जल तथा दोनिया हाथ में लेकर मन्त्र पढ़ें-

।। इदम्-अन्नम्-एतद्-भूस्वामि पितृभ्यो नमः ॥

• यह वाक्य पढ़ता हुआ दोनिया खीर-जल सहित विश्वेदेव आसन की बायीं ओर कोने में सीधी ही रख दें।

• हाथ का तिल-जल उसी दोनिया पर छोड़ दें। मोटक भूमि पर

रख दें।

• सव्य होकर-नाक-कान छू कर - विश्वेदेव के भोजन पात्र पर (आसन के आगे रखे पत्ते पर) आधा

• चम्मच खीर-२ बूँद घी और १ दोनिया में जल रख दें। खीर पर शहद लगा दें।

• दोनों हाथ के अँगूठे में शहद लगाकर सीधा हाथ (हथेली ऊपर की ओर रहे) विश्वेदेव की ओर करें- निम्न मन्त्र पढ़ें-

।। मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ।।

मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पर्थिव १७ रजः मधु द्यौरस्तु नः पिता । मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः माध्वीर्गावो भवन्तु नः मधु-मधु-मधु ।

• दोनों हाथ से (बाएँ हाथ पर दाहिना हाथ रखकर) भोजन पात्र (जिस पर घी-खीर-जल रखा है) छू लें-मन्त्र पढ़ें-

(१) पृथिवी ते पात्रं द्यौ रपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।

(२) इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् समूढमस्य पा १७ सुरे स्वाहा ।।

(३) कृष्ण हव्यमिदं रक्षमदीयम् ।।

• बाएँ हाथ से भोजन पात्र को स्पर्श किये रहे- दाहिने हाथ के अंगूठे से भोजन पात्र पर रखे घी-खीर-जल को क्रमशः ३-३ बार कुश आसन में छुवा दे-

खीर -	इदमन्नम्	इदमन्नम्	इदमन्नम्
घी-	इदमाज्यम्	इदमाज्यम्	इदमाज्यम्
दोनिया का जल-	इमा आपः	इमा आपः	इमा आपः

फिर खीर- इंदं हविः इंदं हविः इंदं हविः

- भोजन पात्र पर ४ दाना जवा छोड़ दे मन्त्र पढ़े-

।। यवोसि यव यास्म द्वेषो यव या रातीः ।।

- त्रिकुश-जवा-जल लेकर संकल्प पढ़े-

पिता हेतु अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहानाम् श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतद्-अन्नं सोपकरणं वो नमः ।।

सधवा माता हेतु-अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक गोत्राणां पितामही-प्रपितामही-वृद्ध प्रपितामहीनां देवीनां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतदन्नं सोपकरणं वो नमः ।।

विधवा माता हेतु-अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक पितृ-पितामह-प्रपितामहानां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतदन्नं सोपकरणं वो नमः ।।

- हाथ का जवा-जल विश्वेदेव पर चढ़ा दे।
- त्रिकुश सामने भूमि पर रख दे।
- हाथ जोड़ ले-विश्वेदेव का पूजनकार्य समाप्त करे।

प्रेत कार्य प्रारम्भ

- विश्वेदेव का कार्य समाप्त कर
- उधर की पैती उतार कर
- प्रेत श्राद्ध वेदी के पास आकर दक्षिण की ओर मुख करके बैठे।
- जनेऊ अंगौछा उलटा पहन कर अपसव्य हो जाय, बायां पैर मोड़ ले।
- इस ओर की पैंती (पवित्री)' दोनों हाथ में पहन ले।

• दाहिने हाथ में मोटक-तिल जल तथा १ अतिरिक्त मोटक प्रेत आसन के लिये लेकर संकल्प पढ़े-

• पिता, सधवा माता, विधवा माता सभी के लिए यही संकल्प होगा:- ।।

अद्य अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः) सपिण्डीकरण श्राद्धे इदम्-आसनं ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।।

• संकल्प करके आसन वाला मोटक सामने तिप्ता (आसन) पर रख दे।

• हाथ का तिल-जल उसी पर गिरा दे मोटक भूमि पर रख दे।

• दाहिने हाथ से आसन पर तिल छिड़के मन्त्र पढ़े-

।। अपहताअसुरा रक्षा सिवेदिषदः ।।

• हाथ जोड़कर आवाहन करे-

आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानेः ।

अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन् त्वस्मान् ।।

• प्रेत-आसन के सामने अर्धपात्र के पियाले में १ कुशा (बीच भाग निकाल कर) उसमें गांठ लगाकर रख दे-निम्न मन्त्र पढ़े-

पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत् पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ।।

• निम्न मन्त्र पढ़कर अर्धपात्र पियाले में जल भरे-तिल-छोड़े।

जल- शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु प्रीतये शंय्यो रभि स्रवन्तु नः । तिल - तिलोसि सोमदेवत्यो गोसवो देव निर्मितः ।

प्रत्नमद्भिः प्रत्तः स्वधया पितृन्-लोकान् प्रीणाहिनः स्वाहा ।।

• चुपचाप गंध (चन्दन) फूल अर्घपात्र में छोड़ दे।

- बाएँ हाथ में अर्धपात्र रख कर उसमें का कुशा भोजन के पत्ता पर उत्तराग्र रख दे।

- मोटक से इस कुशा पर पूजा के जल पात्र से जल छिड़के-

- दाहिने हाथ से इस अर्धपात्र (दोनिया) को ढंक ले मन्त्र पढ़े-

॥ या दिव्या आपः पयसा सं वभूवु र्या अन्तरिक्षा उत पार्थिवीर्याः ।

हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आपः शिवाः श १७ स्योना सुहवा भवन्तु ।।

- मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे माता-पिता सभी के लिए:-

॥ अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र ! प्रेत ! (मातः गोत्रे-प्रेते) सपिण्डीकरण श्राद्धे एष हस्तार्घः ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।।

- संकल्प के बाद पियाले का २ बूँद जल भोजन पात्र पर रखे कुशा पर तथा २ बूँद जल आसन मोटक पर चढ़ा कर शेष जल सहित पियाला जहाँ से उठाया था, उसी स्थान पर रख दे।

- हाथ का तिल-जल-भोजन पात्र पर चढ़ा दे।

- मोटक तथा दोनों हाथ में पहिनी हुयी पवित्री (पैंती) उतार कर अपने सामने भूमि पर रख दे।

- उठ कर श्राद्ध स्थल से बाहर निकल कर हाथ-पांव धो ले सव्य हो जाय।

<u>पितर स्थान में बैठना</u>

- पितर श्राद्ध स्थल में आकर आसन पर बैठ जाय।

- पूर्वमुख करके दाहिने हाथ के अँगूठे से अपना नाक-कान छू ले। भगवान का ध्यान कर लें।

- दूसरी पवित्री (पैंती) दोनों हाथ में पहन ले।

- जनेऊ अंगौछा उलटा कर अपसव्य हो जाय। दक्षिण मुख कर ले।

• मोटक-तिल-जल तथा आसन के लिये १ दूसरा मोटक लेकर संकल्प पढ़े-

पिता हेतु-अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्रस्य पितामहस्य इदम्-आसनं ते स्वधा ॥

सधवा माता हेतु - अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्रायाः पितामह्या इदम्-आसनं ते स्वधा ।।

विधवा माता हेतु - अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्रस्य पितुः इदम्-आसनं ते स्वधा ।

• संकल्प करके आसन का मोटक पहले आसन (तिप्ता) पर रख दे। हाथ का तिल-जल उसी पर चढ़ा दे।

• फिर मोटक-तिल-जल तथा आसन के लिये १ दूसरा मोटक लेकर प्रपितामह को आसन संकल्प करे।

पिता हेतु - अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्रस्य प्रपितामहस्य इदम्-आसनं ते स्वधा ।

सधवा माता हेतु - अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्रायाः प्रपितामह्या इदम्-आसनं ते स्वधा ।

विधवा माता हेतु - अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्रस्य पितामहस्य इदम्-आसनं ते स्वधा।

• आसन मोटक-दूसरे तिप्ता पर रख दे- हाथ का तिल-जल चढ़ा दे।

• फिर मोटक-तिल-जल लेकर तथा आसन के लिये १ मोटक प्रपितामह को आसन-संकल्प करे-

पिता हेतु-अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण

निमित्तक श्राद्धे प्रपितामहस्य इदम्-आसनं ते स्वधा

सधवा माता हेतु- अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्रायाः वृद्ध-प्रपितामह्या ते स्वधा

विधवा माता हेतु - अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्रस्य प्रपितामहस्य इदम्-आसनं ते स्वधा

- आसन-मोटक-तीसरे तिप्ता पर रख दे। हाथ का तिल जल पर चढ़ा दे।
- संकल्प का मोटक भूमि पर रख दे।
- दाहिने हाथ में तिल लेकर पितरों का आवाहन -

(१) पितॄन् आवाहयिष्ये ।

(२) उशन्तस्त्वा निधी मह्य शन्तः समिधी महि। उशन्नुशत आवह पितॄन् हविषे अत्तवे ।।

- हाथ का तिल तीनों पर छिड़क दे

।। अपहताऽअसुरा रक्षाः १७ सिवेदिषदः ।।

- तीनों आसन के आगे रखे तीनों अर्धपात्रों (पियाला) में १-१ पवित्री कुशा का बीच भाग निकाल कर -
- उसमें १ गांठ लगाकर दक्षिणाग्र रख दे। मन्त्र पढ़े-

पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ।।

- तीनों अर्धपात्र में जल-तिल छोड़ दे मन्त्र पढ़े-

जल - शन्नोदेवी रभिष्टयऽआपो भवन्तु पीतये। शंय्यो रभि स्रवन्तु नः ।

तिल-तिलोऽसि सोम देवत्यो गोसवो देव निर्मितः । प्रत्नमद्भि प्रत्तः

स्वधया पितृन्-लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा ।।

- चुपचाप अर्धपात्र में चंदन-फूल छोड़ दे-

- क्रमशः पहला पियाला दाहिने हाथ से उठा कर बाएँ हाथ में रख ले

- दाहिने हाथ से पियाले में रखी पवित्री को निकाल कर उत्तराग्र भोजन पात्र पर रखें।

- पियाला बाएँ हाथ में लिये रहे।

- दाहिने हाथ से पूजा के लोटे से मोटक द्वारा पवित्री पर जल छिड़क दे।

- जल छिड़क कर दाहिने हाथ से अर्धपात्र को बैंक ले मन्त्र पढ़े-

यादिव्या आपः पयसा सं वभूवु र्या अन्तरिक्षा उत पार्थिवीर्याः ।

हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आपः शिवाः श १७ स्योना सुहवा भवन्तु ॥

- इसके बाद दाहिने हाथ में मोटक तिल जल लेकर संकल्प करे-

पिता हेतु- अद्य अस्मद् पितुः यथानाम् गोत्रस्य-प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्र पितामह एष हस्तार्घः ते स्वधा । सधवा माता हेतु- अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्र पितामही एष हस्तार्घः ते स्वधा ।

विधवा माता पक्षे- अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्र पितः एष हस्तार्घः ते स्वधा ।।

- हाथ का जल-तिल अर्धपात्र पर छोड़ दे। मोटक सामने भूमि पर रख दे।

- अर्धपात्र दाहिने हाथ में लेकर २ बूँद जल पवित्री पर तथा २ बूँद जल आसन मोटक पर चढ़ा दे।

- शेष जल सहित अर्धपात्र यथास्थान भोजन पात्र के सामने रख दे।

• दूसरा-अर्धपात्र पियाला दाहिने हाथ से उठाकर बाएँ हाथ में रखे।

• पियाले में रखी पवित्री निकाल कर आसन पर रखे।

• पूजा के लोटा से पवित्री पर जल छिड़के। अर्धपात्र दाहिने हाथ के ढंक ले, मन्त्र पढ़े -

यादिव्या आपः पयसा सं वभूवु र्या अन्तरिक्षा उतपार्थिवीर्याः ।

हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आपः शिवाः श ७ स्योना सुहवा भवन्तु ॥

• मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे-

पिता हेतु - अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्र प्रपितामह एष हस्तार्घः ते स्वधा।

सधवा माता हेतु - अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्रे प्रपितामही एष हस्तार्घः ते स्वधा ।।

विधवा माता हेतु - अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्र पितामह एष हस्तार्घः ते स्वधा।।

• २ बूँद जल पवित्री पर, २ बूँद जल आसन मोटक पर चढ़ा कर शेष जल सहित अर्धपात्र प्रपितामह के भोजन पात्र के पास रख दे। हाथ का जल उसी पर चढ़ा दे।

• फिर तीसरा पियाला उठावे, बाएँ हाथ में रखे। पियाले की पवित्री भोजन पात्र पर रखे।

• लोटा से जल छिड़के, पियाला ढंक ले मन्त्र पढ़े-

यादिव्या आपः पयसा सं वभूवु र्या अन्तरिक्षा उत् पार्थिवीर्याः ।

हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आपः शिवाः स ७ स्योना सुहवा भवन्तु ।।

• मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे-

पिताहेतु - अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण

निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्र वृद्ध-प्रपितामह एष हस्तार्घः ते स्वधा ॥

सधवा माता हेतु-अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्रे वृद्धप्रपितामही एष हस्तार्घः ते स्वधा ।।

विधवा माता हेतु - अन्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्र ! प्रपितामह एष हस्तार्घः ते स्वधा ।।

- २ बूँद जल पवित्री पर २ बूंद जल मोटक-आसन पर चढ़ा दे। शेष जल सहित पियाला उसी आसन के समीप यथास्थान रख दे।

- जनेऊ अंगौछा सीधा कर नाक-कान-छूकर- भगवान का ध्यान करे। पैंती उतार कर भूमि पर रख दे।

<u>प्रेत स्थल में आना-</u>

- जनेऊ अंगोछा उलटा कर अपमव्य हो प्रेत स्थल में आकर यहाँ की पैंती नहने।

- प्रेत के अर्धपात्र को उठाकर इम पियाला का जल रेखा के ऊपर जो ३ पियाला रखा है, उन तीनों में बराबर-बराबर बाँट कर गिरा दे।

- जल बाँटने के बाद प्रेत का अर्धपात्र (पियाला) उमी रेखा पर (अपनी ओर) उत्तर की ओर रख दे।

- दोनों हाथ की पैती उतार कर भूमि पर रख दे। श्राद्ध स्थल से बाहर निकल कर हाथ पांव धो ले।

<u>पितर स्थल में आना-</u>

- पितर स्थल में आकर अपने आसन पर बैठे। यहां की पैंती पहने।

- रेखा पर रखा हुआ तीन पियाला का पहला १ पियाला जल महित उठा ले।

- उसका जल प्रेत के अर्धपात्र (पियाला) में फिर उड़ेल ले।
- खाली पियाला जहाँ से उठाया है, वहीं रख दे।
- मोटक आसन के सामने रख हुए पहले (पितामह के अर्धपात्र) पियाले को उठाकर अपने बाएँ हाथ में ले।
- दाहिने हाथ से (रेखा पर रखे) प्रेत के अर्धपात्र (पियाले) को (जो १ हिस्सा जल उड़ेल लिया है) जल सहित उठा ले, और बाएँ हाथ में रखे पितामह के जल में (पियाले) इस प्रेत पियाले के जल कोउड़ेल दे।

मन्त्र पढ़े-

(1) ये समानाः समनसः यम पितरो राज्ये। तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम् ।।

(२ श्रीर्मयि १७ तेषां । मामकाः जीवेषु जीवा समनसो समानाः ये (
शत लोके कल्पतामस्मिन्¤ समाः ।।

- पितामह के पियाले को जहाँ से उठाया है, वहीं रख दे।
- प्रेत का खाली पियाला रेखा पर फिर रख दे।
- फिर रेखा पर एक दूसरे पियाले को जल सहित उठा कर उसका जल प्रेत के अर्धपात्र (पियाला) में उड़ेल ले।
- खाली पियाला यथास्थान रख दे।
- प्रपितामह के अर्धपात्र पियाला को उठाकर बाएँ हाथ में रखे।
- दाहिने हाथ से रेखा पर रखे प्रेत पियाला जल को उठाकर बाएँ हाथ में रखे प्रपितामह के अर्धपात्र (पियाले) के जल में मिला दे। निम्नः मन्त्र पढ़ता रहे-

(१) ये रु. मानाः समनसः पितरो यम राज्ये।

तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु कल्पताम् ।।

(२) ये समानाः मामकाः । समनसो जीवा जीवेषु

तेषां ¤ श्रीर्मयि कल्पतामस्मिन् लोके शत ¤ समाः ॥

• प्रपितामह के पियाले को अपने स्थान पर रख दे। प्रेत का खाली पियाला भी यथास्थान रख दे।

• फिर रेखा पर के तीसरे पियाले को जल सहित उठाकर उसका जल. उसी प्रेत के अर्धपात्र पियाले में उड़ेल ले। खाली पियाला यथास्थान रख दे।

• वृद्ध प्रपितामह के अर्धपात्र (पियाला) को उठाकर बाएँ हाथ में रखे।

• दाहिने हाथ से प्रेत के पियाले के जल को बाएँ हाथ में रखे वृद्ध प्रपितामह के अर्धपात्र के जल में मिला दे- निम्न मन्त्र पढ़ता रहे-

(१) ये समानाः समनसः पितरो यम तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो देवेषु राज्ये । कल्पताम् ।।

(२) ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः ।

तेषां श्रीर्मत्रि कल्पतामस्मिन् लोके शत ¤समाः ।।

• वृद्ध प्रपितामह के पियाले को यथा स्थान रख दे। प्रेत का खाली पियाला यथास्थान रख दे।

• पैंती उतार कर वहीं रख दे। प्रेत स्थल में जाय वहाँ की पवित्री पहने

• प्रेत का अर्धपात्र [जो रेखा पर रखा है] उठाकर प्रेत आसन के बायीं ओर पलट कर रख दे- मन्त्र पढ़े ।। पित्रे स्थानमसि ।।

(इस पियाले को श्राद्ध के अंत तक हिलाना-डुलाना नहीं चाहिए)

• पैंती उतार कर वहीं रख दे। श्राद्धस्थल से बाहर आकर हाथ पांव धो ले।

• फिर पितर स्थल में आ जाय।

• आसन पर बैठ कर यहाँ की पैंती पहन ले।

• पितरों के तीन पियाले (अर्धपात्र) जल सहित रखे हैं। इनमें से तीसरा वृद्ध प्रपितामह को पियाले का जल पवित्री पुष्प-आदि के सहित दूसरे प्रपितामह के पियाले में उडेल दे।

• खाली पियाला प्रपितामह के पियाले के नीचे रख ले।

• फिर इन दोनों पियालों को उठाकर इसका जल पवित्री-पुष्प सहित पहले पितामह के पियाले में उड़ेल दे। और खाली दोनों पियाला पितामह के पियाले के नीचे रख ले।

• तीनों पियाला पितामह के आसन की बायीं ओर पलट कर रख दे। मन्त्र पढ़े-

।। पितामहादिभ्यः स्थानमसि ।।

• इन पियालों को श्राद्ध के अन्त तक हिलाना-डुलाना नहीं चाहिए।

• दोनों हाथ की पैंती उतार कर पितर स्थल में रख दे। प्रेत स्थल में आकर यहाँ की पैंती पहन ले।

• चुपचाप प्रेत-आसन [मोटक] पर चंदन, तिल-फूल, धूप-दीप नैवेद्य, पान-सुपारी-दक्षिणा-कच्चा सूत-चढ़ा दे। मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे।

।। अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र ! प्रेत ! (मातः गोत्रे प्रेते) सपिण्डीकरण श्राद्धे एतानि गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल-पूंगीफल-वांसासि ते मया दीयन्ते-तवोपतिष्ठन्ताम् ।।

• हाथ का तिल-जल-प्रेत के आसन पर गिरा दे। मोटक भूमि पर रख दे।

• दाहिने हाथ में जल लेकर प्रेत के आसन-भोजन-पात्र आदि के चारों ओर घुमाकर सामने भूमि पर जल छोड़ दे मन्त्र पढ़ता रहे

॥ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रे लोक्यं परिरक्षति ।

एवं मण्डल तोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु ।।

• दोनों हाथ की पैंती उतार कर वहीं भूमि पर रख दे।

• बाहर आकर हाथ पांव धो ले। पितर स्थल से आकर अपने आसन पर बैठे। यहाँ की पैंती पहन ले।

• चुपचाप तीनों आसन मोटक पर चंदन तिल-फूल धूप-दीप-नैवेद्य-पान-सुपारी-दक्षिणा-कच्चा सूत-चढ़ाकर पितरों की पूजा करे।

• मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे-

पिता हेतु-अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्राः पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहाः एतानि गन्धादीनि तेभ्यः स्वधा ।।

सधवा माता हेतु-अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे पितामही - प्रपितामही-वृद्धप्रपितामह्यः एतानि गंधादीनि तेभ्यः स्वधा ।।

विधवा माता हेतु अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्राः पितृ- पितामह - प्रपितामहाः एतानि गंधादीनि तेभ्यः स्वधा ।।

• हाथ का तिल-जल-तीनों मोटक आसन पर चढ़ा दे। मोटक भूमि पर रख दे।

• दाहिने हाथ में जल लेकर तीनों आसन-भोजन पात्र आदि के चारों ओर घुमाकर मण्डल कर दे। मन्त्र पढे-

।। यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति ।

एवं मण्डल तोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु।।

• जनेऊ अंगौछा सीधा कर सव्य हो जाय - पूर्व कर ओर मुख करके अपना नाक-कान छू ले, भगवान का ध्यान करे।

• एक दोनिया में थोड़ा-सा जल भर कर अग्नि कोण में (पितर आसन की बायीं ओर वेदी के पास) रख दे।

• पितरो की खीर से आधा चम्मच के अन्दाज खीर लेकर इसी दोनिया में दो बार छोड़ दे - मन्त्र पढ़े-

(१) अग्नये कव्य वाहनाय स्वाहा। (२) सोमाय पितृमते स्वाहा।

• पैंती उतार कर भूमि पर रख दे।

• प्रेत. स्थल में जाकर अपने आसन पर बैठे- वहाँ की पैंती पहने। अपसव्य हो जाय।

• प्रेत के पिण्ड हेतु निर्मित खीर लगभग आधा चम्मच लेकर

• प्रेत के आसन के पास भोजन पात्र (पत्ता) पर रखे। भोजन पात्र पर २ बूँद घी रख दे।

• १ दोनिया में जल भर कर रख दे। खीर पर १ बूँद शहद लगा दे।

• दोनों हाथ के अंगूठे में शहद लगाकर भोजन पात्र को ढंक ले मन्त्र पढ़े-

मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव १७ रजः । मधु द्यौरस्तुनः पिता । मधुमान्तो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः । मधु-मधु-मधु ।।

• दोनों हाथ को उलटा कर हथेली नीचे रहे। (दाहिने हाथ के ऊपर बांया हाथ करके-)

• भोजन पात्र को छू ले मन्त्र पढ़े-

• पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा ।।

• (२) इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढ़ मस्य पा ¤ सुरे

स्वाहा ।।

- कृष्ण कव्य मिदं रक्ष मदीयम् ।।

- बाएँ हाथ से भोजन पात्र स्पर्श किए रहे, दाहिने हाथ के अंगूठे से ३-३ बार खीर, घी, दोनिया का जल फिर खीर छू-छू कर आसन मोटक में लगाए मन्त्र पढे-

खीर -	इदमन्नम्	इदमन्नम्	इदमन्नम्
घी-	इदमाज्यम्	इदमाज्यम्	इदमाज्यम्
दोनिया का जल-	इमा आपः	इमा आपः	इमा आपः
फिर खीर-	इंदं हविः	इंदं हविः	इंदं हविः

- पढ़ कर हाथ हटा ले। दाहिने हाथ में तिल लेकर भोजन पात्र पर छिड़क दे-

।। अपहताऽअसुरा रक्षा १७ सिवेदिषदः ।

- मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे-

अद्य अस्मत् पितः यथानाम गोत्र प्रेत! (मातः गोत्रे प्रेते) सपिण्डीकरण श्राद्धे इदमन्त्रं सोपकरणं ते मया दीयन्ते तवोपतिष्ठन्ताम् ।।

- तिल-जल-प्रेतासन पर चढ़ा दे मोटक भूमि पर रख दे। दोनों हाथ की पैंती उतार दे।

- हाथ पाव धोकर पितर स्थल में आकर अपने आसन पर बैठ जाय- यहाँ की पैती पहन ले-

- सव्य होकर-नाक-कान छूकर-हरि स्मरण करे।

- अपसव्य होकर इधर की खीर आधा-आधा चम्मच तीनों भोजन पात्रों पर रख दे।

- २-२ बूँद घी, १-१ दोनिया में जल रखे खीर पर १-१ बूंद शहद

लगा दे।

- दोनों हाथ के अंगूठे में शहद लगा कर भोजन पात्र ढंक ले - मन्त्र पढे-

मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव १७ रजः मधु द्यौरस्तु नः पिता । मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।

मधु मधु मधु

- दोनों हाथ से दाहिने पर बांयाँ हाथ करके उलटे हाथ से तीनों भोजन पात्र स्पर्श करे- मन्त्र पढ़े-

(१) पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।

(२) इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढ़मस्य पा ७ सुरे स्वाहा।

(३) कृष्ण कव्य मिदं रक्ष मदीयम् ।

- बाएँ हाथ से भोजन पात्र (पत्ता) स्पर्श करता हुआ
- दाहिने हाथ के अंगूठे से ३-३ बार खीर घी, दोनिया का जल (मोटक) आसन में लगाए मन्त्र पढता

खीर -	इदमन्नम्	इदमन्नम्	इदमन्नम्
घी-	इदमाज्यम्	इदमाज्यम्	इदमाज्यम्
दोनिया का जल-	इमा आपः	इमा आपः	इमा आपः
फिर खीर-	इंदं हविः	इंदं हविः	इंदं हविः

- दाहिने हाथ से तिल लेकर तीनों भोजन पात्र पर छिड़क दे-

।। अपहता असुरा रक्षा ७ सिवे दिषदः ।।

- मोटक तिल-जल लेकर संकल्प करे-

पिता हेतु - अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे पितामह-प्रपितामह वृद्ध-प्रपितामहाः एतानि अन्नानि सोपकरणानि युष्मभ्यं स्वधा ।।

सधवा माता हेतु-अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे पितामही प्रपितामही-बृद्धप्रपितामहाः देव्यः एतानि अन्नानि-सोपकरणानि युष्मभ्यं स्वधा ।।

विधवा माता हेतु-अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे पितृ-पितामह-प्रपितामहाः एतानि-अन्नानि-सोपकरणानि युष्मभ्यं स्वधा ।।

- हाथ का तिल-जल-आसन पर चढ़ा दे मोटक भूमि पर रख दे।

- सव्य होकर - अपना नाक-कान छू ले, गायत्री जप ले, निम्न मन्त्र का पाठ करे -

(१) मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । मध्वीनः सन् त्वोषधीः । मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव १७ रजः । मधुद्यौरस्तु नः पिता । मधुमान्नो वनस्पतिर् मधु माँ अस्तु सूर्यः । माध्वीर गावो भवन्तु नः ।।

।। मधु ।। मधु ।। मधु ।।

(२) अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत् । तत् सर्वम छिद्रमस्तु ।।

- अपने पैर के नीचे ३ कुशा रख कर निम्न मन्त्रों का पाठ करे-

(१) कृणुष्व पाजः प्रसितिन् न पृथ्वीं याहि राजे वाम वाँ इभेन । तृष्वी मनु प्रसितिं द्रूणानोऽस्तासि विध्य रक्षसस् तपिष्ठः ।।

(२) तव भ्रमास आशु या पतन् त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः । तपू ष्यग्ने जुहूवा पतंगान सन्दितो विसृज विष्व गुल्काः ।।

(३) प्रतिस्पशो विसृज तूर्णि तमो भवा पायुर विशो अस्या अदब्धः ।

यो नो दूरे अघ श१७ सो यो अन् त्यग्ने मा किष्टे व्यथिरा दधर्षीत् ।।

(४) उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्वन्य मित्राँ ओषतात् तिग्म हेते।

यो नो अराति १७ समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्य तसन् न शुष्कम् ।।

(५) उर्ध्वा भव प्रति विध्या ध्यस्मदा विष् कृणुष्व देव्या न्यग्ने ।

अब स्थिरा तनु हि यातु जूनां जामि मजामिम् प्रमृणीहि शत्रून् ॥

- पितृ भोजन पात्र पर २ दाना तिल छिड़क कर फिर मन्त्र पाठ करे-

उदीरतामवर उत् परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।

असुं य ईयुर वृका ऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ।।

- पुरुषसक्त का पाठ करे-

सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमि ¤ सर्वतस् पृत्वा त्य तिष्ठद् दशाङ्गुलम् । पुरुष एवेद सर्वम् यद्भूतं यच्व भाव्यम् । उता मृतत्व स्पेशानो यदन्ने नाति रोहति । एतावानस्य महिमातों ज्यायाँश्च पूरुषः । पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि । त्रिपादूर्ध्व उदेत्। पुरुषः पादोऽस्येहा भवत् पुनः । ततो विष्वङ् व्यक्रामत् सा शना नशने अभि। ततो विराड जायत विराजो अधि पूरुषः सजातो अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमि मथोपुरः तस्माद् यज्ञात् सर्वहुतः सम् भृतं पृषदाज्यम् पशूस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये। तस्माद् यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दा ¤ सि जज्ञिरे तस्माद् यजुस् तस्मा दजायत् तस्मा दश्वाअजायन्त ये के चो भयादतः गावोह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः तै यज्ञम्वर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः । तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये। यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् । मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहू किमूरू पादा उच्येते ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्वाहू राजन्यः कृतः । ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ७ शूद्रोअजायत् चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखा दग्नि रजायत। नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ¤ शीर्णोद्यौः समवर्तत पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ अकल्पयन् यत् पुरुषेण हविषा

देवा यज्ञ मतन्वत वसन्तोऽस्यासी दाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद् धविः सप्तास्यासन् परिधयस् त्रिः सप्त समिधः कृताः देवा यद् यज्ञन् तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् । यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास् तानि धर्माणि प्रथमा न्यासन् । तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः आशुः शिशानो वृषभो नभीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् । संक्रन्दनो निमिष एकवीरः शत ¤ सेना अजयत् साक मिन्द्रः ।। नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः ।। शङ्करायच मयस्कराय च नमः । शिवाय च शिवतराय च ।। नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्तेऽनेक चक्षुषे । नमः पिनाकहस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः ।।

- अपसव्य होकर विकर को पिण्ड दे।
- अग्नि कोण में १ किनारे (जिससे कुछ छ न जाय) रे कुशा का टुकडा दक्षिण की ओर अग्रभाग करके विकर आसन के निमित्त रख दे।
- १ दोनिया में १ पिण्डा-तिल-घी-शहद लगाकर रख ले, जल ले ले।
- ऊपर १ कुशा रख केर दाहिने हाथ से बैंक ले मन्त्र पढ़े-

अनग्नि दग्धाश्च ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम ।

भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम् ॥

- अपने आसन से उठ कर अग्निकोण में जो ३ कुशा [विकर आसन] रखा है, उसी पर पिण्डा सहित दोनिया उलट कर रख दे।
- दोनों हाथ की पवित्री (पैंती) उतार कर वहीं रख दे।
- बाहर निकल कर हाथ-पाव धोकर सव्य हो जाय।
- प्रेत स्थल आकर अपने आसन पर बैठे।
- अपना नाक-कान दाहिने हाथ के अंगूठे के मूल में स्पर्श करे। भगवान का ध्यान करे।
- इधर की पैंती पहन ले। अपसव्य हो जाय ।

• बाएँ हाथ में एक कुशा लेकर दाहिने हाथ से कुशा का अग्रभाग पकड़ कर कुशा की जड़ से वेदी पर एक रेखा (लाइन) खींच दे मन्त्र पढ़े ।। अपहताऽअसुरा रक्षा ७ सिवे दिषदः ।

• रेखा खींच कर कुशा अपने पीछे उत्तर दिशा में फेंक दे।

• गोबर के कंडे पर अग्नि लेकर वेदी पर घुमा दे मन्त्र पढ़ता रहे।

ये रूपाणि प्रतिमुंचमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति ।

परापुरो निपुरो ये भरन्ति अग्निष्टान् लोकान् प्रणुदात्यस्मात् ।

• वुमाने के बाद इस अग्नि को दक्षिण दिशा में अलग रख दे। मोटक से वेदी पर जल छिड़क दे मन्त्र पढ़ता रहे-

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।

पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः ।।

• कुशा को बीच से अलग कर ३-३ कुश टुकड़ों को वेदी पर रेखा (लाइन) के ऊपर बिछा दे।

• दक्षिण की ओर कुशा का अग्रभाग रहे।

• सव्य होकर अपना नाक-कान छू ले - हरि स्मरण करे।

• पूर्व दिशा की ओर मुख करके निम्न मन्त्र पढ़े-

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।

नमः स्वाहायै स्वधाये नित्यमेव नमो नमः ।।

• अपसव्य होकर दक्षिण मुख कर ले। वेदी के आगे (अपनी ओर) एक दोनिया रख दे।

• दोनिया में थोड़ा जल भर दे, तिल-चन्दन फूल छोड़ दे।

• मोटक तिल जल लेकर बाएँ हाथ से दोनिया को छू ले। संकल्प पढे-

अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र ! प्रेत ! (मातः गोत्रे-प्रेते)

सपिण्डीकरण श्राद्धे प्रेतपिण्ड स्थाने अत्र अवनेनिक्ष्व ते मया दीयते तपोपतिष्ठताम् ।।

- संकल्प करके दोनिया का २ बूँद जल वेदी पर बिछे कुशा पर गिरा दे।
- शेष जल सहित दोनिया अपने स्थान पर रख दे।
- वेदी पर १ पत्ता रख दे। जिससे पिण्डा में मिट्टी बालू आदि न लगे (यह लोकाचार है)
- प्रेत खीर को लेकर १२ अंगुल लम्बा १ पिण्डा बना ले। थोड़ी खीर बचाए रहना चाहिए।
- पिण्डा में २ बूंद घी, २ बूंद शहद लगा दे।
- दाहिने हाथ में इस पिण्डा को तथा मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे-

॥ अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र ! प्रेत! (मातः गोत्रे-प्रेते) सपिण्डीकरण श्राद्धे एष पिण्डः ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।।

- पितृ तीर्थ से (दाहिने हाथ के तर्जनी और अंगूठे के बीच से) पिण्डा को वेदी पर रख दे। हाथ का तिल-जल पिण्डा पर चढ़ा दे। मोटक सामने भूमि पर रख दे।
- वेदी पर जो कुशा विछाया है उसे छू ले।
- सव्य होकर-नाक-कान छू ले हरि स्मरण करे।
- फिर अपसव्य होकर बायीं ओर से (पीछे मुल घुमा कर) श्वांस (सांस) को रोके।
- पितर का ध्यान करता हुना मुख घुमा कर सामने पिण्डा की ओर रोकी हुयी श्वांस (सांस) छोड़ दे मन्त्र पढे-

।। अत्र पितर्मादयस्व यथा भाग मा वृषायस्व ।

अमीमदन्त पिता यथा भाग मा वृषायिष्ट ॥

• अवनेजन दोनिया में जी शेष जल है। उस दोनिया को उठा कर बाएँ हाथ में रख ले।

• दाहिने हाथ में मोटक तिल-जल लेकर संकल्प करे।

॥ अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र ! प्रेता! (मातः गोत्रे प्रेते) सपिण्डीकरण श्राद्धे पिण्डे अत्र प्रत्यने निश्व ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।।

• संकल्प कर दोनिया का जल-तिल-चंदन-पुष्पा पिण्डा, पर चढ़ा दे।

• जल चढ़ा कर दोनिया एक किनारे अलग रख दे।

• नीवीं-धोती में (टेंट में) जो कुशा तिल है, उसे निकाल कर दक्षिण की ओर फेंक दे।

• सव्य होकर-नाक-कान छू ले - भगवान का ध्यान करे। फिर अपसव्य हो जाय।

• बाएँ हाथ से कच्चा सूत लेकर दाहिने से पकड़ कर षिण्डा पर चढ़ा दे- मन्त्र पढ़ता रहे

नमस्ते पितः रसाय नमस्ते पितः शोषाय नमस्ते पितर् जीवाय। नमस्ते पितः स्वधायै नमस्ते पितर् घोराय नमस्ते पितर् ग्रन्यवे । नमस्ते पितः पितर् नमस्ते गृहान्नः पितर् देहि नमस्ते पितर् देष्म । एतत्ते पितर् वासः।

• मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करे-

।। अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र ! प्रेत ! (मातः गोत्रे प्रेते) सपिण्डीकरण निभित्तक श्राद्ध पिण्डे एतद् वासस्ते मया दीयते तवोपतिष्ठताम् ।।

• संकल्प पढ़कर हाथ का तिल-जल पिण्डा पर चढ़ा दे।

• चुपचाप पिण्डा की पूजा करे।

• चंदन-तिल-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य आचमन-पान-सुपारी-

दक्षिणा चढ़ा दे।

- पिण्डा बनाने से जो खीर बची है, उसे (बिना तिल लगी) पिण्डा के पास वेदी पर रख दे।
- जल छोड़ कर पैंती उतार कर वहीं रख दे।
- श्राद्ध स्थल से बाहर आकर हाथ पाँव धो ले।
- पितर श्राद्ध स्थल में आकर अपने आसन पर बैठ जाय।
- इधर की दोनों पवित्री (पैंती) दोनों हाथ में पहन ले।
- मिट्टी लेकर उत्तर से दक्षिण की ओर (अपनी ओर से पितर आसन की ओर) १-१ बीता की ३ वेदी बनाए।
- बाएँ हाथ में क्रमशः १-१ कुशा लेकर दाहिने हाथ से कुशा को पकड़े हुए कुशा से मूल (जड़) से तीनों वेदी पर १-१ रेखा (लाइन) दक्षिणाग्र खींच दे मन्त्र पढता रहे-

।। अपहताअसुरा रक्षा ११ सिवेदिषदः ।

- रेखा करके उस कुशा को अपने पीछे (उत्तर की ओर) फेंक दे।
- मोटक से सभी वेदी पर जल छिड़क दें मन्त्र पढ़ता रहे-

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका ।

पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः ।।

- १ पत्ता पर अग्नि लेकर वेदी के चारों ओर घुमा दें, मन्त्र पढ़ें-

ये रूपाणि प्रति मुँचमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति ।

परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टान् लोकान्प्रणुदात्यस्मात् ।।

- घुमा कर अग्नि नैऋत्य कोण में एक किनारे रख दें। तीनों वेदी पर ३-३ कुशा (मूल) जड़ को निकाल कर बिछा दे।

• सव्य होकर अपना नाक-कान छू लें - हरि स्मरण करे।

• पूर्व की ओर मुख करके निम्न मन्त्र पढ़ें-

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वाहायै स्वधाये नित्यमेव नमो नमः ।।

• अपसव्य होकर-दक्षिण मुख कर ले।

• ३ दोनिया में जल-तिल-चंदन फूल रख कर संकल्प करे-

• हाथ में मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प पढ़ें-

पिता हेतु - अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे एषु पिण्डस्थानेषु गोत्राः पितामह - प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहाः ! अत्र-अवने निग्ध्वं युष्मभ्यं स्वधा ॥

सधवा माता हेतु - अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे एषु पिण्ड स्थानेषु गोत्राः पितामही-प्रपितामही-वृद्धप्रपितामह्यः देव्यः अत्र-अवने निग्ध्वं युष्मभ्यं स्वधा ।।

विधवा माता हेतु- अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे एषु पिण्ड स्थानेषु गोत्राः पितृ-पितामह-प्रपितामहाः - अत्र अवने निग्ध्वं युष्मभ्यं स्वधा ।।

• संकल्प करके हाथ का तिल-जल तीनों दोनिया पर छिड़क दें। हाथ का मोटक भूमि पर रख दें।

• पहली दोनिया उठाकर २ बूँद जल पहली वेदी पर बिछे कुशा पर चढ़ा दें। दोनिया वेदी के बायीं ओर रख दें।

• दूसरी दोनिया का २ बूंद जल दूसरी वेदी के कुशा पर गिराकर दोनिया वेदी के बायीं ओर रख दें।

• तीसरी दोनिया का २ बूँद जल तीसरी वेदी के कुशा पर चढ़ा कर दोनिया वेदी के बायीं ओर रख दें।

- तीनों वेदी पर १-१ पत्ता रख दें।

- खीर का ३ पिण्डा बना लें - १ चम्मच खीर (विना तिल लगी) बचाए रहें।

- पिण्डों पर १-१ बूँद घी तथा शहद लगा दे।

- मोटक-तिल-जल तथा १ पिण्डा लेकर संकल्प करें-

पिता हेतु- अद्य अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्र पितामह ! एष पिण्डः ते स्वधा ।।

सधवा माता हेतु-अद्य अस्मद् मातुः यथानाम गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्रे पितामही ! एष पिण्डः ते स्वधा ॥

विधवा माता हेतु - अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्र ! पितः ! एष पिण्डः ते स्वधा ।।

- संकल्प करके अंगूठे के सहारे पहली वेदी पर पिण्ड रख दें, हाथ का तिल पिण्डा पर गिरा दे।

- दूसरा पिण्डा मोटक-तिल-जल लेकर फिर संकल्प करें।

पिता हेतु अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्र प्रपितामह ! एष पिण्डः ते स्वधा ।॥

सधवा माता हेतु-अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्रे प्रपितामही एष पिण्डः ते स्वधा ।।

विधवा माता हेतु - अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्र पितामह एष पिण्डः ते स्वधा ।।

- पिण्ड को दूसरी वेदी पर रख दें- हाथ का तिल पिण्डा पर गिरा दें।

- तीसरा पिण्डा-मोटक तिल जल लेकर संकल्प करें-

पिता हेतु-अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्र वृद्धप्रपितामह एष पिण्डः ते स्वधा ॥

सधवा माता हेतु- अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्रे वृद्धप्रपितामही एष पिण्डः ते स्वधा ।।

विधवा माता हेतु-अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्र प्रपितामह एष पिण्डः ते स्वधा ।।

- तीसरी वेदी पर पिण्डा रख दें- हाथ का तिल गिरा दें। मोटक भूमि पर रख दें।

- १ चम्मच जो खीर बची है, उसका आधा लेकर बाएँ हाथ में रखकर १ कुशा से उसे तीनों पिण्डों पर गिरा देंमन्त्र पढ़ें- ।। **लेपभाग भुजस्तृप्यन्तु ।।**

- तीनों वेदी पर जो कुशा बिछाया है, उसे छू लें।

- सव्य होकर नाक-कान छू लें भगवान का ध्यान करें।

- अपसव्य होकर सामने (दक्षिण की ओर देखता हुआ। पितरों का ध्यान करते हुए। की ओर मुख करके (बायों ओर से) श्वास रोककर मामने दक्षिण की ओर मुख करके पिण्डों पर श्वास छोड़ दें-मन्त्र पढ़ें-

(१) अत्र पितरो मादयध्वं यथाभाग मा वृषा यध्वम् ।

(२) अमीमदन्त पितरो यथाभाग मा वृषायिषत् ।।

- तीनों अवनेजन दोनिया (जिससे वेदी के कुशा पर २ बूँद जल गिराया है)।

- शेष जल सहित बाएँ हाथ से स्पर्श किए रहे।

- दाहिने हाथ में मोटक तिल जल लेकर संकल्प करे-

पिता हेतु अद्य अस्मद् पितुः गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे एषु पिण्डेषु पितामह-प्रपितामह-वृद्ध प्रपितामहाः अत्र प्रत्यवने निग्ध्वं

युष्मभ्यं स्वधा ।।

सधवा माता हेतु अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे एषु पिण्डेषु पितामही-प्रपितामही वृद्ध प्रपितामहाः अत्र प्रत्यवने निग्ध्वं युष्मभ्यं स्वधा ।।

विधवा माता हेतु- अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे एषु पिण्डेषु पितृ-पितामह-प्रपितामहाः अत्र प्रत्यवने निग्ध्वं युष्मभ्यं स्वधा ।।

- संकल्प करके हाथ का तिल-जल तीनों दोनिया में छिड़क दें।

- १-१ दोनिया उठाकर उसका जल-तिल-फूल आदि १-१ पिण्डा पर चढ़ा दें- दोनिया किनारे अलग रख दें।

(पहली दोनिया का जल पहले पिण्डा पर चढ़ाएँ)

(दूसरी दोनिया का जल दूसरे पिण्डा पर चढ़ाएँ)

(तीसरी दोनिया का जल तीसरे पिण्डा पर चढ़ाएँ)।

- सव्य होकर नाक-कान छू लें, भगवान का ध्यान करें।

- अंगौछा-जनेऊ उलटा कर अपसव्य हो जाएँ।

- कच्चा मूत बाएं हाथ में लेकर दाहिने हाथ से पकड़ कर तीनों पिण्डा पर चढ़ा दें-मन्त्र पढ़ें-

नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्वये नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत सतो वः पितरो द्वेष्म । एतद् वः पितरो वासः ।।

- मोटक-विल-जल लेकर संकल्प करें-

पिता हेतु अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे पिण्डे गोत्राः पितामह प्रपितामह वृद्ध प्रपितामहाः एतानि

वासांसि युष्मभ्यं स्वधा ॥

सधवा माता हेतु अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे पिण्डे पितामही-प्रपितामही वृद्ध प्रपितामहाः वासांसि युष्मभ्यं स्वधा ॥

विधवा माता हेतु-अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे पिण्डे पितृ-पितामह-प्रपितामहाः एतानि वासांसि युष्मभ्यं स्वधा ।।

- चुपचाप मौन होकर तीनों पिण्डों का पूजन करें-
- गन्ध (चन्दन) तिल-फूल-दीप नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी दक्षिणा दें।
- शेष खीर को पिण्डा के पास वेदी पर रख दें। जल छोड़ दें।
- दोनों हाथ की पवित्री (पैंती) उतार कर वहीं रख दे।
- प्रेत स्थल में आकर यहाँ की पवित्री (पैती) पहने ले।
- पिण्डा के ऊपर जो सूत-फूल आदि पूजन सामग्री चढ़ी है, उसे हटा दें।
- दाहिने हाथ में मोना या चाँदी का तार-पिण्डा काटने के लिए ले लें।
- नाई में पिण्डा काटने की आज्ञा में (लोकाचार); आदेश मिलने पर बाएं हाथ में तार पकड कर दाहिने हाथ में प्रेत पिण्डा को एक बार में ही के टुकड़ा में काट दें- निम्न मन्त्र पढ़ता रहे- (तार को मोडकर दो कर लें, पिण्णा पर रस कर दवा दें। तीन हिस्सा हो जायेगा।)

१. ये समानाः समनसो पितरो यम राज्ये ।

तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो कल्प्यताम् ।।

२. ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः ।

तेषां ¤श्रीर्मयि कल्पता मस्मिन् लोके शत १७ समाः ।।

- पिण्डा काटने के बाद तार नाई को दे दे।

- काटे हुए इन ३ हिस्से पिण्डे को क्रमशः १-१ हिस्सा रेखा (लाइन) पर रखे तीनों प्याले में (जिम प्याले में पहिले जल बॉट कर रखा था) अलग अलग रख दे।

- सावधानी से काटे पिण्ड के १-१ चावल को बीन ले। वेदी पर कुछ चावल शेष न रहे।

- यहां की पैती उतार दे। श्राद्ध स्थल में बाहर आकर हाथ-पाव धो लें। सव्य हो जाएँ।

- यहाँ पितर स्थल में आकर अपने आमन पर बैठे। नाक-कान छु कर हरि स्मरण करें। की पवित्री (पैती) पहन लें

- अपसव्य हो जाएँ। तीनों पिण्डों पर चढ़े मूत-फूल-तिल आदि को हटा कर पिण्डों को माफ कर लें।

- पहला पिण्डा बाएं हाथ में रख लें, और दाहिने हाथ के अंगूठे से दबाकर पिण्डा के बीच गढ़ा कर दें।

(**नोट**- जिस प्रकार कचौड़ी में गढ़ा कर दाल पीठी भरी जाती है; उसी प्रकार)

- प्रेत पिण्ड का पहला हिस्सा (जो ३ भाग में काट कर ३ प्याला में रखा है, उसे) उठाकर इसी पिण्डा के गढ़ा में भर दें-

- ऊपर से दबा कर प्रेत पिण्डा को पितामह के पिण्ड में अच्छी तरह मिला कर एक कर दें।

- दोनों को मिलाकर १ गोला पिण्डा बना कर पहली वेदी पर जहाँ मे उठाया है, वही रख दें।

• इसी तरह दूसरा हिस्सा उठाकर दूसरे पिण्डा में मिला कर यथास्थान रख दें।

• तीसरा भाग तीसरे पिण्डा में मिलाकर यथास्थान रख दें।

(**नोट**- प्याले में १ दाना भी खीर शेष न रहे)

• इन पिण्डों को मिलाते समय - निम्न पढ़ता रहे-

१. ये समानाः समनसो पितरो यम राज्ये ।

तेषां लोकः स्वधा नमो यज्ञो कल्प्यताम् ।।

२. ये समानाः समनसो जीवा जीवेषु मामकाः ।

तेषां ७ श्रीर्मयि कल्पता मस्मिन् लोके शत¤ समाः।।

• मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें-

अद्य गोत्रस्य प्रेतस्य (गोत्रायाः प्रेतायाः) एष पिण्डः -

पिता हेतु-१. पितामह-प्रपितामह-वृद्ध प्रपितामहानां पिण्डेन सह संयुज्यताम् अनेन सम्मेलनेन वसुलोक प्राप्तिरस्तु रुद्रलोक प्राप्तिरस्तु, आदित्यलोकप्राप्तिरस्तु।।

सधवा माता हेतु-२. पितामही-प्रपितामही - वृद्ध प्रपितामहीनां पिण्डेन सह संयुज्यताम् अनेन सम्मेलनेन वसुलोक प्राप्तिरस्तु रुद्रलोक प्राप्तिरस्तु आदित्यलोक प्राप्तिरस्तु ।।

विधवा माता हेतु - ३. पितृ-पितामह-प्रपितामहानां पिण्डेन सह संयुज्यताम् अनेन सम्मेलनेन वसुलोक प्राप्तिरस्तु रुद्रलोक प्राप्तिरस्तु आदित्यलोक प्राप्तिरस्तु ।।

• तीनों पिण्डों पर चुपचाप गन्ध (चन्दन) तिल-फूल धूप-दीप नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढा कर उनकी पूजा कर दें। हाथ जोड़कर प्रार्थना करें-

एष वोऽनुगतः प्रेतः पितस्तन् दधामि वः । शिव मस्त्विति शेषाणां जायतां चिरजीविनाम् । समानीव आकूतिः समाना हृदयानि वः ।

समानमस्तु वो यथा वः सुसहासती । सुपितृ लोकं गच्छ त्वं प्रेतत्वं सुपरित्यज । स्वकीयैः पितृभिः साकं विहर त्वं यथा सुखम् ।।

- सव्य होकर नाक-कान छू लें।

- दाहिने हाथ में थोड़ा सा जल लेकर विश्वेदेवा के भोजन पात्र (पत्ता) पर छोड़ दें-

- फूल छोड़ दें-चावल छिड़कें- मन्त्र पढ़ें-

जल-शिवा आपः सन्तु । फूल सौमनस्य मस्तु । चावल- अक्षतं चारिष्टं चास्तु ।

- अपसव्य होकर। तीनों पितरों के भोजनपात्र (पत्तों) पर जल-फूल-चावल छोड़ दें।

जल-शिवा आपः सन्तु। फूल-सौमनस्य मस्तु । वावल - अक्षतं चारिष्टं चास्तु ।

- मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें-

पिता हेतु - अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्राः पितामह-प्रपितामह-वृद्धप्रपितामहाः दत्तेतत् अन्नपानादिकम्-अक्षय्यमस्तु ।।

सधवा माता हेतु-१. अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे अमुक गोत्राः पितामही-प्रपितामही-वृद्ध प्रपितामह्यः दत्तैतत् अन्न पानादिकम्-अक्षय्यमस्तु ।।

विधवा माता हेतु-२. अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्राः पितृ-पितामह-प्रपितामहाः दत्तैतत् अन्न पानादिकम्-अक्षय्यमस्तु ।।

- हाथ का तिल-जल-तीनों भोजन पात्रों पर छिड़क दें।

• सव्य होकर (जनेऊ अंगोछा सीधा करके) दक्षिण दिशा की और (सामने) देख लें।

• दाहिने हाथ में जल लेकर पूर्व की ओर धार गिराते हुए तीनों पिण्डों पर जल धारा दें- मन्त्र पढ़ें-

॥ अघोराः पितरः सन्तु ।।

• पूर्व की ओर मुख घुमा कर हाथ जोड कर प्रार्थना करें-

गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभि वर्धन्तां वेदाः सन्तति रेव च । श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहु देय च नोऽस्तु । अन्नं च नो बहु भवेद तिथींश्च लभे महि । याचितारश्च नः सन्तु-मा च याचिष्म कंचन । एताः सत्या आशिषः सन्तु । सन्त्वेताः सत्या आशिषः ।!

• अपसव्य होकर सभी पिण्डों पर से पान-सुपारी फूल-मूत आदि पूजन सामग्री हटा दें।

• सभी पिण्डों पर कुशा का ३-३ टुकड़ा रख दें।

• १ दोनिया में जल तथा दूध मिलाकर दाहिने हाथ में लें।

• दाहिने हाथ के अंगूठे के सहारे (पितृ तीर्थ से) दक्षिण की ओर धार गिराते हुए तीनों पिण्डों पर जल मिश्रित दूध चढ़ा दें- मन्त्र पढ़ता रहे-

।। ऊर्जम् बहन्ती रमृतं घृतं पयः कीलालं परिसुतम्। स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन् ।।

• झुककर तीनों पिण्डों को सूघ लें।

• क्रमशः तीनों पिण्डों को उठाकर अलग रख दें। वेदी पर का पत्ता हटा दें।

• तीनों वेदी पर जो कुशा बिछाया है, उसे उठा कर अग्नि में डाल दें।

- जनेऊ अंगौछा सीधा कर सव्य हो जाए। नाक-कान छूकर गायत्री जप लें।

।। शंख चक्र पूजन ।।

- पितर वेदी पर कुशा से ९ तथा ४ अंक लिख दें। इसकी पूजा करें। अक्षत लेकर प्रार्थना करे-

।। शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम् । विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णम् शुभांगम् ।। लक्ष्मीकान्तं कमल नयनं योगिभिर् ध्यान गम्यम् । वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्वलोकैक नाथम् ।।

विष्णवे नमः ।। शंखाय नमः ।। चक्राय नमः ।। गदाधराय नमः ।।

- हाथ का अक्षत पुष्प ९-४ पर छोड़ दे।

- ३ बार जल-गन्ध-अक्षत-फूल-धूप-दीप नैवेद्य-आचमन-पान-मुपारी दक्षिणा चढ़ा दे।

- कपूर जला कर आरती कर दे वाक्य पढ़ता रहे:-

।। शंखाय नमः । चक्राय नमः। गदाधराय नमः ।विष्णवे नमः ।।

- अक्षत-फूल लेकर प्रार्थना करे-

वसन्ताय नमस्तुभ्यं ग्रीष्माय च हेमन्ताय नमस्तुभ्यं नमो नमः नमस्ते शिशिराय च। सदा । वर्षाभ्यश्च शरत् संज्ञ ऋतवे च नमः आयुः प्रजां धनं विद्यां स्वर्गम् मोक्षं सुखानि च। प्रयच्छन्ति तथा राज्यं नृणां प्रीताः पितामहाः आयुः पुत्रान् यशः स्वर्गम् कीर्ति पुष्टिं वलं श्रियम् । पशून् सुख धन धान्यं च प्राप्नुयाम् पितृ पूजनात् ।।

- हाथ का अक्षत फूल वेदी पर चढ़ा दे।

- विश्वेदेवा के अर्धपात्र को उठाकर बगल रख दे। अर्थात् स्थान से हिला दे-चला दे। कुछ लोग अर्धपात्र में रखी कुशपवित्री की गांठ को भी खोलते हैं।

- जनेऊ अंगौछा उलटा कर अपसव्य हो जाय।

• आसन से उठ कर प्रेत श्राद्ध स्थल में आकर प्रेत आसन के पास जो अर्धपात्र (पियाला) उलटा रखा है, उसे भी सीधा कर दे। अपने आसन पर बैठे।

• फिर जनेऊ अंगोछा सीधा कर सव्य होकर नाक-कान छू ले। पूर्व मुख कर ले,

• त्रिकुश-जव-जल लेकर दक्षिणा संकल्प कर ले,

पिता हेतु अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्राणां पितामह-प्रपितामह-वृद्ध प्रपितामहानां यथानाम धेयानां श्राद्ध-सम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां कृतैतत्-श्राद्ध प्रतिष्ठार्थम् दक्षिणाद्रव्यं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहम्-उत्सृजे ।

सधवा माता हेतु- अद्य अस्मद् मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्राणां पितामही-प्रपितामही-वृद्धप्रपितामहीनाम् देवीनाम् श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवानाम् कृतैतत् श्राद्ध प्रतिष्ठार्थम् दक्षिणा द्रव्यं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहम्-उत्सृजे ।।

विधवा माता हेतु-अद्य अस्मद् मातु गोत्रायाः प्रेतायाः सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्रागां पितृ-पितामह-प्रपितामहानां नामधेयानां श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवानाम् कृतैतत् श्राद्ध प्रतिष्ठार्थम् दक्षिणाद्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

• जनेऊ अंगौछा उलटा कर अपसव्य हो जाय, दक्षिण मुख कर ले।

• मोटक-तिल-जल लेकर प्रेत के लिये दक्षिणा संकल्प करे-

।। अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः) कृतैतत् सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्ध प्रतिष्ठार्थम् दक्षिणा द्रव्यं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहम्-उत्सृजे ।।

।। गोदान ।।

- सव्य होकर अपना नाक-कान छू ले भगवान का ध्यान कर ले।
- कुश-अक्षत-जल तथा द्रव्य लेकर गोदान संकल्प करे-

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य अमुक नाम्नः (मातुः गोत्रायाः नाम्याः) प्रेतत्व विमुक्ति पूर्वक उत्तमलोक प्राप्तिकामनया इदं गोनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।। ।।

- ब्राह्मण को गोदान दे दे ब्राह्मण लेकर कहे ।। **स्वस्ति**
- फिर कुश-अक्षत जल-द्रव्य लेकर सांगता दे।

।। अद्य कृतैतत् गोदान प्रतिष्ठा सिध्यर्थम् इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

ब्राह्मण को सांगता दे दे ब्राह्मण लेकर कहे ।। **स्वस्ति ।।**

- हाथ जोड़कर गौ की प्रार्थना कर ले

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च। नमो ब्रह्म सुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥

- फिर-मोटक-तिल-जल लेकर पितरो की दक्षिणा संकल्प करे।

पिता हेतु- अद्य अस्मद् पितुः यथानाम् गोत्रस्य प्रेतस्य (मातुः गोत्रायाः प्रेतायाः) सपिण्डीकरण निमित्तक श्राद्धे गोत्राणां (पितामह प्रपितामह - वृद्धप्रपितामहानाम्) श्राद्ध प्रतिष्ठार्थम् दक्षिणाद्रव्यं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहम् उत्सृजे ।।

सधवा माता हेतु - (पितामही-प्रपितामही-वृद्धप्रपितामहीनाम् ।)

विधवा माता हेतु - (पितृ-पितामह-प्रपितामहानाम्) - पढ़ना चाहिए

(नोट- प्रत्येक संकल्प के बाद हाथ का जल-जवा-तिल आदि ब्राह्मण के हाथ में दे दे)

- जनेऊ अंगौछा सीधा कर सव्य हो जाय, नाक-कान छू ले।

• दाहिने हाथ से विश्वदेवा के आसन पर जवा छिड़क कर विसर्जन करे- मन्त्र पढ़े-

।। विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम् ।।

• जनेऊ अंगौछा उलटा कर अपसव्य हो जाय।

• दाहिने हाथ में तिल लेकर प्रेत आसन पर छिड़क दे। फिर तिल लेकर तीनों पितर-आसन पर छिड़क कर विसर्जन करे मन्त्र पढ़े-

आमा वाजस्य प्रसवो जगम्या दे मे द्यावा पृथिवी विश्वरूपे ।

आमागन्तां पितरा मातरा चामा सोमो अमृतत्त्वेन गम्यात् ॥

• दाहिने हाथ में जवा-तिल जल लेकर दीपक बुझा दे।

• पूजा के लोटा में जल-दूध लेकर धार गिराते हुए पितर-आसन-विश्वेदवा-आसन- प्रेतासन सम्पूर्ण श्राद्ध वस्तु के चारो ओर तीन परिक्रमा करे -

• तीसरी परिक्रमा पूरी करके लोटा अपने आसन के आगे भूमि पर उलटा रख दे।

• फिर लोटा उठाकर हाथ की अंगुली से ३ बार बजा दे मन्त्र पढ़े-

वाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः ।

अस्य मध्वः पिवत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर् देवयानैः ।।

• अपने आसन से पूर्व की ओर ८ कदम आगे चले।

• अपने जनेऊ अंगौछा सीधा कर सव्य होकर नाक-कान छू ले। गायत्री का जप कर ले।

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।

नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ।।

प्रमादात् कुर्वताम् कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत् ।

स्मरणादेव तद्विष्णोः परिपूर्ण स्यादिति श्रुतिः ॥

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ न्यूनं सम्पूर्णतां यातु सद्यो वन्दे क्रियादिषु ।

तमच्युतम् ।। विष्णवे नमः ।। विष्णवे नमः । विष्णवे नमः ।

- श्राद्ध स्थले में जो भी प्रयुक्त सामग्री- दोनिया-पत्तल-पियाला तिल-चावल-फूल-दीप वेदी-खीर-आदि है सब बटोर कर नदी-तालाब अथवा बाग-बगीचे में एक किनारे छोड़ दे - कुशा को जल में नहीं फेंकनाचाहिए। अन्यत्र रख दे ।।
- हाथ पांव धोकर फिर शय्या के पास आवे।
- महाब्राह्मण को पूरी-मिठाई-दही-खीर आदि खिलावे। खीर जरूर खिलानी चाहिए।
- महाब्राह्मण-गौ-कुत्ता-कौआ को गोग्रास देकर भोजन करे ।
- भोजन के बाद ब्राह्मण के माथ में चंदन-अक्षत लगाकर पान-दक्षिणा दे।
- महाब्राह्मण को शय्या पर बिठा कर उसका पांव दबाएँ। दान-दक्षिणा देकर ब्राह्मण से मुफल मांगे।
- महाब्राह्मण यजमान के शिर पर हाथ रख कर आशीर्वाद दे।
- यजमान-नदी-तालाब-कुआँ-बावली-पर स्नान कर वस्त्र बदल कर घर आए।
- मार्ग में आम्र पल्लव तथा हरा साग लेकर घर आना चाहिए।

घर में आकर गौरी गणपति पूजा करे

।। वैतरणी गोदान विधि ।।

- कुछ लोग प्रत्यक्ष गोदान करते हैं तथा उसे वैतरणी पार कराते हैं, उसके लिए यह विधि नीचे लिखी जा रही है।

• दक्षिण दिशा में ४ हाथ लम्बा [पूर्व-पश्चिम] २ हाथ चौड़ा [उत्तर-दक्षिण] तथा १ हाथ गहरा एक गढ़ा खोद ले।

• गढ़ा में जल भर दे [इसे ही वैतरणी माने।]

• इस वैतरणी [गढ़ा] के नैऋत्य कोण में [दक्षिण-पश्चिम का कोण में] ऊख की नाव रखे।

• ऊख की नाव के ऊपर एक ताँबे की कटोरी में तिल भर कर रखे।

• तिल कटोरी पर एक सोने की प्रतिमा [धर्मराज अथवा १ सोने का टुकड़ा] रख दे।

• नाव पर कपास-नमक-घी-गुड़

• भी यथाशक्ति रख दे। १ लोहे का छड़ [लौह दण्ड] रखे। गौ को वैतरणी के उत्तर की ओर पश्चिममुख खड़ी करे। यजमान पूर्वमुख खड़ा हो : गौ को सामने कर ले

• आचमन-प्राणायाम-गायत्री जप करे। कुश-अक्षत जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे- ।।

अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि अमुक गोत्रस्य पितुः अमुक प्रेतस्य वैतरणी उत्तारणार्थम् गोपूजनं गोदानं चाहं करिष्ये ।।

• हाथ का कुश-अक्षत सामने भूमि पर छोड़ दें।

• पुष्प-अक्षत से गौ की पूजा कर दे। गौ को खाने के लिये कुछ अन्न दे दे।

• गौ की पूजा करते समय निम्न वाक्य पढ़ता रहे-

।। सोपकरण गवे नमः ।। ओम् कपिले नन्दे ! नमः । ओम् कपिले भद्रिके नमः । ओम् कपिले ! सुशीले नमः । कपिले सुरभि प्रिये नमः ।

ओम कपिले ! सुमनसे ! नमः । ओम् भुक्तिमुक्तिप्रदे नमः ।।

- सुन्दर वस्त्र और अलंकार से गौ को अलंकृत कर दे।

- गौ के साथ बछड़ा हो तो उसे भी अलंकृत कर दे। हाथ में फूल लेकर गौ की प्रार्थना करे -

ओम् कपिले सर्वदेवानाम् पूजनीयासि रोहिणी । तीर्थ धेनुमयी यस्मादतः शान्तिं प्रयच्छ मे।

- फूल गौ ऊपर के छोड़ दे।

- गोदान लेने वाले ब्राह्मण की पूजा करे - अक्षत-पुष्प ब्राह्मण पर चढ़ा दे।

।। देय ब्राह्मणाय नमः ।।

- कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर ब्राह्मण को वरण करे -

।। अद्य अशौचान्त द्वितीयेह्नि अमुक गोत्रस्य पितुः अमुक प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्तिकामनया गोदानकर्मणि एभिः वरण द्रव्यैः अमुक गोत्रं शर्माणं ब्राह्मणं गोदान प्रतिगृहीतत्वेन त्वामहं वृणे ॥

- ब्राह्मण के हाथ में वरण सामग्री दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। **वृतोऽस्मि ।।**

- कुश-अक्षत लेकर गौ की पूँछ पकड़ कर - संकल्प पढ़े-

॥ अद्य आशौचान्त द्वितीये दिवसे अमुक गोत्रस्य पितुः अमुक प्रेतस्य स्वर्गप्राप्ति कामनया इमां गां (कपिलाम्) (सवत्साम्) यथाशक्ति-अलंकृताम्-रुद्रदैवताम्-गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

- ब्राह्मण के हाथ में कुश-अक्षत-पूंछ पकड़ा दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। **स्वस्ति ।।**

- कुश-अक्षत-जल-द्रव्य लेकर गोदान सांगता का संकल्प करे -

।। अद्य कृतैतत् गोदान प्रतिष्ठा सांगता संसिध्यर्थम् इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

- ब्राह्मण के हाथ में दे दे। ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति ।।
- हाथ में फूल लेकर गौ की प्रार्थना करे-

ओम् या लक्ष्मीः सर्वभूतानां या च देवेष्व वस्थिता ।
धेनुरूपेण सा देवी शान्तिं मम प्रयच्छतु ।। १ ।।
देहस्था या च रूद्राणी शंकरस्य सदा प्रिया ।
धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु ॥ २ ।।
विष्णु वक्षसि या लक्ष्मीः स्वाहा या च विभावसोः ।
चन्द्रार्क ऋक्ष शक्तिर्या धेनुरूपास्तु सा श्रिये ॥ ३॥
चतुर्मुखस्य या लक्ष्मीर्या लक्ष्मी र्धनदस्य च ।
लक्ष्मीर्या लोकपालानां सा धेनुर्वरदास्तु मे ॥४॥
स्वधा तु पितृ मुख्यानां स्वाहा यज्ञ भुजां यतः ।
सर्व पाप हरा धेनुस्तस्माच्छान्तिं प्रयच्छ मे॥५॥
अर्चितासि वसिष्ठेन विश्वामित्रेण पूजिता ।
सुरभी हर मे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतम् ।। ६ ।।
गवामंगेषु तिष्ठन्ति भुवनानि चतुर्दश ।
यस्मात् तस्माच्छिवं मे स्यादिहलोके परत्र च ॥७॥

- फूल गौ के ऊपर चढ़ादे।
- गौ को वैतरणी के नैऋत्य कोण पर लाकर खड़ी करे [जहाँ नौका है]।
- तिल-अक्षत-पुष्प लेकर ऊख की नौका पर तिलपात्र में रखी हुयी स्वर्ण मूर्ति पर चढ़ा दे।

।। पितुः प्रेतस्य वैतरणी-उत्तरणार्थम् श्री यज्ञ पुरुषत्वं प्रीणीहि ।।

- नौका की पूजा करे-तिल-अक्षत-पुष्प चढ़ा दे। ॥ **इक्षुमयी**

नौकायै नमः ।।

- ब्राह्मण के हाथ में जल दे- **।। अद्य इक्षुमयी नौकां ददानि ।।**

- ब्राह्मण कहे **।। ददस्व ।।**

- नौका तथा ब्राह्मण पर जल छिड़क कर - दाहिने हाथ में कुश-तिल-जल ले।

- बाएँ हाथ से नौका को छू ले संकल्प पढ़े-

।। अद्य आशौचान्त द्वितीयेऽह्नि गोत्रस्य पितुः प्रेतस्य प्रेतत्व विमुक्ति कामनया यम मार्गे वैतरणी उत्तरणार्थम् इमाम्-इक्षुमयी नौकां सकार्पास-तिलपात्र सहिताम् यज्ञपुरुष देवताम् गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

- ब्राह्मण के हाथ में कुश-तिल देकर नौका स्पर्श करा दे।

- कुश-तिल-जल-द्रव्य लेकर सांगता दे - संकल्प पढ़े-

।। अद्य कृतैतत् इक्षुमयी नौकादान सांगता सिध्यर्थम् इदं द्रव्यम् गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रवदे ।।

- सांगता ब्राह्मण को दे दे। ब्राह्मण लेकर कर कहे।।॥ स्वस्ति ॥

- वैतरणी (गढ़ा) में तिल-अक्षत-फूल छोड़कर चुपचाम वैतरणी की पूजा कर दे।

- फूल लेकर वैतरणी की प्रार्थना करे -

यमद्वारे महोघोरे श्रुत्वा वैतरणी नदीम् ।
तर्तुकामो ददाम्येनाम् तुभ्यं वैतरण्यै नमः ।।
विष्णुरूप द्विजश्रेष्ठ मामुद्धर महीसुर ।
सदक्षिणा मया दत्ता तुभ्यं वैतरण्यै नमः ।॥

- गौ-ब्राह्मण-नौका की परिक्रमा करे। परिक्रमा कर फिर प्रार्थना

करे -

धेनुके त्वं प्रतीक्षस्व यमद्वारे महाभये ।

उत्तरणार्थम् तु देवेशि वैतरण्यै नमोऽस्तु ते ॥

- फूल वैतरणी तट पर छोड़ दे। श्राद्धकर्ता गौ को आगे कर के उसकी पूंछ पकड़ ले।
- नौका तथा ब्राह्मण को साथ लेकर : ईशान कोण से उस पार जाय [अर्थात्] गौ को गढ़े पर से डका दे।

प्रश्न -

१ .सपिण्डन एवं त्रयोदशाह किसे कहते है।

२ .सपिण्डन एवं त्रयोदशाह सविस्तार वर्णन कीजिए।

इकाई 20 - मासिक श्राद्ध एवं वार्षिकी

वार्षिक श्राद्ध

• मृतक के लिए सालभर प्रतिमाह अमावस को पीपल वृक्ष के समीप घड़ा तथा सीधा दिया जाता है।

• यदि प्रतिमाह घटदान नहीं किया गया तो श्राद्ध आरम्भ करने के पूर्व १२ घड़ा तथा १२ सीधा बारह मास के निमित्त देना चाहिए।

विधि

• पीपल वृक्ष के समीप दक्षिणमुख बैठकर - अपने ऊपर जल छिड़के -

ओम् अपवित्रः पवित्रो व सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

• ३ बार आचमन करे -

• ओम् केशवाय नमः । माधवाय नमः। नारायणाय नमः ।

• हाथ धो ले-

हृषीकेशाय नमः । पुण्डरीकाक्षः पुनातु ।

• दोनों हाथों की तीसरी अंगुली में पैंती पहन ले -

ओम पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ।

• पूर्व की ओर मुख करके ३ बार गायत्री का जप करे -

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ।।

• दक्षिण की ओर मुख करके अपसव्य होकर मृतक का ध्यान

करें -

आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देव यानैः।

अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्लुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ।।

- मोटक-तिल जल लेकर जल भरा घट छू ले - संकल्प करें-

अद्य विशेषण विशिष्टयां शुभ पुण्य तिथौ .... गोत्रः ..... नामाऽहम् अस्मद् पितुः ..... नाम्नः (मातुः गोत्रायाः देव्याः) यमराज-धर्मराज वैतरणी

संकट निवारण पूर्वक अक्षय स्वर्गादि-उत्तम लोक गमन कामनया तृष्णा निवारणार्थम्-अमुक-मासिक इमं तिल-जल सहितं घटं यथानाम् गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

- फिर मोटक-तिल-जल द्रव्य लेकर सांगता का संकल्प करें -

अद्य कृतैतत् घटदान सांगता सिद्ध्यर्थम् इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

- मोटक-तिल-जल लेकर सीधा का संकल्प करें -

अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अस्मद् पितुः गोत्रः नामाऽहम् नाम्नः (मातुः गोत्रायाः देव्याः) यमराज-धर्मराज संकट निवारण पूर्वक-स्वर्गादि-उत्तमलोक प्राप्ति कामनया क्षुधा निवारणार्थम् अमुक मासिक इमम्-आमात्रं सदक्षिणाकं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

- मोटक-तिल-जल-द्रव्य-लेकर सांगता का संकल्प पढ़ें -

अद्य कृतैतत् आमान्न दान प्रतिष्ठा संसिद्ध्यर्थम् इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

- घट का जल पीपल पर चढ़ा दे, मन्त्र पढ़ें-

नमोऽश्वत्थ महावृक्ष गोविन्दस्य सदा प्रिय।

तवाधः स्थापितः कुम्भः सजलो यो हि दृश्यते ।।

एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्म विष्णु शिवात्मकः ।

अस्यप्रदानात् तृप्यन्तु यममार्गे पितरश्च मे ।।

गन्धोदक तिलैर्मिश्र सान्नं कुम्भं समविन्तम् ।

पितृभ्यः सम्प्रदास्यामि अक्षय्य मुपतिष्ठताम् ।।

- पीपल वृक्ष की ३ बार परिक्रमा करें -

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।

तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणि पदे-पदे ।।

- हाथ जोड़कर प्रार्थना करें -

उदीरिता मवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः। असुं यई युरवृका ऋत ज्ञास्ते ऽ नो वन्तु पितरो हवेषु ।। अंगिरसो नः पितरो नवग्वा अथर्वाणो भृगवः सोम्यासः । तेषां वयं सुमतौ यज्ञियाना मपि भद्रे सौमनसे स्याम ।। येन पूर्वे पितरः सोम्यासो ऽ नू हिरे सोमपीथं वशिष्ठाः । तेभिर्यमः स राराणो हवी ष्यु शन्नु शद्भिः प्रतिकाम मत्तु ।।

- सव्य होकर अपना नाक-कान छूकर पूर्वमुख भगवान का ध्यान करें -

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत् ।

स्मरणादेव तद्विष्णोः परिपूर्णम्स्यादिति श्रुतिः ।।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु ।

न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ।।

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।

तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष रक्ष परमेश्वर ।।

- हाथ-पाँव धोकर घर आवें।

वार्षिक श्राद्ध विधि

- श्राद्ध के दिन घर के आँगन में श्राद्ध करने के निमित्त स्थान को

गोबर से लीप कर, पीली सरसों तथा तिल छिड़क कर पवित्र कर लें।

- गोबर के कंडा की अग्नि तैयार कर मिट्टी की नयी-शुद्ध हाँडी में पिण्ड के लिए खीर पकाए।

१. स्वयं पकाएँ, अथवा श्राद्धकर्ता की पत्नी भी खीर पका सकती है।

२. लोहे के पात्र में खीर नहीं पकाना चाहिये और लोहे की कलछुल आदि से भी चलाना नहीं चाहिए।

३. खीर चलाने के लिए सरकंडा या अन्य कोई पवित्र लकड़ी का उपयोग करना चाहिये।

४. हाँडी में चावल-दूध-घी-शहद - सभी वस्तुएँ एक बार ही छोड़कर पकने के लिए अग्नि पर रख दें। बार-बार देखना-चलाना नहीं चाहिए। चीनी बाद में छोड़े अन्यथा चावल नहीं पकेगा। तिल पिण्ड बनाते समय मिलाना चाहिये।

- खीर पक जाने पर पहले यदि प्रतिमाह घटदान नहीं किया है, तो उसे करें। उसके बाद -

- एक तिल या सरसों के तेल का दिया जला कर दक्षिण दिशा में संभाल कर रख दें।

- श्राद्ध पूर्ण होने तक दीपक बुझने नहीं पावे - पूरी व्यवस्था कर दें।

- दीपक में १ ही बाती लगाये - दीपक का मुख दक्षिण दिशा में रहे।

- अपने सामने स्वच्छ-शुद्ध मिट्टी लेकर १-१ बीता लम्बी चौड़ी १६ वेदी पिण्डदान के लिए बनावे।

- मलमास हो तो १७ वेदी बनाएं।

- वेदी दिशा की ओर नीचे रहे, जिससे जल गिरने पर दक्षिण दिशा की ओर ही बहे।

• वेदी पर कोई तिनका-कीड़ा-मकोड़ा आदि न रहे सावधानी से देख लें।

• १६ वेदी के आगे (दक्षिण की ओर) तीन पत्तों को जोडकर बनाए हुए १६ तिप्ता (चट) अलग- अलग आसन के लिए रखें। मलमास में १७ तिप्ता रखें।

• सोलहों आसन (तिप्ता) के सामने वेदी की ओर तिप्ता से मिला कर १-१ पत्ता भोजन पात्र के लिए रख दें।

• भोजन पात्र पर १-१ दोनिया अर्धपात्र के लिए रख दें।

• ३ कुशा को एक में मिलाकर गाँठ लगा ले। इसी त्रिकुश से पूजन होता है।

• २ कुशा को बट कर बीच से मोड़ कर मूल भाग (जड़) तथा भाग को मिलाकर गाँठ लगा लें -इसे मोटक कहते हैं- इसी से पिण्डदान आदि होता है।

• २ कुशा के बीच वाले हिस्से को निकाल कर दोनों को बट कर गाँठ लगाकर दाहिने हाथ में पहनने के लिए १ पवित्री (पैंती) बना लें।

• इसी तरह ३ कुसा की १ पवित्री बाएँ हाथ के लिए तैयार कर लें।

• पवित्री (पैंती) दोनों हाथों में अनामिका (तीसरी) अँगुली में पहनी जाती है।

• १-१ कुशा को बट कर मूल-अग्रभाग मिला कर गाँठ लगाकर १६ मोटक-आसन के लिए तैयार कर लें। मलमास हो तो १७ मोटक बनाना चाहिए।

श्राद्ध प्रारम्भ

• पूर्व की ओर मुख करके त्रिकुश से अपने ऊपर तथा श्राद्ध सामग्री पर जल छिड़के -

ओम अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।

- ३ वार आचमन करें।

ओम् नारायणाय नमः । ओम् केशवाय नमः। ओम् माधवाय नमः ।

- हाथ धो लें -

हृषीकेशाय नमः । पुण्डरीकाक्षः पुनातु ।

- पवित्री (पैंती पहन ले)

- दीपक पर अक्षत-फूल छोड़कर प्रार्थना करें -

हे दीप देवरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत।

यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ।।

- बाएँ हाथ में पीली सरसों लेकर दाहिने हाथ से उसे ढँक कर निम्न मन्त्र पढ़ें -

ओम् नमो नमस्ते गोविन्द पुराण पुरुषोत्तम

इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षत्वं सर्वतो दिशः ।।

- दाहिने हाथ से २-२ दाना सरसों चारों दिशा में छिड़के -मंत्र पढ़ें -

पूर्व में	- प्राच्ये नमः ।	दक्षिण में	- अवाच्यै नमः ।
पश्चिम में	- प्रतीच्यै नमः ।	उत्तर में	- उदीच्यै नमः ।
ऊपर आकाश में -	अन्तरिक्षाय नमः ।	नीचे भूमि में -	भूम्यै नमः ।

- हाथ की सरसों अपने सामने भूमि पर छोड़ दें।

- अपने सामने भूमि पर जल-चंदन-पुष्प-चढ़ाकर पूजन कर दें। पूजन वाक्य पढ़ते रहें - **।। श्राद्धभूम्यै नमः ।। -** इसी से चन्दन-फूल

चढ़ाएं।

• १ कुशा को ३ बार मोडकर २ दाना तिल लेकर अपनी दाहिनी टेट में (धोती में) लपेट लें - निम्न मंत्र पढ़ें -

सोमस्य नीवीरसि विष्णोः शर्मासि शर्म यजमानस्येन्द्रस्यो निरसि सुस्याः कृषि स्कृधि ।।

• त्रिकुश-तिल-जल लेकर संकल्प करें -

अद्य शुभपुण्यतिथौ ... गोत्रः नामाऽहम्-अस्मद् पितुः गोत्रस्य नाम्नः (मातुः गोत्रायाः देव्याः) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत (१) पाक्षिक (२) प्रथम मासिक (३) द्वितीय मासिक (४) त्रैपाक्षिक (५) तृतीय मासिक (६) चतुर्थ मासिक (७) पंचम मासिक (८) षाण्मासिक (६) ऊनषाण्मासिक (१०) सप्तम मासिक (११) अष्टम मासिक (१२) नवम मासिक (१३) दशम मासिक (१४) एकादश मासिक (१५) द्वादश मासिक (१६) ऊनाब्दिक संज्ञकानि श्राद्धानि एकोद्दिष्ट विधिना करिष्ये।

• कुश-तिल-जल-भूमि पर छोड़ दें।

• ३ बार गायत्री का जप करें - ब्राह्मण मन्त्र पढ़ें-

ओम् देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।

नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ।

• जनेऊ अंगौछा उलटा पहन ले अपसव्य हो जाय। दक्षिण दिशा में मुख करके बैठे।

• दाहिने हाथ में मोटक-तिल-जल तथा १६ मोटक आसन के लिए लेकर संकल्प करें -

अद्य अस्मद् पितुः यथानाम गोत्रस्य नाम्नः (मातुः गोत्रायाः देव्याः) एषु श्राद्धेषु इमानि आसनानि ते स्वधा।

• संकल्प करके आसन को १६ मोटक सामने के १६ तिप्ता पर दक्षिणाभिमुख क्रमशः १-१ रख दें।

- हाथ में लगा तिल-जल इन्हीं आसनों पर छिड़क दें।
- संकल्प वाला मोटक अपने आगे भूमि पर रख दें।
- सव्य होकर अपना नाक-कान छू ले फिर अपसव्य हो जाय -
- दाहिने हाथ में तिल लेकर सभी सोलह भोजन पात्रों पर तिल छिड़क दे-मन्त्र पढ़ें - **अपहताअसुरा रक्षा सिवे दिषदः ।**
- हाथ में तिल लेकर मृतक का आवाहन करें- निम्न मन्त्र पढ़ें -

आयन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभि देवयानैः ।

अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्ब्रुवन्तु तेऽवन्त्व स्मान् ।।

- तिल पितृ आसन (१६ मोटक) पर छिड़क दें।
- कुशा का मूल भाग निकाल कर १-१ कुशा में गाँठ लगाकर कुशा का अग्रभाग दक्षिण की ओर रहे इस ढङ्ग से १६ आसन के सामने रखी १६ दोनिया (अर्धपात्र) में रख दें, रखते समय मन्त्र पढ़ें -

ओम् पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

तस्य ते पवित्र पते पवित्र पूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ।। *

- सोलहों अर्धपात्र (दोनिया) में थोड़ा-थोड़ा जल भर दे, मन्त्र पढ़ते रहें -

ओम् शन्नोदेवी रभिष्टयआपो भवन्तु पीतये। शैय्यो रभि स्रवन्तु नः ।

- सभी दोनियो (अर्धपात्र) में २-२ दाना तिल छोड़ दे, मन्त्र पढ़े-

ओम् तिलोऽसि सोम दैवत्यो गोसवो देव निर्मितः ।

प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितृन्-लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा।।

- चुपचाप सभी १६ अर्धपात्र में चंदन-फूल छोड़ दें।

• सभी १६ अर्थपात्र (दोनिया) से कुशा निकाल-निकाल कर दोनिया के सामने वाले भोजन पात्र (पत्ता) पर उत्तर की ओर उद्याभाग करके रख दें।

• जिस दोनिया का कुश हो उसी के आसन पर रखना चाहिए, ध्यान से रखें।

• संकल्प वाला मोटक लेकर पूजा के लोटा से बोर-बोर कर इन सभी १६ कुशों पर जल छिड़क दें।

• दाहिने हाथ से इन १६ अर्धपात्रों (दोनिया) को ढँक लें मन्त्र पढ़ें-

ओम् या दिव्या आपः पयसा सं वभूवुर्या अन्त रिक्षा उत पार्थि वीर्याः।

हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान आपः शिवाश स्योना सुहवा भवन्तु ।।

• मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें-

अद्य वार्षिक श्राद्धे अस्मद् पितः अमुक गोत्र ! अमुकनाम! (मातः गोत्रे देवि) एषु श्राद्धेषु एते हस्तार्घाः ते स्वधा ।

• संकल्प करके हाथ का तिल-जल दोनिया पर छिड़क दें। मोटक सामने भूमि पर रख दें।

• क्रमशः १-१ अर्धपात्र उठाकर १-१ बूँद जल भोजन पात्र पर रखे कुशा पर शेष जल आसन मोटक पर चढ़ा दें।

• फिर भोजन पात्र पर रखे कुशा को उठाकर दोनिया (अर्धपात्र) में रख दे।

• दोनिया आसन के पीछे (दक्षिण में) उलट कर रख दें।

• इसी तरह सभी अर्धपात्र का जल चढ़ाए, कुशा रखे, अर्धपात्र पीछे उलट कर रखता जाए मन्त्र पढ़ता जाए -

पित्रे स्थान मसि ।।

• श्राद्ध के अन्त तक इन उलट कर रखी दोनिया को हिलाना-डुलाना नहीं चाहिए।

• सभी १६ आसन मोटक पर २-२ दाना तिल छिड़क दें।

• बाएँ हाथ से १ कुशा लेकर पिता (माता) का ध्यान करें -

इमं लोकं परित्यज्य गतोऽसि परमां गतिम् ।

मनसा वायुरूपेण विप्रे त्वां योजयाम्यहम् ।।

• पढ़कर कुशा दक्षिण दिशा में फेंक दे।

• सभी १६ आसन मोटक पर चुपचाप मन में पिता (माता) का ध्यान करता हुआ चंदन-तिल- 2 फूल-कच्चा सूत-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ाकर पूजन कर दें।

• मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प करें-

अद्य अस्मद् पितः अमुक गोत्र ! नाम (मातः गोत्रे देवि) एषु श्राद्धेपु एतानि-गन्ध पुष्प-धूप-दीप-ताम्बूल वासांसि ते स्वाधा।

• संकल्प के बाद जल-तिल आसन पर छिड़क दें। दाहिने हाथ में जल लेकर आसन (भोजन पात्र) के चारों ओर घुमा कर भूमि पर छोड़ दें।

यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति।

एवं मण्डल तोयन्तु सर्वभूतानि रक्षतु ।।

• १ दोनिया में थोड़ा-सा जल छोड़कर अग्नि कोण में (पितृ आसन के बाएँ) एक किनारे पर रख दें।

• १ चम्मच पिण्डा वाली खीर हाथ में लेकर तिल-घी लगा कर इस दोनिया में चोड़ दें-मन्त्र पढ़ें-

।। इदम्-अन्नम्-एतद्-भूस्वामि पितृभ्यो नमः ।।

• सभी १६ भोजन पात्रों पर १-१ दोनिया रख कर थोड़ा-थोड़ा जल भर दें।

• सभी १६ भोजन पात्रों पर १-१ बूँद घी तथा आधा-अधा चम्मच खीर रख दें।

• दोनों हाथ के अँगूठों से शहद छूकर, हाथ को उलटा कर (हथेली नीचे रहे)।

• सभी १६ भोजन पात्रों पर रखे घी-खीर-जल को ढँक ले या भोजन पात्रों को छू लें - मन्त्र पढ़ें-

मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ।
मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव रजः मधुद्यौ रस्तु नः पिता ।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधु माँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः।
मधु-मधु-मधु।

• बाएँ हाथ से भोजन पात्रों को छूते हुए निम्न मन्त्र पढ़ें -

१. पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा।

२. इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढ़ मस्य पा सुरे स्वाहा।।

३. कृष्ण कव्य मिदं रक्ष मदीयम् ।।

• बाएँ उल्टे हाथ से १-१ भोजन पात्र को छू कर दाहिने हाथ से भोजन पात्र पर घी-खीर, दोनिया का जल ३-३ बार क्रमशः १-१ मोटक आसन पर छुआ दें।

• जिस पात्र का हो, उसी मोटक पर लगाए - एक-दूसरे का उलट-फेर न हो। निम्न वाक्य पढ़ते

पूर्व में - प्राच्यै नमः । दक्षिण में - अवाच्यै नमः ।

पश्चिम में	- प्रतीच्यै नमः ।	उत्तर में	- उदीच्यै नमः ।
ऊपर आकाश में -	अन्तरिक्षाय नमः ।	नीचे भूमि में -	भूभ्यै नमः ।

- सभी १६ भोजन पात्रों पर तिल छिड़क दें-निम्न मन्त्र पढ़ें -

।। अपहता असुरा रक्षा सिवेदिषदः ।।

- मोटक तिल-जल लेकर संकल्प करें -

।। अद्य अस्मद् पितः अमुकगोत्र ! अमुकनाम ! (मातः गोत्रे ! देवि!) एषु श्राद्धेषु इमानि सोपकरणानि दत्तैतानि ते स्वधा।

- हाथ का तिल-जल आसन पर छिड़क दें -
- सव्य होकर अपना नाक-कान छू लें, गायत्री जप करें - मंत्र पढ़े

१. मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्न सन्त्वोषधीः
मधुनक्त मुतोषसो मधुमत् पार्थिव गुं रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता ।
मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः । ।।
ओम् मधु-मधु-मधु ।।

२. ।। ओम ! अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेद् तत्सर्व मच्छिद्र मस्तु ।।

- अपने पैर के नीचे ३ कुशा रख कर निम्न मन्त्रों का पाठ करें -

१. कृणुष्वपाजः प्रसितिन्न पृथ्वीं याहि राजे वा म वाँ इभेन ।
तृष्वीमनु प्रसितिम् द्रूणा नोऽस्ताऽसि विद्ध्य रक्षसस्तपिष्ठैः ।।
२. तव भ्रमास आशु या पतन्त्यनु स्पृश धृषता शोशुचानः
तपू ...... ष्यग्ने जुह्वा पदङ्गा न सन्दितो विसृज विष्व
३. प्रतिस्पशो विसृज तूर्णितमो भवा पायुर्विशो अस्या अदब्ध

यो नो दूरे अद्य श सो यो अन्त्यग्ने माकिष्टे व्यथिरा दधर्षीत् ।

४. उदग्ने तिष्ठ प्रत्या तनुष्व न्या मित्राँ ओषता त्तिग्म हेते।

यो नो अराति समिधान चक्रे नीचा तं धक्ष्यतसं न शुष्कम् ।।

५. उध्वा भव प्रति विध्या ध्यस्मदा विष्कृणुष्व दैव्या न्यग्ने ।

अवस्थिरा तनु हि यातु जूनां जामि मजामिम् प्रमृणीहि शत्रून् ।।

- पितृ भोजन पात्र पर २ दाना तिल छिड़क कर फिर मन्त्र पाठ करें -

उदीरता मवर उत्परा स उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः ।

असु य ईयुर वृका ऋतज्ञास्ते नो ऽवन्तु पितरो हवेषु ।।

- पुरूष सूक्त पाठ

सहस्त्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्त्रपात् ।

स भूमि गुं सर्वतस्पृत्वा त्यतिष्ठद् दशाङ्गुलम् ।

पुरुष एवेद सर्वम् यद्भूतं यच्च भाव्यम् ।

उता मृतत्व स्येशानो यदन्ने नाति रोहति ।

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः ।

पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि ।

त्रिपादूर्ध्व उदैत् पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः ।

ततो विष्वङ् व्यत्क्रामत् साशना नशने अभि।

ततो विराड जायत विराजो अधिपूरुषः ।

सजातो अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमि मथोपुरः ।

तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम् ।

पशूस्तॉश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे।

छन्दा सि गुं जज्ञिरे तस्माद् यजुस्तमादजायत ।

तस्मा दश्वा अजायन्त ये के चो भयादतः ।

गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ।

तं यज्ञम्बर्हिषि प्रौक्षन्पुरुषंजात मग्र।

तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्चये।

यत्पुरुषं व्यदधुः कृतिधा व्यकल्पयन्।

मुखङ्किमस्यासीत्किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ।

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्वाहू राजन्यः कृतः ।

ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ४ शूद्रो अजायत।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।

श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत ।

नाभ्या आसीदन्तरिक्ष गुंसमवर्तत ।

पदभ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ अकल्पयन् !

यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत ।

वसन्तोऽ स्यासी दाज्यं ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः ।

सप्तास्या सन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः. कृताः ।

देवा यद्यज्ञन् तन्वाना अबध्नन्पुरुषम्पशुम् ।

यज्ञेन यज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।

तेह नाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे सध्याः सन्ति देवाः।

आशुः शिशानो वृषभो नभी मो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ।

संक्रन्दनो निमिष एकवीरः शत सेना अजयत्साकमिन्द्रः ।

नमः शम्भवाय च मवो भवाय च नमः।

शङ्कराय च मयस्कराय च नमः । शिवाय च शिततराय च।।

नमस्तुभ्यं विरूपाक्ष नमस्तेऽनेक चक्षुषे। नमः पिनाक हस्ताय वज्रहस्ताय वै नमः ।।

- अपसव्य होकर विकर पिण्ड दें
- अग्नि कोण में १ किनारे (जिससे कुछ छून जाय) ३ कुशा का टुकड़ा दक्षिण की ओर अग्रभाग करके विकर-आसन के निमित्त रख दें।
- १ दोनिया में १ पिण्डा-तिल-घी-शहद लगा कर ले, जल ले लें।
- ऊपर १ कुशा रख कर दाहिने हाथ से बैंक ले-मन्त्र पढ़ें -

अनग्नि दग्धाश्च ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम।
भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम् ।।

प्रश्न -

१ .मासिक श्राद्ध एवं वार्षिकी किसे कहते है।

२ .मासिक श्राद्ध एवं वार्षिकी का सविस्तार वर्णन कीजिए।

इकाई 21 - एकोदिष्ट श्राद्ध

- अपने आसन से उठकर अग्नि कोण में जो ३ कुशा-आसन रखा है, उसी पर पिण्डा सहित दोनिया उलट कर रख दें।
- दोनों हाथ की पवित्री (पैंती) उतार कर वहीं रख दें।
- बाहर निकल कर हाथ-पाँव घोकर अपने स्थान पर फिर बैठें।
- पूर्व-मुख होकर सव्य होकर अपने ऊपर जल छिड़के।

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।

यः स्मेरत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।

- ३ बार आचमन करें -

नारायणाय नमः ।। केशवाय नमः ।। माधवाय नमः ।।

- हाथ धो लें। दोनों हाथ में दूसरी पवित्री (पैंती) पहन लें।
- हाथ जोड़कर भगवान का ध्यान करें -

अनादि निधनो देवः शंख चक्र गदाधरः ।

अव्यक्तः पुण्डरीकाक्षः सर्व पाप हरो भव ।।

- जनेऊ अंगोछा उलटा कर अपसव्य हो जाय, दक्षिण की ओर मुख कर लें।
- बाएँ हाथ में क्रमशः एक-एक कुशा लेकर दाहिने हाथ से कुशा का अग्रभाग पकड़ कर कुशा की जड़ से क्रमशः सभी १६ वेदी पर एक-एक करके रेखा (लाइन) खींच दें - मन्त्र पढ़ें -

अपहता असुरा रक्षा सिवे द्विषदः ।

- लाइन खींच कर कुशा अपने पीछे उत्तर में फेंकता जाए।
- गोबर के कंडे पर अग्नि लेकर सभी वेदी पर घुमा दे - मन्त्र

पढ़ते रहें -

ये रूपाणि प्रतिमुञ्च माना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति ।

परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टान् लोकान् प्रणुदात्यस्मात् ।

• घुमाने के बाद इस अग्नि को दक्षिण दिशा में अलग रख दें। मोटक से सभी वेदी पर जल छिड़क दें- मन्त्र पढ़ते रहें -

अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवन्तिका।

पुरी द्वारावती चैव सप्तैता मोक्षदायिकाः ।।

• कुशा को बीच से अलग कर ३-३ कुश टुकड़ों को सभी वेदी पर रेखा (लाइन) के ऊपर बिछा दें। दक्षिण की ओर कुशा का अग्रभाग रहें।

• सव्य होकर अपना नाक-कान छू लें-हरि स्मरण करें।

• पूर्व दिशा की ओर मुख करके निम्न मन्त्र पढ़ें -

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।

नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः ।।

• अपसव्य होकर -दक्षिण मुख कर लें।

• हर वेदी के आगे (अपनी ओर) एक-एक दोनिया रख दें। दोनिया में थोड़ा-थोड़ा जल भर दें, तिल-चंदन-फूल छोड़ दें।

• मोटक तिल-जल लेकर बाएँ हाथ से सब दोनिया को छूल लें। संकल्प पढ़ें - ।।

अद्य अस्मद् पितः-अमुक गोत्र! नाम ! (मातः गोत्रे-देवि) एषु श्राद्धेषु पिण्ड स्थानेषु अत्र अवने निद्ध्वं ते स्वधा ।।

• हाथ का तिल-जल-दोनिया पर छिड़क दे, मोटक रख दें।

• एक-एक दोनिया क्रमशः उठा-उठा कर २-२ बूँद जल वेदी पर

पिछे कुशा पर चढ़ा दें।

- शेष जल सहित दोनिया अपने स्थान पर रखता जाए।

<u>पिण्डदान करे।।</u>

- खीर में तिल-घी-शहद मिला कर वेल के समान १६ पिण्डा बना लें। थोड़ी खीर बचाए रहें।

- सभी पिण्डों पर १-१ बूँद शहद लगा दें, हाथ में मोटक ले लें। बायां पैर मोड़ लें।

- क्रमशः लेता जाय और संकल्प पढ़-पढ़ कर वेदी पर कुशा के ऊपर रखता जाय।

1) अद्य अस्मद् पितः यथानाम गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत पाक्षिक श्राद्धे एप पिण्डस्ते स्वधा ।

2) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत प्रथम मासिक एष पिण्डस्ते स्वधा ।

3) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत द्वितीय मासिक श्राद्धे एप पिण्डस्ते स्वधा।

4) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत त्रैपाक्षिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

5) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत तृतीय मासिक श्राद्धे एप पिण्डस्ते स्वधा।

6) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत चतुर्थ मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

7) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत पंचम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

8) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत षाण्मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा ।

9) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत ऊन्षाण्मासिक श्राब्द्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

10) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत सप्तम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

11) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत अष्टम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

12) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत नवम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

13) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत दशम मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

14) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत एकादश मासिक श्राद्धे एप पिण्डस्ते स्वधा।

15) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत द्वादश मासिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

16) अद्य पितः गोत्र नाम (मातः गोत्रे देवि) वार्षिक श्राद्धान्तर्गत उन्वार्षिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा।

- हाथ का मोटक भूमि पर रख दें, हाथ का तिल पिण्ड पर चढ़ा दें।
- पिण्डा के नीचे वेदी पर जो कुशा बिछाया है, उन सब को छू लें।
- पूर्व मुख हो, सव्य होकर -नाक-कान छू लें, हरि स्मरण करें।
- फिर दक्षिण मुख हो, अपसव्य होकर बायीं ओर से (पीछे मुख घुमाकर) श्वांस (सांस) को रोके।
- पितर का ध्यान करता हुआ मुख घुमा कर सामने पिण्डों की ओर रोकी हुई श्वास (सांस) छोड़ दें; मन्त्र पढ़ें -

अत्र पितर्मादयस्व यथा भाग मा वृषायस्व ।

अमीमदन्त पिता यथा भाग मा वृषायिष्ट ।।

• मोटक-तिल-जल-लेकर संकल्प करें-बाएँ हाथ से १६ दोनिया छू लें।

अद्य अस्मद् पितः गोत्र नाम [मातः गोत्रे-देवि] एषु श्राद्धेषु पिण्डे अत्र प्रत्यवने निद्ध्वं ते स्वधा।

• संकल्प कर हाथ का तिल-जल को १६ दोनिया जल सहित सामने रखी है उस पर छिड़क दें;

• क्रमशः १-१ दोनिया उठा कर उसका जल-तिल-फूल क्रमशः १-१ पिण्डा पर चढ़ा दें। दोनिया किनारे अलग फेंक दे।

- टेंट में (धोती में) जो कुशा-तिल लपेटा है, उसे निकाल कर नैर्ऋत्य कोण में (अपने दाहिने हाथ दक्षिण की ओर कोने में) फेंक दे।
- सव्य होकर -नाक-कान छू लें भगवान का ध्यान करें।
- फिर अपसव्य हो जाय।

• बाएँ हाथ में सूत लेकर दाहिने हाथ से पकड़ कर प्रत्येक पिण्डा पर अलग-अलग चढ़ा दें, निम्न मन्त्र पढ़ते रहें -

।। नमस्ते पिता रसाय नमस्ते पितः शोषाय नमस्ते पितर् जीवाय।

नमस्ते पितः स्वधायै नमस्ते पितर् घोराय नमस्ते पितर् मन्यवे ।

नमस्ते पितः पितर् नमस्ते गृहान्नः देहि नमस्ते पितर् देष्म।

एतत्ते पितर् वासः

- मोटक-तिल-जल-लेकर संकल्प करें-

अद्य अस्मद् पितः अमुक गोत्र नाम [मातः गोत्रे देवि] एषु श्राद्धपिण्डेषु एतानि वासांसि ते स्वधा ।।

• हाथ का तिल-जल पिण्डों पर छिड़क दें, मोटक भूमि पर रख दें।

• से चुपचाप मौन होकर पिण्डों पर क्रमशः -चन्दन-तिल-फूल-धूप-दीप-नैवेद्य-आचमन-पान-सुपारी-दक्षिणा चढ़ा दें।

• मोटक-तिल-जल-लेकर संकल्प करें -

।। अद्य अस्मद् पितः अमुक गोत्र नाम [मातः गोत्रे देवि] एषु श्राद्ध पिण्डेषु एतानि गन्धार्चन पुष्प धूप दीप ताम्बूल पूगीफलानि ते स्वधा ।।

• संकल्प पढ़ कर हाथ का तिल-जल पिण्डों पर चढ़ा दें-मोटक भूमि पर रख दें। से बची हुयी खीर थोड़ी-थोड़ी सभी पिण्डों के पास वेदी पर रख दें।

• दाहिने हाथ में जल ले-लेकर सभी पिण्डों के पास छोड़ दें। मन्त्र पढ़ें ।। शिवा आपः सन्तु ।।

• फूल छोड़ दें -

सौमनस्य मस्तु ।।

• चावल छोड़ दें -

अक्षतं चारिष्टं चास्तु ।।

• मोटक-तिल-जल लेकर संकल्प पढ़ें -

अद्य अस्मद् पितुः गोत्रस्य नाम्नः [मातुः गोत्रायाः देव्याः] एषु श्राद्धेषु दत्तैतानि अन्न पानादिकानि ते स्वधा ।

• हाथ का तिल-जल-पिण्डों पर छिड़क दें।

• सव्य होकर नाक-कान छू लें-पूर्व मुख करके हरि का स्मरण करें।

• दक्षिण दिशा की ओर मुख करके - दक्षिण दिशा को देखता

हुआ -

• दाहिने हाथ में जल लेकर पूर्व की ओर गिराता हुआ सभी पिण्डों पर जल घारा दें-मन्त्र पढ़ते रहें-

अघोरः पिताअस्तु।

• पूर्व की ओर मुख घुमा कर हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें -

गोत्रन्नो वर्धतां दातारो नोऽभि वर्धन्तां वेदाः सन्तति रेव च।

श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहु देयं च नोऽस्तु ।

अन्नं च नो बहु भवेद तिथींश्च लभेमहि ।

याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कंचन ।

एताः सत्या आशिषः सन्तु। सन्त्वेताः सत्या आशिषः ।।

• अपसव्य होकर सभी पिण्डों पर से पान-सुपारी-फूल-सूत आदि पूजन-सामग्री हटा दें।

• सभी पिण्डों पर कुशा का ३-३ टुकड़ा रख दें।

• क्रमशः १-१ दोनिया में दूध मिला जल ले-लेकर दक्षिण की ओर धार गिराते हुए क्रमशः १- १ पिण्डा पर जल-दुग्ध धारा दे देते समय निम्न मन्त्र पढ़ते रहें -

ऊर्जम् बहन्ती रमृतं घृतं पयः कीलालं परिनु तम्।

स्वधास्थ तर्पयत मे पितरम् ।।

• थोड़ा झुक कर सभी पिण्डों को सूँघ लें। पिण्डों की वेदी से उठा कर अलग रख दें।

• अथवा -१-१ पिण्ड उठा-उठा कर सूंघ कर अलग किनारे रखते जाए।

• *वेदी पर बिछे हुए सभी कुशों को उठा कर अग्नि में डाल दें।
।। वेदी पूजन ।।

- ☆ सव्य होकर अपना नाक-कान छू लें।

- १ कुशा लेकर उसके मूल से बीच की वेदी पर ६ तथा ४ अंक लिख दें। मन्त्र पढे -

।। शंखाय नमः । चक्राय नमः। गदाधराय नमः ।

- अक्षत-फूल लेकर भगवान की प्रार्थना करें।

- शान्ताकारं भुजग शयनं पद्मनाभं सुरेशं, विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णम् शुभांगम् । लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं, वन्दे विष्णुं भव भय हरं सर्व लोकैकनाथम्।।

- हाथ का अक्षत-फूल वेदी पर चढ़ा दें, और पूजन कर दें-मन्त्र पढ़ते रहें -

शंखाय नमः। चक्राय नमः। गदाधराय नमः । विष्णवे नमः ।

- फिर अपसव्य होकर (जनेऊ अंगौछा उल्टा पहन कर) -

- १६ अर्थ पात्र (दोनिया) जो आसन-मोटक के पीछे उलट कर रखा है। उन सभी को सीधा कर दें-उनमें तिल छिड़क दें।

- हाथ में जल-तिल-फूल लेकर दीपक बुझा दें।

- सव्य होकर -नाक-कान छू कर - (अथवा आचमन करके) पूर्व दिशा में मुख घुमा कर निम्न मन्त्र का ३ बार पाठ करें -

देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।

नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ।।

शय्यादान विधि

- शय्या का सिर पूर्व की ओर रखना चाहिए और चारों पावा के पास ईशान कोण में घी, अग्निकोण में रोली तथा पूजा साम्ग्री, नैर्ऋत्य कोण में अन्न, तथा वायव्य कोण में जल पूर्ण घड़ा तथा शय्या के ऊपर फल-फूल-मिठाई-मेवा तथा वस्त्र-पात्र आदि जो

कुछ देना हो रख दें।

• शय्या की पूजा करें -तीन बार जल छिड़के तथा गन्ध-अक्षत-पुष्प छोड़ें।

ओम् सोपकरण शय्यायै नमः, ओम् प्रमाण्यै देव्यै नमः ।

• पहले ब्राह्मण का पाँव धोवें ।।

नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हिताय च, जगहिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः।

• ब्राह्मण के माथ में तिलक लगावें -

गन्ध द्वारां दुराधर्षाम् नित्य पुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीम् सर्व भूतानां तामिहो पह्वये श्रियम् ।।

• हाथ में कुश-अक्षत-द्रव्य लेकर ब्राह्मण का वरण करें -

अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं अस्मद् पितुः अमुक नाम्नः वार्षिक एकोद् दिष्ट श्राद्ध दिवसे शय्यादान कर्मणि एभिः वरण द्रव्यैः अमुक गोत्रं शर्माणम् शय्यादान प्रतिग्रहीतृत्वेन त्वां वृणे।

• इसके बाद शय्या के ऊपर एक पान पर सोने की प्रतिमा अथवा सुपारी रख कर विष्णु की पूजा करें।

• पहले फूल लेकर ध्यान करें -

ओम् इदं विष्णु विचक्रमे त्रेधा निदधेपदम् समूढ़ मस्य पा गुं सुरे स्वाहा।

मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं

यज्ञ समिमन्दधातु विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोम् प्रतिष्ठ ।

• फिर जल, चन्दन, पुष्प, धूप-दीप, नैवेद्य, पान, सुपारी, दक्षिणा-द्रव्य आदि चढ़ाकर सविधि पूजन करें और हाथ जोड़कर प्रार्थना करें।

ओम् शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशम्।

विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णम् शुभांगम् ।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम् ।

वन्दे विष्णुं भवभय हरं सर्व लोकैकनाथम् ।

- शय्या परिक्रमा करें - इसके बाद अक्षत-पुष्प-कुश-जल हाथ में लेकर शय्या तथा ब्राह्मण की परिक्रमा करें।

पुराणोक्त फलावाप्तये अमुक गोत्रः नामाऽहं अस्मद् पितुः अमुक नाम्नः (मातुः देव्याः) वार्षिक एकोदिष्ट श्राद्ध दिवसे समस्त पापक्षय पूर्वकाप्सरोगण सेवायुत विमानकरणक इन्द्र पुरगमनोत्तर षष्ठि सहस्रवर्षाधिरकरणक सर्वलोक महिमत्व तदुत्तर षष्ठि योजन मन्डल राज्य भोगान्तर शिव सायुज्यावाप्तिकामनया इमां शय्यां हंसतूली प्रच्छन्नां शुभ्र गण्डोपधानिकां प्रच्छादनपटास्तृतां धान्यादियुतां यथोपस्कर सहितां देवतां तथा च शीतोष्णवातलज्जा संरक्षणार्थम् वस्त्रोपवस्त्रम् सूपौदनपात्राणि एवं च फल पुष्प मिष्टान्नादीनि आसादित वस्तूनि सहिताम् यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

- यह कहकर ब्राह्मण के हाथ में कुश अक्षत दे दें और ब्राह्मण को शय्या पकड़ा दें।
- ब्राम्हण लेकर कहे **।। स्वस्ति ।।**
- हाथ में कुश अक्षत जल-द्रव्य (शय्यादान सांगता) लेकर संकल्प पढ़ें -

अद्य कृतैतत् शय्यादान प्रतिष्ठा सिध्यर्थम् इदं-दक्षिणाद्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

- ब्राह्मण लेकर कहे ।। स्वस्ति ।।
- फिर यजमान हाथ जोड़कर प्रार्थना करें -

।। यथा न कृष्ण शयनं शून्यं सागर जातया।

तथा शय्या पित्र्यप्यस्तु अशून्या जन्म जन्मनि ।

- शय्यादान के अभाव में धोती-कपड़ा आदि जो ब्राह्मण को देना

है, उसका संकल्प -

अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं अस्मत् पितुः (मातुः) वार्षिक एकोदिष्ट श्राद्ध दिवसे यमराज-धर्मराज वैतरणी संकट निवारण पूर्वक स्वर्गे सुख संवास कामनया इमानि वस्त्रोपवस्त्रादीनि आसादित् वस्तूनि च गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

- *सांगता संकल्प -

अद्य कृतैतत् दान प्रतिष्ठा सांगता सिध्यर्थम् इदं दक्षिणा द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे।

- ब्राहाण लेकर कहे ।। **स्वस्ति** ।।

पददान

- पहले १२ पदों पर तीन बार जल छिड़के तथा गन्ध अक्षत पुष्प छोड़ें -

पदेभ्योनमः देय द्रव्येभ्यो नमः ।

- फिर हाथ में कुश-अक्षत-जल लेकर संकल्प करें -

अद्य विशेषण विशिष्टायां शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं अस्मत् पितुः (मातुः) अमुक नाम्नः वार्षिक श्राद्ध दिवसे यमराज धर्मराज वैतरणी संकट निवारणार्थम् श्रुत्यादि तथोक्त फल प्राप्त्यर्थम् च इमानि पदानि यथानाम गोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो यथाकाले दातुमहम् उत्सृजे।

- यह कहकर जल अक्षत पद पर छोड़ दें और हाथ जोड़कर प्रार्थना करें -

- ओम् त्रिलोकीनाथ देवेश सर्वभूत दयानिधे। पद दानेन सन्तुष्ट प्रयच्छ मम वाञ्छितम् ।

- गोदान संकल्प करें-कुश, अक्षत, जल, द्रव्य लेकर संकल्प पढ़ें -

अद्य अस्मद् पितुः गोत्रस्य नाम्नः (मातुः गोत्रायाः देव्याः) अक्षय

स्वर्गादि उत्तम-लोक प्राप्ति कामश्च इदं गो निष्क्रयी भूतं द्रव्यं यथानाम गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

- गोदान सांगता संकल्प -

अद्य कृतैतत् गोदान प्रतिष्ठा सांगता सिध्यर्थम्-इदं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।

- ब्राह्मण गोदान लेकर कहे ।। स्वस्ति ।।
- यजमान हाथ जोड़ कर गौ की प्रार्थना करें -

नमो गोभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च।

नमो ब्रह्म सुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ।।

- ब्राह्मणों को खिलाने के लिए बनी सामग्री एक व्यक्ति के भोजन योग्य अपने सामने रखे और अक्षत, जल, द्रव्य लेकर पिता के निमित्त पान करें-

अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं अस्मत् पितुः अमुक नाम्नः (मातुः देव्या) वार्षिक श्राद्ध दिवसे क्षुधा तृष्णा निवारणार्थम् स्वर्गे सुख प्राप्त्यर्थम् च इमानि भोज्य वस्तूनि सजलानि सदक्षिणानि गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं सम्प्रददे ।।

- गौ, कुत्ता, कौआ के लिए कुश, अक्षत, जल, द्रव्य लेकर गौग्रास संकल्प करें -

- अद्य शुभ पुण्य तिथौ अमुक गोत्रः अमुक नामाऽहं अस्मत् पितुः (मातुः देव्या) वार्षिक श्राद्ध दिवसे गौ श्वान काकेभ्यो इदं ग्रासं दातुम् उत्सृजे।

- पहले हाथ जोड़कर गौ की प्रार्थना करें -

सौरभेय्याः सर्वहिताः पवित्राः पुण्यराशयः ।

प्रति गृह्णन्तु मे ग्रासं गावस्त्रैलोक्य मातरः ।।

- फिर माला की तरह जनेऊ अंगौछा करके कुत्ता को हाथ जोड़े

- ।।

श्वानौ दौ श्याम सब वैवस्वत कुलोद्भवौ ताभ्यामन्नं प्रदास्यामि स्याता मेतावहिंसकौ ।।

- फिर अपसव्य होकर कौआ को हाथ जोड़े -

काकोऽसि यमदूतोऽसि वायसोऽसि महाबल।

भवानेतच्च गृह्णातु भूमा वन्नं मयार्पितम् ।।

- फिर सव्य होकर तीन बार जल छोड़े -

- कुश-अक्षत जल लेकर ब्राह्मण भोजन-संकल्प करें - १

अद्य अस्मद् पितुः गोत्रस्य नाम्नः [मातुः गोत्रायाः देव्याः] अक्षय स्वर्गादि-उत्तम लोकफल प्राप्तिकामश्च-अस्मिन् श्राद्ध दिवसे यथा संख्यकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये। भुक्तेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां ताम्बूलं च दास्ये।

- मोटक-तिल-जल लेकर आचार्य दक्षिणा संकल्प करें २

अद्य अस्मद् पितुः गोत्रस्य नाम्नः (मातुः गोत्रायाः देव्या) कृतैतेषां श्रद्धानां प्रतिष्ठार्थम्-इमानि दक्षिणा द्रव्याणि यथानाम् गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय दातुमहमुत्सृजे।

- भगवान की प्रार्थना करें -

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णम् स्यादिति श्रुतिः । यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ।।

विष्णवे नमः। विष्णवे नमः। विष्णवे नमः ।।

- पैंती उतार दे और आसन के नीचे जल छोड़कर उस जल को माथ लगावे और उठकर गौ- कुत्ता-कौआ को गोग्रास खिलावे।

- पान सुपारी-दक्षिणा ब्राह्मण उठा ले, कुशा छोड़ कर शेष प्रयुक्त

सामग्री - जैसे - की मिट्टी-दोनिया-पत्तल-पिण्डा-खीर-तिल-जवा-फूल आदि जो पिण्डा पर चढ़ा था। उपयोग में आ चुका है -सब बटोर कर नदी-तालाब में अथवा बाग-बगीचे में एक किनारे फेंक दे।

- कुशा को बटोर कर एक किनारे कहीं अलग फेंक दे। श्राद्ध स्थान को लीप कर स्वच्छ-शुद्ध कर दें।

- इसके बाद ब्राह्मण को पाँव घोवे और भोजन करावें।

- ब्राह्मण भोजन के बाद आँगन में पूर्व की ओर मुख करके यजमान खड़ा होकर ब्राह्मणों को चन्दन या दही का तिलक लगावे, पान-दक्षिणा-पद देवें -

- इसके बाद पुरोहित यजमान तथा परिवार के व्यक्तियों के माथे में तिलक लगावें -

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः । तिलकं तु प्रयच्छन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये ।।

- मन्त्राक्षत -सभी ब्राह्मण यजमान को मन्त्राक्षत देवें -

मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाःसन्तु मनोरथाः ।
शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणा मुदयस्तव ।।

- फिर यजमान ब्राह्मणों की परिक्रमा करें -

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि तानि विनश्यन्तु प्रदक्षिणि पदे पदे ।।

- प्रदक्षिणा के बाद ब्राह्मणों को पाँव छूकर उन्हें विदा करें।

इति वार्षिक श्राद्ध विधि ।।

प्रश्न -

१ .एकोदिष्ट श्राद्ध कैसे कराया जाता है।

२ . एकोदिष्ट श्राद्ध का उदाहरण सहित वर्णन कीजिए।

इकाई 22 - पार्वण श्राद्ध पितृ तर्पण

स्नान आदिसे पवित्र होकर धुले हुए दो वस्त्र (धोती तथा उत्तरीय-चादर आदि) धारण कर ले। पहले से गोबर से लिपी हुई अथवा धुली हुई श्राद्धभूमिपर आ जाय। सभी श्राद्धीय सामग्रियोंको यथास्थान रख ले। सर्वप्रथम पाकका निर्माण करे।

पाकनिर्माण - श्राद्धदेश के ईशान कोण में पिण्डदान के लिये पाक तैयार कर ले। पिण्डके लिये गाढ़ी खीर बनानी चाहिये। पाक-निर्माणके अनन्तर पाकमें तथा ब्राह्मणोंके निमित्त बनी भोजन-सामग्रीमें तुलसीदल छोड़कर भगवान्का भोग लगा दे।

पाकनिर्माणके अनन्तर हाथकु श्राद्धस्थलपर धोकर पैर-श या ऊनका आसन बिछाकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाय।

शिखाबन्धन - गायत्रीमन्त्र पढ़कर शिखाबन्धन कर ले।

सिंचन-मार्जन - निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा श्राद्धीय वस्तुओंपर जल छिड़के-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

पवित्रीधारण - निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले-

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

आचमन ॐ केशवाय नमः। ॐ नारायणाय नमः । ॐ माधवाय नमः इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन करे। 'ॐ हृषीकेशाय नमः' कहकर हाथ धो ले।

प्राणायाम - प्राणायाम करे।

विश्वेदेवोंके लिये पात्रासादन- पार्वणश्राद्धमें विश्वेदेवोंके दो आसन होते हैं-१-

पितृपितामहादिके विश्वेदेवोंके लिये तथा २ विश्वेदेवोंके मातामहादिके- पत्ते दो पलाशके दक्षिणोत्तरक्रमसे ओर पश्चिमकी श्राद्धभूमिके अतः लिये। स्थापित पूर्वाग्र त्रिकुश एक-एक लिये आसनके दोनोंपर उन बिछाकर पूर्वाग्र बनाकर (ब्राह्मण-कुश) कुशवटु दो त्रिकुशके दोनोंपर उन दे। कर स्थापित कर दे।

उन दोनों आसनों के सामने भोजन पात्र के रूप में पलाश आदि का एक-एक पत्ता रख दे और भोजन पात्रों के उत्तर दिशामें एक-एक अर्घपात्र (दोनिया), एक-एक जलपात्र (दोनिया) तथा भोजन पात्र के सामने एक- एक घृतपात्र (दोनिया) भी रख दे।

पितरोंके लिये पात्रासादन- पार्वणश्राद्धमें सपत्नीक पिता, पितामह तथा प्रपितामह और

सपत्नीक मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहके निमित्त छः पृथक् पृथक् आसन आदि होते हैं। विश्वेदेवोंके आसनोंसे कुछ दूर दक्षिण-पूर्व दिशामें पश्चिम पूर्वक्रमसे पृथक् पृथक् छः पत्तोंपर दक्षिणाग्र छः

मोटकरूप आसन रखे। उन छहों आसनोंपर त्रिकुशमें ग्रन्थि लगाकर छः कुशवटु बनाकर एक- एक कुशवटु पृथक् पृथक् उत्तराग्र रखे। छहों आसनोंके सम्मुख एक-एक भोजनपात्र तथा भोजनपात्रके पश्चिम दिशामें एक-एक अर्धपात्र, एक-एक जलपात्र तथा भोजनपात्रके सामने एक-एक घृतपात्र (दोनिया या हाथका बना मिट्टीका दीया) भी रख दे।

रक्षादीप-प्रज्वालन - इस श्राद्धमें दो रक्षादीप होंगे। एक विश्वेदेवोंके निमित्त तथा दूसरा पितरोंके निमित्त। विश्वेदेवके आसनोंके पश्चिम अक्षत अथवा जौपर रखकर पूर्वाभिमुख तिलके तेल अथवा घृतका एक दीपक जला दे। इसी प्रकार पितरोंके आसनके दक्षिणमें तिलोंपर रखकर तिलके तेलका दूसरा दीपक दक्षिणाभिमुख जला दे। तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे -

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् । यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ॥ गन्ध, अक्षत, पुष्पसे दोनों दीपकोंका पूजन कर ले। हाथ धोकर आसनपर बैठ जाय।

गदाधर आदिकी प्रार्थना अंजलिमें फूल लेकर गयाधाम, गदाधर तथा पितरोंका स्मरण कर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे-

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। स्वपितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत् ॥ ॐ गयायै नमः । ॐ गदाधराय नमः - कहकर फूल चढ़ा दे।

तदनन्तर तीन बार 'ॐ श्राद्धभूम्यै नमः' कहकर भूमिपर जौ एवं पुष्प छोड़े।

भूमिसहित विष्णु-पूजन- श्राद्ध आरम्भ करनेके पूर्व विष्णुभगवान्का पूजन करनेका

विधान है। अतः शालग्रामशिलापर षोडशोपचार अथवा पंचोपचार पूजन करना चाहिये। यदि सम्भव न हो तो निम्न श्लोकसे विष्णुभगवान्का स्मरण पूजन करते हुए पुष्पांजलि समर्पित कर श्राद्ध आरम्भ करना चाहिये-

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्। लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥ 'ॐ भूमिपत्नीसहिताय विष्णवे नमः' - कहकर भगवान् विष्णुको प्रणामकर पुष्प अर्पित कर दे।

कर्मपात्रका निर्माण श्राद्धकर्ममें जलका उपयोग करनेके लिये कर्मपात्रका निर्माण कर ले। अक्षतोंके ऊपर जलसे भरा एक कलश रखकर उसमें चन्दन, तुलसी, जौ, पुष्प तथा कुश छोड़ दे और त्रिकुशसे जलको दक्षिणावर्त आलोडित करते हुए निम्न मन्त्रोंको पढ़े-

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम्। अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वथंहसः ॥ ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनासि चकृमा वयम्। वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्व हसः ॥ ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनासि चकृमा वयम्। सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वथं गुंहसः॥

प्रोक्षण - कर्मपात्र के जलसे कुशद्वारा अपना तथा सभी श्राद्धसामग्री एवं पाकका प्रोक्षण करे और बोले- 'श्वादिदुष्टदृष्टिनिपातदूषितपाकादिकं पूतं भवतु ।'

दिग्-रक्षण - बायें हाथमें पीली सरसों लेकर दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र बोले- नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम । इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः ॥ तदनन्तर दाहिने हाथसे सरसोंको पूर्व-दक्षिण आदि दिशाओंमें निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए छोड़े-

पूर्वमें - प्राच्यै नमः। दक्षिणमें अवाच्यै नमः। पश्चिममें- प्रतीच्यै नमः। उत्तरमें- उदीच्यै नमः।

आकाशमें - अन्तरिक्षाय नमः। भूमिपर- भूम्यै नमः ।

हाथ जोड़कर प्रार्थना करे -

पूर्वे नारायणः पातु वारिजासस्तु दक्षिणे । प्रद्युम्नः पश्चिमे पातु वासुदेवस्तथोत्तरे। ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः ॥

नीवीबन्धन - किसी पत्र-पुटक या पानके पत्तेपर तिल, त्रिकुश का

टुकड़ा लपेटकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसे दक्षिण कटिभागमें खोंस ले, बाँध ले-

ॐ निहन्मि सर्वं यदमेध्यकृद् भवेद्धताश्च सर्वेऽसुरदानवा मया। यक्षाश्च रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता मया यातुधानाश्च सर्वे ॥

ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि ॥

प्रतिज्ञासंकल्प - दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर पूर्वाभिमुख हो निम्न रीतिसे प्रतिज्ञा-संकल्प करे -

ॐ अद्य "गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्राणां शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां सपत्नीकानामस्मत् पितृपितामहप्रपितामहानां तथा गोत्राणां सपत्नीकानामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाना-मक्षयतृप्तिकामनया विश्वेदेवपूजनपूर्वकं पार्वणश्राद्धं करिष्ये।

संकल्पका जलादि सामने छोड़ दे।

पितृगायत्रीका पाठ - पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे -

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

आसनदान

(क) विश्वेदेवोंके लिये आसनदान प्रदक्षिणक्रमसे पितरोंके आसनोंकी परिक्रमा करते हुए विश्वेदेवोंके आसनोंके दक्षिणकी ओर रखे हुए अपने आसनपर सव्य उत्तराभिमुख हो बैठ जाय। तदनन्तर आसनदानका संकल्प करे-

पहला संकल्प दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर निम्न संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणश्राद्धसम्बन्धिनां पुरूरवार्द्रवसंज्ञकानां विश्वेषां देवानामिदं त्रिकुशात्मकमासनं वो नमः ।

ऐसा संकल्प पढ़कर पितृपितामहके विश्वेदेववाले आसनपर देवतीर्थसे संकल्पका जल छोड़ दे। इसी प्रकार हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर संकल्प करे-

दूसरा संकल्प ॐ अद्य गोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां शर्मणां/वर्मणां/ गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणश्राद्धसम्बन्धिनां पुरूरवार्द्रवसंज्ञकविश्वेषां देवानामिदं त्रिकुशात्मकमासनं वो नमः ।

- कहकर संकल्पजल उत्तरमें स्थित दूसरे विश्वेदेवोंके आसनपर छोड़ दे।

(ख) पितरों के लिये आसनदान - विश्वेदेवोंके आसनकी परिक्रमा करते हुए पितरोंके आसनके समीप अपने आसनपर आ जाय। अपसव्य दक्षिणाभिमुख तथा बायाँ घुटना जमीनसे लगाकर पितरोंके आसनदानके लिये हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर संकल्प करे-

(१) पितादि के लिये आसनदान का संकल्प ॐ अद्य गोत्राणामस्मत्पितृपितामह- प्रपितामहानां शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणश्राद्धे इमानि मोटक- रूपाणि आसनानि विभज्य वो नमः। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

(२) माता महादि के लिये आसन दान का संकल्प हाथ में मोटक, तिल, जल लेकर संकल्प करे -

ॐ अद्य "गोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणश्राद्धे इमानि मोटकरूपाणि आसनानि विभज्य वो नमः। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

विश्वेदेवमण्डलमें जाना- पितरों को आसन दान करके पितरों की प्रदक्षिणा करते हुए पुनः विश्वेदेवों के समीप अपने आसन पर सव्य उत्तराभि मुख हो बैठ जाय और विश्वेदेवों का आवाहन करे। विश्वेदेवों का

आवाहन हाथमें जौ लेकर निम्न मन्त्र से विश्वेदेवों का आवाहन करे-

विश्वान् देवानावाहयिष्ये ।

ॐ विश्वे देवास आ गत शृणुता म इम हवम्। एदं बर्हिर्निषीदत।

ॐ विश्वे देवाः शृणुतेम हवं मे ये अन्तरिक्षे य उप द्यवि ष्ठ।

ये अग्निजिह्वा उत वा यजत्रा आसद्यास्मिन्बर्हिषि मादयध्वम् ॥

आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महाबलाः ।

ये यत्र योजिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते ॥

तदनन्तर ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः- इस मन्त्रसे दोनों आसनों पर जौ छोड़े।

पितरोंका आवाहन - विश्वेदेवों की प्रदक्षिणा करते हुए पितरोंके आसन के सामने अपने आसन पर बायाँ घुटना जमीन पर टेककर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर बैठ जाय। तिल लेकर निम्न मन्त्रोंसे पितरोंका आवाहन करे-

पितृनावाहयिष्ये ।

ॐ आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः ।

ॐ उशन्तस्त्वा नि धीमह्युशन्तः समिधीमहि। उशन्नुशत आ वह पितृन् हविषे अत्तवे ॥

अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु तेऽवन्त्वस्मान् ॥

तदनन्तर 'ॐ अपहता असुरा रक्षासि वेदिषदः ॥'- मन्त्र पढ़कर पिता, पितामह तथा प्रपितामह और मातामह, प्रमातामह एवं वृद्धप्रमातामहके आसनोंपर तिल छोड़े।

विश्वेदेवोंके मण्डलमें आना तदनन्तर पितरोंकी प्रदक्षिणा करते हुए पुनः विश्वेदेवोंके आसनके समीप अपने आसनपर सव्य उत्तराभिमुख हो बैठ जाय तथा अर्धपात्रका निर्माण करे।

दो अर्धपात्रों का निर्माण- दो अर्घपात्रों (दोनियों) में निम्न मन्त्रसे दो

कुशपत्रोंका एक-एक पवित्रक पूर्वाग्र रखते हुए निम्न मन्त्र पढ़े-

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

तदनन्तर निम्न मन्त्रसे दोनों अर्घपात्रोंमें जल डाले-

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः ॥ निम्न मन्त्रसे दोनों अर्धपात्रोंमें जौ डाले-

'ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः ।'

गन्ध-पुष्प मौन होकर छोड़े।

इसके बाद पित्रादिसम्बन्धी विश्वेदेवोंके प्रथम अर्धपात्रको बायें हाथमें लेकर दाहिने हाथसे अर्घपात्रसे पवित्रक निकालकर विश्वेदेवके भोजनपात्रपर पूर्वाग्र रख दे और 'ॐ नमो नारायणाय' कहकर एक आचमनीय जल पवित्रकके ऊपर छोड़ दे।

अर्घपात्रको दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे-

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः ।

हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शस्योनाः सुहवा भवन्तु ॥

अर्घदान का संकल्प दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ, जल तथा प्रथम अर्धपात्रको लेकर पित्रादि- सम्बन्धी विश्वेदेवोंके अर्घदानका संकल्प करे-

(क) ॐ अद्य गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणश्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एषोऽर्घः वो नमः कहकर अर्घका जल देवतीर्थसे पवित्रकपर छोड़ दे और अर्धपात्रको विश्वदेवोंके दक्षिण दिशाके आसनके दक्षिण भागमें 'विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसि' कहकर उत्तान रख दे।

पूर्वोक्त रीतिसे दूसरे अर्धपात्रको भी अभिमन्त्रित कर ले।

दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ, जल तथा द्वितीय अर्धपात्रको लेकर मातामहादिसम्बन्धी विश्वेदेवोंके अर्घदानका संकल्प करे-

(ख) ॐ अद्य" गोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणश्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एषोऽर्घः वो नमः कहकर पूर्वकी तरह अर्घदान आदि करे और विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसि - कहकर अर्धपात्रको यथास्थान रख दे।

विश्वेदेवोंका पूजन पहले पित्रादिसम्बन्धी विश्वेदेवोंका निम्न रीतिसे पूजन करके फिर मातामहादिके विश्वेदेवोंका पूजन करना चाहिये-

इदमाचमनीयम् इदं दे। जल आचमनीय कहकर - (स्वाचमनीयम्) दे। जल स्नानीय कहकर - (सुस्नानीयम्) स्नानीयम्

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्) - कहकर वस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते) - कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः) - कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे यवाक्षताः (सुयवाक्षताः) - कहकर यवाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्) - कहकर माला चढ़ाये। एष धूपः (सुधूपः) - कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः) कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले।)

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्) - कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्) - कहकर फल अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्) - कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा) - कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

अर्चनदानका संकल्प- हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर पितामहादिके विश्वेदेवोंके अर्चन- दानका संकल्प करे-

(क) ॐ अद्य गोत्राणां शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणश्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतान्यर्चनानि वो नमः। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

(ख) ॐ अद्य गोत्राणां शर्मणां वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वण श्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतान्यर्चनानि वो नमः। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

मण्डलकरण

विश्वेदेवमण्डलकरण- दोनों विश्वेदेवोंके भोजनपात्रोंके सहित आसनोंके चारों ओर दक्षिणावर्त

जलसे घेरते हुए दो पृथक् पृथक् चौकोर मण्डल बनाये। उस समय निम्न मन्त्र पढ़े-

ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति । एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु ॥

अग्नौकरण - विश्वेदेवोंके आसनोंकी परिक्रमा करते हुए पितृमण्डलमें

अपने आसनपर आकर

पूर्वाभिमुख बैठ जाय। एक दोनियेमें जल भरकर सामने रख ले। बने हुए पाकमें घृत छोड़कर पाकान्नसे दो आहुतियाँ दोनियेके जलमें निम्न मन्त्रोंसे दे-

(१) ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा।

(२) ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा।

इस प्रकार अग्नौकरणकर पितरोंकी परिक्रमा करते हुए विश्वेदेवमण्डलमें अपने आसनपर उत्तराभिमुख बैठ जाय। तदनन्तर अन्नपरिवेषण करे।

अन्नपरिवेषण - दोनों विश्वेदेवोंके लिये रखे हुए दो पृथक् पृथक् भोजनपात्रोंसे जौ आदि हटा ले। बने हुए पाक तथा भोजन सामग्रीसे प्रथम भोजनपात्रपर अन्नोंको परोसे। घृतपात्रमें घृत छोड़ दे, जलपात्रमें जल छोड़ दे और निम्न मन्त्र पढ़ते हुए परोसे गये अन्नपर दोनों हाथोंसे मधु छोड़े-

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव थं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ ॐ मधु मधु मधु ॥

इसी प्रकार दूसरे विश्वेदेवोंके भोजनपात्र, घृतपात्र, जलपात्र आदिमें भोजन आदि परोसकर 'मधु वाता० से मधु छोड़े।

पात्रालम्भन- उत्तान बायें हाथपर उत्तान

दायाँ हाथ स्वस्तिकाकार रखकर भोजनपात्रको स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े- ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे

अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पासुरे स्वाहा ॥ ॐ कृष्ण हव्यमिदं रक्ष मदीयम् ।

अंगुष्ठनिवेशन - तदनन्तर बायें हाथसे अन्नपात्रका स्पर्श किये हुए

दाहिने अँगूठेको अन्नादिमें रखकर बोले-

अन्नमें- इदमन्नम्। जलमें-इमा आपः। घीमें- इदमाज्यम्। तदनन्तर अन्नको पुनः स्पर्शकर बोले-इदं हव्यम्।

इसके बाद विश्वेदेवोंके भोजनपात्रमें अन्नके ऊपर निम्न मन्त्रसे जौ छींटे-

ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः ।

अन्नदानका संकल्प दाहिने हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्राणां शर्मणां/वर्मणां / गुप्तानामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य-

स्वरूपाणां पार्वणश्राद्धसम्बन्धिभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्य इदमन्नं सोपस्करं वो नमः। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

दूसरे विश्वेदेवोंके भोजनपात्रपर भी पूर्वकी भाँति पात्रालम्भन, अंगुष्ठनिवेशन आदि करके निम्न रीतिसे अन्नसमर्पणका संकल्प करे-

अन्नदानका संकल्प ॐ अद्य गोत्राणां शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानामस्मन्मातामह-

प्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणश्राद्धसम्बन्धिभ्यो विश्वेभ्यो देवेभ्य इदमन्नं सोपस्करं वो नमः। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

पितरोंके मण्डलमें आना विश्वेदेवोंकी प्रदक्षिणा करते हुए पितृमण्डलके पास अपने आसनपर आकर अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर पिता, पितामह आदिके लिये छः पृथक् पृथक् अर्धपात्रोंको बनाये।

छः अर्धपात्रोंका निर्माण - पिता, पितामह तथा प्रपितामह और मातामह, प्रमातामह एवं

वृद्धप्रमातामहके पास रखे हुए अर्धपात्रों (दोनियों) में क्रमसे दो

कुशपत्रोंका बना एक-एक पवित्रक दक्षिणाग्र निम्न मन्त्र पढ़ते हुए रखे -

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

निम्न मन्त्रसे क्रमशः छहों अर्धपात्रोंमें जल छोड़े-

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः ॥ छहों अर्धपात्रोंपर तिल छोड़ते हुए निम्न मन्त्र पढ़े-

ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः ।

प्रत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितृल्लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा ॥

और छहों अर्धपात्रोंमें गन्ध-पुष्प मौन होकर छोड़े।

अर्घदान - इस प्रकार छः अर्धपात्रोंका निर्माण कर छः संकल्पोंके द्वारा पृथक् पृथक् अर्घदान निम्न रीतिसे कर अर्घपात्रका अभिमन्त्रण कर ले।

पहले पितावाले अर्घपात्रको बायें हाथमें रखकर उसका पवित्रक निकालकर प्रथम भोजनपात्रपर उत्तराग्र रख दे और 'ॐ नमो नारायणाय' मन्त्रसे एक आचमनी जल पवित्रकपर छोड़ दे। अर्धपात्रको दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र पढ़कर अभिमन्त्रित करे-

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः । हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शस्योनाः सुहवा भवन्तु ॥

तदनन्तर अर्घदानका संकल्प करे-

(१) **पिताके लिये अर्घदानका संकल्प** मोटक, तिल, जल तथा प्रथम अर्धपात्रको दाहिने हाथमें लेकर संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्र शर्मन्/वर्मन्/गुप्त अस्मत्पितः सपत्नीक वसुस्वरूप एष हस्तार्ध स्ते नमः। - बोलकर पितृतीर्थसे पवित्रकपर जल गिरा दे। पवित्रक उठाकर अर्घपात्र में दक्षिणाग्र रख दे और अर्घपात्रको यथास्थान सुरक्षित

रख दे।

इसी प्रकार सपत्नीक पितामह, प्रपितामह, मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहके पाँचों अर्धपात्रोंको पृथक् पृथक् अभिमन्त्रित आदि करे और आगे लिखी रीतिसे अर्घदानका संकल्प करे-

(२) **पितामहके लिये अर्घदानका संकल्प** - दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल तथा द्वितीय अर्धपात्र लेकर संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्र शर्मन्/वर्मन्/गुप्त अस्मत्पितामह सपत्नीक रुद्रस्वरूप एष हस्तार्घस्ते नमः । कहकर पहले संकल्पकी भाँति अर्घदानप्रक्रिया पूर्ण कर अर्घपात्र यथास्थान स्थापित कर दे।

(३) **प्रपितामहके लिये अर्घदानका संकल्प** ॐ अद्य गोत्र शर्मन्/वर्मन्/गुप्तअस्मत्प्रपितामह सपत्नीक आदित्यस्वरूप एष हस्तार्घस्ते नमः। पूर्वकी भाँति सम्पूर्ण क्रिया करे।

(४) मातामहके लिये अर्घदानका संकल्प - ॐ अद्य गोत्र शर्मन्/वर्मन्/गुप्त अस्मन्मातामह सपत्नीक वसुस्वरूप एष हस्तार्थस्ते नमः। बोलकर पूर्ववत् क्रिया करे।

(५) **प्रमातामहके लिये अर्घदानका संकल्प** - ॐ अद्य गोत्र शर्मन्/वर्मन्/गुप्त अस्मत्प्रमातामह सपत्नीक रुद्रस्वरूप एष हस्तार्घस्ते नमः। बोलकर पूर्ववत् क्रिया करे।

(६) **वृद्धप्रमातामहके लिये अर्घदानका संकल्प** ॐ अद्य गोत्र शर्मन्/वर्मन्/ गुप्त अस्मवृद्धप्रमातामह सपत्नीक आदित्यस्वरूप एष हस्तार्घस्ते नमः। बोलकर पूर्ववत् अर्घदान देकर अर्धपात्रको यथास्थान स्थापित कर दे।

पिता, पितामह तथा प्रपितामहके अर्धपात्रोंका संयोजन - प्रपितामहके अर्धपात्रका जल आदि पितामहके अर्धपात्रमें और पितामहके अर्धपात्रका जल आदि पिताके अर्धपात्रमें छोड़ दे। तदनन्तर पिताके सजल अर्धपात्रको पितामहके अर्धपात्रपर रखे और उन दोनों अर्धपात्रोंको

प्रपितामहके अर्धपात्रपर रखकर तीनोंको पिताके आसनके वामपार्श्वमें 'पितृभ्यः स्थानमसि' कहकर उलटकर रख दे (अर्थात् सबसे नीचे पिताका उसके ऊपर पितामहका तथा उसके ऊपर प्रपितामहका अर्धपात्र रहेगा)। इन अर्धपात्रोंको दक्षिणादानपर्यन्त न सीधा करे और न हिलाये।

मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहके अर्धपात्रोंका संयोजन पूर्वकी भाँति वृद्धप्रमातामहके अर्धपात्रका जल आदि प्रमातामहके अर्धपात्रमें और प्रमातामहका जल आदि मातामहके अर्धपात्रमें छोड़ दे। तदनन्तर मातामहके सजल अर्धपात्रको प्रमातामहके अर्घपात्रके ऊपर तथा उन दोनोंको वृद्धप्रमातामहके अर्धपात्रपर रखकर तीनोंको मातामहके आसनके वामभागमें 'मातामहादिभ्यः स्थानमसि' कहकर उलटकर रख दे। इन अर्धपात्रोंको दक्षिणादानपर्यन्त न सीधा करे और न हिलाये।

पितरोंका पूजन - पिता, पितामह तथा प्रपितामह और मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहके छहों आसनोंपर पृथक् पृथक् विविध उपचारोंसे पूजन करे। यथा-

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्) - कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्) - कहकर वस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते) - कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः) - कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः) कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्) - कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः) - कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः) - कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले।)

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्) - कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्) - कहकर फल अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्) - कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा) - कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

अर्चनदानका संकल्प हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अर्चनदानका संकल्प करे। पहले पितामहादिके अर्चनदानका तदनन्तर मातामहादिके अर्चनदानका संकल्प करे -

(क) ॐ अद्य गोत्राः शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः अत्र श्राद्धे एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा। कहकर संकल्पजल छोड़ दे। (ख) ॐ अद्य "गोत्राः शर्माणः/वर्माणः/गुप्ताः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः अत्र श्राद्धे एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा। कहकर संकल्पजल छोड़ दे। सव्य होकर आचमन कर ले पुनः अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय।

मण्डलकरण - ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति । एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु ॥

भूस्वामीके पितरोंको अन्नप्रदान- दक्षिण दिशाकी भूमिको जलसे

सींच दे। एक दोनेमें पाकसे सभी अन्न परोसकर उसमें घृत, तिल, मधु छोड़कर तथा दूसरे दोनेमें जल लेकर जलसे सिंचित भूमिमें वह अन्न तथा जल भूस्वामीके पितरोंके निमित्त निम्न मन्त्र बोलकर पितृतीर्थसे रख दे-

ॐ इदमन्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः ।

अन्नपरिवेषण - पिता, पितामहादि तथा मातामहादिके लिये स्थापित छहों भोजनपात्रोंपर पड़े तिल आदि हटाकर पात्रोंको साफ कर ले;

-ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवथं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ।। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ ॐ मधु मधु मधु ॥

पात्रालम्भन - अनुत्तान दक्षिण हाथके ऊपर

अनुत्तान बायें हाथको स्वस्तिकाकार रखकर सभी अन्नपात्रोंको स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र बोले-

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्वि चक्र मे त्रेधा नि दधे पदम् । समूढमस्य पासुरे स्वाहा ॥ ॐ कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम् ।

अंगुष्ठनिवेशन - बायें हाथसे भोजनपात्र का स्पर्श किये हुए ही दाहिने हाथका अँगूठा अन्नादिमें रखकर बोले-

अन्नमें- इदमन्नम्। जलमें- इमा आपः। घीमें- इदमाज्यम्। पुनः अन्न छूकर बोले- इदं कव्यम्। तिलविकिरण - भोजनपात्रोंमें अन्नके ऊपर निम्न मन्त्रसे तिल छोड़ दे-

'ॐ अपहता असुरा रक्षासि वेदिषदः ॥'

अन्नदानका संकल्प संकल्पपर्यन्त अन्नपात्रका बायें हाथसे स्पर्श किये रहे। दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अन्नदानका निम्न संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्राय शर्मणे/वर्मणे/गुप्ताय सपत्नीकाय शर्मणे पित्रे पार्वणश्राद्धे एतत्तेऽन्नं स्वधा-ऐसा कहकर संकल्पजल भोजनपात्रपर छोड़ दे।

इसी प्रकार पितामह आदि सभीके अन्नपात्रोंपर भी आलम्भन, अंगुष्ठनिवेशन, तिलविकिरण तथा संकल्पकी क्रियाएँ करे। संकल्पके अनन्तर बायाँ हाथ हटा ले। अन्नदानके संकल्पमें पिताके स्थानपर पितामह, प्रपितामह तथा मातामह आदि जोड़ ले। अन्नदानके अनन्तर निम्न मन्त्र पढ़े-

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्। अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं पित्रादीनां प्रसादतः ॥ सव्य होकर हाथ धो ले और आचमन करे।

पितृगायत्रीका पाठ तीन बार निम्न पितृगायत्रीका पाठ करे-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

वेदशास्त्रादिका पाठ - पितरोंका ध्यान करते हुए पैरोंके नीचे पूर्वाग्र तीन कुश रखकर निम्नलिखित वेदशास्त्रादिका पाठ करे। यथासम्भव पुरुषसूक्त (पृ०सं० ४२३), पितृसूक्त (पृ०सं० ४२३), रुचिस्तव (पृ०सं० ४२१) तथा रक्षोघ्नसूक्त (पृ०सं० ४२३) आदिका पाठ करना चाहिये।

श्रुतिपाठ - ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम् । होतारं रत्नधातमम् ।।

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशथंसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ।।

ॐ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि ।।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः ॥

स्मृतिपाठ -

मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः । प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन् ।।

योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं सम्पूज्य मुनयोऽब्रुवन् । वर्णाश्रमेतराणां नो ब्रूहि धर्मानशेषतः ॥

मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनोऽङ्गिराः । यमापस्तम्बसंवर्ताः कात्यायनबृहस्पती ।।

पराशरव्यासशङ्खलिखिता दक्षगौतमौ । शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः ॥

पुराण-

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् । देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥ सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ। चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे ।। तेऽभिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः । प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ ।।

महाभारत -

दुर्योधनो मन्युमयो महाद्रुमः स्कन्धः कर्णः शकुनिस्तस्य शाखाः । दुःशासनः पुष्पफले समृद्धे मूलं राजा धृतराष्ट्रोऽमनीषी ॥ युधिष्ठिरो धर्ममयो महाद्रुमः स्कन्धोऽर्जुनो भीमसेनोऽस्य शाखाः । माद्रीसुतौ पुष्पफले समृद्धे मूलं कृष्णो ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च ॥

विकिरदान - अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर नैऋत्यकोणकी भूमिको जलसे सींचकर उसपर दक्षिणाग्र त्रिकुश बिछा दे। बने हुए पाकसे अन्न लेकर मोटक, तिल और जलसहित अन्न पितृतीर्थसे कुशोंपर रखे, उस समय निम्न मन्त्र पढ़े-

असंस्कृतप्रमीतानां त्यागिनां कुलभागिनाम् । उच्छिष्टभागधेयानां दर्भेषु विकिरासनम् ॥ अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम् ॥ पवित्री, मोटक आदि वहीं छोड़ दे। हाथ-पैर धोकर सव्य पूर्वाभिमुख हो जाय, आचमन कर ले, हरिस्मरण

करनेके बाद नयी पवित्री धारण कर ले।

पिण्डवेदी-निर्माण अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दक्षिणकी ओर ढालवाली उत्तर-दक्षिण लम्बी

एक हाथ लम्बी-चौड़ी एक वेदी पिता, पितामह तथा प्रपितामहके आसनोंके ठीक सामने मध्यमें बनाये। इसी प्रकार दूसरी वेदी मातामहादिके निमित्त बनाये। दोनों वेदियोंको जलसे सींचकर पवित्र कर ले। उस समय बोले-

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका । पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः ॥

रेखाकरण - दोनों वेदियोंपर दायें हाथसे तीनों कुशोंकी जड़ तथा बायें हाथकी तर्जनी एवं अंगुष्ठसे कुशोंके अग्रभागको पकड़कर कुशोंके मूलभागसे उत्तरसे दक्षिणकी ओर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए तीन रेखाएँ खींचे-

ॐ अपहता असुरा रक्षासि वेदिषदः ॥

उन कुशोंको ईशानकोणकी ओर फेंक दे।

उल्मुकस्थापन - दोनों वेदियोंके चारों ओर निम्न मन्त्रसे बायीं ओरसे अंगारका भ्रमण कराये तथा उसे पिण्डवेदीके दक्षिणकी ओर श्राद्धपर्यन्त स्थापित रखे। इस प्रक्रियाकी सिद्धि अंगार तथा गोहरीके अभावमें ज्वालामुखी धूप आदिसे भी की जा सकती है-

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति।

परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् ॥

अवनेजनपात्रस्थापन अवनेजनपात्रके रूपमें उत्तर-दक्षिण क्रमसे तीन दोनिये पिता, पितामह

तथा प्रपितामहकी वेदीके पश्चिम भागमें तथा इसी प्रकार तीन दोनिये मातामहादिकी वेदीके पश्चिम भागमें रख दे। छहों दोनियोंमें पृथक् पृथक् जल, तिल, पुष्प तथा गन्ध छोड़ दे।

अवनेजनदानका संकल्प - हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पितावाला प्रथम अवनेजनपात्र (दोनिया) लेकर निम्न संकल्प करे -

(१) **पिताके लिये** ॐ अद्य गोत्र अस्मत्पितः शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप पार्वण श्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः।

कहकर दोनियेके आधे जलको वेदीकी उत्तरवाली प्रथम रेखामें गिरा दे और सजल दोनियेको प्रत्यवनेजनके लिये यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(२) **पितामहके लिये** इसी प्रकार हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पितामहवाला दोनिया लेकर संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्र अस्मत्पितामह शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप पार्वणश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। उसी प्रकार आधा जल वेदीकी मध्यरेखामें गिराकर दोनिया यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(३) **प्रपितामहके लिये** ॐ अद्य गोत्र अस्मत्प्रपितामह शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप पार्वणश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। उसी प्रकार दोनियाका आधा जल वेदीपर दक्षिणवाली रेखापर गिराकर दोनिया यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(४) **मातामहके लिये** ॐ अद्य गोत्र अस्मन्मातामह 'शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप पार्वणश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिश्व ते नमः। पूर्ववत् करे।

(५) **प्रमातामहके लिये** ॐ अद्य गोत्र अस्मत्प्रमातामह शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप पार्वणश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। पूर्ववत् करे।

(६) **वृद्धप्रमातामहके लिये** ॐ अद्य गोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह 'शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप पार्वणश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। पूर्ववत् करे।

कुशास्तरण - समूल तीन कुशोंको एक साथ जड़सहित दो भागोंमें एक ही बार विभक्तकर दोनों वेदियोंपर बिछा दे।

पिण्डनिर्माण तथा पिण्डदान पाकमें तिल, घृत तथा मधु मिलाकर कपित्थ (कैथ)- फलके बराबर छः गोल-गोल पिण्ड बना ले और उन्हें किसी पत्तलपर रख दे।

बायाँ घुटना मोड़कर जमीनपर टिकाकर प्रथम पिण्ड तथा मोटक, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प करे-

(१) पिताके लिये पिण्डदानका संकल्प ॐ अद्य गोत्र अस्मत्पितः शर्मन् / वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप पार्वणश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा - कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे पितरोंकी वेदीमें स्थित कुशोंके मूलभागमें (प्रथम अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर रख दे।

(२) पितामहके लिये पिण्डदानका संकल्प ॐ अद्य गोत्र अस्मत्पितामह "शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप पार्वणश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा - कहकर पिण्डको कुशोंके मध्यमें (द्वितीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर रख दे।

(३) प्रपितामहके लिये पिण्डदानका संकल्प ॐ अद्य गोत्र अस्मत्प्रपितामह "शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप पार्वणश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा- कहकर पिण्डको कुशोंके अग्रभागपर (तृतीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर रख दे।

लेपभाग- लेपभागभुक् पितरोंके लिये कुशाके अग्रभागमें पिण्डसे बचे हुए अन्नको 'लेपभागभुजः पितरस्तृप्यन्ताम्' कहकर रख दे। अन्तमें पिण्डाधार कुशोंके मूलमें तीन बार हाथ पोंछ ले।

(४) मातामहके लिये ॐ अद्य गोत्र अस्मन्मातामह शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप पार्वणश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा - कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे मातामहादिकी वेदीपर स्थित कुशोंके मूल भागमें (प्रथम अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर रख दे।

(५) प्रमातामहके लिये ॐ अद्य गोत्र अस्मत् प्रमातामह

शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप पार्वणश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा- कहकर पिण्डको पूर्ववत् वेदीपर कुशोंके मध्यमें (द्वितीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर रख दे।

(६) **वृद्धप्रमातामहके लिये** ॐ अद्य गोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह शर्मन्/वर्मन्/ गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप पार्वणश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा - कहकर पिण्डको पूर्ववत् वेदीपर स्थित कुशोंके अग्रभागपर (तृतीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर रख दे।

लेपभाग - मातामहवाली वेदीपर भी पूर्वकी भाँति लेपभाग देकर कुशोंके मूलमें तीन बार हाथ पोछ ले। सव्य होकर आचमनकर भगवान्का स्मरण कर ले।

श्वासनियमन - अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर आसनपर बैठे हुए ही श्वास खींचते हुए बायीं ओरसे उत्तराभिमुख हो निम्न मन्त्र पढ़े-

अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम् ।

श्वास रोककर उसी क्रमसे दक्षिणाभिमुख होकर भास्वरमूर्ति (तेजः पुंजस्वरूप) पितरोंका ध्यान करते हुए पिण्डके पास श्वास छोड़े और अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत यह मन्त्र पढ़े। यह क्रिया दूसरी वेदीपर भी करे।

प्रत्यवनेजनदान - अवनेजनदानसे बचे हुए छः अवनेजनपात्रोंसे ही पितृतीर्थसे प्रत्यवनेजनका दान करे। यदि अवनेजनपात्रमें जल न बचा हो तो दोनियेमें जल डाल ले। छहोंका पृथक् पृथक् संकल्प इस प्रकार है-

(१) पिताके लिये हाथमें मोटक, तिल, जल तथा प्रथम अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्र अस्मत्पितः शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप पार्वणश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिश्व ते नमः। बोलकर प्रत्यवनेजन-जल पिताके पिण्डपर गिरा दे।

(२) **पितामहके लिये** हाथमें मोटक, तिल, जल तथा द्वितीय अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे -

ॐ अद्य गोत्र अस्मत्पितामह शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप पार्वणश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिश्व ते नमः। बोलकर पितामहके पिण्डपर प्रत्यवनेजन-जल गिरा दे।

(३) **प्रपितामहके लिये** ॐ अद्य गोत्र अस्मत्प्रपितामह शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप पार्वणश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिश्व ते नमः। बोलकर प्रपितामहके पिण्डपर प्रत्यवनेजन- जल गिरा दे।

(४) **मातामहके लिये** ॐ अद्य गोत्र अस्मन्मातामह शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप पार्वणश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर पितृतीर्थसे मातामहके पिण्डपर प्रत्यवनेजन- जल गिरा दे।

(५) **प्रमातामहके लिये** ॐ अद्य गोत्र अस्मत्प्रमातामह शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप पार्वणश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर पितृतीर्थसे प्रमातामहके पिण्डपर प्रत्यवनेजन-जल गिरा दे।

(६) **वृद्धप्रमातामहके लिये** ॐ अद्य गोत्र अस्मवृद्धप्रमातामह शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप पार्वणश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर पितृतीर्थसे वृद्धप्रमातामहके पिण्डपर प्रत्यवनेजन-जल गिरा दे।

नीवीविसर्जन - नीवीको निकालकर ईशानकोणकी ओर फेंक दे। सव्य होकर आचमन करे और

भगवान्का स्मरण करे। पुनः अपसव्य हो जाय।

सूत्रदान - बायें हाथसे सूत्र पकड़कर दाहिने हाथमें लेकर निम्न मन्त्र पढ़े-

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्म। और 'एतद्वः पितरो वासः' कहकर सभी पिण्डोंपर पृथक् पृथक् सूत्र चढ़ाये।

सूत्रदानका संकल्प ॐ अद्य "गोत्र अस्मत्पितः शर्मन्/वर्मन्/गुप्त पार्वणश्राद्धपिण्डे एतत्ते वासः स्वधा। ऐसा कहकर पिताके पिण्डपर संकल्पजल छोड़े। इसी प्रकार पितामहादिके पिण्डोंपर भी सूत्र चढ़ाकर पृथक् पृथक् सूत्रदानका संकल्प करे। तदनन्तर मोटक, तिल, जल हाथमें लेकर सूत्रदानका संकल्प करे-

पिण्डपूजन - तदनन्तर छहों पिण्डोंपर पृथक् पृथक् उपचारोंसे पूजन करे -

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्) - कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्) - कहकर वस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते) - कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये। इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः) - कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः) - कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्) - कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः) - कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः) - कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले।)

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्) - कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्) - कहकर फल अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) कहकर आचमनीय जल दे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्) - कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा) - कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

अर्चनदानका संकल्प हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अर्चनदानका संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्राः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः शर्माणः वर्माणः/गुप्ताः सपत्नीकाः वसुरुद्रादित्य- स्वरूपाः तथा गोत्राः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः शर्माणः वर्माणः/गुप्ताः सपत्नीकाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः पार्वणश्राद्धपिण्डेषु एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा। कहकर संकल्पका जल छोड़ दे।

डऋतु-नमस्कार- - तदनन्तर पितृस्वरूप छः ऋतुओंको निम्न मन्त्रसे नमस्कार करे-

(१) ॐ वसन्ताय नमः, (२) ॐ ग्रीष्माय नमः, (३) ॐ वर्षायै नमः, (४) ॐ शरदे नमः,

(५) ॐ हेमन्ताय नमः तथा (६) ॐ शिशिराय नमः ।

विश्वेदेवोंके लिये अक्षय्योदकदान - पितृमण्डलसे पितरोंकी परिक्रमा करते हुए विश्वेदेवोंके समीप अपने आसनपर आ जाय। सव्य उत्तराभिमुख होकर विश्वेदेवोंके दोनों भोजनपात्रोंपर -

ॐ शिवा आपः सन्तु - कहकर जल छोड़े।

ॐ सौमनस्यमस्तु - कहकर पुष्प छोड़े।

ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु-कहकर जौ छोड़े।

अक्षय्योदकदानका संकल्प (क) हाथमें त्रिकुश, जौ, जल लेकर पित्रादिसम्बन्धी विश्वेदेवके लिये अक्षय्योदकदानका संकल्प करे-

ॐ अद्य "गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्य- स्वरूपाणां पार्वण श्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर संकल्पजल देवतीर्थसे भोजनपात्रपर छोड़ दे।

(ख) इसी प्रकार मातामहादिसम्बन्धी विश्वेदेवके निमित्त संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां शर्मणां वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणश्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु । कहकर जल छोड़ दे।

पितरोंको अक्षय्योदकदान - विश्वेदेवोंके आसनोंकी परिक्रमा करते हुए पितृमण्डलमें आकर अपने आसनपर बैठ जाय। अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय। पिता, पितामहादि तथा मातामहादिके छहों भोजनपात्रोंपर पृथक् पृथक् क्रमशः पितृतीर्थसे-

ॐ शिवा आपः सन्तु - कहकर जल छोड़े।

ॐ सौमनस्यमस्तु - कहकर पुष्प छोड़े।

ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तु- कहकर अक्षत छोड़े।

अक्षय्योदकदानका संकल्प - मोटक, तिल, जल लेकर पृथक् पृथक् संकल्प करे-

(१) पिताके लिये ॐ अद्य गोत्रस्य शर्मणः / वर्मणः गुप्तस्य अस्मत्पितुः सपत्नीकस्य वसुस्वरूपस्य पार्वणश्राद्धे

दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु । कहकर पितृतीर्थसे पिताके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(२) **पितामहके लिये** ॐ अद्य गोत्रस्य शर्मणः वर्मणः गुप्तस्य अस्मत्पितामहस्य सपत्नीकस्य रुद्रस्वरूपस्य पार्वणश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितामहके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(३) **प्रपितामहके लिये** ॐ अद्य गोत्रस्य शर्मणः वर्मणः/गुप्तस्य अस्मत्प्रपितामहस्य सपत्नीकस्य आदित्यस्वरूपस्य पार्वणश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितृतीर्थसे प्रपितामहके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(४) **मातामहके लिये** ॐ अद्य गोत्रस्य शर्मणः/वर्मणः / गुप्तस्य अस्मन्मातामहस्य सपत्नीकस्य वसुस्वरूपस्य पार्वणश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितृतीर्थसे मातामहके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(५) **प्रमातामहके लिये** ॐ अद्यगोत्रस्य शर्मणः वर्मणः/गुप्तस्य अस्मत्प्रमातामहस्य सपत्नीकस्य रुद्रस्वरूपस्य पार्वणश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पितृतीर्थसे प्रमातामहके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

(६) **वृद्धप्रमातामहके लिये** - ॐ अद्य गोत्रस्य शर्मणः/वर्मणः/गुप्तस्य अस्मवृद्ध- प्रमातामहस्य सपत्नीकस्य आदित्यस्वरूपस्य पार्वणश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु। कहकर पूर्वकी भाँति पितृतीर्थसे वृद्धप्रमातामहके भोजनपात्रपर संकल्पजल छोड़ दे।

जलधारा - सव्य होकर दक्षिण दिशाकी ओर देखते हुए सभी छः पिण्डोंपर निम्न मन्त्रसे पूर्वाग्र जलधारा दे-

ॐ अघोराः पितरः सन्तु ।

आशीष-प्रार्थना - सव्य पूर्वाभिमुख होकर अंजलि बनाकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए पितरोंसे आशीर्वाद माँगे -

ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु । अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु ॥

ब्राह्मणवाक्य सन्त्वेताः सत्या आशिषः ।

पिण्डोंपर जलधारा या दुग्धधारा देना अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर एक पवित्रीमें तीन कुशोंको फँसाकर पितृपितामहादिके पिण्डोंपर दक्षिणाग्र रखे और उसपर निम्न मन्त्रसे जलधारा या दुग्धधारा दे-

ॐ ऊर्ज वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितृन् ॥

इसी प्रकार मातामहादिके पिण्डोंपर भी जलधारा या दुग्धधारा दे।

पिण्डाघ्राण - नम्र होकर पिण्डोंको सूँघे और छहों पिण्डोंको उठाकर किसी पत्तल आदिपर रखकर जलमें प्रवाहित कर दे या गायको खिला दे।* पिण्डाधार कुशों तथा उल्मुकको अन्य अग्निमें छोड़ दे।

विश्वेदेवोंके अर्धपात्रोंका संचालन - पितरोंकी प्रदक्षिणा करते हुए विश्वेदेवमण्डलमें जाकर अपने आसनपर बैठ जाय। सव्य उत्तराभिमुख होकर विश्वेदेवोंके दोनों अर्घपात्रोंको हिला दे।

दक्षिणादानका संकल्प- हाथमें त्रिकुश, जौ, जल तथा स्वर्ण अथवा निष्क्रय द्रव्य लेकर विश्वेदेवोंके निमित्त दक्षिणादानके दो पृथक् पृथक् संकल्प करे-

(क) ॐ अद्य गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां शर्मणां / वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वण श्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां श्राद्धप्रतिष्ठार्थमिमां हिरण्यदक्षिणां (हिरण्यनिष्क्रयद्रव्यं वा) गोत्राय ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे।

'दातुमुत्सृज्ये' कहकर दक्षिणा देवासनपर रख दे। (ख) ॐ अद्य गोत्रः

शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां

शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणश्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां श्राद्धप्रतिष्ठार्थमिमां हिरण्यदक्षिणां (हिरण्यनिष्क्रयद्रव्यं वा) गोत्राय ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे ।

कहकर हाथका जल तथा दक्षिणा उपस्थित ब्राह्मणको दे दे। भोजनके पश्चात् देना हो तो 'दातुमुत्सृज्ये' कहकर दक्षिणा देवासनपर रख दे।

पितृमण्डलमें आना- विश्वेदेवोंकी प्रदक्षिणा करते हुए पितृमण्डलमें आकर अपने आसनपर बैठ जाय। अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय।

पहले उलटकर रखे गये अर्घपात्रोंको सीधा कर दे। तदनन्तर सव्य पूर्वाभिमुख होकर दक्षिणादानका संकल्प करे -

दक्षिणादानका संकल्प हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा रजतदक्षिणा या तन्निष्क्रयद्रव्य लेकर संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां सपत्नीकानां शर्मणां / वर्मणां/गुप्तानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तथा गोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां शर्मणां / वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां कृतैतच्छ्राद्धप्रतिष्ठार्थमिमानि रजतखण्डानि (रजतनिष्क्रयद्रव्यं वा) गोत्राय ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे ।

कहकर हाथका जल तथा दक्षिणा उपस्थित ब्राह्मणको दे दे अथवा ब्राह्मणोंको विभाजित कर देना हो तो 'नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमुत्सृज्ये' कहकर दक्षिणाद्रव्य पिता आदिके आसनपर रख दे। भोजनके अन्तमें दे।

पितरोंका विसर्जन अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर निम्न मन्त्रको पढ़ते हुए पितरोंके आसनोंपर तिल छींटकर विसर्जन करे-

ॐ वाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः ।

अस्य मध्वः पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ॥

विश्वेदेवोंका विसर्जन - पितरोंकी परिक्रमा करते हुए पितृमण्डलसे विश्वेदेवमण्डलमें आ जाय। सव्य उत्तराभिमुख होकर हाथमें जौ लेकर 'विश्वेदेवाः प्रीयन्ताम्' कहकर विश्वेदेवोंके आसनोंपर जौ छोड़ते हुए विसर्जन करे।

पितृगायत्रीका पाठ - विश्वेदेवोंकी परिक्रमा करते हुए पितृमण्डलमें आकर अपने आसनपर सव्य पूर्वाभिमुख हो जाय और पितृगायत्रीमन्त्रका तीन बार निम्न पाठ करे-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च।

नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

रक्षादीपनिर्वापण अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर रक्षादीप बुझाये। हाथ-पैर धो ले।

आचार्यको दक्षिणादान - सव्य पूर्वाभिमुख होकर हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर दक्षिणादानका संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां शर्मणां / वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तथा च द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वण श्राद्धसाङ्गतासिद्ध्यर्थमाचार्याय इमां दक्षिणां भवते सम्प्रददे। कहकर आचार्यको दक्षिणा प्रदान करे।

न्यूनातिरिक्तदोष परिहारार्थ गोदानका संकल्प हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा गोनिष्क्रयद्रव्य लेकर संकल्प करे-ॐ अद्य गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्राणामस्मत्पितृपितामह- प्रपितामहानां शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तथा च शर्मणां/वर्मणां/ गुप्तानां गोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां

सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां कृतै- तच्छ्राद्धप्रतिष्ठार्थं न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं च गोनिष्क्रयद्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय भवते सम्प्रददे। कहकर यथाशक्ति किंचित् गोनिष्क्रयद्रव्य आचार्यको प्रदान करे।

भोजनदानका संकल्प हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर बोले-ॐ अद्य गोत्रः "शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्राणां अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां शर्मणां वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां तथा च शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां गोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां पार्वणश्राद्धप्रतिष्ठार्थं पञ्चबलिपूर्वकं यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये, तेभ्यो

दक्षिणादिकं च दातुं प्रतिजाने। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

पंचबलि - ब्राह्मणभोजनसे पूर्व पंचबलि कर लेनी चाहिये। बलि निकालकर गौ, कुत्ता तथा कौआ आदिको समर्पित कर दे। पंचबलिकी विधि पृ०सं०१२ में दी गयी है।

कर्मका समर्पण अनेन कृतेन पार्वणश्राद्धेन पितृरूपीजनार्दनः प्रीयताम्, न मम। कहकर जल छोड़ दे।

भगवत्-स्मरण- प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु । न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि । न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम् ॥

ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः । ॐ साम्बसदाशिवाय नमः । ॐ साम्बसदाशिवाय नमः ।

॥ पार्वण श्राद्ध-प्रयोग पूर्ण हुआ ॥

प्रश्न -

१ .पार्वण श्राद्ध पितृ तर्पण किसे कहते है।

२ .पार्वण श्राद्ध पितृ तर्पण वर्णन कीजिए।

इकाई 23 - गयाश्राद्ध तीर्थश्राद्ध

तीर्थश्राद्धमें पार्वणश्राद्ध तथा एकोद्दिष्टश्राद्धसे कुछ भिन्नता है। इसमें विश्वेदेवकी स्थापना नहीं की जाती तथा अर्घ, आवाहन, अंगुष्ठनिवेशन, तृप्तिप्रश्न और विकिरदान भी नहीं किया जाता। स्नान आदिसे पवित्र होकर धुले हुए दो वस्त्र (धोती तथा उत्तरीय- चादर, गमछा आदि) धारण कर ले। तीर्थश्राद्धमें श्राद्ध करनेके पूर्व तर्पण करनेकी विधि है। तर्पण करके श्राद्ध प्रारम्भ करना चाहिये। तीर्थमें समयपर अथवा असमय किसी भी समय पितृतर्पणपूर्वक तीर्थश्राद्ध किया जा सकता है। इसलिये तीर्थमें पहुँचकर स्नान, तर्पण, श्राद्ध- पिण्डदान करनेमें विलम्ब नहीं करना चाहिये।

श्राद्धकर्ता पहलेसे गोबरसे लिपी हुई अथवा धुली हुई श्राद्धभूमिपर आ जाय। सभी श्राद्धीय सामग्रियोंको यथास्थान रख ले। सर्वप्रथम पाकका निर्माण करे।

पाकनिर्माण - पिण्डदान एवं अन्नपरिवेषणके लिये गाढ़ी खीर मिट्टीके बर्तनमें बनानी चाहिये। श्राद्धकार्यमें लोहेके पात्रका निषेध है। खीरके अभाव (विकल्प) में जौके आटे, सत्तू अथवा खोएसे भी पिण्डदान किया जा सकता है।

श्राद्धदेशके ईशानकोणमें पाक बनाना चाहिये। पाकनिर्माणके अनन्तर हाथ-पैर धोकर श्राद्धस्थलपर कुश या ऊनका आसन बिछाकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाय।

शिखाबन्धन - गायत्रीमन्त्र पढ़कर शिखाबन्धन कर ले।

सिंचन-मार्जन - निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा श्राद्धीय वस्तुओंपर जल छिड़के- ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

पवित्रीधारण - निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले-

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः । तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

आचमन - ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः। इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन करे। 'ॐ हृषीकेशाय नमः' कहकर हाथ धो ले।

प्राणायाम - प्राणायाम कर ले।

पितरोंके लिये पात्रासादन - तीर्थश्राद्धमें सपत्नीक पिता, पितामह तथा प्रपितामह और सपत्नीक मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहके निमित्त छः पृथक् पृथक् आसन आदि होते हैं। यदि अन्य बन्धु-बान्धवोंके लिये पिण्डदान करना हो तो एक आसन, एक भोजनपात्र, एक घृतपात्र, एक जलपात्र तथा एक पिण्डवेदी अतिरिक्त बना ले। यह आसन वृद्धप्रमातामहके पूर्वभागमें लगाना चाहिये। दक्षिण दिशामें पश्चिमपूर्वक्रमसे पृथक् पृथक् छः पत्तोंपर दक्षिणाग्र छः मोटकरूप आसन रखे। उन छहों आसनोंपर त्रिकुशमें ग्रन्थि लगाकर छः कुशवटु बनाकर एक-एक कुशवटु पृथक् पृथक् उत्तराग्र रखे। छहों आसनोंके सम्मुख एक-एक भोजनपात्र, भोजनपात्रोंके पश्चिम एक-एक अर्धपात्र एवं एक-एक जलपात्र तथा भोजनपात्रोंके उत्तर एक-एक घृतपात्र (दोनिया या हाथका बना मिट्टीका दीया) भी रख दे।

रक्षादीप-प्रज्वालन पितरोंके आसनके दक्षिण दिशामें तिलोंपर रखकर तिलके तेलका एक दीपक दक्षिणाभिमुख जला दे। तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे -

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत् । यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ।। गन्ध, अक्षत, पुष्पसे दीपकका पूजन कर ले। हाथ धोकर आसनपर बैठ जाय।

गदाधर आदिकी प्रार्थना- अंजलिमें फूल लेकर गयाधाम, गदाधर तथा पितरोंका स्मरण करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े-

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम् । स्वपितॄन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत् ॥ ॐ गयायै नमः । ॐ गदाधराय नमः। कहकर फूल चढ़ा दे।

तदनन्तर तीन बार 'ॐ श्राद्धभूम्यै नमः' कहकर भूमिपर जौ एवं पुष्प छोड़े।

भूमिसहित विष्णु-पूजन- श्राद्ध आरम्भ करनेके पूर्व विष्णुभगवान्का पूजन करनेका विधान है। अतः शालग्राम शिलापर षोडशोपचार अथवा पंचोपचार पूजन करना चाहिये। यदि सम्भव न हो तो निम्न श्लोकसे विष्णुभगवान्का स्मरण पूजन करते हुए पुष्पांजलि समर्पित कर श्राद्ध आरम्भ करना चाहिये-

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

ॐ भूमिपत्नीसहिताय विष्णवे नमः कहकर भगवान् विष्णुको प्रणामकर पुष्प अर्पित कर दे।

कर्मपात्रका निर्माण- अक्षतोंके ऊपर जलसे भरे एक कलशको रखकर उसमें चन्दन, तुलसी, तिल, जौ, पुष्प तथा कुश छोड़ दे और त्रिकुशसे कलशके जलको दक्षिणावर्त आलोडित करते हुए निम्न मन्त्रोंको पढ़े- ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम् । अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्व हसः ॥

ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनासि चकृमा वयम् । वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्व हसः ॥ ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनासि चकृमा वयम् । सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्व हसः ॥

प्रोक्षण - कर्मपात्रके जलसे कुशद्वारा अपना तथा सभी श्राद्धसामग्री

एवं पाकका प्रोक्षण करे और बोले- 'श्वादिदुष्टदृष्टिनिपातदूषितपाकादिकं पूतं भवतु ।'

दिग्-रक्षण - बायें हाथमें पीली सरसों लेकर दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र बोले- नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम । इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः ॥ तदनन्तर दाहिने हाथसे सरसोंको पूर्व-दक्षिण आदि दिशाओंमें निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए छोड़े- पूर्वमें- प्राच्यै नमः। दक्षिणमें- अवाच्यै नमः। पश्चिममें- प्रतीच्यै नमः। उत्तरमें- उदीच्यै नमः। आकाशमें- अन्तरिक्षाय नमः। भूमिपर- भूम्यै नमः ।

हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-

पूर्वे नारायणः पातु वारिजासस्तु दक्षिणे ।

प्रद्युम्नः पश्चिमे पातु वासुदेवस्तथोत्तरे।

ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः ॥

नीवीबन्धनतिल पत्तेपर पानके या पुटक-पत्र किसी - , त्रिकुशका टुकड़ा लपेटकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए दक्षिण कटिभागमें उसे खोंस ले, बाँध ले-

ॐ निहन्मि सर्वं यदमेध्यकृद् भवेद्धताश्च यक्षाश्च रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता सर्वेऽसुरदानवा मया। मया यातुधानाश्च सर्वे ॥ ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि ॥

प्रतिज्ञात्रिकुश हाथमें दाहिने - **संकल्प-**, तिल तथा जल लेकर पूर्वाभिमुख हो निम्न रीतिसे प्रतिज्ञा-करे संकल्प-

ॐ अद्य गोत्रः शर्मा/ग/वर्मा/ुप्तोऽहम् 'गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां सपत्नीकानां द्वितीयगोत्राणां अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां तथा च नानानामगोत्राणां तातामबात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवानां ये चास्मत्तोऽभिवाञ्छन्ति तेषां च अक्षयतृप्तिप्राप्त्यर्थं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं च तीर्थे तीर्थश्राद्धविधिना तीर्थश्राद्धं करिष्ये।

संकल्पका जलादि सामने छोड़ दे।

पितृगायत्रीका पाठ-करे पाठ बार तीन पितृगायत्रीका -

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

आसनदान

अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो आसनदानके लिये हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर संकल्प करे-

एकतन्त्रसे आसनदानका संकल्प - ॐ अद्य गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानाम् शर्मणां सपत्नीकानां गुप्तानां/वर्मणां/ गोत्राणामस्मन्मातामह" वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणांप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानाम् शर्मणां नानानामगोत्राणां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां सपत्नीकानां गुप्तानां/वर्मणां/ ऽभिवाञ्छन्तिचास्मत्तो ये ताताम्बात्रितयमित्यादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवानां । नमः युष्मभ्यं आसनानि मोटकरूपाणि इमानि तीर्थश्राद्धे तीर्थे च तेषां

कहकर संकल्पका जलादि छोड़ दे।

पितरोंका पूजनपिता - , पितामह तथा प्रपितामह और मातामह, प्रमातामह तथा वृद्धप्रमातामहके छहों आसनोंपर तथा बान्धवोंके लिये स्थापित पृथक् आसनपर पृथक् पृथक् विविध उपचारोंसे निम्न रीतिसे पूजन करे-

इदमाचमनीयम् आचमनीय कहकर - (स्वाचमनीयम्) जल दे।

इदं स्नानीयम् दे। जल स्नानीय कहकर - (सुस्नानीयम्)

इदमाचमनीयम् दे। जल आचमनीय कहकर - (स्वाचमनीयम्)

इदं वस्त्रम् चढ़ाये। सूत्र या वस्त्र कहकर - (सुवस्त्रम्)

इदमाचमनीयम् दे। जल आचमनीय कहकर - (स्वाचमनीयम्)

इमे यज्ञोपवीते यज्ञोपवीत कहकर - (सुयज्ञोपवीते)चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् दे। जल आचमनीय कहकर - (स्वाचमनीयम्)

एष गन्धः करे। अर्पित गन्ध कहकर (सुगन्धः)

इमे तिलाक्षताः चढ़ाये। तिलाक्षत कहकर - (सुतिलाक्षताः)

इदं माल्यम् चढ़ाये। माला कहकर - (सुमाल्यम्)

एष धूपः करे। आघ्रापित धूप कहकर - (सुधूपः)

एष दीपः - (सुदीपः)कहकर दीपक दिखाये । हस्तप्रक्षालनम् हाथ) (ले। धो

इदं नैवेद्यम् करे। अर्पित नैवेद्य कहकर - (सुनैवेद्यम्)

इदमाचमनीयम् दे। जल आचमनीय कहकर - (स्वाचमनीयम्)

इदं फलम् करे। अर्पित फल कहकर - (सुफलम्)

इदमाचमनीयम् दे। जल आचमनीय कहकर - (स्वाचमनीयम्)

इदं ताम्बूलम् सुता)म्बूलम्करे। प्रदान ताम्बूल कहकर - (

एषा दक्षिणा चढ़ाये। दक्षिणा कहकर - (सुदक्षिणा)

एकतन्त्रसे अर्चनदानका संकल्प अर्चनदानका संकल्प करे हाथमें - मोटक, तिल, जल लेकर एकतन्त्रसे

ॐ अद्य गोत्राः शर्माणः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः गुप्ताः/वर्माणः/ वसुरुद् सपत्नीकाःरादित्यस्वरूपाः गोत्राः" सपत्नीकाः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः -ताताम्बात्रितयमित्यादि वसुरुद्रादित्यस्वरूपाःगोत्राः तीर्थश्राद्धे तीर्थे च ते चास्मत्तोऽभिवाञ्छन्ति ये शास्त्रबोधिताविशिष्टबान्धवाः छ संकल्पजल कहकर ऐसा स्वधा। युष्मभ्यं एतान्यर्चनानिोड़ दे।

सव्य होकर आचमन कर ले, पुनः अपसव्य हो जाय।

मण्डलकरण सभी वामावर्त जलद्वारा हुए पढ़ते मन्त्र निम्न - सर्वप्रथम बनाये। मण्डल गोल चतुर्दिक आसनोंके और भोजनपात्रों बनाये। मण्डल साथ एक ओर चारों भोजनपात्रके तथा आसन पिताके सभ आदि मातामह तथा पितामह प्रकार इसीीके आसनों तथा भोजनपात्रोंके चारों ओर मण्डल बनाना चाहिये।

बान्धवोंके आसनपर भी गोल मण्डल बनाये। उस समय निम्न मन्त्र पढ़े-

यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति । एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु ॥

भूस्वामीके पितरोंको अन्नप्रदान -अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर दक्षिण दिशाकी भूमिको जलसे सींच दे। निर्मित पाकसे एक दोनेमें सभी अन्न परोसकर उसमें घृत, तिल, मधु छोड़कर तथा दूसरे दोनेमें जल लेकर जलसे सिंचित भूमिमें वह अन्न तथा जल भूस्वामीके निमित्त निम्न मन्त्र बोलकर पितृतीर्थसे रख दे-

'ॐ इदमन्नमेतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः ।'

अन्नपरिवेषणपिता - , पितामहादि तथा मातामहादिके लिये स्थापित छहों भोजनपात्रों और बान्धवादिके भोजनपात्रपर पृथक् पृथक् अन्न परोसे। बायें भागमें पूर्वस्थापित जलपात्रोंमें जल तथा सामने स्थित घृतपात्रोंमें घी छोड़ दे। तदनन्तर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए सभी भोजनपात्रोंमें परोसे गये अन्नपर दोनों हाथोंसे पितृतीर्थसे मधु छोड़े-

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवथं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ।। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ ॐ मधु मधु मधु ॥

पात्रालम्भन हाथको बायें अनुत्तान ऊपर हाथके दक्षिण अनुत्तान - सभी रखकर स्वस्तिकाकार अन्नपात्रोंको स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र बोले -

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि

स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूढमस्य पासुरे स्वाहा ॥ ॐ कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम् ।

तिलविकिरण छोड़ तिल मन्त्रसे निम्न ऊपर अन्नके भोजनपात्रोंमें -
-दे

'ॐ अपहता असुरा रक्षासि वेदिषदः ॥'

एकतन्त्रसे अन्नदानका संकल्प - दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अन्नदानका निम्न संकल्प करे -

ॐ अद्य गोत्रेभ्यः सपत्नीकेभ्यः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहेभ्यः द्वितीयगोत्रेभ्यः सपत्नीकेभ्यः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहेभ्यः तथा च नानानामगोत्रेभ्यः ताताम्बादिशास्त्रबोधितावशिष्टबान्धवेभ्यः ये चास्मत्तोऽभिवाञ्छन्ति तेभ्यश्च तीर्थे तीर्थश्राद्धे सोपस्करमेतदन्नं युष्मभ्यं स्वधा ।

-ऐसा कहकर संकल्पजल भोजनपात्रोंपर छोड़ दे।

सव्य होकर हाथ धो ले तथा निम्न मन्त्र पढ़े-

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद् भवेत्। अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं पित्रादीनां प्रसादतः ॥

पितृगायत्रीका पाठ निम्न बार तीन - पितृगायत्रीका पाठ करे-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

वेदशास्त्रादिका पाठ पूर्वाग्र नीचे पैरोंके हुए करते ध्यान पितरोंका - पुरुषसूक्त यथासम्भव करे। पाठ वेदशास्त्रादिका रखकर कुश तीन (४२३ ०सं०पृ), पितृसूक्त प)ृ०सं० ४२३(, रुचिस्तव (४२१ ०सं०पृ)तथा रक्षोघ्नसूक्त (४२३ ०सं०पृ)आदिका पाठ करना चाहिये।

श्रुतिपाठ होतारं देवमृत्विजम्। यज्ञस्य पुरोहितं अग्निमीळे ॐ - ॥ रत्नधातमम्

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघश सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ।। ॐ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि ।।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्त्रवन्तु नः ॥

स्मृतिपाठ-

मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः । प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन् ॥

योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं सम्पूज्य मुनयोऽब्रुवन् । वर्णाश्रमेतराणां नो ब्रूहि धर्मानशेषतः ।॥

मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनोऽङ्गिराः । यमापस्तम्बसंवर्ताः कात्यायनबृहस्पती ॥

पराशरव्यासशङ्खलिखिता दक्षगौतमौ । शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः ॥

पुराण-

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् । देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ। चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे ।।

तेऽभिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः । प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ ॥

महाभारत -

दुर्योधनो मन्युमयो महाद्रुमः स्कन्धः कर्णः शकुनिस्तस्य शाखाः ।

दुःशासनः पुष्पफले समृद्धे मूलं राजा धृतराष्ट्रोऽमनीषी ॥

युधिष्ठिरो धर्ममयो महाद्रुमः स्कन्धोऽर्जुनो भीमसेनोऽस्य शाखाः ।

माद्रीसुतौ पुष्पफले समृद्धे मूलं कृष्णो ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च ॥

यथासम्भव रक्षोघ्नसूक्त, पुरुषसूक्त, अप्रतिरथसूक्त तथा रुचिस्तव आदिका पाठ भी किया जा सकता है।

पिण्डवेदी ओर दक्षिणकी होकर दक्षिणाभिमुख अपसव्य - **निर्माण-** -उत्तर ढालवालीदक्षिण लम्बी एक हाथ लम्बीपिता वेदी एक चौड़ी-, पितामह तथा प्रपितामहके आसनोंके ठीक सामने मध्यमें बनाये इसी प्रकार दूसरी वेदी मातामहादिके निमित्त बनाये। दोनों वेदियों तथा अतिरिक्त बन्धु बान्धवोंके लिये बनायी गयी वेदीको भी जलसे सींचकर पवित्र कर ले। उस समय बोले-

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका। पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः ॥

रेखाकरण कुशोंके तीन तर्जनीसे तथा अंगुष्ठ हाथके बायें - मूलभागको कुशोंके तर्जनीसे तथा अंगुष्ठ हाथके दाहिने और अग्रभागको पकड़कर'ॐ अपहता असुरा रक्षासि वेदिषदः' इस मन्त्रसे दो वेदियोंमें उत्तर उन और खींचे रेखा एक बान्धवादिवेदीमें तथा तीन दक्षिण- दे। फेंक ईशानकोणमें कुशोंको

उल्मुकस्थापन प्रतिमुञ्चमाना रूपाणि ये ॐ ओर चारों वेदीके - । चरन्ति स्वधया सन्तः असुराः

परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् ॥ मन्त्रसे बायीं ओरसे अंगारका भ्रामण कराये तथा उसे पिण्डवेदीके दक्षिणकी ओर श्राद्धपर्यन्त स्थापित रखे। इस प्रक्रियाकी सिद्धि अंगार तथा गोहरीके अभावमें ज्वालामुखी धूप आदिसे भी की जा सकती है।

अवनेजनपात्रस्थापन अवनेजनपात्रके रूपमें तीन दोनिये पिता, पितामह तथा प्रपितामहकी वेदीके पश्चिम भागमें तथा इसी प्रकार तीन दोनिये मातामहादिकी वेदीके पश्चिम भागमें उत्तर दे। रख क्रमसे दक्षिण- एक भागमें पश्चिम भी उसके है गयी बनायी वेदी जो अतिरिक्त जल पृथक् पृथक् दोनियोंमें सभी ले। रख अवनेजनपात्र, तिल, पुष्प तथा गन्ध छोड़ दे।

अवनेजनदानका संकल्प हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पितावाला प्रथम अवनेजनपात्र (दोनिया) लेकर निम्न संकल्प करे -

(१) पिताके लिये ॐ अद्य गोत्र अस्मत्पितः शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप

...तीर्थे तीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिश्व ते नमः। कहकर दोनियेके आधे जलको वेदीकी उत्तरवाली प्रथम रेखामें गिरा दे और सजल दोनियेको प्रत्यवनेजनके लिये यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(**२) पितामहके लिये -** इसी प्रकार हाथमें मोटक, तिल, जल तथा पितामहवाला दोनिया लेकर संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्र अस्मत्पितामह शर्मन्रुद्रस् सपत्नीक गुप्त/वर्मन्/वरूप तीर्थे तीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। उसी प्रकार जल वेदीकी मध्य रेखामें गिराकर दोनिया यथास्थान सुरक्षित रख ले।

(३) प्रपितामहके लिये ॐ अद्य गोत्र अस्मत् प्रपितामह शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप तीर्थे तीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। उसी प्रकार दोनियाका आधा जल वेदीकी दक्षिणवाली रेखापर गिराकर दोनिया यथास्थान सुरक्षित रख दे।

(**३) प्रपितामहके लिये** ॐ अद्य गोत्र अस्मत् प्रपितामह शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप तीर्थे तीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। उसी प्रकार दोनियाका आधा जल वेदीकी दक्षिणवाली रेखापर गिराकर दोनिया यथास्थान सुरक्षित रख दे।

(**५) प्रमातामहके लिये** ॐ अद्य गोत्र अस्मत् प्रमातामह शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप तीर्थे तीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। पूर्ववत् करे।

(**६) वृद्धप्रमातामहके लिये** - ॐ अद्य गोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह शर्मन्/वर्मन्/ गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप तीर्थे तीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिक्ष्व ते नमः। पूर्ववत् करे।

(७) बान्धवोंके लिये ॐ अद्य नानानामगोत्राः बान्धवाः तीर्थे तीर्थश्राद्धपिण्डस्थाने अत्रावनेनिग्ध्वम् युष्मभ्यं नमः। पूर्ववत् अवनेजन दे।

कुशास्तरण - समूल तीन कुशोंको एक साथ जड़सहित दो भागोंमें एक ही बार विभक्त करके प्रत्येक वेदीपर बिछा दे।

पिण्डनिर्माण - बायाँ घुटना मोड़कर जमीनपर टिकाकर पितरोंके पाकमें तिल, घृत तथा मधु मिलाकर कपित्थ (कैथ) फलके बराबर छः गोल-गोल पिण्ड बना ले। जितने बान्धवोंको पिण्ड देना है, उनके निमित्त भी पिण्ड बना ले। सभी पिण्डोंको किसी पत्तलपर रख ले।

पिण्डदान - प्रथम पिण्ड तथा मोटक, तिल, जल लेकर बायें हाथसे दाहिने हाथका स्पर्श किये हुए निम्न संकल्प करे-

(१) पिताके लिये पिण्डदानका संकल्प ॐ अद्य गोत्र अस्मत्पितः शर्मन् / वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप तीर्थे तीर्थश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा-कहकर पिण्डको पितादिकी वेदीमें स्थित कुशोंके मूलभागमें (प्रथम अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

(२) पितामहके लिये पिण्डदानका संकल्प ॐ अद्य गोत्र अस्मत्पितामह "शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप तीर्थे तीर्थश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा - कहकर पिण्डको पितादिकी वेदीपर स्थापित कुशपर (द्वितीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

(३) प्रपितामहके लिये पिण्डदानका संकल्प ॐ अद्य गोत्र अस्मत्प्रपितामह ""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप तीर्थे तीर्थश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा - कहकर पिण्डको पितादिकी वेदीपर स्थापित कुशपर (तृतीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

लेपभाग- लेपभागभुक् पितरोंके लिये कुशाके अग्रभागमें पिण्डसे बचे हुए अन्नको 'लेपभागभुजः पितरस्तृप्यन्ताम्' कहकर रख दे। पिण्डाधार

कुशोंके मूलमें हाथ पोंछ ले।

(४) **मातामहके लिये** ॐ अद्य गोत्र अस्मन्मातामह शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप तीर्थे तीर्थश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा - कहकर पिण्डको मातामहादिकी वेदीपर स्थित कुशोंके मूल भागमें (प्रथम अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

(५) **प्रमातामहके लिये** ॐ अद्य गोत्र अस्मत् प्रमातामह शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप तीर्थे तीर्थश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा - कहकर पिण्डको मातामहादिकी वेदीपर (द्वितीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

(६) **वृद्धप्रमातामहके लिये** ॐ अद्य गोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह शर्मन्/वर्मन्/ गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप तीर्थे तीर्थश्राद्धे एष पिण्डस्ते स्वधा कहकर पूर्ववत् पिण्डको मातामहादिकी वेदीपर स्थित कुशोंपर (तृतीय अवनेजनस्थानपर) दोनों हाथोंसे सँभालकर पितृतीर्थसे रख दे।

लेपभाग - ऊपरकी भाँति मातामहादिकी दूसरी वेदीपर भी लेपभाग दे और पिण्डाधार कुशोंके मूलमें हाथ पोंछ ले।

(७) **बन्धु-बान्धवादिके लिये** ॐ अद्य गोत्र नामधेय एष पिण्डस्ते स्वधा - कहकर पृथक् पृथक् बान्धवोंके लिये पिण्डदान करे। ताताम्बादिशास्त्रबोधितावशिष्ट बान्धवोंके लिये तथा जो श्राद्धकर्तासे पिण्डदान चाहते हों, उनके लिये एक पिण्ड बनाकर निम्न रीतिसे पिण्डदान करना चाहिये- ॐ अद्य ताताम्बादिशास्त्रबोधितावशिष्टाः अस्मत्तोऽभिवाञ्छन्तो बान्धवाश्च एष पिण्डः युष्मभ्यं स्वधा । सव्य होकर आचमन कर भगवान्का स्मरण कर ले।

श्वासनियमन - अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर आसनपर बैठे हुए ही श्वास खींचते हुए बायीं ओरसे उत्तराभिमुख हो निम्न मन्त्र पढ़े-

'अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम् ।'

श्वास रोककर उसी क्रमसे दक्षिणाभिमुख होकर भास्वरमूर्ति (तेजः पुंजस्वरूप) पितरोंका ध्यान करते हुए पिण्डके पास श्वास छोड़े और 'अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत' यह मन्त्र पढ़े।

यह क्रिया दूसरी तथा तीसरी वेदीपर भी करे।

प्रत्यवनेजनदान - अवनेजनदानसे बचे हुए सभी अवनेजनपात्रोंसे ही पितृतीर्थसे प्रत्यवनेजनका दान करे। यदि अवनेजनपात्रमें जल न बचा हो तो जल डाल ले। सभीका पृथक् पृथक् संकल्प इस प्रकार है-

लिये पिताके (१) हाथमें मोटक, तिल, जल तथा प्रथम अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्र अस्मत्पितः शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप तीर्थे तीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर प्रत्यवनेजन जल पिताके पिण्डपर गिरा दे।

(**२) पितामहके लिये** हाथमें मोटक, तिल, जल तथा द्वितीय अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे -

ॐ अद्य गोत्र अस्मत्पितामह शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप तीर्थे तीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिश्व ते नमः। बोलकर प्रत्यवनेजन-जल पितामहके पिण्डपर गिरा दे।

(३) प्रपितामहके लिये पूर्व रीतिसे अवनेजनपात्र आदि लेकर ॐ अद्य गोत्र अस्मत्

प्रपितामह शर्मन् वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप तीर्थे तीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः । बोलकर प्रत्यवनेजन जल प्रपितामहके पिण्डपर गिरा दे।

(४) मातामहके लिये 'शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक वसुस्वरूप प्रत्यवनेजन-जल मातामहके पिण्डपर गिरा दे। अवनेजनपात्र आदि लेकर ॐ अद्य गोत्र अस्मन्मातामह तीर्थे तीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र

प्रत्यवनेनिक्ष्व ते नमः। बोलकर

(५) प्रमातामहके लिये अवनेजनपात्र आदि लेकर ॐ अद्य गोत्र अस्मत् प्रमातामह

""शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक रुद्रस्वरूप तीर्थे तीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिश्व ते नमः । बोलकर प्रत्यवनेजन-जल प्रमातामहके पिण्डपर गिरा दे।

(६) वृद्धप्रमातामहके लिये अवनेजनपात्र आदि लेकर ॐ अद्य गोत्र अस्मद् वृद्धप्रमातामह शर्मन्/वर्मन्/गुप्त सपत्नीक आदित्यस्वरूप तीर्थे तीर्थश्राद्धपिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिश्व ते नमः। बोलकर प्रत्यवनेजन-जल वृद्धप्रमातामहके पिण्डपर गिरा दे।

(७) बान्धवादिके लिये अवनेजनपात्र आदि लेकर ॐ अद्य नानानामगोत्राः बान्धवाः

...तीर्थे तीर्थश्राद्धपिण्डेषु अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वम् युष्मभ्यं नमः। बोलकर प्रत्यवनेजन-जल बान्धवादिके पिण्डोंपर गिरा दे।

नीवीविसर्जन नीवी को निकालकर ईशानकोण की ओर फेंक दे। सव्य होकर आचमन करे। भगवान्का स्मरण कर ले। अपसव्य हो जाय।

सूत्रदान - बायें हाथ से सूत्र (कच्चा धागा) पकड़कर दाहिने हाथमें लेकर निम्न मन्त्र पढ़े- ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्म। और 'एतद्वः पितरो वासः' कहकर सभी पिण्डोंपर पृथक् पृथक् सूत्र चढ़ाये।

सूत्रदानका संकल्प - तदनन्तर मोटक, तिल, जल हाथमें लेकर सूत्रदानका संकल्प करे- ॐ अद्य गोत्र पितः शर्मन्/वर्मन्/गुप्त तीर्थे तीर्थश्राद्धपिण्डे एतत्ते वासः स्वधा। ऐसा कहकर पिताके पिण्डपर संकल्पजल छोड़े। इसी प्रकार पितामहादि तथा मातामहादिके पिण्डोंपर

भी सूत्रदान करके पृथक् पृथक् सूत्रदानका संकल्प करे। बान्धवोंके सूत्रदानके संकल्पमें ॐ अद्य नानानामगोत्राः बान्धवाः तीर्थे तीर्थश्राद्धपिण्डेषु एतानि वासांसि युष्मभ्यं स्वधा छोड़े। संकल्पजल कहकर -

पिण्डपूजन - तदनन्तर सभी पिण्डोंका विविध उपचारोंसे पूजन करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्) - कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्) - कहकर वस्त्र (या सूत्र) चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते) - कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः) - कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे तिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः) - कहकर तिलाक्षत चढ़ाये।

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्) - कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः) - कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः) - कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले।)

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्) - कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्) - कहकर फल अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्) - कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा) - कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

पितादि, मातामहादि तथा बान्धवोंके लिये अर्चनदानका संकल्प - हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर अर्चनदानका संकल्प करे -

ॐ अद्य "गोत्राः अस्मत्पितृपितामहप्रपितामहाः सपत्नीकाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः तथा "गोत्राः अस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहाः सपत्नीकाः वसुरुद्रादित्यस्वरूपाः तथा च नानानामगोत्राः बान्धवादयः ...तीर्थे तीर्थश्राद्धपिण्डेषु एतान्यर्चनानि युष्मभ्यं स्वधा - कहकर संकल्पका जलादि छोड़ दे।

षड्ऋतुनमस्कार मन्त्रसे निम्न ऋतुओंको छः पितृस्वरूप तदनन्तर - -करे नमस्कार

(१नमः वसन्ताय ॐ (, (२नमः ग्रीष्माय ॐ (, (३नमः वर्षायै ॐ (, (४ (नमः शरदे ॐ, (५। नमः शिशिराय ॐ (६) तथा नमः हेमन्ताय ॐ (

पितरोंको अक्षय्योदकदान - पितादि, मातामहादिके छहों आसनोंपर तथा बान्धवादिके आसनपर क्रमशः पितृतीर्थसे -

ॐ शिवा आपः सन्तु छोड़े। जल कहकर -

ॐ सौमनस्यमस्तु कहक -र पुष्प छोड़े।

ॐ अक्षतं चारिष्टं चास्तुछोड़े। अक्षत कहकर -

अक्षय्योदकदानका संकल्प जल देमोटक -, तिल, जल लेकर पृथक् पृथक् संकल्पकर पितृतीर्थसे

(१) पिताके लिये ॐ अद्य गोत्रस्य शर्मणः/वर्मणः गुप्तस्य अस्मत्पितुः सपत्नीकस्य वसुस्वरूपस्य तीर्थे तीर्थश्राद्धे

दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

(२) पितामहके लिये ॐ अद्य गोत्रस्य शर्मणः वर्मणः/गुप्तस्य अस्मत्पितामहस्य सपत्नीकस्य रुद्रस्वरूपस्य तीर्थे तीर्थश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

(३) प्रपितामहके लिये ॐ अद्य गोत्रस्य शर्मणः / वर्मणः/गुप्तस्य अस्मत्प्रपितामहस्य सपत्नीकस्य आदित्यस्वरूपस्य तीर्थे तीर्थश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

(४) मातामहके लिये ॐ अद्य गोत्रस्य शर्मणः वर्मणः/गुप्तस्य अस्मन्मातामहस्य सपत्नीकस्य वसुस्वरूपस्य तीर्थे तीर्थश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

(५) प्रमातामहके लिये ॐ अद्य गोत्रस्य शर्मणः / वर्मणः/गुप्तस्य अस्मत्प्रमातामहस्य सपत्नीकस्य रुद्रस्वरूपस्य तीर्थे तीर्थश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

(६) वृद्धप्रमातामहके लिये-ॐ अद्य गोत्रस्य शर्मणः वर्मणः गुप्तस्य अस्मद् वृद्धप्रमातामहस्य सपत्नीकस्य आदित्यस्वरूपस्य तीर्थे तीर्थश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

(७) बान्धवादिके लिये ॐ अद्य नानानामगोत्राणां बान्धवादीनां तीर्थे तीर्थश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमस्तु ।

जलधारा - सव्य होकर दक्षिण दिशाकी ओर देखते हुए सभी पिण्डोंपर निम्न मन्त्रसे पूर्वाग्र जलधारा दे-

अघोराः पितरः सन्तु।

आशीष-प्रार्थना - पूर्वाभिमुख होकर अंजलि बनाकर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए पितरोंसे आशीर्वाद माँगे -

ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम्। वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु। अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या

आशिषः सन्तु ॥

ब्राह्मण बोले। आशिषः सत्या सन्त्वेताः -

पिण्डोंपर जलधारा या दुग्धधारा अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर एक पवित्रीमें तीन कुशोंको फँसाकर पितृपितामहादिके पिण्डोंपर दक्षिणाग्र रखे और उसपर निम्न मन्त्रसे जलधारा या दुग्धधारा दे-

ॐ ऊर्जं वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितॄन् ॥ इसी प्रकार मातामहादि तथा बान्धवादिके पिण्डोंपर भी जलधारा या दुग्धधारा दे।

पिण्डाघ्राण पत्तल किसी उठाकर और सूँघे पिण्डोंको होकर नम्र -
दे। छोड़ अग्निमें अन्य उल्मुकको तथा कुशों पिण्डाधार दे। रख आदिपर

दक्षिणादानका संकल्प सव्य पूर्वाभिमुख होकर हाथमें त्रिकुश, तिल, जल तथा रजतदक्षिणा लेकर संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानाम् शर्मणां / वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानाम् शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणामथ च अन्येषां विविधगोत्राणां विविधनामधेयानां बान्धवादीनां तीर्थे कृतैतत्तीर्थश्राद्धप्रतिष्ठार्थमेतानि रजतखण्डानि (रजतनिष्क्रयद्रव्यं वा) गोत्राय ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर हाथका जल तथा दक्षिणा उपस्थित ब्राह्मणको दे दे अथवा ब्राह्मणोंको विभाजित कर देना हो तो 'नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो विभज्य दातुमुत्सृज्ये' कहकर दक्षिणाद्रव्य पिता आदिके आसनपर रख दे। भोजनके अन्तमें दे।

पितृगायत्रीका पाठ-करे पाठ बार तीन पितृगायत्रीमन्त्रका निम्न -

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

रक्षादीपनिर्वापण- अपसव्य दक्षिणाभिमुख होकर रक्षादीप बुझाये।

सव्य होकर हाथ-पैर धो ले।

आचार्यको दक्षिणादान - सव्य पूर्वाभिमुख होकर त्रिकुश, तिल, जल हाथमें लेकर दक्षिणादानका संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां शर्मणां वर्मणां/ गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तथा च द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां "शर्मणां/वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणामथ च अन्येषां बान्धवादीनां तीर्थश्राद्धसाङ्गता- सिद्धयर्थमाचार्याय इमां दक्षिणां भवते सम्प्रददे। कहकर आचार्यको दक्षिणा प्रदान करे।

आचार्य बोले- ॐ स्वस्ति ।

न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थ गोदानका संकल्प हाथमें दाहिने - त्रिकुश तथा गोनिष्क्रयद्रव्य, तिल, जल लेकर इस प्रकार संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां शर्मणां / वर्मणां/गुप्तानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणां तथा च द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणामथ च अन्येषां बान्धवादीनां तीर्थे कृतैतत् तीर्थश्राद्धप्रतिष्ठार्थं न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं च गोनिष्क्रयद्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। ऐसा कहकर यथाशक्ति कुछ द्रव्य ब्राह्मणको दे दे।

भोजनदानका संकल्प दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल, जल लेकर संकल्प करे- ॐ अद्य गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम् गोत्राणामस्मत्पितृपितामहप्रपितामहानां सपत्नीकानां तथा च द्वितीयगोत्राणामस्मन्मातामहप्रमातामहवृद्धप्रमातामहानां सपत्नीकानां वसुरुद्रादित्यस्वरूपाणामथ च अन्येषां बान्धवानां तीर्थे तीर्थश्राद्धप्रतिष्ठार्थं यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये, आमान्नदानं वा करिष्ये, तेभ्यो

दक्षिणादिकं च दातुं प्रतिजाने। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

कर्मका समर्पण अनेन कृतेन तीर्थश्राद्धेन पितृरूपीजनार्दनः प्रीयताम्, न मम। कहकर जल छोड़ दे।

भगवत्स्मरण कर्म कुर्वतां प्रमादात् -करे प्रार्थना मन्त्रोंसे निम्न - यस्य ॥ श्रुतिः स्यादिति सम्पूर्णं तद्विष्णोः स्मरणादेव । यत् प्रच्यवेताध्वरेषु वन्दे सद्यो याति सम्पूर्णतां न्यूनं । तपोयज्ञक्रियादिषु नामोक्त्या च स्मृत्या भवेत कर्म न्यूनं । नामजपादपि ॥ तमच्युतम्ं पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम् ॥ यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य

ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः ।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः । ॐ साम्बसदाशिवाय नमः । ॐ साम्बसदाशिवाय नमः ।

॥ तीर्थश्राद्ध पूर्ण हुआ ।।

प्रश्न -

१ .गयाश्राद्ध तीर्थश्राद्ध किसे कहते है।

२ .गयाश्राद्ध तीर्थश्राद्ध का वर्णन कीजिए।

इकाई 24 - त्रिपिण्डी श्राद्ध

पूजनादि सामग्री - रोरी, जौ २५० ग्राम, चावल १ किलो, चन्दन, वस्त्र, यज्ञोपवीत १५ जोड़ा, उपवस्त्र, मौली, पुष्प-पुष्पमाला १५, तुलसी, कुमकुम, दूर्वा, घी, दूध, पंचामृत, धूप, दीप, नैवेद्य (पेड़ा), ऋतुफल २० (केला छोड़कर), द्रव्यदक्षिणा

पिण्डदान तथा अन्नपरिवेषण की सामग्री - जौका आटा २५० ग्राम, चावलका आटा २५० ग्राम, तिलका आटा २५० ग्राम। तीन वेदियोंके लिये बालू या शुद्ध मिट्टी १ किलो, कच्चा सूत, विशेषार्घके लिये ताँबे या मिट्टीके तीन पात्र, मातुलिंग (बिजौरा नींबू)-१ जम्बीरफल (कागजी नीबू) - १, खर्जूर (छुहारा) १०० ग्राम, विष्णुतर्पणके लिये ताँबे या मिट्टीका पात्र-१, अंजलि देनेके लिये शंख-१, गोदानके लिये सवत्सा गौ या निष्क्रयद्रव्य ।

दक्षिणा अथवा निष्क्रयद्रव्य - १-सात्त्विक प्रेतोंके निमित्त-दक्षिणाद्रव्ययुक्त वस्त्रोपवस्त्र, २-राजस प्रेतों लिये दक्षिणायुक्त मीठे जलसे पूर्ण स्वर्णखण्डयुक्त कमण्डलु, ३-तामस प्रेतोंके लिये दक्षिणायुक्त उपानह तथा छत्र (छाता), तीन मोक्षधेनु या निष्क्रयद्रव्य, स्वर्णखण्ड एवं दक्षिणायुक्त तिलपूर्ण ताम्रपात्र, स्वर्णदक्षिणायुक्त घृतपूर्ण कांस्यपात्र।

ब्राह्मणभोजनसामग्री अथवा निष्क्रयद्रव्य -१-सात्त्विक-पक्वान्न लिये ब्राह्मणभोजनके, २(खीर) पायस लिये ब्राह्मणभोजनके -राजस-, ३ ।(खिचड़ी) कृसरान्न लिये ब्राह्मणभोजनके-तामस -

सूक्तपाठकर्ता ब्राह्मणोंके लिये द्रव्यदक्षिणा, आचार्य तथा दक्षिणा - लिये परिहारके-न्यूनाधिकदोष भूयसी दक्षिणा।

त्रिपिण्डीश्राद्धप्रयोग

विष्णुपूजनके अनन्तर श्राद्धक्रियाका आरम्भ करे। पहलेसे गोबरसे

लिपी हुई अथवा धुली हुई श्राद्धभूमिपर आ जाय। सभी श्राद्धीय सामग्रियोंको यथास्थान रख ले। सर्वप्रथम पिण्डदानादिके लिये पीठीका निर्माण करे।

पिण्डदानादिके लिये पीठीका निर्माण - त्रिपिण्डीश्राद्धमें अन्य श्राद्धोंकी तरह पिण्डदान तथा अन्नपरिवेषण आदिके लिये पाक नहीं बनाया जाता, बल्कि जौ आदिके आटेसे पिण्ड बनता है तथा उसीसे अन्नपरिवेषण भी होता है। अतः सात्त्विक प्रेतोंके लिये जौका आटा, राजस प्रेतोंके लिये चावलका आटा तथा तामस प्रेतोंके लिये पिसा हुआ तिल- इन तीनोंको पृथक् पृथक् दूध अथवा जलसे गूंथकर पीठीके रूपमें तीन पात्रोंमें अलग-अलग रख दे। पीठीके निर्माणके अनन्तर हाथ-पैर धोकर श्राद्धस्थलपर कुश या ऊनका आसन बिछाकर सव्य पूर्वाभिमुख होकर बैठ जाय।

शिखाबन्धन - गायत्रीमन्त्र पढ़कर शिखाबन्धन कर ले।

सिंचन-मार्जन - निम्न मन्त्रसे अपने ऊपर तथा श्राद्धीय वस्तुओंपर जल छिड़के-

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा ।

यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु।

पवित्रीधारण - निम्न मन्त्रसे पवित्री पहन ले-

ॐ पवित्रे स्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः ।

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

आचमन - ॐ केशवाय नमः । ॐ नारायणाय नमः । ॐ माधवाय नमः - इन मन्त्रोंको बोलकर आचमन करे। 'ॐ हृषीकेशाय नमः' कहकर हाथ धो ले।

प्राणायाम- प्राणायाम करे।

रक्षादीप-प्रज्वालन - श्राद्धभूमिकी दक्षिण दिशामें तिलोंपर रखकर तिलके तेलका एक दक्षिणाभिमुख दीपक जलाकर रख दे। तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे -

भो दीप ब्रह्मरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।

यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव ॥

गन्ध, अक्षत, पुष्पसे दीपकका पूजन कर ले। हाथ धोकर आसनपर बैठ जाय।

गदाधर आदिकी प्रार्थना - अंजलिमें फूल लेकर गयाधाम, गदाधरका स्मरणकर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे-

श्राद्धारम्भे गयां ध्यात्वा ध्यात्वा देवं गदाधरम्। स्वपितृन् मनसा ध्यात्वा ततः श्राद्धं समाचरेत्

ॐ गयायै नमः । ॐ गदाधराय नमः - कहकर फूल चढ़ा दे।

तदनन्तर तीन बार 'ॐ श्राद्धभूम्यै नमः' कहकर भूमिपर जौ एवं पुष्प छोड़े।

भूमिसहित विष्णु-पूजन

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्

'ॐ भूमिपत्नीसहिताय विष्णवे नमः' - कहकर भगवान् विष्णुको प्रणामकर पुष्प अर्पित कर दे।

कर्मपात्रका निर्माण -

ॐ यद्देवा देवहेडनं देवासश्चकृमा वयम् । अग्निर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्व हसः ॥

ॐ यदि दिवा यदि नक्तमेनासि चकृमा वयम्। वायुर्मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्वछंहसः ॥

ॐ यदि जाग्रद्यदि स्वप्न एनासि चकृमा वयम्। सूर्यो मा तस्मादेनसो विश्वान् मुञ्चत्व हसः ॥

प्रोक्षण - कर्मपात्रके जलसे कुशद्वारा अपना तथा सभी श्राद्धसामग्री एवं पिण्डसामग्रीका प्रोक्षण करे और बोले-

'श्वादिदुष्टदृष्टिनिपातदूषितमन्नादिकं पूतं भवतु।'

दिग्-रक्षण - बायें हाथमें पीली सरसों लेकर दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र बोले-

नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तम । इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्ष त्वं सर्वतो दिशः ॥ तदनन्तर दाहिने हाथसे सरसोंको पूर्व आदि दक्षिण- - दक्षिणमें नमः। प्राच्यै - पूर्वमें -छोड़े हुए पढ़ते मन्त्रोंको निम्न दिशाओंमें नमः। उदीच्यै -उत्तरमें नमः। प्रतीच्यै - पश्चिममें । नमः अवाच्यै आकाशमें । नमः भूम्यै - भूमिपर नमः। अन्तरिक्षाय -

हाथ जोड़कर प्रार्थना करे-

पूर्वे नारायणः पातु वारिजाक्षस्तु दक्षिणे। प्रद्युम्नः पश्चिमे पातु वासुदेवस्तथोत्तरे ।

ऊर्ध्वं गोवर्धनो रक्षेदधस्ताच्च त्रिविक्रमः ॥

नीवीबन्धन -

ॐ यक्षाश्च रक्षांसि पिशाचगुह्यका हता मया यातुधानाश्च सर्वे ॥ ॐ सोमस्य नीविरसि विष्णोः शर्मासि शर्मयजमानस्येन्द्रस्य योनिरसि सुसस्याः कृषीस्कृधि ॥

निहन्मि सर्वं यदमेध्यकृद् भवेद्धताश्च सर्वेऽसुरदानवा मया ।

प्रतिज्ञासंकल्प - दाहिने हाथमें त्रिकुश, तिल तथा जल लेकर निम्न रीतिसे प्रतिज्ञासंकल्प करे -

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः पुराणपुरुषोत्तमाय ॐ तत्सत् अद्यैतस्य अचिन्त्यशक्तेर्महाविष्णोराज्ञया जगत्सृष्टिकर्मणि प्रवर्तमानस्य परार्द्धद्वयजीविनो ब्रह्मणो द्वितीयपरार्द्ध श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तैकदेशान्तर्गते प्रजापतिक्षेत्रे हो करना काशीमें) स्थाने" महाश्मशाने त्रिकण्टकविराजिते गौरीमुखे अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे तो संवत्सरे बौद्धावतारे (भागे पश्चिमे गङ्गायाः भागीरथ्या भगवत्या आनन्दवने पक्ष मासे ऋतौ अयने े तिथौ वासरे एवं ग्रहगण गुणविशेषणविशिष्टायां - विविधपीडाकारिणां मत्कुले गुप्तोऽहं/वर्मा शर्मा शुभपुण्यतिथौ अस्मत्कुले अपत्यादिहिंसापरायणानां प्रतिबन्धकानां -सन्तानपरम्परावृद्धि शूद्राणां/वैश्यानां /क्षत्रियाणां/विप्राणां ज्ञाताज्ञातगोत्राणां प्रभवानामथवा अन ुलोमविलोमजातीयानां निषादजातीनां नीचयोनिगतानां पुंसां स्त्रीणां/ द्वेषप्रीतिगृहधनादिसम्बन्धेन त्वादिपापयोनिगतानां -भूतप्रेतपिशाचब्रह्मराक्षस दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थानां नागपिशाचादीनां नानाविधोपद्रवसम्पादकानां सात्त विष्णुब्रह्मरुद्रमयानां संचरणशीलानां वायुरूपेण ्विकराजसतामसानां प्रेतानां प्रेतत्वनिवृत्तिपूर्वकोत्तमोत्तमलोकप्राप्त्यर्थं मम सकुटुम्बस्य सपरिवारस्य आयुरारोग्यैश्वर्याभिवृद्ध्यर्थं सर्वाबाधाप्रशमनार्थं सर्वाभीष्टसम्प्राप्त्यर्थं च तीर्थे दाल्भ्योपदिष्टकल्पेन त्रिपिण्डीश्राद्धं करिष्ये।

संकल्पका जलादि सामने छोड़ दे।

पितृगायत्रीका पाठ -करे पाठ बार तीन पितृगायत्रीका -

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

तदनन्तर निम्न श्लोकका तीन बार पाठ करे -

सात्त्विकेभ्यो राजसेभ्यस्तामसेभ्यस्तथैव च । विष्णुब्रह्मरुद्रेभ्यश्च नित्यमेव नमो नमः ॥

तीन कलशोंका स्थापन

भूमिस्पर्श तीन कुमकुमसे या चावल भूमिपर लिये कलशोंके तीनों -

की स्थापित कलशोंको तीनों बनाकर पृथक् पृथक् कमल अष्टदल - करे मन्त्रसे निम्न स्पर्श भूमिका जानेवाली

मही द्यौः पृथिवी च न इमं यज्ञं मिमिक्षताम्। पिपृतां नो भरीमभिः

धान्य- रखे सप्तधान्य भूमिपर पढ़कर मन्त्र निम्न - **प्रक्षेप-**

ॐ ओषधयः समवदन्त सोमेन सह राज्ञा । यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तः राजन्पारयामसि ॥

कलशोंका स्थापन - निम्न मन्त्र पढ़कर धान्यके ऊपर पृथक् पृथक् तीनों कलशोंको स्थापित करे-

ॐ आ जिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्विन्दवः । पुनरूर्जा नि वर्तस्व सा नः सहस्त्रं धुक्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्माविशताद्रयिः ॥

कलशोंमें जल छोड़ना वरुणस्य वरुणस्योत्तम्भनमसि ॐ - वरुणस्य ऋतसदनमसि वरुणस्य ऋतसदन्यसि वरुणस्य स्थो स्कम्भसर्जनी सीद। ऋतसदनमा

कलशोंमें गन्धत्व ॐ - **छोड़ना चन्दन-**ां गन्धर्वा अखनँस्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः । त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत ॥

कलशोंमें सर्वोषधि छोड़ना सर्वोषधि कलशोंमें तीनों मन्त्रसे निम्न - -छोड़े (शतावर अभावमें)

ॐ या ओषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगं पुरा। मनै नु बभ्रूणामहः शतं धामानि सप्त च ॥

कलशोंमें द्रव्य -छोड़े द्रव्य कलशोंमें मन्त्रसे निम्न -

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्

देवाय हविषा स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै विधेम ॥

कलशोंमें वस्त्रश्वेत विष्णुकलशको - , ब्रह्मकलशको रक्त तथा रुद्रकलशको कृष्णवस्त्रसे लपेट दे।

ॐ वासो सुजातो ज्योतिषा सह शर्म। वरूथमाऽसदत्स्वः -

अग्ने विश्वरूप सं व्ययस्व विभावसो ॥

कलशोंपर पूर्णपात्र

ॐ पूर्णा दर्वि परा पत सुपूर्णा पुनरा पत। वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्जथं शतक्रतो ।

विष्णुकलशके पूर्णपात्रपर जौ, ब्रह्मकलशके पूर्णपात्रपर चावल तथा रुद्रकलशके पूर्णपात्रपर तिल रखे। तीनों पूर्णपात्रोंके ऊपर क्रमशः श्वेत, रक्त तथा कृष्ण वस्त्रसे वेष्टितकर एक दे। रख भी नारियल एक-

कलशोंमें वरुण देवका ध्यान लेकर पुष्प-अक्षत हाथमें - **आवाहन-** -करे मन्त्रसे निम्न आवाहन तथा ध्यान वरुणदेवका

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।

अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुशःस मा न आयुः प्र मोषीः ॥

ॐ अपां पतये वरुणाय नमः -

कलशोंमें अन्य देवताओंका आवाहन लेकर पुष्प-अक्षत हाथमें - करे। आवाहन देवताओंका-देवी कलशोंमें

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः इस मन्त्र से आवाहन करें।

प्रार्थना -

देवदानवसंवादे मथ्यमाने महोदधौ । हाथ जोड़कर नमस्कार करे।

तीन पताकाओंकी स्थापना - तीनों कलशोंके दक्षिण तीन पताकाओंकी भी स्थापना करे। विष्णुकी पताका श्वेतवस्त्रकी, ब्रह्माकी पताका रक्तवस्त्रकी तथा रुद्रकी पताका कृष्णवस्त्रकी होनी चाहिये।

विष्णु, ब्रह्मा एवं रुद्रप्रतिमाओंकी अग्न्युत्तारणपूर्वक प्राणप्रतिष्ठा - हाथमें जलाक्षत, त्रिकुश लेकर निम्न संकल्प करे-

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः

शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं आसु मूर्तिषु अवघातादिदोषपरिहारार्थं देवतासान्निध्यर्थञ्च अग्न्युत्तारणपूर्वकं प्राणप्रतिष्ठां करिष्ये । संकल्पजल छोड़ दे।

ॐ समुद्रस्य त्वाऽवकयाग्ने परि व्ययामसि । पावको अस्मभ्य अस्मभ्य भव॥

ॐ हिमस्य त्वा जरायुणाऽग्ने परि व्ययामसि । पावको शिवो शिवो भव

ॐ उप ज्मन्नुप वेतसेऽव तर नदीष्वा। अग्ने पित्तमपामसि मण्डूकि ताभिरा गहि।

सेमं नो यज्ञं पावकवर्णथं शिवं कृधि ॥

ॐ अपामिदं न्ययन समुद्रस्य निवेशनम्। अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यथं शिवो भव ॥

ॐ अग्ने पावक रोचिषा मन्द्रया देव जिह्वया। आ देवान् वक्षि यक्षि च॥

ॐ स नः पावक दीदिवोऽग्ने देवाँर इहा वह। उप यज्ञर्थ हविश्च नः ॥

ॐ पावकया यश्चितयन्त्या कृपा क्षामन् रुरुच उषसो न भानुना ।

तूर्वन् न यामन्नेतशस्य नू रण आ यो घृणे न ततृषाणो अजरः ॥

ॐ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते अस्त्वर्चिषे ।

अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्यथं शिवो भव ॥

ॐ नृषदे वेडप्सुषदे वेड् बर्हिषदे वेड् वनसदे वेट् स्वर्विदे वेट् ॥

ॐ ये देवा देवानां यज्ञिया यज्ञियाना संवत्सरीणमुप भागमासते ।

अहुतादो हविषो यज्ञे अस्मिन्त्स्वयं पिबन्तु मधुनो घृतस्य ।।

ये देवा देवेष्वधि देवत्वमायन् ये ब्रह्मणः पुर एतारो अस्य ।

येभ्यो न ऋते पवते धाम किञ्चन न ते दिवो न पृथिव्या अधि स्नुषु ॥

ॐ प्राणदा अपानदा व्यानदा वर्चोदा वरिवोदाः।

अन्याँस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य शिवो भव॥

प्राणप्रतिष्ठा - उन प्रतिमाओंको पंचामृतसे स्नान कराकर किसी दूसरे

पात्रमें रख ले और तीनों प्रतिमाओंका दाहिने हाथसे स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्रोंसे एक साथ उनकी प्राणप्रतिष्ठा करे-

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वंशं षं सं हं ळं क्षं हं सः सोऽहम् आसु विष्णुब्रह्मरुद्रमूर्तिषु प्राणा इह प्राणाः ॥

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं हं सः सोऽहम् आसु विष्णुब्रह्मरुद्रमूर्तिषु जीव इह स्थितः ।।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वंशं षं सं हं ळं क्षं हं सः सोऽहम् आसु विष्णुब्रह्मरुद्रमूर्तिषु सर्वाणि इन्द्रियाणि

वाङ्मनस्त्वक्चक्षुः श्रोत्रजिह्वाघ्राणपाणिपादपायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञथं समिमं दधातु ।

विश्वे देवास इह मादयन्तामो ३म्प्रतिष्ठ ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च । अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन ॥

ध्यान - प्राणप्रतिष्ठाके अनन्तर भगवान्का ध्यान करे -

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः । अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥

कलशोंपर मूर्तिस्थापन-

प्रथम कलशपर विष्णुमूर्ति-स्थापन - सर्वप्रथम विष्णुकी मूर्तिको उठाकर प्रथम विष्णुकलशके ऊपर रखे हुए पूर्णपात्रपर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए स्थापित करे-

ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाःसुरे स्वाहा ॥

तदनन्तर हाथमें जौ, जल लेकर निम्न मन्त्रसे विष्णुकलशमें सात्त्विक प्रेतका आवाहन करे और जौ, जल कलशमें छोड़ दे—

अज्ञातनामगोत्रं विष्णुमयं सात्त्विकप्रेतं आवाहयामि ।

द्वितीय कलशमें ब्रह्ममूर्ति-स्थापन -

ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः ।

स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः ॥

तदनन्तर हाथमें जौ, जल लेकर निम्न मन्त्रसे ब्रह्मकलशमें राजस प्रेतका आवाहन करे और जौ, जल कलशमें छोड़ दे-

अज्ञातनामगोत्रं ब्रह्ममयं राजसप्रेतं आवाहयामि ।

तृतीय कलशमें रुद्रमूर्ति-स्थापन - तृतीय रुद्रकलशके ऊपर रखे हुए पूर्णपात्रपर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए रुद्रकी ताम्रमयी मूर्ति स्थापित करे -

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः । बाहुभ्यामुत ते नमः ॥

तदनन्तर हाथमें जौ, जल लेकर निम्न मन्त्रसे रुद्रकलशमें तामस प्रेतका आवाहन करे और जौ, जल कलशमें छोड़ दे-

अज्ञातनामगोत्रं रुद्रमयं तामसप्रेतं आवाहयामि।

'विष्णुब्रह्मरुद्रदेवताभ्यो नमः' इस नाममन्त्रसे गन्ध-पुष्पादि उपचारोंसे तीनों देवोंका पूजन करे। **प्रार्थना** - पूजनके बाद हाथ जोड़कर निम्न प्रार्थना करे -

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः । अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥

अतसीपुष्पसङ्काशं पीतवाससमच्युतम्। ये नमस्यन्ति गोविन्दं न तेषां विद्यते भयम् ॥

कृष्ण कृष्ण कृपालो त्वमगतीनां गतिर्भव। संसारार्णवमग्नानां प्रसीद परमेश्वर ॥

सूक्तपाठके लिये तीन ब्राह्मणोंका वरण - पूजनके अनन्तर विष्णुसूक्त, ब्रह्मसूक्त तथा रुद्रसूक्तका पाठ करनेके लिये तीन ब्राह्मणोंका वरण करना चाहिये।

पाठ करनेसे पूर्व तीनों ब्राह्मणोंका पृथक् पृथक् वरण निम्न संकल्पोंसे करे -

(क) विष्णुसूक्तपाठके लिये ब्राह्मणके वरणका संकल्प - वस्त्र, उपवस्त्र, दक्षिणा तथा वरणसामग्री हाथमें लेकर निम्न संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्र शर्मागुप्त/वर्मा/ोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं समारब्धेऽस्मिन् त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः गोत्रं शर्माणं ब्राह्मणं विष्णुसूक्तपाठकर्तृत्वेन भवन्तं वृणे।

कहकर सामग्री ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

ब्राह्मण 'वृतोऽस्मि' कहकर वरणसामग्री ग्रहण करे।

(ख) ब्रह्मसूक्तपाठके लिये ब्राह्मणके वरणका संकल्प - वरणसामग्री लेकर निम्न संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्र शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं समारब्धेऽस्मिन् त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः गोत्रं शर्माणं ब्राह्मणं ब्रह्मसूक्तपाठकर्तृत्वेन भवन्तं वृणे। कहकर सामग्री ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

ब्राह्मण 'वृतोऽस्मि' कहकर वरणसामग्री ग्रहण करे।

(ग) रुद्रसूक्तपाठके लिये ब्राह्मणवरणका संकल्प - वरणसामग्री लेकर निम्न संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्र शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं समारब्धेऽस्मिन् त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः गोत्रं "शर्माणं ब्राह्मणं रुद्रसूक्तपाठकर्तृत्वेन भवन्तं वृणे।

कहकर सामग्री ब्राह्मणके हाथमें दे दे। ब्राह्मण 'वृतोऽस्मि' कहकर वरणसामग्री ग्रहण करे।

तदनन्तर गन्ध, पुष्प आदिके द्वारा वृत ब्राह्मणोंकी पूजा करे।

यदि एक ही ब्राह्मणसे तीनों सूक्तोंका पाठ कराना इष्ट हो तो एक ब्राह्मणका वरण कर लेना चाहिये।

सूक्तपाठके लिये एक ब्राह्मणका वरण-संकल्प - हाथ में त्रिकुश, तिल, जल तथा वरण-सामग्री लेकर निम्न संकल्प करे-

ॐ अद्य गोत्र शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं शास्त्रोक्तफलप्राप्त्यर्थं समारब्धेऽस्मिन् त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः गोत्रं शर्माणं ब्राह्मणं विष्णुब्रह्मरुद्रसूक्तपाठकर्तृत्वेन भवन्तं वृणे। कहकर सामग्री ब्राह्मणके हाथमें दे दे। ब्राह्मण 'वृतोऽस्मि' बोले। गन्ध, पुष्प आदिके द्वारा वृत ब्राह्मणकी पूजा कर ले।

सूक्तपाठकर्ता ब्राह्मण सूक्तोंका पाठ कर लें, * तदनन्तर श्राद्धकर्ता आचार्यके निर्देशनमें आगे बतायी गयी विधिके अनुसार त्रिपिण्डीश्राद्धका कार्य करे।

श्राद्धारम्भ

पात्रासादन - प्रत्येक कलशके सामने उसके उत्तरकी ओर एक-एक पत्तल रख ले। तीनों पत्तलोंपर दक्षिणाग्र एक-एक मोटकरूप आसन रख दे। आसनोंपर सात्त्विक, राजस तथा तामस प्रेतोंके प्रतिनिधिके रूपमें एक-एक कुशवटु रख दे। इसी प्रकार तीनों आसनोंके सामने एक-एक भोजनपात्र (पत्तल), भोजनपात्रके पश्चिम एक-एक अर्घपात्र (दोनिया), एक-एक जलपात्र (दोनिया) तथा भोजनपात्रके सामने (उत्तर) एक-एक घृतपात्र (दोनिया) रख दे।

तदनन्तर आसनदानका संकल्प करे -

आसनदानका संकल्प - श्राद्धकर्ता अपने आसनपर बैठ जाय और अपसव्य होकर मोटक, जल तथा जौ लेकर विष्णुमय सात्त्विक प्रेतोंके लिये आसनदानका संकल्प करे-

(क) अज्ञातनामगोत्राणां * सात्त्विकप्रेतानां दिविस्थानां विष्णुमयानां त्रिपिण्डीश्राद्धे इदमासनं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् - कहकर पहलेसे रखे मोटकरूप प्रथम आसनके ऊपर यव-जलादि छोड़ दे। पुनः

मोटक, जल तथा चावल लेकर ब्रह्ममय राजस प्रेतोंके लिये आसनदानका संकल्प करे-

(ख) अज्ञातनामगोत्राणां राजसप्रेतानां अन्तरिक्षस्थानां ब्रह्ममयानां त्रिपिण्डीश्राद्धे इदमासनं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् - कहकर पहलेसे रखे मोटकरूप द्वितीय आसनपर संकल्पका चावल-जलादि छोड़ दे। पुनः हाथमें मोटक, जल तथा तिल लेकर रुद्रमय तामसप्रेतोंके लिये आसनदानका संकल्प करे-

रुद्रमयानां भूमिस्थानां तामसप्रेतानां अज्ञातनामगोत्राणां (ग) कहकर - युष्माकमुपतिष्ठताम् दीयते मया वो इदमासनं त्रिपिण्डीश्राद्धे छोड़ जलादि-तिल संकल्पका आसनपर तृतीय मोटकरूप रखे पहलेसे दे।

आवाहन - प्रथम आसनपर जौ छोड़ते हुए निम्न मन्त्र पढ़कर विष्णुमय सात्त्विक प्रेतोंका आवाहन करे-

ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः ।

द्वितीय आसनपर चावल छोड़ते हुए निम्न मन्त्र पढ़कर ब्रह्ममय राजस प्रेतोंका आवाहन करे- ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥ तृतीय आसनपर तिल छोड़ते हुए निम्न मन्त्र पढ़कर रुद्रमय तामसप्रेतोंका आवाहन करे -

ॐ अपहता असुरा रक्षासि वेदिषदः ।

तीन अर्धपात्रों का निर्माण - सात्त्विक, राजस तथा तामस प्रेतोंके लिये तीन अर्धपात्रोंका पृथक् पृथक्निर्माण करे। निम्न मन्त्रको पढ़ते हुए तीनों अर्धपात्रोंमें एक-एक पवित्री दक्षिणाग्र रख दे - ।

ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः

तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुने तच्छकेयम् ॥

निम्न मन्त्रसे तीनों अर्धपात्रोंमें जल डाले।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं यो रभिस्त्रवन्तु नः ॥

निम्न मन्त्रसे प्रथम विष्णु-अर्धपात्रपर जौ छोड़े- यवयारातीः ।

ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो निम्न मन्त्रसे द्वितीय ब्रह्माके अर्घपात्रपर चावल छोड़े-

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत। अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठया मती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥

निम्न मन्त्रसे तृतीय रुद्रके अर्धपात्रपर तिल छोड़े-

ॐ तिलोऽसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः । प्रत्नमद्भिः प्रक्तः स्वधया पितृल्लोकान् प्रीणाहि नः स्वाहा ॥ तदनन्तर तीनों अर्धपात्रोंमें गन्ध, पुष्प तथा तुलसी मौन होकर छोड़े।

प्रथम अर्धपात्रका अभिमन्त्रण प्रथम विष्णुवाला अर्घपात्र बायें हाथमें लेकर दाहिने हाथसे उसमेंसे पवित्री निकालकर भोजनपात्रपर उत्तराग्र रख दे और ॐ नमो नारायणाय कहकर एक आचमनी जल इस पवित्रकपर छोड़ दे। अर्धपात्रको दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसका अभिमन्त्रण करे -

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः ।

हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवा शथं स्योनाः सुहवा भवन्तु ॥

अर्घदानका संकल्प दाहिने हाथमें मोटक, जौ, जल तथा अर्धपात्र लेकर निम्न संकल्प करे-

विष्णुमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे दिविस्थाः सात्त्विकप्रेताः अज्ञातनामगोत्राः (क) तथा पवित्रक कहकर - युष्माकमुपतिष्ठताम् दीयते मया वो हस्तार्घो एष दक्षिणाग्र अर्धपात्रमें उठाकर पवित्री गिराकर जल अर्धपात्रसे आसनपर सी) उत्तान ओर बायीं आसनके अर्धपात्रको और दे रखधाउस दे। रख (। स्थानमसि प्रेतेभ्यः विष्णुमयेभ्यः सात्त्विकेभ्यः -कहे समय

द्वितीय अर्घका अभिमन्त्रण - द्वितीय ब्रह्मावाला अर्घपात्र बायें हाथमें लेकर दाहिने हाथसे उसमेंसे पवित्रक निकालकर भोजनपात्रपर उत्तराग्र रख दे और 'ॐ नमो नारायणाय' मन्त्रसे एक आचमनी जल उस पवित्रकपर छोड़ दे। अर्घपात्रको दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसका अभिमन्त्रण करे -

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः ।

हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवा शथं स्योनाः सुहवा भवन्तु ॥

अर्घदानका संकल्प - दाहिने हाथमें मोटक, चावल, जल तथा दूसरा अर्धपात्र लेकर निम्न संकल्प करे -

(ख) अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेता अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एष हस्तार्घो वो मया दीयते युष्माक- मुपतिष्ठताम् - कहकर पवित्रक तथा आसनपर अर्घपात्रसे जल गिराकर पवित्रीको उठाकर पुनः अर्धपात्रमें दक्षिणाग्र रख दे और अर्धपात्रको आसनके बायीं ओर उत्तान ब्रह्मम राजसेभ्यः -कहे समय उस दे। रख (सीधा)येभ्यः प्रेतेभ्यः स्थानमसि ।

तृतीय अर्घका अभिमन्त्रण - तृतीय रुद्रवाला अर्घपात्र बायें हाथमें लेकर दाहिने हाथसे उसमेंसे पवित्रक निकालकर भोजनपात्रपर उत्तराग्र रख दे और 'ॐ नमो नारायणाय' मन्त्रसे एक आचमनी जल उस पवित्रकपर छोड़ दे। अर्घपात्रको दाहिने हाथसे ढककर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए उसका अभिमन्त्रण करे-

ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या आन्तरिक्षा उत पार्थवीर्याः । हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवा शथं स्योनाः सुहवा भवन्तु ॥

अर्घदानका संकल्प - दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल तथा तीसरा अर्धपात्र लेकर निम्न संकल्प करे -

(ग) अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेता भूमिस्थाः रुद्रमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एष हस्ताोेंं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् -कहकर पवित्रक तथा

आसनपर अर्धपात्रसे जल गिराकर पवित्रीको उठाकर पुनः अर्धपात्रमें दक्षिणाग्र रख दे और अर्घपात्रको आसनके बायीं ओर उत्तान (सीधा) रख दे। उस समय कहे - तामसेभ्यः रुद्रमयेभ्यः प्रेतेभ्यः स्थानमसि ।

तीनों आसनोंपर पूजन- तीनों आसनोंपर निम्न उपचारोंको चढ़ाते हुए पृथक् पृथक् पूजन करे। विष्णुमय प्रेतोंके पूजनमें अक्षतके स्थानपर श्वेततिल, ब्रह्ममय प्रेतोंके पूजनमें रक्ततिल (रंगे हुए तिल) तथा रुद्रमय प्रेतोंके पूजनमें कृष्णतिल चढ़ाना चाहिये। सर्वप्रथम विष्णुमय प्रेतोंका निम्न रीतिसे पूजन करे -

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्) - कहकर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्) - कहकर वस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते) - कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः) - कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे श्वेततिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः) - कहकर श्वेत तिलाक्षत चढ़ाये। (ब्रह्ममय प्रेतोंके लिये रक्ततिलाक्षताः कहे तथा तामस प्रेतोंके लिये कृष्णतिलाक्षताः कहे।)

इदं माल्यम् (सुमाल्यम्) - कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः) - कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः) - कहकर दीपक दिखाये। हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले।)

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्) - कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्) - कहकर फल अर्पित करे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्) - कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा) - कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

इस प्रकार विष्णु-आसनपर पूजन करके इसी प्रकार ब्रह्माके आसनपर फिर रुद्रके आसनपर पूजन करे।

अर्चनदानका संकल्प - तदनन्तर अर्चनदानोंका पृथक् पृथक् संकल्प करे।

हाथमें मोटक, जौ, जल लेकर निम्न संकल्प करे-

(क) अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णुमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एतान्यर्चनानि वो मया दीयन्ते युष्माकमुपतिष्ठन्ताम् - कहकर आसनपर जलादि छोड़ दे।

हाथमें मोटक, चावल, जल लेकर निम्न संकल्प करे-

(ख) अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेताः अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एतान्यर्चनानि वो मया दीयन्ते युष्माकमुपतिष्ठन्ताम् - कहकर आसनपर जलादि छोड़ दे। हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प करे-

(ग) अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेताः भूमिस्थाः रुद्रमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एतान्यर्चनानि वो मया दीयन्ते युष्माकमुपतिष्ठन्ताम् - कहकर आसनपर जलादि छोड़ दे।

मण्डलकरण * - विष्णुप्रेतके आसन तथा भोजनपात्रके बायीं ओरसे जलद्वारा चारों ओर एक वर्तुलाकार (गोलाकार) मण्डल बनाये। इसी प्रकार दूसरे ब्रह्मप्रेतवाले आसन तथा भोजनपात्रके चारों ओर वामावर्त

वर्तुलाकार मण्डल बनाये और इसी प्रकार तीसरे रुद्रप्रेतवाले आसन तथा भोजनपात्रके चारों ओर वामावर्त वर्तुलाकार मण्डल बनाये। मण्डलोंको बनाते समय निम्न मन्त्र बोले-

ॐ यथा चक्रायुधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परिरक्षति । एवं मण्डलतोयं तु सर्वभूतानि रक्षतु ॥

भूस्वामीको अन्नप्रदान - दक्षिण दिशाकी भूमिको जलसे सींच दे। तीनों अन्नों (पीठियों) में पृथक् पृथक् दूध, घृत तथा मधु मिलाकर एक दोनियेमें उन तीनों अन्नोंको पृथक् पृथक् रखकर दक्षिण दिशामें रख दे और एक दोनियेमें जल भी रख दे। उस समय निम्न मन्त्र पढ़े-ॐ इदमन्नं एतद्भूस्वामिपितृभ्यो नमः ।

अन्नपरिवेषण - तीनों भोजनपात्रोंमेंसे पड़े हुए जौ, चावल, तिल आदिको हटाकर पात्रोंको साफ कर ले।* तीनों भोजनपात्रोंमेंसे प्रथम सात्त्विक विष्णुप्रेतवाले भोजनपात्रपर पिण्डदानके लिये निर्मित जौकी पीठीसे थोड़ा अन्न निकालकर रखे। द्वितीय राजस ब्रह्मप्रेतवाले भोजनपात्रपर चावलपीठीमेंसे थोड़ा अन्न निकालकर रखे। इसी प्रकार तृतीय तामस रुद्रप्रेतवाले भोजनपात्रपर तिलकी पीठीमेंसे थोड़ा अन्न निकालकर रखे। पूर्वस्थापित तीनों जलपात्रोंमें जल तथा घृतपात्रोंमें घृत भी छोड़ दे। भोजनपात्रोंपर परोसे गये अन्नपर दोनों हाथोंसे निम्न मन्त्र पढ़ते हुए मधु छोड़े-

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ॥ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवथं रजः । मधु द्यौरस्तु नः पिता ।। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ२ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ ॐ मधु मधु मधु ॥

पात्रालम्भन - अनुत्तान दक्षिण हाथके ऊपर अनुत्तान वाम हाथ स्वस्तिकाकार रखकर प्रथम विष्णुवाले अन्नपात्रका स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्र बोले-

ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा। ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूढमस्य पाथं सुरे

स्वाहा ॥ ॐ कृष्ण कव्यमिदं रक्ष मदीयम् ।

अन्नावगाहन - बायें हाथसे पहले भोजनपात्रका स्पर्श किये हुए ही दाहिने हाथके अनुत्तान अँगूठेसे अन्न छूकर बोले- इदमन्नम्। जल छूकर बोले-इमा आपः। घी छूकर बोले- इदमाज्यम् । पुनः अन्न छूकर बोले-इदं कव्यम् । -

जौ विकिरण - बायें हाथसे भोजनपात्रका स्पर्श किये हुए ही प्रथम भोजनपात्रमें अन्नके ऊपर निम्न मन्त्रसे जौ छोड़े-ॐ यवोऽसि यवयास्मद् द्वेषो यवयारातीः ।

अन्नदानका संकल्प - संकल्पपर्यन्त अन्नपात्रका बायें हाथसे स्पर्श किये रहे। दाहिने हाथमें मोटक, जौ, जल लेकर संकल्प करे-

(क) अज्ञातनामगोत्रेभ्यः सात्त्विकप्रेतेभ्यः दिविस्थेभ्यः विष्णुमयेभ्यः त्रिपिण्डीश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् - कहकर प्रथम भोजनपात्रमें अन्नके ऊपर जलादिको छोड़ दे। संकल्पके अनन्तर बायाँ हाथ हटा ले।

इसी प्रकार राजस एवं तामस प्रेतोंके अन्नपात्रोंपर भी पृथक् पृथक् आलम्भन, अंगुष्ठनिवेशन (अन्नावगाहन) करे। राजस प्रेतके अन्नपात्रपर अक्षन्नमी० मन्त्रसे चावल तथा तामसप्रेतके भोजनपात्रपर ॐ अपहता० मन्त्रसे तिल छोड़े तथा पृथक् पृथक् अन्नदानका संकल्प करे और बादमें बायाँ हाथ हटा ले। दोनोंका संकल्प इस प्रकार है-

दाहिने हाथमें मोटक, चावल, जल लेकर दूसरा संकल्प करे-

(ख) अज्ञातनामगोत्रेभ्यः राजसप्रेतेभ्यः अन्तरिक्षस्थेभ्यः ब्रह्ममयेभ्यः त्रिपिण्डीश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् - कहकर द्वितीय भोजनपात्रमें अन्नके ऊपर जलादिको छोड़ दे। संकल्पके अनन्तर बायाँ हाथ हटा ले।

दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर तीसरा संकल्प करे-

(ग) अज्ञातनामगोत्रेभ्यः राजसप्रेतेभ्यः भूमिस्थेभ्यः रुद्रमयेभ्यः त्रिपिण्डीश्राद्धे इदमन्नं सोपस्करं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् - कहकर तृतीय भोजनपात्रमें अन्नके ऊपर जलादिको छोड़ दे। संकल्पके अनन्तर बायाँ हाथ हटा ले।

तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे-

अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्। अच्छिद्रमस्तु तत्सर्वं पित्रादीनां प्रसादतः ॥

पितृगायत्रीका पाठ- हाथ-पैर धो ले, पूर्व दिशामें मुख करके बैठ जाय, सव्य होकर निम्न पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥ वेद-शास्त्रादिका पाठ - तदनन्तर यथासम्भव वेद-शास्त्रादिका भी पाठ करे। पैरोंके नीचे पूर्वाग्र तीन कुश रखकर निम्नलिखित वेदशास्त्रादिका पाठ करे। यथासम्भव रक्षोघ्नसूक्त, पुरुषसूक्त, पितृसूक्त आदिका पाठ करना चाहिये।

श्रुतिपाठ - ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम् ।।

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मध्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशर्थ्यांसो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि ।।

ॐ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि ।।

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्स्रवन्तु नः ॥

स्मृतिपाठ-

मनुमेकाग्रमासीनमभिगम्य महर्षयः । प्रतिपूज्य यथान्यायमिदं वचनमब्रुवन् ।। योगीश्वरं याज्ञवल्क्यं सम्पूज्य मुनयोऽब्रुवन् । वर्णाश्रमेतराणां नो ब्रूहि धर्मानशेषतः ॥

मन्वत्रिविष्णुहारीतयाज्ञवल्क्योशनोऽङ्गिराः । यमापस्तम्बसंवर्ताः पराशरव्यासशङ्खलिखिता कात्यायनबृहस्पती ।। दक्षगौतमौ । शातातपो वसिष्ठश्च धर्मशास्त्रप्रयोजकाः ॥

पुराण-

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् देवीं सरस्वतीं व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥ सप्त व्याधा दशार्णेषु मृगाः कालञ्जरे गिरौ । चक्रवाकाः शरद्वीपे हंसाः सरसि मानसे ॥ तेऽभिजाताः कुरुक्षेत्रे ब्राह्मणा वेदपारगाः । प्रस्थिता दीर्घमध्वानं यूयं किमवसीदथ ॥

महाभारत -

दुर्योधनो मन्युमयो महाद्रुमः स्कन्धः कर्णः शकुनिस्तस्य शाखाः।

दुःशासनः पुष्पफले समृद्धे मूलं राजा धृतराष्ट्रोऽमनीषी ।।

युधिष्ठिरो धर्ममयो महाद्रुमः स्कन्धोऽर्जुनो भीमसेनोऽस्य शाखाः।

माद्रीसुतौ पुष्पफले समृद्धे मूलं कृष्णो ब्रह्म च ब्राह्मणाश्च ॥

विकिरदान *- अपसव्य दक्षिणाभिमुख हो जाय। दक्षिण दिशाकी भूमिको जलसे सींच दे। उसपर दक्षिणाग्र त्रिकुश बिछा दे। तीनों अन्नोंसे थोड़ा-थोड़ा अन्न (पीठी) लेकर पितृतीर्थसे उन्हीं कुशोंपर रख दे। उस समय निम्न मन्त्रोंकोपढ़े-

असंस्कृतप्रमीतानां त्यागिनां कुलभागिनाम् । उच्छिष्टभागधेयानां दर्भेषु विकिरासनम् ॥

अग्निदग्धाश्च ये जीवा येऽप्यदग्धाः कुले मम। भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम् ॥

वेदी-निर्माण - हाथकी पवित्री तथा मोटक उतार दे। हाथ-पैर धोकर सव्य एवं पूर्वाभिमुख होकर आचमनकर हरिस्मरणकर नयी पवित्री धारण कर ले। प्रत्येक भोजनपात्रोंके सामने प्रादेशमात्र (दस अंगुल) लम्बी-चौड़ी एक-एक वेदी बनाये। वेदी दक्षिणकी ओर ढालवाली होनी चाहिये। तीनों वेदियोंको जलसे सींच दे। उस समय बोले-

ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका। पुरी द्वारावती ज्ञेयाः सप्तैता मोक्षदायिकाः ॥

रेखाकरण - दायें हाथसे तीनों कुशोंकी जड़ तथा बायें हाथकी तर्जनी एवं अंगुष्ठसे कुशोंके अग्रभागको पकड़कर तीनों वेदियोंपर कुशोंके मूलभागसे उत्तरसे दक्षिणकी ओर निम्न मन्त्र पढ़ते हुए एक-एक रेखा खींचे-

ॐ अपहता असुरा रक्षासि वेदिषदः ॥

तदनन्तर उन कुशोंको ईशानकोणकी ओर फेंक दे।

उल्मुकस्थापन - तीनों वेदियोंके चारों ओर निम्न मन्त्रसे बायीं ओरसे अंगारका भ्रमण कराये तथा उसे पिण्डवेदीके दक्षिणकी ओर श्राद्धपर्यन्त स्थापित रखे। इस प्रक्रियाकी सिद्धि अंगार तथा गोहरीके अभावमें ज्वालामुखी धूप आदिसे भी की जा सकती है-

ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति । परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टाँल्लोकात्प्रणुदात्यस्मात् ॥

अवनेजनपात्रनिर्माण अवनेजनपात्रके रूपमें एक-एक दोनियेको तीनों वेदियोंकी पश्चिम दिशामें रख ले। तीनों दोनियोंमें पृथक् पृथक् जल, पुष्प तथा गन्ध छोड़ दे। प्रथम विष्णुमय अवनेजनपात्रमें जौ, द्वितीय ब्रह्ममय अवनेजनपात्रमें चावल तथा तृतीय रुद्रमय अवनेजनपात्रमें तिल छोड़ दे।

अवनेजनदानका संकल्प - दाहिने हाथमें मोटक, जौ, जल तथा प्रथम अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प पढ़े-

(क) अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णुमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावनेनिग्ध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् - ऐसा कहकर प्रथम पश्चिमवाली वेदीकी रेखाके मध्यभागमें आधा जल गिराकर दोनियेको यथास्थान सुरक्षित रख दे।

पुनः दाहिने हाथमें मोटक, चावल, जल तथा द्वितीय अवनेजनपात्र

लेकर निम्न संकल्प पढ़े-

(ख) अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेताः अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावनेनिग्ध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् - ऐसा कहकर द्वितीय दोनियेके आधे जलको बीचवाली वेदीकी रेखाके मध्यभागमें गिराकर दोनियेको यथास्थान रख दे।

पुनः दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल तथा तृतीय अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प पढ़े-

(ग) अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेताः भूमिस्थाः रुद्रमयाः त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डस्थाने अत्रावनेनिग्ध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् - ऐसा कहकर तृतीय दोनियेके आधे जलको तीसरी वेदीकी रेखाके मध्यभागमें गिराकर दोनियेको यथास्थान सुरक्षित रख दे।

कुशास्तरण * - तीन समूल कुशोंको एक साथ जड़सहित दो भागोंमें विभक्तकर प्रत्येक वेदीपर खींची गयी रेखापर दक्षिणाग्र बिछा दे।

पिण्डनिर्माण - बायाँ घुटना मोड़कर जमीनमें टेककर तीन पिण्ड पृथक् पृथक् बना ले। पहले जौके आटेकी पीठीमें दूध, मधु, घृत तथा शर्करा मिलाकर कपित्थ (कैथ) फलके बराबर एक सात्त्विकप्रेतोद्देश्यक पिण्ड बनाकर पत्तलपर रख ले। हाथ धो ले।

तदनन्तर चावलके आटेकी पीठीमें दूध, मधु, घृत तथा शर्करा मिलाकर कपित्थके बराबर दूसरा राजसप्रेतोद्देश्यक पिण्ड बनाकर उसे भी पत्तलपर रख दे और हाथ धो ले। इसी प्रकार तिलान्न (तिलपीठी) में दूध, मधु, घृत तथा शर्करा मिलाकर तीसरा

तामसप्रेतोद्देश्यक पिण्ड बनाकर पत्तलपर रख ले तथा हाथ धो ले।

पिण्डदान - हाथमें मोटक, जौ, जल तथा जौकी पीठीसे निर्मित प्रथम पिण्डको लेकर पहले निम्न श्लोकोंका पाठ करे-

पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च। गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये

बान्धवा मृताः ॥

ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः । क्रियालोपगताश्चैव जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा ॥

विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञातकुले मम। धर्मपिण्डो मया दत्तो अक्षय्यमुपतिष्ठताम् ।।

इदं यवमयं पिण्डं यवसर्पिसमन्वितम् । ददामि तस्मै प्रेताय यः पीडां कुरुते मम ॥

ये केचित्प्रेतरूपेण वर्तन्ते पितरो मम। यवपिण्डप्रदानेन तृप्तिं गच्छन्तु शाश्वतीम् ॥

ये केचिद्दिवि तिष्ठन्ति प्रेताः सात्त्विकरूपिणः । सात्त्विकपिण्डप्रदानेन तृप्तिं गच्छन्तु तेऽक्षयाम् ॥

और फिर निम्न संकल्प करे-

(क) अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णुमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एष यवमयः पिण्डो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् - ऐसा कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे पहली वेदीके ऊपर अवनेजनस्थानपर कुशोंके ऊपर दोनों हाथोंसे सँभालकर रख दे।

पुनः हाथमें मोटक, चावल, जल तथा चावलकी पीठीसे निर्मित द्वितीय पिण्डको लेकर निम्न मन्त्रोंका पाठ करे-

पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च। गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये बान्धवा मृताः ॥

ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः । क्रियालोपगताश्चैव जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा ॥

विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञातकुले मम। धर्मपिण्डो मया दत्तो अक्षय्यमुपतिष्ठताम्॥

इदं व्रीहिमयं पिण्डं मधुरत्रयसंयुतम्। तन्मुक्तये प्रयच्छामि पीडां ये कुर्वते मम ॥

ये केचित्प्रेतरूपेण वर्तन्ते पितरो मम। तण्डुलपिण्डप्रदानेन व्रजन्तु

गतिमुत्तमाम्॥

अन्तरिक्षे च ये जाता राजसा वायुरूपिणः । राजसपिण्डप्रदानेन ते तृप्यन्तु मुदान्विताः ॥

तदनन्तर निम्न संकल्प करे-

(ख) अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेता अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एष व्रीहिमयः पिण्डो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् - कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे दूसरी वेदीके ऊपर अवनेजनस्थानपर कुशोंके ऊपर दोनों हाथोंसे सँभालकर रख दे।

पुनः हाथमें मोटक, तिल, जल तथा तिलपीठीसे निर्मित तृतीय पिण्डको लेकर निम्न मन्त्रोंका पाठ करे-

पितृवंशे मृता ये च मातृवंशे तथैव च। गुरुश्वशुरबन्धूनां ये चान्ये बान्धवा मृताः ॥

ये मे कुले लुप्तपिण्डाः पुत्रदारविवर्जिताः । क्रियालोपगताश्चैव जात्यन्धाः पङ्गवस्तथा ॥

विरूपा आमगर्भाश्च ज्ञाताज्ञातकुले मम । धर्मपिण्डो मया दत्तो अक्षय्यमुपतिष्ठताम् ॥

इदं तिलमयं पिण्डं मधुना सर्पिषा युतम्। तेभ्यो ददामि प्रेतेभ्यो ये पीडां कुर्वते सदा ॥

ये केचित्तामसाः प्रेता भूमौ तिष्ठन्ति सर्वदा। तिलपिण्डप्रदानेन गतिं गच्छन्तु ते ध्रुवाम् ॥

तमोरूपाश्च ये केचिद्वर्तन्ते पितरो मम। पिण्याकपिण्डदानेन ते तृप्यन्तु क्षुधार्दिताः ॥

तदनन्तर निम्न संकल्प करे- तामस

(ग) अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेता अन्तरिक्षस्थाः रुद्रमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एष तिलमयः पिण्डो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् - कहकर पिण्डको पितृतीर्थसे तीसरी वेदीके ऊपर अवनेजनस्थानपर कुशोंके ऊपर

दोनों हाथोंसे सँभालकर रख दे।

हाथ पोंछना - पिण्डाधार कुशोंके मूलमें हाथ पोंछ ले। पूर्वाभिमुख हो जाय, सव्य होकर आचमन करे तथा हाथ जोड़कर भगवान्‌का स्मरण करे।

श्वासनियमन - अपसव्य होकर बैठे हुए ही बायीं ओरसे श्वास खींचते हुए उत्तराभिमुख हो निम्न मन्त्र पढ़े-

अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम् ।

तदनन्तर श्वास रोककर दक्षिणाभिमुख होकर पिण्डके पास श्वास छोड़े और यह मन्त्र पढ़े-

अमीमदन्त पितरो यथाभागमावृषायिषत ।

यही क्रिया दूसरी वेदी तथा तीसरी वेदीपर भी करे।

प्रत्यवनेजनदान - पूर्वमें रखे हुए अवनेजनपात्रोंसे प्रत्यवनेजन दान करे। यदि उनमें जल न बचा हो तो जल छोड़ ले तथा तीनोंके लिये पृथक् पृथक् निम्न संकल्प करे-

हाथमें मोटक, जौ, जल तथा प्रथम अवनेजनपात्र (दोनिया) लेकर निम्न संकल्प करे -

(क) अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकप्रेता दिविस्थाः विष्णुमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् - कहकर प्रत्यवनेजन जल प्रथम वेदीके पिण्डपर गिरा दे तथा प्रत्यवनेजनपात्र यथास्थान रख दे।

हाथमें मोटक, चावल, जल तथा द्वितीय अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे -

(ख) अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेता अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् - कहकर प्रत्यवनेजन जल द्वितीय वेदीके पिण्डपर गिरा दे तथा प्रत्यवनेजनपात्र

यथास्थान रख दे।

हाथमें मोटक, तिल, जल तथा तृतीय अवनेजनपात्र लेकर निम्न संकल्प करे-

(ग) अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेता भूमिस्थाः रुद्रमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डे अत्र प्रत्यवनेनिग्ध्वं वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् - कहकर प्रत्यवनेजन जल तृतीय वेदीके पिण्डपर गिरा दे तथा प्रत्यवनेजनपात्र यथास्थान रख दे।

नीवीविसर्जन - नीवी निकालकर ईशान कोणकी ओर छोड़ दे। पूर्वाभिमुख तथा सव्य हो जाय। आचमन कर ले।

सूत्रदान - बायें हाथसे सूत्र पकड़कर दाहिने हाथमें लेकर निम्न मन्त्र पढ़े-

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्म। और 'एतद्वः पितरो वासः' कहकर तीनों पिण्डोंपर पृथक् पृथक् सूत्र चढ़ाये। तदनन्तर सूत्रदानका पृथक् पृथक् संकल्प करे-

हाथमें मोटक, जौ, जल लेकर सात्त्विक प्रेतोंके लिये निम्न रीतिसे पिण्डके ऊपर सूत्रदानका संकल्प करे-

(क) अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकप्रेता दिविस्थाः विष्णुमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एतद्वासः वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् - कहकर पिण्डके ऊपर संकल्प जल छोड़ दे। हाथमें मोटक, चावल, जल लेकर राजस प्रेतोंके लिये निम्न रीतिसे पिण्डके ऊपर सूत्रदानका संकल्प करे-

(ख) अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेता अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एतद्वासः वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम् - कहकर पिण्डके ऊपर संकल्प जल छोड़ दे।

हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर तामस प्रेतोंके लिये निम्न रीतिसे पिण्डके ऊपर सूत्रदानका संकल्प करे- (ग) अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेता भूमिस्थाः रुद्रमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे एतद्वासः वो मया दीयते

युष्माकमुपतिष्ठताम् - कहकर पिण्डके ऊपर संकल्प जल छोड़ दे।

तीनों पिण्डोंका पूजन - तीनों पिण्डोंका पृथक् पृथक् पूजन निम्न रीतिसे करे-

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं स्नानीयम् (सुस्नानीयम्) - कहकर तीनों पिण्डोंपर स्नानीय जल दे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं वस्त्रम् (सुवस्त्रम्) - कहकर वस्त्र या सूत्र चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इमे यज्ञोपवीते (सुयज्ञोपवीते) - कहकर यज्ञोपवीत चढ़ाये।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

एष गन्धः (सुगन्धः) - कहकर गन्ध अर्पित करे।

इमे श्वेततिलाक्षताः (सुतिलाक्षताः) - कहकर श्वेत तिलाक्षत चढ़ाये। (ब्रह्ममय प्रेतोंके लिये रक्ततिलाक्षताः कहे तथा तामस प्रेतोंके लिये कृष्णतिलाक्षताः कहे।) इदं माल्यम् (सुमाल्यम्) - कहकर माला चढ़ाये।

एष धूपः (सुधूपः) - कहकर धूप आघ्रापित करे।

एष दीपः (सुदीपः) - कहकर दीपक दिखाये।

हस्तप्रक्षालनम् (हाथ धो ले।)

इदं नैवेद्यम् (सुनैवेद्यम्) - कहकर नैवेद्य अर्पित करे।

इदमाचमनीयम् (स्वाचमनीयम्) - कहकर आचमनीय जल दे।

इदं फलम् (सुफलम्) - कहकर फल अर्पित करे।

इदं ताम्बूलम् (सुताम्बूलम्) - कहकर ताम्बूल प्रदान करे।

एषा दक्षिणा (सुदक्षिणा) - कहकर दक्षिणा चढ़ाये।

अर्चनदानका संकल्प - हाथमें मोटक, जौ, जल लेकर पहला संकल्प करे-

(क) अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णुमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डे एतान्यर्चनानि वो मया दीयन्ते युष्माकमुपतिष्ठन्ताम्। कहकर संकल्प जल सात्त्विक प्रेत-पिण्डपर छोड़ दे। हाथमें मोटक, चावल, जल लेकर दूसरा संकल्प करे-

(ख) अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेताः अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डे एतान्यर्चनानि वो मया दीयन्ते युष्माकमुपतिष्ठन्ताम्। कहकर संकल्प जल राजस प्रेत-पिण्डपर छोड़ दे। हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर तीसरा संकल्प करे-

(ग) अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेताः भूमिस्थाः रुद्रमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे पिण्डे एतान्यर्चनानि वो मया दीयन्ते

युष्माकमुपतिष्ठन्ताम्। कहकर संकल्पजल तामस प्रेत-पिण्डपर छोड़ दे।

अक्षय्योदकदान - तीनों भोजनपात्रोंपर पृथक् पृथक् निम्न मन्त्र बोलते हुए जलादि छोड़े- ॐ शिवा आपः सन्तु- कहकर तीनोंमें जल छोड़े।

ॐ सौमनस्यमस्तु - कहकर तीनोंमें पुष्प छोड़े।

पहलेमें सफेद फूल, दूसरेमें लाल तथा तीसरेमें नीलवर्णका पुष्प (या

अपराजिता) छोड़े।

ॐ अक्षतञ्चारिष्टञ्चास्तु- कहकर प्रथम भोजनपात्रपर जौ, दूसरेपर चावल तथा तीसरेपर तिल छोड़े।

अक्षय्योदकदानका संकल्प - दाहिने हाथमें मोटक, जौ, जल लेकर पहला संकल्प करे-

(क) अज्ञातनामगोत्राणां सात्त्विकप्रेतानां दिविस्थानां विष्णुमयानां त्रिपिण्डीश्राद्धे दत्तैतदन्न- पानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठताम्। संकल्पजल प्रथम विष्णुपिण्डपर छोड़ दे।

हाथमें मोटक, चावल, जल लेकर दूसरा संकल्प करे-

(ख) अज्ञातनामगोत्राणां राजसप्रेतानां अन्तरिक्षस्थानां ब्रह्ममयानां त्रिपिण्डीश्राद्धे दत्तैतदन्न-

पानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठताम्। संकल्पजल द्वितीय ब्रह्मपिण्डपर छोड़ दे। हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर तीसरा संकल्प करे-

(ग) अज्ञातनामगोत्राणां तामसप्रेतानां भूमिस्थानां रुद्रमयानां त्रिपिण्डीश्राद्धे दत्तैतदन्नपानादिकमक्षय्यमुपतिष्ठताम्। संकल्पजल तृतीय रुद्रपिण्डपर छोड़ दे।

विशेषार्घदान

किसी ताम्रपात्र या मिट्टीके पात्रमें जल, गन्ध, जौ, पुष्प तथा मातुलिंग (बिजौरा नींबू) फल रखकर पहला अर्घपात्र बना ले, फिर हाथमें मोटक, जौ, जल तथा अर्धपात्र लेकर पहला संकल्प करे- (क) अज्ञातनामगोत्राः सात्त्विकप्रेताः दिविस्थाः विष्णुमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे मातुलिङ्गादिभिरर्घो वो मया

दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्। कहकर संकल्पजल तथा अर्धपात्रस्थजल आदि प्रथम सात्त्विक प्रेतके पिण्डपर चढ़ा दे। प्रथमके समान ही जल, गन्ध, अक्षत, पुष्प तथा जम्बीरफल (कागजी नींबू) रखकर दूसरा अर्धपात्र

बना ले, फिर हाथमें मोटक, चावल, जल तथा अर्धपात्र लेकर दूसरा संकल्प करे-

(ख) अज्ञातनामगोत्राः राजसप्रेताः अन्तरिक्षस्थाः ब्रह्ममयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे जम्बीरफलादिभिरर्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्। कहकर संकल्पजल तथा अर्धपात्रस्थजल आदि द्वितीय राजस प्रेतके पिण्डपर चढ़ा दे। प्रथमके समान ही जल, गन्ध, तिल, पुष्प तथा खर्जूर (छुहारा) रखकर तीसरा अर्धपात्र बना ले, फिर हाथमें मोटक, तिल, जल तथा अर्धपात्र लेकर तीसरा संकल्प करे-

(ग) अज्ञातनामगोत्राः तामसप्रेताः भूमिस्थाः रुद्रमयास्त्रिपिण्डीश्राद्धे खर्जूरफलादिभिरर्घो वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्। कहकर संकल्पजल तीसरे तामस प्रेतके पिण्डपर चढ़ा दे।

जलधारा - सव्य होकर तीनों पिण्डोंपर निम्न रीतिसे पृथक् पृथक् पूर्वाग्र जलधारा दे-

प्रथम पिण्डमें जलधारा देते समय - अघोराः सात्त्विकप्रेताः सन्तु कहे।

द्वितीय पिण्डमें जलधारा देते समय - अघोराः राजसप्रेताः सन्तु कहे।

तृतीय पिण्डमें जलधारा देते समय - अघोराः तामसप्रेताः सन्तु कहे।

आशीष-प्रार्थना - पूर्वाभिमुख होकर हाथ जोड़कर निम्न मन्त्र बोलते हुए आशीर्वाद माँगे - ॐ गोत्रं नो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्ताम् । वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धा च नो मा व्यगमद् बहुदेयं च नोऽस्तु । अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि । याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म कञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु ॥

ब्राह्मणवाक्य सन्त्वेताः सत्या आशिषः ।

पिण्डोंपर जल या दुग्धधारा - अपसव्य होकर प्रत्येक पिण्डके ऊपर दक्षिणाग्र सपवित्रक तीन-तीन कुशोंको रख दे। तदनन्तर दूध या

जलसे दक्षिणाग्र पृथक् पृथक् जलधारा या दुग्धधारा निम्न मन्त्रको पढ़ते हुए दे- ॐ ऊर्ज वहन्तीरमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधा स्थ तर्पयत मे पितृन् ॥

विष्णुतर्पण

सव्य होकर आचमन कर ले, तदनन्तर विष्णुतर्पण करे। शालग्रामकी मूर्तिको किसी पात्रमें स्थापित कर ले। किसी बड़े ताँबे* या मिट्टीके पात्रमें जल, दूध, तिल, जौ, तुलसी, सर्वोषधि, चन्दन, पुष्प तथा फल डाल दे। अंजलिके बीचमें शंख रख ले। उसी शंखमें पूर्वनिर्मित जल लेकर पूर्वाभिमुख होकर देवतीर्थसे शालग्रामशिलापर निम्न मन्त्रोंद्वारा तर्पण करे-

तर्पणके वैदिक मन्त्र- सर्वप्रथम पुरुषसूक्त तथा विष्णुमन्त्रोंसे तर्पण करे तथा मन्त्रके अन्तमें विष्णुं तर्पयामि बोले-

(१) ॐ सहस्त्रशीर्षा पुरुषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात्। स भूमि सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ विष्णुं तर्पयामि ।। विष्णुं तर्पयामि ।।

(२)ॐ पुरुष एवेद सर्वं यद्भुतं यच्च भाव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति विष्णुं तर्पयामि ॥

(३) ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः । पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥

(४) ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः । ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि विष्णुं तर्पयामि ॥

(५) ॐ ततो विराडजायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत ॥ विष्णुं तर्पयामि ॥

पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥

(६) ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूस्ताँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये विष्णुं तर्पयामि ॥ । विष्णुं तर्पयामि ॥

(७) ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुत ऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दासि जज्ञिरे

तस्माद्यजुस्तस्मादजायत । विष्णुं तर्पयामि ।।

(८) ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयादतः। गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः ॥

(९) ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥

(१०) ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् । मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते

(११) ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या शूद्रो अजायत ॥ विष्णुं तर्पयामि ।। विष्णुं तर्पयामि ॥ ॥ विष्णुं तर्पयामि ॥

(१२) ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत। श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत । विष्णुं तर्पयामि ॥ विष्णुं तर्पयामि ॥

(१३) ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष शीर्णो द्यौः समवर्तत। पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँर अकल्पयन् ॥ विष्णुं तर्पयामि ।।

(१४) ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत । वसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥ विष्णुं तर्पयामि ॥ विष्णुं तर्पयामि ।।

(१५) ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कृताः। देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम् ॥

(१६) ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।

ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ॥ विष्णुं तर्पयामि ॥

(१७) ॐ इदं विष्णुर्वि चक्रमे त्रेधा नि दधे पदम् । समूढमस्य पासुरे स्वाहा ॥

(१८) ॐ इरावती धेनुमती हि भूत सूयवसिनी मनवे दशस्या। व्यस्कभ्ना रोदसी विष्णवेते

दाधर्थ पृथिवीमभितो मयूखैः स्वाहा ॥ विष्णुं तर्पयामि ॥

(१९) ॐ देवश्रुतौ देवेष्वा घोषतं प्राची प्रेतमध्वरं कल्पयन्ती ऊर्ध्वं यज्ञं नयतं मा जिह्वरतम्।

स्वं गोष्ठमा वदतं देवी दुर्ये आयुर्मा निर्वादिष्टं प्रजां मा निर्वादिष्टमत्र रमेथां वर्त्मन् पृथिव्याः ॥ विष्णुं तर्पयामि ॥

(२०) ॐ विष्णोर्नुकं वीर्याणि यो अस्कभायदुत्तरथं प्र वोचं यः पार्थिवानि विममे रजा सि ।

सधस्थं विचक्रमाणस्त्रेधोरुगायो विष्णवे त्वा ॥ विष्णुं तर्पयामि ॥

(२१) ॐ दिवो वा विष्ण उत वा पृथिव्या महो वा विष्ण उरोरन्तरिक्षात् ।

उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्र यच्छ दक्षिणादोत सव्याद्विष्णवे त्वा ॥ विष्णुं तर्पयामि ॥

(२२) ॐ तद्विष्णु स्तवते वीर्येण मृगो प्र विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः ।

(२३) ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ विष्णुं तर्पयामि ।।

तर्पणके पौराणिक मन्त्र - (१) ॐ विष्णुस्तृप्यतु, (२) ॐ गोविन्दस्तृप्यतु, (३) ॐ केशवस्तृप्यतु,

(४) ॐ माधवस्तृप्यतु, (५) ॐ श्रीधरस्तृप्यतु, (६) ॐ हृषीकेशस्तृप्यतु, (७) ॐ पद्मनाभस्तृप्यतु, (८) ॐ पुरुषोत्तमस्तृप्यतु, (९) ॐ अनिरुद्धस्तृप्यतु, (१०) ॐ संकर्षणस्तृप्यतु, (११) ॐ चतुर्भुजस्तृप्यतु, (१२) ॐ पुण्डरीकाक्षस्तृप्यतु, (१३) ॐ मधुसूदनस्तृप्यतु, (१४) ॐ अच्युतस्तृप्यतु, (१५) ॐ जनार्दनस्तृप्यतु, (१६) ॐ अनन्तस्तृप्यतु, (१७) ॐ वैकुण्ठस्तृप्यतु, (१८) ॐ उपेन्द्रस्तृप्यतु, (१९) ॐ त्रिविक्रमस्तृप्यतु, (२०) ॐ गदापाणिस्तृप्यतु, (२१) ॐ श्रीवत्सस्तृप्यतु, (२२) ॐ श्रीकान्तस्तृप्यतु, (२३) ॐ दामोदरस्तृप्यतु,(२४)

ॐ वनमाली तृप्यतु,(२५) ॐ नरोत्तमस्तृप्यतु,(२६) ॐ नृसिंहस्तृप्यतु ।

यदि सम्भव हो तो विष्णुके अष्टोत्तरसहस्रनामसे भी तर्पण करे।

पुनः निम्न मन्त्रोंसे तर्पण करे-

ॐ अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः । अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ विष्णुं तर्पयामि ॥

अतसीपुष्पसंकाशं पीतवाससमच्युतम्। ये नमस्यन्ति गोविन्दं न तेषां विद्यते भयम् ॥ विष्णुं तर्पयामि ॥

कृष्ण कृष्ण कृपालो त्वमगतीनां गतिर्भव। संसारार्णवमग्नानां प्रसीद पुरुषोत्तम ॥ नारायण सुरश्रेष्ठ लक्ष्मीकान्त वरप्रद। अनेन तर्पणेनाथ प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ विष्णुं तर्पयामि ।। विष्णुं तर्पयामि ।।

पिण्डोंपर तथा दर्भमयी प्रेतप्रतिमाओंपर तर्पण - इस प्रकार विष्णुतर्पण करके अपसव्य दक्षिणाभिमुख अगम्यागमनेन हो जाय। बायाँ घुटना जमीनपर लगा ले। पूर्वनिर्मित शंखके जलसे उसी शंखके द्वारा तीनों पिण्डोंपर तथा चटासनपर विद्यमान सात्त्विक, राजस एवं तामस प्रेतोंकी दर्भमयी प्रतिमाओंपर भी निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए पितृतीर्थसे एकतन्त्रसे जलधारा देते हुए तर्पण करे-

धनलोभमृता ये च गतिर्येषां न विद्यते। ते मे प्रेताः सुखं दद्युस्तेभ्यः दुग्धं तिलोदकम् ॥ १ ॥

कपिलाक्षीरपानेन च । ते मे प्रेताः सुखं दद्युस्तेभ्यः दुग्धं तिलोदकम् ॥ २ ॥

अपात्रे चैव दानेन प्रेतरूपव्यवस्थिताः । ते मे प्रेताः सुखं दद्युस्तेभ्यः दुग्धं तिलोदकम् ॥ ३॥

स्वबन्धुः पितृबन्धुर्वा प्रेतरूपव्यवस्थितः । स मे प्रेतः सुखं दद्यात्तस्मै दुग्धं तिलोदकम् ॥ ४॥

पुत्रो वा भ्रातृवर्गो वा प्रेतरूपव्यवस्थितः । स मे प्रेतः सुखं दद्यात्तस्मै दुग्धं तिलोदकम् ॥ ५ ॥

मातृपितृव्यकादिश्च प्रेतभावेन संस्थिताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां

दुग्धं तिलोदकम् ॥ ६ ॥

मातुलानी स्वपत्नी च गोत्रिणः स्वस्य एव च। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ ७ ॥

पितृवंशे च ये जाता मातृवंशे तथैव च । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ ८ ॥

नानायोनिगता ये च महास्थलनिवासिनः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ ९ ॥

ये केचित्प्रेतरूपेण यमेन परिपीडिताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ १०॥

ये केचित्प्रेतरूपेण तृषार्त्ताः परिपीडिताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ ११ ॥

महाप्रेता महाभागा प्रपूर्यां च समाश्रिताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ १२ ॥

असंख्याता महाघोरा असंख्याता महाप्रेताः प्रेतलोके च ये जाता ब्राह्मणवृत्तिहरणात् प्रेतरूपैर्व्यवस्थिताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ १३ ॥

शाखान्यग्रोधसंस्थिताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ १४॥

मुद्गरैर्बहुखण्डिताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ १५ ॥ प्रे

तरूपव्यवस्थिताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ १६ ॥

वृत्तिभङ्गकरा ये वै प्रेतरूपव्यवस्थिताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ १७ ॥

क्रियालोपगता ये च सर्पव्याघ्रहताश्च ये । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ १८ ॥

ज्वालाग्निभिमृता ये च विद्युत्पातादिभिस्तथा । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ १९ ॥

अपुत्रिणो मृता ये च कुलधर्मविवर्जिताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ २० ॥

तप्ततैले च निःक्षिप्ता यमलोके महाभये । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ २१ ॥

किङ्करैः पीडिता ये च सुदृढाः खण्डशः कृताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ २२ ॥

पापेन पीडिताः कण्ठे यमदूतैर्महाबलैः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ २३॥

सन्दंशैर्धनपातैश्च वध्यन्ते खण्डिता यमकिङ्करैः ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ २४ ॥

बहुभिर्पाशैर्यमदूतैर्महाबलैः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ २५ ॥

मस्तके मुद्गरैः घारैः पीडिताः यमकिङ्करैः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ २६ ॥

यमदूतैर्महाबलैः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ २७ ॥

कुम्भीपाके च निःक्षिप्ता रौरवे च तथैव च। ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ २८ ॥

गुर्वग्निब्राह्मणानां च पादेनैव प्रपीडकाः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ २९ ॥

असिपत्रे खिद्यमाना वृषभीत्या पलायिताः । ते सर्वे तृप्तिमायान्तु तेषां दुग्धं तिलोदकम् ॥ ३० ॥

ब्रह्मस्वहारिणो ये च देवद्रव्यविलुम्पकाः । ते मे प्रेताः सुखं दद्युस्तेभ्यो दुग्धं तिलोदकम् ॥ ३१ ॥

जलधाराका संकल्प - इस प्रकार तर्पण करनेके अनन्तर जलधारा प्रदान करे। दाहिने हाथमें मोटक, जौ, जल लेकर संकल्प करे-

अज्ञातनामगोत्राणां सात्त्विकराजसतामसप्रेतानां विष्णुब्रह्मरुद्रमयानां

दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थानां परलोके महातृषोपशमनार्थं एषा जलधारा वो मया दीयते युष्माकमुपतिष्ठताम्। कहकर पितृतीर्थसे संकल्पजल छोड़ दे। सव्य होकर आचमन कर ले। तदनन्तर गोदान करे।

गोदानका संकल्प - हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल लेकर गोदानका संकल्प करे- ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं कृतेऽस्मिन् त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणि विष्णुप्रीतिद्वारा शास्त्रबोधिततर्पणसाङ्गतासंसिद्ध्यर्थं मुक्तिप्राप्त्यर्थं च इमां गां/गोनिष्क्रयभूतं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे । कहकर गोपुच्छ/निष्क्रयद्रव्य तथा संकल्पजल ब्राह्मणके हाथमें दे दे।

कलशोंके जलसे अभिषेक - दक्षिणाभिमुख, अपसव्य होकर पूर्वस्थापित किये गये प्रथम विष्णुकलशको हाथमें लेकर उसके जलसे निम्न मन्त्र पढ़ते हुए प्रथम विष्णुपिण्डपर अभिषेक करे- विष्णुकलशे स्थितं तोयं विष्णुसूक्तेन मन्त्रितम् । तेन तोयाभिषेकेण प्रेतत्वं च निवर्तताम्॥

विष्णुलोकप्राप्तिर्भवतु ।

इसी प्रकार दूसरे ब्रह्मकलशके जलसे द्वितीय ब्रह्मपिण्डपर अभिषेक करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े-

ब्रह्मकुम्भे स्थितं तोयं ब्रह्मसूक्तेन मन्त्रितम् तेन तोयाभिषेकेण प्रेतत्वं च निवर्तताम् ॥ ब्रह्मलोकप्राप्तिर्भवतु ।

इसी प्रकार तीसरे रुद्रकलशके जलसे तृतीय रुद्रपिण्डपर अभिषेक करते हुए निम्न मन्त्र पढ़े- रुद्रकुम्भे स्थितं तोयं रुद्रसूक्तेन मन्त्रितम्। अभिषिञ्चामि तेन त्वां प्रेतत्वं च निवर्तताम् ॥ रुद्रलोकप्राप्तिर्भवतु ।

पिण्डोंका स्पर्श - कुशोंसे पिण्डोंका स्पर्श करते हुए निम्न मन्त्रोंका पाठ करे-

अनादिनिधनो देवः शङ्खचक्रगदाधरः । अक्षय्यः पुण्डरीकाक्ष प्रेतमोक्षप्रदो भव ॥ अतसीपुष्पसङ्काशं पीतवाससमच्युतम्। ये नमस्यन्ति गोविन्दं न तेषां विद्यते भयम् ॥ कृष्ण कृष्ण कृपालो त्वमगतीनां गतिर्भव।

संसारार्णवमग्नानां प्रसीद परमेश्वर ॥

पिण्डाघ्राण - कुछ नम्र होकर पिण्डोंको उठाकर सूंघकर किसी पात्रमें रख दे। पिण्डाधार दूसरी अग्निमें छोड़ दे।

अर्धपात्र-संचालन अर्धपात्रोंको हिला दे।

त्रिपिण्डीश्राद्धकी प्रतिष्ठाके लिये दक्षिणादानका संकल्प - तीन पृथक् पृथक् संकल्प करे।

दाहिने हाथमें मोटक, जौ, जल लेकर निम्न संकल्प करे-

(क) अज्ञातनामगोत्राणां सात्त्विकप्रेतानां विष्णुमयानां दिविस्थानां कृतैतत् त्रिपिण्डीश्राद्धप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं इदं वस्त्रोपवस्त्रं दक्षिणाद्रव्ययुतं/तन्निष्क्रयद्रव्यं यथानामगोत्राय सात्त्विकाय ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर संकल्पजल, वस्त्र तथा दक्षिणा आदि ब्राह्मणको दे दे और निम्न प्रार्थना करे-

प्रार्थना -

शीतवातोष्णसन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम् देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥

पुनः दाहिने हाथमें मोटक, अक्षत, जल लेकर निम्न संकल्प करे-

(ख) अज्ञातनामगोत्राणां राजसप्रेतानां ब्रह्ममयानां अन्तरिक्षस्थानां कृतैतत् त्रिपिण्डीश्राद्धप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं तृषोपशमनार्थं च मिष्टवारिपूर्णकमण्डलुं दक्षिणाद्रव्ययुतं/तन्निष्क्रयद्रव्यं यथानामगोत्राय राजसाय ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर संकल्पजल, कमण्डलु तथा दक्षिणा आदि ब्राह्मणको दे दे और निम्न प्रार्थना करे-

प्रार्थना -

कमण्डलुजलैः पूर्णः स्वर्णगर्भः सुलक्षणः । अर्पितस्ते महासेन प्रसन्नस्तेन त्वं भव ॥

पुनः दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर निम्न संकल्प करे -

(ग) अज्ञातनामगोत्राणां तामसप्रेतानां रुद्रमयानां भूमिस्थानां कृतैतत् त्रिपिण्डीश्राद्धप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं उपानद्युगलं छत्रं च दक्षिणाद्रव्ययुतं/तन्निष्क्रयद्रव्यं यथानामगोत्राय तामसाय ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर संकल्पजल, उपानह, छत्र तथा दक्षिणा आदि ब्राह्मणको दे दे और निम्न प्रार्थना करे-

प्रार्थना -

उपानहौ प्रयच्छामि कण्टकादिनिवारणे। परित्राणाय ते विप्र गृहाण त्वं सुखी भव ॥

मोक्षधेनुदान - विष्णुमय, ब्रह्ममय तथा रुद्रमय प्रेतोंको प्रेतत्त्वनिवृत्तिपूर्वक मुक्ति प्राप्त करानेके लिये पृथक् पृथक् तीन मोक्षधेनुके दानकी विधि है। इसे निष्क्रयद्रव्यके द्वारा भी सम्पन्न किया जा सकता है। अतः तीन गोदानोंका पृथक्- पृथक् संकल्प करे-

दाहिने हाथमें मोटक, जौ, जल लेकर प्रथम संकल्प करे-

(क) ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं मुक्तिप्रदश्रीविष्णुप्रीतिद्वारा अज्ञातनामगोत्राणां सात्त्विकप्रेतानां विष्णुमयानां दिविस्थानां मुक्तिप्राप्त्यर्थं इमां मोक्षधेनुं/मोक्षधेनुनिष्क्रयभूतं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर संकल्पजलादि ब्राह्मणको दे दे। (यदि बादमें देना हो तो दातुमुत्सृज्ये बोले।)

दाहिने हाथमें मोटक, अक्षत, जल लेकर द्वितीय संकल्प करे-

(ख) ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तो ऽहं मुक्तिप्रदश्रीब्रह्मप्रीतिद्वारा अज्ञातनामगोत्राणां राजसप्रेतानां ब्रह्ममयानां अन्तरिक्षस्थानां मुक्तिप्राप्त्यर्थं इमां मोक्षधेनुं / मोक्षधेनुनिष्क्रयभूतं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर

संकल्पजलादि ब्राह्मणको दे दे। (यदि बादमें देना हो तो दातुमुत्सृज्ये बोले ।)

पुनः दाहिने हाथमें मोटक, तिल, जल लेकर तृतीय संकल्प करे-

(ग) ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं मुक्तिप्रदश्रीरुद्रप्रीतिद्वारा अज्ञातनामगोत्राणां तामसप्रेतानां रुद्रमयानां भूमिस्थानां मुक्तिप्राप्त्यर्थं इमां मोक्षधेनुं / मोक्षधेनुनिष्क्रयभूतं द्रव्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर संकल्पजलादि ब्राह्मणको दे दे। (यदि बादमें देना हो तो दातुमुत्सृज्ये बोले ।)

प्रार्थना - तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे-

त्रिलोकीनाथ देवेश सर्वभूतदयानिधे। दानेनानेन तुष्टस्त्वं प्रयच्छ गतिमुत्तमाम् ॥

तिलपात्रदान - किसी ताँबेके पात्रमें तिल, स्वर्णखण्ड, दक्षिणा तथा सांगताद्रव्य रखकर त्रिकुश, अक्षत तथा जल और वह तिलपात्र दाहिने हाथमें लेकर निम्न संकल्प करे-

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं अज्ञातनामगोत्राणां सात्त्विकराजसतामसप्रेतानां विष्णुब्रह्मरुद्रमयानां दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थानां तिलपात्रदानकल्पोक्तमुक्ति-

फलप्राप्त्यर्थ साङ्गताद्रव्ययुतं इदं तिलपात्रं ससुवर्णं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे । (यदि बादमें देना हो तो दातुमुत्सृज्ये बोले।) कहकर संकल्पजलादि तथा तिलपात्र ब्राह्मणको दे दे।

प्रार्थना - तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे -

यानि कानि च पापानि ब्रह्महत्यासमानि च। तिलपात्रप्रदानेन तानि नश्यन्ति सर्वदा ॥

घृतपात्रदान - किसी काँसेकी कटोरीमें पिघला हुआ घी रखकर तथा

उसमें स्वर्णदक्षिणा छोड़कर श्राद्धकर्ता निम्न मन्त्रोंको पढ़ते हुए उस घीमें अपने मुखकी छाया देखे (आज्यावलोकन करे) -

ॐ तेजोऽसि शुक्रमस्यमृतमसि । धाम नामासि प्रियं देवानामनाधृष्टं देवयजनमसि ।। आज्यं तेजः समुद्दिष्टमाज्यं पापहरं परम्। आज्येन देवास्तृप्यन्ति आज्ये लोकाः प्रतिष्ठिताः ।। भौमान्तरिक्षं दिव्यं वा यन्मे कल्मषमागतम् । तत्सर्वमाज्यसंस्पर्शात् आज्ये चैव मुखं दृष्ट्वा सर्वपापैः प्रमुच्यते। प्रणाशमुपगच्छतु ।।

घृतपात्रदानका संकल्प - हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा घृतपात्र लेकर निम्न संकल्प करे- ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं मम कायिकवाचिकमानसिकसमस्तपापक्षयपूर्वक श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं इदं घृतपूर्ण काँस्यपात्रं सहिरण्यं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे। कहकर संकल्पजलादि तथा घृतपात्र ब्राह्मणको दे दे। (यदि बादमें देना हो तो दातुमुत्सृज्ये बोले।)

प्रार्थना - तदनन्तर निम्न प्रार्थना करे -

यालक्ष्मीर्यच्च मे दौस्थ्यं सर्वाङ्गे समुपस्थितम्। तत्सर्वं नाशयाऽऽज्य त्वं श्रियमायुश्च वर्धय ॥ कामधेनोः समुद्भूतं देवानामुत्तमं हविः । आयुर्वृद्धिकरं दातुराज्यं पातु सदैव माम्॥ आज्यपात्रप्रदानेन शान्तिरस्तु सदा मम ॥

ब्राह्मणभोजनका संकल्प - सात्त्विक, राजस तथा तामस प्रेतोंके उद्देश्यसे किये गये श्राद्धकी प्रतिष्ठा तथा सांगतासिद्धिके लिये तीन ब्राह्मणोंको भोजन करानेकी विधि है। इसमें सात्त्विकप्रेतश्राद्धकी प्रतिष्ठाके लिये पक्वान्नका, राजसप्रेतश्राद्धकी प्रतिष्ठाके लिये पायस (खीर) का और तामसप्रेतश्राद्धकी प्रतिष्ठाके लिये कृसरान्न (खिचड़ी) का भोजन कराना चाहिये। यह कार्य भोजननिष्क्रयद्रव्यसे भी सम्भव है। ब्राह्मणभोजनका संकल्प यहाँ दिया जा रहा है- दाहिने हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर एकतन्त्रसे निम्न संकल्प करे- ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः

शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं अज्ञातनामगोत्राणां सात्त्विकराजसतामसप्रेतानां विष्णुब्रह्मरुद्रमयानां दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थानां अक्षयतृप्तिप्राप्तिद्वारा मुक्तिप्राप्तिकामः सात्त्विकब्राह्मणं पक्वान्नेन राजसं पायसेन तामसं कृसरान्नेन च भोजयिष्ये (यदि ब्राह्मणभोजनके रूपमें निष्क्रयद्रव्यदान करना हो तो संकल्पवाक्यमें पक्वान्ननिष्क्रयद्रव्यभूतं द्रव्यं पायसनिष्क्रयभूतं द्रव्यं कृसरान्ननिष्क्रयभूतं द्रव्यं भवद्भ्यः सम्प्रददे कहना चाहिये।

सूक्तपाठ करनेवाले ब्राह्मणोंको दक्षिणादान - सूक्तपाठ करनेवाले ब्राह्मणोंको दक्षिणा देनी चाहिये। इसके लिये हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर निम्न संकल्प करे-

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं त्रिपिण्डीश्राद्धविहितविष्णुब्रह्मरुद्रसूक्तपाठकर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं विष्णुसूक्तादिपाठकर्तृभ्यः नानानामगोत्रेभ्यः ब्राह्मणेभ्यः दक्षिणां विभज्य दातुमुत्सृज्ये - कहकर दक्षिणा विभक्त करके सूक्तपाठकर्ता ब्राह्मणोंको प्रदान करे।

विसर्जन - अपसव्य होकर तीनों आसनोंपर पृथक् पृथक् क्रमशः सात्त्विक प्रेतासनपर जौ, राजस प्रेतासनपर चावल तथा तामस प्रेतासनपर तिल छोड़ते हुए निम्न मन्त्रके पाठद्वारा सात्त्विक, राजस तथा तामस प्रेतोंका विसर्जन करे-

ॐ वाजे वाजेऽवत वाजिनो नो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः ।

मध्वः अस्य पिबत मादयध्वं तृप्ता यात पथिभिर्देवयानैः ।।

अनुगमन - 'उत्तिष्ठन्तु सात्त्विकराजसतामसप्रेताः' कहकर निम्न मन्त्रका पाठ करे-

ॐ आ मा वाजस्य प्रसवो जगम्यादेमे द्यावापृथिवी विश्वरूपे ।

आमा गन्तां पितरा मातरा चा मा सोमो अमृतत्वेन गम्यात् ॥

प्रार्थना - तदनन्तर निम्न मन्त्रसे प्रार्थना करे-

दिव्यन्तरिक्षभूमिस्थाः सात्त्विका राजसास्तथा। प्रेता वै तामसा येऽन्ये

शान्तिं गच्छन्तु तर्पिताः ।।

आचार्यको दक्षिणादान - हाथमें त्रिकुश, अक्षत तथा जल लेकर निम्न संकल्प पढ़कर आचार्यको दक्षिणा प्रदान करे-

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं कृतस्य त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणः साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं गोत्राय शर्मणे ब्राह्मणाय आचार्याय इमां दक्षिणां भवते सम्प्रददे। कहकर आचार्यको दक्षिणा प्रदान करे।

भूयसीदक्षिणादान - किये गये कर्ममें न्यूनातिरिक्त दोषके परिहारके लिये भूयसीदक्षिणा देनेकी शास्त्रमें विधि है। अतः इस त्रिपिण्डीश्राद्धकर्ममें जो न्यूनातिरिक्त दोष हो गया हो, उसके शमनके लिये निम्न संकल्पद्वारा भूयसीदक्षिणा प्रदान करे।

हाथमें त्रिकुश, अक्षत, जल तथा दक्षिणा लेकर निम्न संकल्प करे -

ॐ अद्य पूर्वोच्चारितग्रहगणगुणविशेषणविशिष्टायां शुभपुण्यतिथौ गोत्रः शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं कृतस्य त्रिपिण्डीश्राद्धकर्मणः साङ्गताप्रतिष्ठासंसिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीं दक्षिणां यथाकाले दातुमुत्सृज्ये - कहकर संकल्पजल छोड़ दे और बादमें दक्षिणा दे दे।

पितृगायत्रीका पाठ - निम्न पितृगायत्रीका तीन बार पाठ करे-

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥

दीपनिर्वापण * - अपसव्य होकर रक्षादीप बुझा दे।

प्रार्थना -

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत् । स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्ण स्यादिति श्रुतिः ॥ यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम् ॥ यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम् ॥

ॐ विष्णवे नमः । ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः । ॐ साम्बसदाशिवाय नमः । ॐ साम्बसदाशिवाय नमः । ॐ साम्बसदाशिवाय

नमः ।

तीर्थाधिपतिका पूजन तथा अश्वत्थवृक्षसेचन - श्राद्धके अनन्तर तीर्थाधिपतिका पंचोपचार या षोडशोपचार पूजन करके अपनी शक्तिके अनुसार उन्हें दक्षिणा प्रदान करे। तदनन्तर पीपलवृक्षके मूल में तिलयुक्त जलमिश्रित दूधकी धारा दे और निम्न प्रार्थना करे- वृक्षराज नमस्तुभ्यं सर्वदेवमय प्रभो। मम देहस्य सन्तापं हर त्वं वारिधारया ॥

।। त्रिपिण्डीश्राद्धप्रयोग पूर्ण हुआ ।

प्रश्न -

१. त्रिपिण्डी श्राद्ध किसे कहते है।

२. त्रिपिण्डी श्राद्ध का सविस्तार वर्णन कीजिए।